UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182265

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—707—25-4-81—10,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 H26R Accession No. PG.H6316

Author मान.

Title राजविलास 1958.

This book should be returned on or before the date last marked below

आकर-ग्रंथमाला—३

मानकृत

# राजविलास

संपादक
मोतीलाल मेनारिया

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

प्रकाशक : नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी
मुद्रक : महन्नाबराय, नागरी मुद्रण, वाराणसी
संवत् २०१५ वि०, प्रथम संस्करण, १६०० प्रतियाँ
मूल्य [illegible]

# माला का परिचय

नागरीप्रचारिणी सभा ने अपनी हीरक-जयंती के अवसर पर जिन भिन्न-भिन्न साहित्यिक अनुष्ठानों का श्रीगणेश करना निश्चित किया था उनमें से एक कार्य हिंदी के आकर-ग्रंथों के सुसंपादित संस्करणों की पुस्तकमाला प्रकाशित करना भी था। जयंतियों अथवा बड़े-बड़े आयोजनों पर एकमात्र उत्सव आदि न कर स्थायी महत्त्व के ऐसे रचनात्मक कार्य करना सभा की परंपरा रही है जिनसे भाषा और साहित्य की ठोस सेवा हो। इसी दृष्टि से सभा ने हीरक-जयंती के पूर्व एक योजना बनाकर विभिन्न राज्य सरकारों और केंद्रीय सरकार के पास भेजी थी। इस योजना में सभा की वर्तमान विभिन्न प्रवृत्तियों को संपुष्ट करने के अतिरिक्त कतिपय नवीन कार्यों की रूपरेखा देकर आर्थिक संरक्षण के लिए सरकारों से आग्रह किया गया था जिनमें से केंद्रीय सरकार ने हिंदी-शब्दसागर के संशोधन-परिवर्धन तथा आकर-ग्रंथों की एक माला के प्रकाशन में विशेष रुचि दिखलाई और ६-३-५४ को सभा की हीरक-जयंती का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रपति देशरत्न डा० राजेंद्रप्रसाद जी ने घोषित किया—'मैं आपके निश्चयों का, विशेष कर इन दो (शब्दसागर-संशोधन तथा आकर-ग्रंथमाला) का स्वागत करता हूँ। भारत सरकार की ओर से शब्दसागर का नया संस्करण तैयार करने के सहायतार्थ एक लाख रुपए की सहायता, जो पाँच वर्षों में, बीस-बीस हजार करके दिए जायँगे, देने का निश्चय हुआ है। इसी तरह से मौलिक प्राचीन ग्रंथों के प्रकाशन के लिए पचीस हजार रुपए भी, पाँच वर्षों में पाँच-पाँच हजार करके, सहायता दी जायगी। मैं आशा करता हूँ कि इस सहायता से आपका काम कुछ सुगम हो जायगा और आप इस काम में अग्रसर होंगे'

केंद्रीय शिक्षामंत्रालय ने ११-५-५४ को एफ ४-३-५४ एच ४ संख्यक एतत्संबंधी राजाज्ञा निकाली। राजाज्ञा की शर्तों के अनुसार इस माला के लिए संपादक-मंडल का संघटन तथा इसमें प्रकाश्य एक सौ उत्तमोत्तम ग्रंथों का निर्धारण कर लिया गया है। संपादक-मंडल तथा ग्रंथ सूची की संपुष्टि भी केंद्रीय शिक्षामंत्रालय ने कर दी है। ज्यों ज्यों ग्रंथ तैयार होते चलेंगे, इस माला में प्रकाशित होते रहेंगे। हिंदी के प्राचीन साहित्य को इस प्रकार उच्च स्तर के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं तथा इतर अध्येताओं के लिए सुलभ करके केंद्रीय सरकार ने जो स्तुत्य कार्य किया है उसके लिए वह धन्यवादार्ह है।

———

# संपादकीय

मान कवि के सबध में हिंदी-कवियों के सुप्रसिद्ध वृत्त-सग्रह **शिवसिंह सरोज** में यह उल्लेख है—

'मान कवीश्वर बदीजन राजपूताने के स० १७५६ में उ०

ये कवि व्रजभाषा मे महानिपुण थे। राना राजसिह राठौर मेवाड़ वाले की आज्ञानुसार एक ग्रथ राजदेवविलास नाम उदयपुर के हालात मे बनाया है। इस ग्रथ मे राना राजसिह और औरगजेब बादशाह की लडाइयाँ बहुत कविताई के साथ वर्णन हुई हैं।'

इनके विषय में डाक्टर ग्रियर्सन का कथन है यों है—

'मान कवीश्वर—राजपूताना के चारण और कवि, १६६० ई० में उपस्थित। मेवाड़ के राना राजसिह के आदेश से इन्होने राजदेवविलास लिखा, जिसमे औरगजेब और राजसिह के युद्धो का वर्णन है। देखिए, टाड भाग १, पृष्ठ २१४,३७४ और आगे तथा ३९१, कलकत्ता सस्करण भाग १, पृष्ठ २३१, ३९६ और आगे, तथा ४१४।'

—'दि माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर आव् हिदुस्तान' के हिंदी-अनुवाद 'हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास' से उद्धृत।

मिश्रबधुविनोद ( द्वितीय बार, स० १९८४ ) का विवरण यह है—

'नाम—( ४१० ) मान कवीश्वर राजपूताना के।
ग्रथ—राजविलास।
रचनाकाल—१७१७।

विवरण—साधारण श्रेणी। इन्होंने महाराणा मानसिह का वर्णन इस ग्रथ मे किया है। यह नागरीप्रचारिणी ग्रथमाला में छप रहा है।'

इन उद्धरणों में शिवसिह ने मान कवीश्वर को वदीजन कहा है और ग्रियर्सन ने वंदीजन तथा कवि। उनका स्थितिकाल पहले ने स० १७५६ माना है और दूसरे ने सं० १७१७ ( ई० १६६०+५७ )। इस स्थितिकाल को **मिश्रबंधुविनोद** में रचनाकाल लिखा गया है। पहले के दोनों उल्लेखों

मैं ग्रंथ का नाम **राजदेवविलास** है, मिश्रबधुओं ने उसे **राजविलास** लिखा। जिस समय **विनोद** का प्रथम सस्करण ( स० १९७० में ) मुद्रित हुआ उस समय ग्रथ छप रहा था। इसलिए उन्होंने इसे देखा न होगा इसी से **राजविलास** में महाराणा मानसिंह का वर्णन है ऐसा उन्होंने अनुमान से ही लिख दिया। पर **विनोद** का दूसरा सस्करण होने पर भी इसे उन्होंने नहीं देखा। यह स० १९६९–७० में मुद्रित प्रकाशित हो गया था, **विनोद** दूसरी बार स० १९८४ में मुद्रित हुआ।

इसके रचनाकाल की भ्राति सबसे पहले स्वर्गीय लाला भगवानदीनजी द्वारा सपादित होकर प्रकाशित होने पर दूर हुई। उन्होंने भूमिका में लिखा है—

'इसे राजपूताना निवासी 'मान' कवि ने विक्रमी स० १७३४ मे लिखना आरभ किया था। मालूम होता है कि यह ग्रथ कवि ने तीन वर्ष मे समाप्त किया है क्योंकि स० १७३७ तक की घटनाओं का वर्णन इसमे पाया जाता है। इसमे उदयपुराधीश महाराणा राजसिंह के समय का वर्णन है।'

इसमें मानकवि ने निर्माण आरभ करने के सवत् का उल्लेख दो स्थानों पर किया है—

१—सुभ सबत दस सात बरस चौतीस बधाई।

२—सबत सुसत्त दह सतक सार बच्छर चौतीसम धरि बिचार।

× × × ×

देबी सु आइ बरदान दीन। कबि मान ग्रथ आरभ कीन।

इसका सपादन करते समय लालाजी ने मान कवि को जैन नहीं समझा था। उनसे पूर्व भी किसी ने उन्हें जैन नहीं समझा था। स्वर्गीय रत्नाकर-जी ने भी उन्हें जैन नहीं माना। पर उन्होंने **बिहारीसतसई** के टीकाकार मानसिंह और **राजविलास** के कर्ता मानकवि को एक ही घोषित किया।

'मानसिंह कवि विजयगछ वाले की टीका

कालक्रमानुसार दूसरी टीका, जो हमारे देखने में आई है वह उदयपुर के निकट विजयगछ ग्राम के रहनेवाले मानसिह नामक कवि की है। इन्हीं कवि का बनाया हुआ एक ग्रथ राजविलास भी है जो अब नागरीप्रचारिणी सभा के द्वारा प्रकाशित हो गया है। राजविलास में उदयपुराधीश महाराणा राजसिंह के समय का वर्णन है। इसकी रचना स० १७३४ में आरभ हुई थी

और इसकी समाप्ति का सवत् यद्यपि इसमें नहीं दिया है तथापि अनुमान से १७३७-३८ प्रतीत होता है। महाराणा राजसिंह स० १७०८ में गद्दी पर बैठे थे और स० १७३७ में उनका स्वर्गवास हुआ, जैसा कि राजविलास से विदित होता है। मानसिंह कवि के विषय में सुना गया है कि उन्होंने जयपुर में जाकर बिहारी से साक्षात् किया था और उनसे कुछ पढा भी था। जयपुर से लौटते समय वे बिहारी के कुछ दोहे लिख ले गए थे। उदयपुर में पहुँचकर उन्होंने वे दोहे जहाँ तहाँ सरदारों को सुनाए और होते होते कुछ दोहे महाराणा के कान तक भी पहुँचे। बिहारी के दोहों की ख्याति उदयपुर में पहले ही पहुँच चुकी थी और वहाँ के सामत, सरदार इत्यादि उनको बड़े चाव और प्रसन्नता से पढते-सुनते थे। उन दोहों की उत्तमता पर महाराणा ने प्रसन्न होकर मानसिंह को राजसभा में बुलाया और आज्ञा दी कि जयपुर जाकर तुम सतसई की पुस्तक प्राप्त कर लाओ। जब मानसिंह किसी प्रकार सतसई ले आए तो उसके दोहे बड़े कठिन देख पड़े। अतः महाराणाजी ने मानसिंह को बिहारी का शिष्य समझकर सतसई की टीका करने की आज्ञा दी। मानसिंह ने अपनी बुद्धि के अनुसार यह टीका आज्ञा पर रचकर प्रस्तुत की। यद्यपि टीका तो बहुत ही सामान्य श्रेणी की है तथापि महाराणा ने प्रसन्न होकर मानसिंह को अपनी सभा के कवियों में समाविष्ट कर लिया। फिर मानसिंह ने राजविलास ग्रंथ की रचना आरंभ की। इस टीका में रचनाकाल कुछ नहीं दिया है, पर यदि ऊपर लिखे हुए जनवाद में कुछ सार है तो इस टीका का रचनाकाल स० १७३४ के पूर्व समझना चाहिए।

'इस टीका की प्रति जो हमारे पास है वह प्रतापविजय नामक किसी व्यक्ति के द्वारा अजमेर में सवत् १७७२ में लिखी गई थी। इस टीका के अंत में यह लिखा हुआ है—

'इति श्रीबिहारीदासकृत सतसई दोहरा. सपूर्ण सतसहीरा टीका कृत बिजैगछे कवि मानसिंहजू टीका कीनी उदयपुर मध्ये ग्रथाग्रथ ४५०५ इति सख्या संपूर्णः शुभ भवतुः ॥ श्रीश्रीसवत् १७७२ वर्षे वैशाख बदि कृष्णपक्षे द्वितीयाया लिखत प्रतापविजय लिपी कृत ॥ अजमेर मध्येः ॥ श्रीरस्तुः ॥श्री॥

'इस बात पर ध्यान देना यहाँ आवश्यक है कि इस टीका के अंत में टीकाकार का नाम मानसिंह लिखा है, पर राजविलास के अंत में उसके कर्ता का नाम मान कवि पाया जाता है। इससे दोनों ग्रंथकारों के एक ही होने में

कुछ संशय उपस्थित हो जाता है। पर यह भिन्नता लेख मात्र की प्रतीत होती है क्योंकि टीका के अंत में उसका उदयपुर में रचा जाना तथा उसकी प्रति-लिपि सं० १७७२ में अजमेर में लिखा जाना स्पष्ट ही कहा है। इस बात पर विचार करने से कि उस समय छापे का प्रचार नहीं था और देश भर में विशेषतः उदयपुर प्रांत में बड़ी अशांति फैली हुई थी, उक्त टीका के उदयपुर से अजमेर तक लिखते लिखाते पहुँचने में ४० वर्ष के अनुमान लग जाना परम संगत तथा स्वाभाविक था। अतः उस टीका का रचनाकाल सं० १७३० तथा १७३४ के बीच में मानना अनुचित नहीं है। यदि यह अनुमान संगत समझा जाय और उक्त टीका के उदयपुर ही में रचे जाने पर ध्यान दिया जाय और उसी के साथ जनश्रुति भी मिला ली जाय तो दोनों ग्रंथकारों के एक ही होने में संशय नहीं रह जाता। मानसिंह ने अपने विषय में न तो सतसई की टीका ही में कुछ कहा है और न राजविलास में। इस विषय में दोनों ग्रंथकारों की प्रकृति भी एक ही प्रतीत होती है।'

रत्नाकरजी को यदि ज्ञात होता कि विजयगच्छ जैनों के विशेष वर्ग का नाम है और मान कवि तथा मानसिंह दोनों ही जैन हैं तो दोनों के एकत्व की स्थापना में उन्हें कदाचित् बहुत बड़ा प्रमाण मिल जाता। **बिहारीसतसई** के टीकाकार जैन हैं यह पुष्पिका के विजयगच्छ शब्द से ही नहीं उस टीका के सिरनामे से भी प्रकट है। नागरीप्रचारिणी सभा की खोज में उक्त **सतसई** की टीका का सिरनामा है—

'श्री जिनाय नमः। अथ सतसै लिख्यते। भगति करुणा अगः। दोहरा॥ मेरी भव बाधा हरो। राधा नागर सोई। जा तन की झाँई परै॥ स्याम हरित दुति होई॥'

पुष्पिका में उदयपुर का उल्लेख यथापूर्व है—

'सतसही टीका कवि श्रीविजैगच्छै कवि श्रीमानसिंघजू कीनी श्रीउदैपुर मध्ये॥ श्रीरोहिठ नगरे लषीता संवत् १८२३ वर्षे फागुण वदि ६ सूर्यवासरे श्रीग्रंथाग्रंथ ४०४५ श्रीपूज्य श्री१०८ श्रीजेसिंहजी तत् शिष्य श्रीभगवानजी वाचनार्थे लिषतु ऋषि उरजा लिपीकृत॥ उपरली पोथी माहै वै जु माझीवे॥'

—( खोज, ०१–७५ )।

सतसई की इस टीका का एक हस्तलेख उदयपुर में सवत् १७७३ का लिखा है ( देखिए **राजस्थान में हस्तलिखित ग्रंथों की खोज**, प्रथम भाग, पृष्ठ ७३ )

रत्नाकरजी की उक्त मान्यता का खंडन सबसे प्रथम श्रीमोतीलालजी मेनारिया ने अपने अनुसधान-प्रबंध **राजस्थान का पिंगल-साहित्य** में किया—

'बिहारीलाल ने कुल दोहे कितने लिखे थे इसका ठीक ठीक पता नहीं लगता। बिहारीसतसई की जो अनेकानेक हस्तलिखित प्रतियाँ देखने में आती हैं उनमें ७०१ से लेकर ७५३ तक दोहे मिलते हैं। उक्त बीकानेर वाली प्रति में ७२६ और उदयपुर वाली प्रति में ७२१ दोहे हैं। चद्रमणि उपनाम कोविद कवि, जैन टीकाकार मानसिंह और प्रेम कवि ने बिहारीसतसई के दोहाँ की सख्या क्रमशः ७००, ७१३, ७५० बतलाई है। स्वर्गीय रत्नाकरजी ने इनमें से मानसिह की सख्या को ठीक माना है जिसका कारण उन्होंने यह बताया है कि यह टीका स० १७३४ से पूर्व अर्थात् बिहारी के जीवनकाल में रची गई थी। इसी आधार पर उन्होने अपने बिहारीरत्नाकर में ७१३ दोहे रखे हैं। परतु यहाँ उनसे भूल हुई है। इस भूल का कारण यह है कि उन्होने राजविलास के कर्ता मानसिह और बिहारी सतसई की टीका के रचयिता मानसिह इन दोनो को एक व्यक्ति मान लिया है और राजविलास का जो रचनाकाल ( स० १७३४ ) है लगभग वही बिहारीसतसई की टीका का भी स्थिर किया है। परतु असल में ये दो भिन्न व्यक्ति हैं जैसा कि मिश्रबधुविनोद से पाया जाता है। इनका रचनाकाल क्रमशः स० १७३४ और सं० १७७० है।'

रत्नाकरजी ने बिहारी का स्वर्गारोहण काल स० १७२१ माना है।*

इसलिए मानसिह की टीका बिहारी के जीवनकाल में रची गई यह रत्नाकरजी का पक्ष नहीं है। मानसिंह की **सतसैया** की टीका स० १७७० में बनी यह भी कोरा अनुमान ही है। यह अनुमान उन्होंने इस आधार पर लगाया है कि इसके दो हस्तलेख सं० १७७२ और स० १७७३ के मिलते हैं। इसलिए मानसिह की टीका का रचनाकाल अनुमान से स० १७७० है—

'मिश्रबंधुओं ने इन दोनों मानसिंहों को दो भिन्न व्यक्ति माना है, परंतु उन्होंने एक दूसरा भ्रम पैदा कर दिया है। वह यह कि बिहारीसतसई के टीकाकार मानसिंह का रचनाकाल सं० १८२३ लिख दिया है जो एक भारी भूल है। क्योंकि बिहारीसतसई की टीका की दो ऐसी हस्तलिखित प्रतियाँ मिली हैं जो सं० १८२३ से बहुत पहले की लिखी हुई हैं। एक की पुष्पिका ऊपर उद्धृत की जा चुकी है। दूसरी उदयपुर के सरस्वतीभंडार में है।

* देखिए 'कवि बिहारी', पृष्ठ ३८०—सवत् १७२१ में परमधाम सिधारे।

उसका लिपिकाल सं० १७७३ है। अतः मिश्रबंधुओं का बताया हुआ संवत् ठीक नहीं है। अनुमानतः इनका रचनाकाल सं० १७७० है।'

मिश्रबंधुओं की भूल का कारण स्पष्ट है। उन्होंने इस कवि के विवरण में खोज के विवरण का उल्लेख किया है—

'नाम—( $\frac{६३८}{१}$ ) मानसिंह जैन।

ग्रंथ—बिहारीसतसई की टीका।

रचनाकाल—१८२३ [ खोज १६०१ ]।

विवरण—विजैगढ, उदयपुर के निवासी थे।'

खोज के विवरण में उक्त टीका का लिपिकाल स० १८२३ है जिसे उन्होंने रचनाकाल मान लिया है। दूसरी भूल यह भी हुई कि 'विजयगच्छ' को 'विजयगढ' कर दिया है।

मेनारियाजी ने इतने पर भी दोनों कवियों की पृथक्ता में मिश्रबधुओं को प्रमाण माना है। रहा सं० १७७०। उसके सबध में उनका अनुमान **राजविलास** के प्रस्तुत संस्करण की भूमिका में और स्पष्ट हुआ है—

'उल्लिखित बिहारीसतसई की टीका की दो प्राचीन लिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं। इनमें एक स० १७७२ की और दूसरी स० १७७३ की लिखी हुई है। इनके आधार पर बिहारीसतसई के टीकाकार मानसिंह का आविर्भावकाल* सं० १७७० के आसपास ठहरता है।'

सं० १७७० को जिस आधार पर मानसिंह का कविताकाल माना गया है वह पुष्ट नहीं है। यदि मानसिंह १७७० में वृद्ध हों तो उनका जन्म-समय १७१०-१५ तक जा सकता है। फिर १७३४ में उनका रचना करना भी संभव हो सकता है। इसलिए यह आधार इतना पुष्ट नहीं है जिसके बल पर रत्नाकरजी के निष्कर्ष को आँच पहुँचे।

जिस अंश पर स्वयम् रत्नाकरजी ने कुछ सदेह किया है उस पर बल दिया जा सकता था अर्थात् यह कहा जा सकता था कि **राजविलास** के रचयिता हैं मान कवि और **बिहारीससई** के अनुवदयिता हैं मानसिंह। काशी नागरीप्रचारिणी सभा में सुरक्षित **राजविलास** के हस्तलेख में तीसरे विलास के अतिरिक्त सब विलासों की पुष्पिका में कवि का नाम 'मान कवि' ही दिया गया है।

---

* आविर्भावकाल का प्रयोग यहाँ जन्मकाल के अर्थ में नहीं, कविताकाल या रचनाकाल के अर्थ में है।

हस्तलेख-चित्र, संख्या १

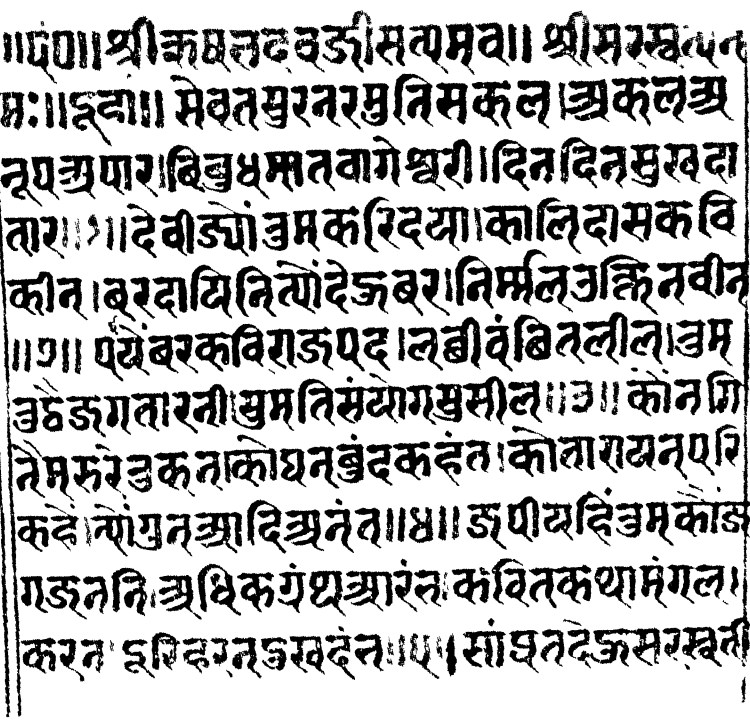

॥ॐ॥ श्रीकृष्णदेवजीसत्यभवा॥ श्रीमन्मत्त
मः॥१॥ सेवतसुरनरमुनिसकल॥अकलअ
नूपअणा॥बिबुधमतवागेश्वरी॥दिनदिनसुखदा
तार॥२॥देवीड्यो॥उमकरिदया॥कालिदासकवि
कीन॥बरदायिनित्योंदेजबर॥निर्मलउक्तिनवीन
॥३॥ पद्यंबरकविराजपद॥लह्योवंछितलील॥उम
उठेजगतारनी॥युमतिसंयोगसुसील॥४॥कोनजि
नेमरेउकनकोघनबुंदकहंत॥कोलाखनएरि
कदे॥योगुनआदिअनंत॥५॥जणीयदिंउमकोंड
गजननि॥अधिकगंथआरंभ॥कवितकथामंगल॥
करन॥इहिदगनउखदेन॥६॥सांपतदेजसरस्वती

[ सरस्वती भवन उदयपुर में सुरक्षित राजविलास की सं० १७४६ की हस्तलिखित प्रति का प्रथम पृष्ठ ]

हस्तलेख-चित्र, संख्या १

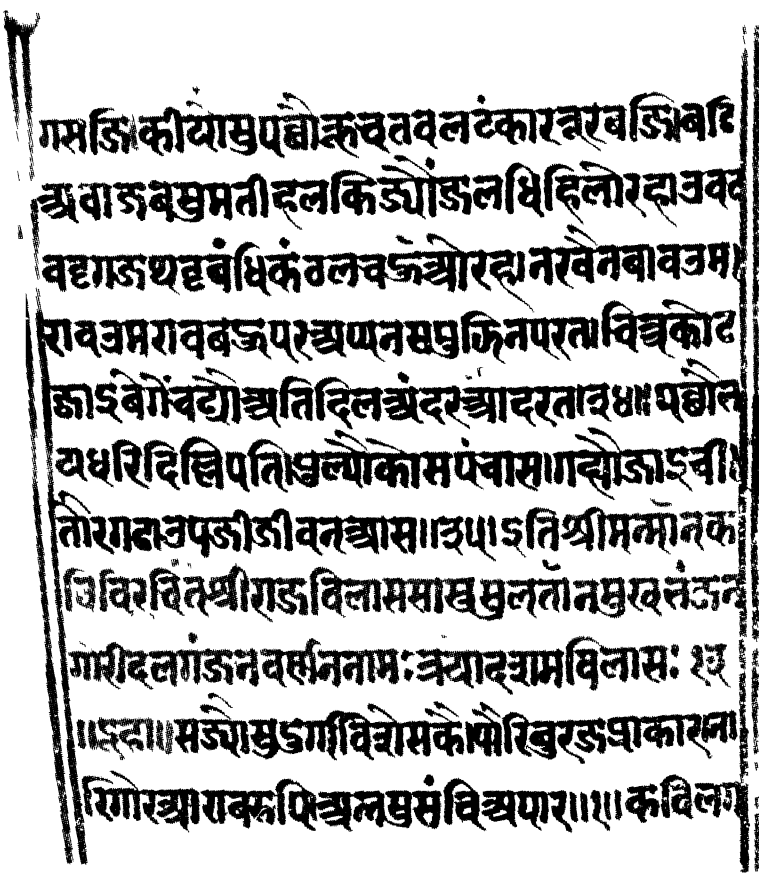

[ सरस्वती भवन उदयपुर में सुरक्षित राजविलास की स० १७४६ की
हस्तलिखित प्रति के बीच का एक पृष्ठ ]

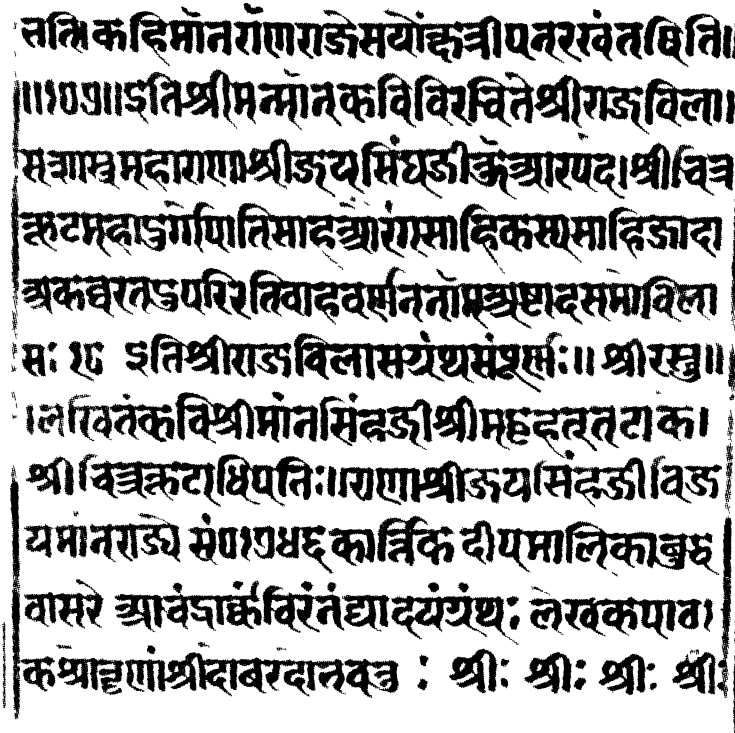

[ सरस्वती भवन उदयपुर में सुरक्षित राजविलास की स० १७४६ की हस्तलिखित प्रति का अंतिम पृष्ठ ]

मेनारियाजी द्वारा संपादित प्रस्तुत संस्करण में विलासों की पुष्पिका नहीं दी गई है। उन्होंने जो प्रतिलिपि भेजी है वह वर्तमानकालिक वर्णविन्यास को छोड़कर उदयपुरवाले हस्तलेख की हूबहू अनुलिपि है। जैसा उनके कथन से पता चलता हे। उदयपुरवाले जिस हस्तलेख के आधार पर उन्होंने प्रस्तुत संस्करण का सपादन किया है उसके सबध में वे भूमिका में लिखते हैं–

'उदयपुर के सरस्वतीभडार में राजविलास की एक हस्तलिखित प्रति सुरक्षित हे। यह सं० १७४६ की लिखी हुई है और इस ग्रंथ की प्राचीनतम अथवा मूल प्रति है। इसकी पुष्पिका में इस ग्रंथ के रचयिता का नाम मानसिह दिया हुआ है जिससे विदित होता है कि मानजी का पूरा नाम मानसिह था और कविता में ये अपना नाम कवि मान लिखा करते थे।'

उदयपुर के सरस्वतीभडार में सुरक्षित उक्त हस्तलेख स० १७४६ में लिखा गया, इसलिए वह **राजविलास** की मूल प्रति कथमपि नहीं हो सकता। मूल प्रति तो **राजविलास** के निर्माणकाल ( स० १७३४-३७ ) के आसपास लिखी गई होगी। १७४६ में तो मूल प्रति की या मूल प्रति की अनुलिपि की प्रतिलिपि या अनुलिपि ही हो सकती है। इस आशका के निवारण के लिए उक्त हस्तलेख के आरभ, मध्य और अत के पृष्ठों के फोटोचित्र मँगवाए गए, जो मेनारियाजी के सौजन्य से शीघ्र ही प्राप्त हो गए। वे तीनों इसमें यथा स्थान छापे गए हैं। उनके देखने से स्पष्ट है कि **राजविलास** के तेरहवें विलास की पुष्पिका ( देखिए हस्तलेख-चित्र स० २ ) और अट्ठारहवें विलास की पुष्पिका ( देखिए हस्तलेख-चित्र स० ३ ) में कर्ता का नाम स्पष्ट 'मान कवि' दिया हुआ है। इसलिए सभावना है कि अन्य विलासों की पुष्पिका में भी मान कवि नाम ही होगा। हस्तलेख के अतिम पृष्ठ के चित्र ( देखिए हस्तलेख-चित्र स० ३ ) में कर्ता 'मान कवि' के अनतर उक्त हस्तलेख के लेखक (लिपिकर्ता) का नाम कवि श्रीमानसिह दिया हुआ है। **राजविलास** के कर्ता 'मान कवि' और उक्त हस्तलेख के लिपिकर्ता 'मानसिंह' दोनों को मेनारियाजी ने एक ही माना है। अतिम पृष्ठ का वह अश यहाँ आधुनिक नागरी लिपि में अवलोकनार्थ उद्धृत भी कर दिया जाता है—

'इति श्रीमन्मॉनकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे महाराणाश्रीजयसिहजी कुँआरपदे। श्रीचित्रकूटमहादुर्गे पातिसाहऔरगसाहिकस्य साहिजादा अकब्बर तदुपरि रतिवाह वर्णन नॉम अष्टादसमोविलासः १८ इति श्रीराजविलास ग्रथ सपूर्णः ॥ श्रीरस्तु ॥ लिखितं कवि श्रीमानसिंहजी श्रीमद्बृहत्तटाके। श्रीचित्र-

कूटाधिपतिः ॥ राणा श्रीजयसिहजी विजयमानराज्ये सं० १७४६ कार्तिक दीपमालिका बुद्धवासरे आचद्रार्क्क नद्यादय ग्रथः लेखकपाठकश्रोतृणा श्रीदो वरदो भवतुः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः ।'

इसके अवलोकन से स्पष्ट है कि मान कवि ने जिस समय **राजविलास** की रचना की उस समय महाराणा श्रीजयसिहजी 'कुँआरपद' पर थे अर्थात् उस समय वे राजा नहीं हुए थे, युवराज या राजकुमार मात्र थे। पर श्रीमानसिंह ने जब उक्त हस्तलेख लिखा ( अर्थात् स० १७४६ में ) तब वे श्रीचित्रकूटाधिपति राणा श्रीजयसिह थे। उनके 'विजयमान राज्य' में बृहत् तटाक पर लिपिकर्ता ने हस्तलेख का लेखन किया तथा उक्त संवत् की कार्त्तिक बदी दीपमालिका ( दीवाली ) को बुध के दिन उसे समाप्त किया।

श्रीराजसिहजी का देहात सं० १८३७ में कार्त्तिक सुदी दशमी को हुआ था और श्रीजयसिह की गद्दीनशीनी पिता के देहात पर कुरज ( जिसे राजप्रशस्ति में कडज लिखा है ) गाँव में हुई। वे उस समय उसी गाँव में थे जहाँ उन्हें महाराणा श्रीराजसिंह के देहावसान का समाचार मिला।*

महाराणा श्रीजयसिह का देहावसान सं० १७५५ में आश्विन बदी चतुर्दशी को हुआ था।†

श्रीमानसिह के सबध में उक्त पुष्पिका के आधार पर यह सभावना की जा सकती है कि वे कदाचित् मान कवि द्वारा ग्रथ समाप्त करने के अवसर पर भौतिक शरीर धारण कर चुके थे और सुबोध भी थे। इसी पुष्पिका में ये 'कवि' नाम से अभिहित हैं और 'श्री' और 'जी' से भी अलकृत हैं। 'बृहत् तटाक' पर रहते भी थे। इससे इनके जैन होने की सभावना की जा सकती है। इस प्रकार रत्नाकरजी ने जो जनश्रुति दी है उससे यदि इस हस्तलेख के लिखक ( लिपिकर्ता ) 'कवि श्रीमानसिहजी' का सबध हो तो असभव नहीं।

इस प्रकार **राजविलास** के कर्ता मान कवि और **बिहारीसतसई** के टीकाकार मानसिह भिन्न भिन्न नामों के ही कारण भिन्न भिन्न व्यक्ति प्रतीत होते हैं। दोनों के पार्थक्य में मेनारियाजी की यह स्थापना भी मानी जा सकती है कि **राजविलास** की व्रजभाषा और **बिहारीसतसई** की टीका की व्रजभाषा में भी साम्य नहीं है।

---

* देखिए श्रागौरीशकर हीराचद ओझा कृत 'उदयपुर राज्य का इतिहास', भाग २, पृष्ठ ५८१।

† देखिए वही, पृष्ठ ५९४।

अब मान कवि के अन्य नाम के संबंध में मेनारिया जी की सभावना पर विचार करना है। वे लिखते हैं—

'परतु यह मानसिंह नाम भी इनका वास्तविक नाम मालूम नहीं पड़ता। कदाचित् इनका वास्तविक नाम कल्याणशाह था। इस बात का सकेत इन्होंने अपने इस राजविलास ग्रथ में एक स्थान पर किया है—

'कलियान साहि कविमान कहि सक्कर चौकी च्चीर युत।

'ऐसा लगता है कि इनका असली नाम कल्याणशाह था जिसको दीक्षा के पश्चात् बदलकर मानसिंह कर दिया गया था। इस मानसिंह नाम का लघुरूप मान है जिसके आगे कवि लगाकर इस नाम का प्रयोग इस ग्रथ में स्थान स्थान पर किया गया है।'

सुविधार्थ जिस छद में 'कलियानसाहि' शब्द प्रयुक्त है उसको यहाँ पूरा उद्धृत कर दिया जाता है—

सु जलेबी हेसमी अकबरी और अमृती।
पुरी तिनॅगिनी सोंठि मटी साबुनी निखूती।
फेनी फुनि रेवरी स्वाद घनखड सॅठेली।
मुरकी बरफी पीलसार घनसार सॅभेली।
कलियॉनसाहि कबि मान कहि सक्कर चौकी च्चीरयुत।
मिष्टान बिबिधि पोषे सुभट जॅवत जो जिहिं चित रुचत॥

—आठवॉ विलास, छदस० ६५।

जिस प्रसग से यह छप्पय सबद्ध है उसमें मिठाइयों का उल्लेख है। इस छप्पय में भी मिठाइयों की नामावली है। यहां 'कलियानसाही' उसी प्रकार मिठाई का नाम है जिस प्रकार 'बालूसाही' और 'करनसाही'। मिठाई का ऐसा नाम जिसमें उत्तरपद 'साही' हो **राजविलास** में एक और है—

सु अमृति मोदक लाखणसाहि। गिंदौरनि पैरनि गंज सु चाहि।
पतासे हेसमि खंड पॅगेरि। तिनगनि केसरिपाक सु हेरि॥

यहॉ 'लाखणसाहि' किसी मिठाई का ही नाम जान पड़ता है। मिठाइयों के ऐसे नाम व्यक्तियों के नाम से सबद्ध हैं या कल्याण, लाखण, करन, बालू आदि का कोई अन्य अर्थ है यह अनुसधान-सापेक्ष है। मोहन-भोग और सोहनहलवा में मोहन और सोहन गुणवाचक विशेषण हैं या नाम, 'अकबरी' बडे के अर्थ में है या वह भी किसी 'अकबर' नाम से सबद्ध

ऐसी जिज्ञासाएँ होती हैं। जो हो, 'कल्याणशाह' मान कवि का नाम उक्त उद्धरण से सिद्ध नहीं होता। यदि यही माना जाए कि 'मानकवि' का नाम पहले कल्याणशाह था तो यह बात समझ में नहीं आती कि किसी कल्याणशाह का नाम जैन मत में दीक्षित होने पर 'मानसिंह' क्यों रखा गया। किसी व्यक्ति का नाम मतदीक्षा के पूर्व मानसिंह हो तो जैन मत में प्रविष्ट होने पर उसका वही (मानसिंह) नाम ज्यों का त्यों रह सकता है, कल्याणशाह मानसिंह हो जायें इसमें असगति ही प्रतीत होती है। इसलिए 'मानसिंह' नामक व्यक्ति 'मान कवि' से पृथक् है। मान कवि को जो भाट, चारण या कवीश्वर कहते रहे हैं वह इसी से कि हिंदीवालों ने उन्हें पहले कभी जैन नहीं समझा था। मान कवि जैन थे यह सूचना सबसे प्रथम श्रीमेनारियाजी ने दी है। **राजविलास** के दोनों हस्तलेखों का आरंभ 'श्रीऋषभदेवजी सत्यमेव' से होता है इससे यह कहा जा सकता है कि कदाचित् मान कवि ने जैन मत के कारण ही श्रीऋषभदेवजी का आरंभ में स्मरण किया है। अन्यथा **राजविलास** के मगलाचरण में सरस्वती की विस्तृत प्रार्थना रचयिता के जैन होने की कल्पना की विरोधिनी है। पुष्पिकाओं में भी 'मान कवि' मात्र लिखा है। विजयगछ आदि किसी वर्ग का भी उल्लेख नहीं है।

अतः **राजविलास** के उदयपुरवाले हस्तलेख की अंतिम पुष्पिका के 'मानसिंह' चाहे **बिहारीसतसई** के टीकाकार न हों पर वे 'मान कवि' नहीं हैं। 'मान कवि' का नाम 'मान कवि' ही था, 'मान' उनका मूल नाम और 'कवि' कविता करने के कारण। वे 'जती' ( अर्थात् साधु, जैन यति ) थे इसका पता श्रीमेनारियाजी ने **राजस्थानी बातों** से सबसे पहले दिया है।

श्रीमेनारियाजी ने सवत् २०११ में सभा को सूचित किया कि उसने 'राजविलास नामक जो ग्रथ प्रकाशित किया है उसका सपादन ठीक ढग से नहीं किया गया है। उसमें स्थान स्थान पर अनेक भूलें भरी हुई हैं। कहीं एक शब्द को तोड़कर दो तीन टुकडे कर दिए गए हैं और कहीं दो तीन शब्दों को मिलाकर एक शब्द बना दिया गया है। इसके अलावा इस ग्रथ में इसके रचयिता मान कवि तथा इसके चरित्रनायक महाराणा राजसिंह के विषय में भी कुछ नहीं लिखा गया है। पुस्तक की भूमिका में जो कुछ लिखा गया है वह भी अत्यत दोषपूर्ण है। इस ग्रथ की मूल हस्तलिखित प्रति उदयपुर में सुरक्षित है। यदि कभी इसका नवीन सस्करण निकालने की आवश्यकता हो तो मैं इसका प्रामाणिक सस्करण तैयार कर सकूँगा, जिसमें भूमिका, शब्दकोश आदि सब रहेंगे।'

आकर-ग्रंथमाला की योजना ग्रंथावलियाँ या रचनावलियाँ प्रकाशित करने की है। श्रीमेनरियाजी के प्रस्ताव के अनुसार उसमें 'मान-ग्रंथावली' प्रकाशित करने का निश्चय किया गया। पर मान कवि का केवल एक ही ग्रंथ **राजविलास** प्राप्त है इसलिए **मान—राजविलास** शीर्षक से यह पुस्तक इस ग्रथमाला में छापी जा रही है। **राजविलास** का प्रथम सस्करण 'नागरी प्रचारिणी ग्रथमाला' के अंतर्गत प्रकाशित हुआ था और उसका सपादन प्राचीन हिंदी-काव्य के परम मर्मज्ञ विद्वान् लाला भगवानदीनजी ने किया था। इस ग्रथ की भूमिका में उन्होंने ग्रथ के निर्माणकाल की सीमा का विचार किया है, कुछ राजसिंहजी का परिचय दिया है, प्रत्येक विलास का सक्षेप दिया है और अत में निश्छल भाव से लिखा है—

'सभा ने इस पुस्तक का सपादनभार मुझे सौपा और मैने सहर्ष स्वीकार किया। मै युक्त प्रदेश का निवासी हूँ। इस पुस्तक मे राजपूताना के शब्दो की भरमार है। मैने अपनी शक्ति भर तो कसर कोताही नही की, परतु बहुत सभव है कि इसमे अनेक अशुद्धियाँ हो गई हो। इसलिये पाठको से नम्रता-पूर्वक निवेदन है कि उन अशुद्धियो के कारण सभा पर दोषारोपण न करे वरन् उसका कारण मेरी अल्पज्ञता ही समझें। यदि सुविज्ञ पाठक इतनी कृपा और करे कि अशुद्धियो से सभा को सूचित कर दे तो मुझे पूर्ण आशा है कि द्वितीय संस्करण में सभा उनपर ध्यान देकर सशोधन कर देगी।'

प्रस्तुत सस्करण में मान कवि के सबध में कोई विशेष जानकारी नहीं दी जा सकी। इस सबध में इतिहास मौन है। श्रीमेनारियाजी ने अथक परिश्रम किया, पर कोई सामग्री ही नहीं मिली। राजसिह के सबध में कुछ अधिक विवरण दिया गया है। विलास का सक्षेप कुछ विस्तृत करके दिया गया है। साथ ही उसकी भाषा, छद, अलकार, वर्णनचातुर्य पर भी विचार किया है। इस सस्करण में श्रीमेनारियाजी ने जो परिष्कार किया है उससे लालाजी की आत्मा को सतोषलाभ होगा, यदि इसका हिंदी - साहित्य में उचित समादार हुआ।

वास्तविकता यह है लालाजी के सामने जो हस्तलेख था वह परवर्ती काल का था। उसके पाठ और उदयपुरवाले हस्तलेख के पाठ मे अतर है। पर अंतर बहुत अधिक नहीं है। लालाजी के सस्करण में कुछ तो हस्तलेख के पाठभेद हैं, कुछ मुद्रण की अशुद्धियाँ हैं और कुछ सपादन के कारण अंतर हुआ है। जो शब्द इधर उधर हुए हैं उनमें मुद्रणदोष अधिक है, कुछ स्थलों

पर हस्तलेख ने धोखा दिया है। लालाजी के समय में बहुत सी स्थितियाँ स्पष्ट नहीं थीं। आज उनमें से कुछ स्पष्ट हो रही हैं। राजस्थान में भूतकालिक ऐसे प्रयोग प्राचीन पिंगल-काव्य में प्रायः देखे जाते हैं जो 'गात' होते हैं। ऐसे प्रयोग **पृथ्वीराजरासो** में भी हैं—

१—एक सूर सामंत दंत दंती **उप्पारिग**।

२—**भरहरिग** खान खंधार लखि बर बिरुद्द दाहरतनय।

३—बहुदल अरितन गजिकै तिन **संघारिग** सूर।

४—जोति जोतिहि **संपातिग**।

इस प्रकार के सयुक्तक्रियावाले प्रयोग अवधी की कुछ बोलियों में चलते हैं। 'आइ ग, चलि ग, उठि ग, बैठ ग, आदि। 'ग' का ऐसा लध्वत प्रयोग पूर्वी भाषा की विशेषता है वह राजस्थान के पिंगल में कैसे घर कर गया, भाषाविज्ञानियों को इसका शोध करना चाहिए।

**राजविलास** में भी ये 'गात' रूप मिलते हैं—

अति पावस **उल्हरिग करिग** कठल धुरकाली।
आसा बधि असाढ हरष करसणि कर हाली।
बद्दल दल **बित्थुरिग** चारु चपला चमकतह।
गज्ज घोष गभीर मोर गिरि सोर मचतह।
आदीत सोम छबि **आवरिग** घण आयौ घमसारण घण।
बरसत बुद बड़ बड़ बिमल जलधर बल्लभ जगत जण॥
( १-३६ )

साथ ही 'यात' रूप भी मिलते हैं—

बद्दल चढत बजत सुबाइ। **उल्हरिय** सुपावस समय आइ॥
( १-४० )

इन दो प्रकार के प्रयोगों में अतर है। 'करिय' और 'करिग' में स्पष्ट अंतर तो यह है कि पहले में एक क्रिया है दूसरे में दो क्रियाएँ हैं। 'ग' धातु अकर्मक है इसलिए 'करि' सकर्मक के रहते भी संयुक्त रूप अकर्मक हो गया। इसलिए इसका प्रयोग केवल कर्तरि होता है। भूतकाल में अन्यत्र जैसी क्रिया होगी वैसा ही प्रयोग होगा। अर्थात् अकर्मक होने पर 'कर्तरि' और सकर्मक होने पर 'कर्मणि'। इसे खड़ी बोली के उदाहरण से स्पष्ट कर लिया जा सकता है—

१—श्याम ने किया—सकर्मक क्रिया—कर्मणि प्रयोग।

२—श्याम गया—अकर्मक क्रिया—कर्तरि प्रयोग।

३—श्याम कर गया—अकर्मक संयुक्त क्रिया—कर्तरि प्रयोग।

खड़ी बोली में सकर्मक क्रिया का भूतकाल में प्रयोग करने से 'कर्मणि' प्रयोग की स्थिति 'ने' चिह्न से स्पष्ट हो जाती है। कर्ता में यहाँ तृतीया का प्रयोग है कर्मणि प्रयोग होने से। कर्तरि प्रयोग में कर्ता में प्रथमा का प्रयोग होता है। व्रजी में कर्मणि या कर्तरि प्रयोग होने पर 'ने' चिह्न विकल्प से आता है। प्राचीन कविता में इसका प्रयोग यत्र तत्र ही है। प्रायः 'ने' का प्रयोग नहीं है, पीछे की रचना में कुछ मिलता है—

१—स्याम कियौ—सकर्मक क्रिया—कर्मणि प्रयोग।
२—स्याम ने कियौ— ,, ,, ।
३—स्याम गयो—अकर्मक क्रिया—कर्तरि प्रयोग।
४—स्याम करि गयो—( सयुक्त ) ,, ,, ।

अवधी में 'ने' चिह्न नहीं है, ऐसे कर्मणि प्रयोग भी नहीं हैं। वहाँ कर्तरि प्रयोग ही ऐसी स्थिति में होते हैं। जायसी और तुलसी के ग्रथों में कर्मणि प्रयोग कहीं कहीं ऐसी स्थिति में मिलते हैं। उसका कारण व्रजी-काव्य के अध्ययन का पडा हुआ प्रभाव है।

लालाजी के समय में 'करिग' आदि रूपों पर ध्यान नहीं गया था। उन्होंने दोनों रूप देखे तो सामान्यतया उनकी धारणा यही हुई कि हस्तलेख के 'लिखक' ने 'य' के स्थान पर 'ग' लिख दिया है—भूल या भ्रम से। 'ग' और 'य' की लिखावट में भी बहुत थोडा अतर है। बस उन्होंने 'गात' रूपों को 'यात' कर दिया। फिर भी कहीं कहीं ये रूप उनकी दृष्टि से ओझल होकर रह गए हैं। जैसे—

दिन दस **करिग** मुकाम खग्गबल रचि षलषडह।—( १७-३८ )

**राजविलास** में ही नहीं, **पृथ्वीराजरासो** में भी उपर्युक्त स्थिति है। उसमें भी 'यात' रूप मिलते हैं—

१—दुहु दिसि **बढ़िय** सनेह सब सजोगिय बर कति।
२—सिंघ सँघारयौ पिष्पि षिभिझ सिवन **बबकारिय**।
३—कनै लक दधि मझ कोह कचन लै **आइय**।

ध्यान देने योग्य बात है कि 'गात' रूप 'पिंगल' की रचना में ही मिलते हैं, 'डिंगल' की रचना में नहीं। हाँ, पिगल की समस्त रचनाओं में ये रूप नहीं आए हैं। इसलिए पिगल और डिंगल की रचना का एक अतर यह भी हुआ कि जिसमें 'गात' रूप मिलते हैं वह निश्चित 'पिंगल' की रचना है।

श्रीमेनारियाजी ने इस संस्करण में यथास्थान दोनों रूप ज्यों के त्यों रहने दिए हैं। इनके अर्थ भी 'अभिधान' में ठीक दिए हैं। 'आवरिग' का अर्थ 'फिर गई, छिप गई' और 'उलहरिग' का अर्थ 'उमड़ आया'। 'उमड़ गया' होता तो मूल के और निकट होता।

प्राचीन हस्तलेखों का ठीक ठीक पढना कठिन समस्या है। हिंदी में अभी इस विषय में विशेष श्रम और शोध अपेक्षित है। कुछ विचारणीय स्थितियों का सकेत मात्र यहाँ पर्याप्त होगा। 'व' और 'ब' का अतर हस्तलेखों में केवल नीचे बिंदी लगाकर करते थे। जिस 'व' के नीचे बिंदी न हो वह पवर्गीय 'ब' और जहाँ हो ( व़ ) वह अंतःस्थ 'व' होता है। ऐसे ही 'य' और 'ज' का अतर भी बहुत्र केवल बिंदी से करते हैं। जहाँ नीचे बिंदी हो ( य़ ) वह अंतःस्थ और जहाँ बिंदी न हो वहाँ चवर्गीय 'ज' होता था। 'य' और 'ज' के सबध में विशेष ढिलाई रहती थी। **'राजविलास'** में 'द्य' के रूप में दुहरा 'य' भी लिखा गया है। कहीं तो वह 'द्+य' के लिए है और कहीं 'य्य' अर्थात् 'ज्ज' के लिए। उद्यम, द्यौस, खद्योत में पहली स्थिति है। पर लज्ज, रज्ज, कज्ज, भज्ज, गज्ज, बज्ज के 'ज्ज' के लिए भी 'द्य' यही रूप प्रयुक्त है। 'अद्य' ( १–१४६ ) तो सदिग्ध हो सकता है, पर गद्यत ( १–२०२ ) गज्जत है, सद्यन ( १०–१० ) सज्जन है, उद्यलं ( १०–४७ ) उज्जलं है, कद्यहिँ-सद्यहिँ ( १०–१४ ) कज्जहिँ-सज्जहिँ हैं। इसमें 'ज्ज' स्वतंत्र भी ठीक ठीक लिखा मिलता है। ऐसी ही स्थिति असयुक्त 'ज' की भी है। युत ( १०–७४ ) को जुत मानने में सदेह हो सकता है पर योति ( २–१०३ ) जोति, निय ( १०–७८ ) निज और यल ( १०–११४ ) जल असदिग्ध हैं।

'यल' का अर्थ मेनारियाजी ने यों किया है—'यल=( सं० इला ) पृथ्वी' पर जहाँ 'यल' प्रयोग है वहाँ 'पृथ्वी' अर्थ में 'भू' शब्द भी पड़ा है—

जहँ तहँ सु कुंड बर बापिका, बन उपबन सरबर सलित।
**भू** नारि सीस जनु भालि **यल**, नगर उदयपुर चैन नित॥

यहाँ कवि जो उत्प्रेक्षा कर रहा है वह यह है—यत्र तत्र सुंदर कुंड, श्रेष्ठ बावड़ी, वन उपवन में सरोवर और नदियाँ ऐसी जान पड़ती हैं मानो भू-नारी के मस्तक ( उदयपुर ) पर भाल-जल ( पेशानी पर पसीने की बूँदें ) हों। नगर में नित्य चैन है।

प्राचीन हस्तलेखों में प्रायः द्वित्व रूप इकहरा ही लिखा मिलता है। महाप्राण वर्ण होने पर कभी कभी पूर्वगामी अल्पप्राणयुक्त भी उसका प्रयोग

मिलता है, 'झला जश् झशि' सूत्र को सार्थक करते हुए। कहीं कहीं द्वित्व के पूर्वगामी वर्ण पर एक खड़ी पाई लगी मिलती है या बिंदी लगा देते हैं। लख्ख या लक्ख के लिए 'लख' बहुधा लिखा गया है। प्रस्तुत सस्करण में इसे कहीं कहीं 'लाख' कर दिया गया है ( ८–१५२ )। ऐसे ही पख्खर या पक्खर के बदले प्रायः 'पखर' मिलता है।

कुछ द्वित्व या अल्पप्राण-महाप्राण के सयुक्त रूप विलक्षण लिखे जाते थे। उनसे भ्रम होना स्वाभाविक है। 'क' का द्वित्व दो प्रकार से लिखा जाता है। कहीं 'क्क' अर्थात् 'क्व'सा लिखा मिलता है और कहीं 'क्क' क ऊपर और नीचे। जहाँ पहला रूप है उसे दीनजी के सस्करण में कहीं कहीं 'क्क' पढ लिया गया है। कई सयुक्त वर्णों के दो दो रूप चलते हैं। 'ज्झ' आधुनिक भी लिखा गया है और उसका पुराना रूप 'ष्म' पढ लिया जा सकता है। दीनजी ने वैसा कहीं कहीं पढा भी है। इसमें और 'भ' के द्वित्व पुराने रूप में बहुत थोड़ा अतर है, वह ष्म पढा जा सकता है। यह अपने वर्तमान रूप में भी मिलता है। यही स्थिति 'च्छ' की है। इसका परवर्ती वर्तमान रूप से मिलता-जुलता स्वरूप भी है और प्राचीन रूप भी। 'बिभत्सय' में 'बिभच्छय' तो ठीक है, पर 'कत्थि' के स्थान पर 'कच्छि' आदि रूप विचारणीय हैं। दो स्थितियाँ हो सकती हैं। या तो पुरानी भाषा में 'च्छ' वाले रूप ही चलते रहे हाँगे या लिखक के भ्रम से ऐसा हो गया होगा। कहीं कहीं लिखावट से भी भ्रम होता है। 'त्र' को 'त्त' समझ लेना सभव है। यदि चित्र को कोई चित्त पढ ले तो बहुत बड़ा अंतर हो जाए।

हस्तलेख में एक ही शब्द के कई रूप मिलते हैं। जैसे पुष्प शब्द के लिए पुप्फ, पुष्फ और पुष्प। तीनों रूप या तो चलित रहे हांगे या लिखने-वाले ने अपने भ्रम से ऐसा कर दिया होगा। अन्य कई शब्दों में इस प्रकार के कई रूप मिलते हैं। इन सबका पाठातर-सकलन करना अनुपयोगी समझा गया है। हिंदी के हस्तलेखों की हस्तलिपि के विभिन्न स्वरूपों के आधार पर लिपिसंबधी बहुत कुछ अनुसधान हो सकता है। इधर अभी हिंदीवालों की अभिरुचि नहीं हुई है। श्रीमेनारियाजी ने **राजविलास** का सपादन सभा के साहित्यविभाग को ध्यान में रखकर किया था। आकर-ग्रथमाला में पाठशोध पर विशेष ध्यान रखने का निश्चय है, पाठातर-सकलन के साथ ही अपेक्षित अभिधान भी मूल के संकेत सहित संयुक्त करने का संकल्प है। श्रीमेनारियाजी ने पाठशोध पर पर्याप्त ध्यान दिया है और उदयपुरवाली

प्रति का पाठ हूबहू देने का प्रयास किया है, फिर भी आकर-विभाग की प्रणाली से कुछ भेद होने से उस साँचे में उसे ढाल दिया गया है। प्राचीन ग्रंथों के उच्चारण को प्रकट करने के लिए जहाँ तक साध्य हो चन्द्रबिंदु का प्रयोग करना उचित है। इसलिए उनके सपादन में इस विभाग के सहायक ने परिश्रमपूर्वक उसकी योजना कर दी है। 'अभिधान' में मूल के सकेत नहीं थे। इसकी योजना भी विशेष प्रयास द्वारा विभाग के सहायक ने की है। **राजविलास** में प्रयुक्त छदो का उल्लेख तो भूमिका में यथास्थान किया गया है, पर उन छदों का स्वरूपविवेचन नहीं। यह कार्य भी विभाग के सहायक ने अभिनिवेशपूर्वक संपन्न किया है। उनके सपादन में पाठातरों की योजना का अवकाश ही नहीं था। उन्हें एक ही हस्तलेख मिला था। यह उचित समझा गया कि सभा में जो हस्तलेख है उसके पाठातर भी इसमें सकलित कर दिए जायँ। लालाजी का संपादित मुद्रित सस्करण इस सस्करण के प्रकाशित हो जाने से निष्पन्न हो जाएगा इसलिए उस सस्करण के पाठ भी पाठातर में सकलित कर दिए गए हैं।

प्राचीन ग्रथों के सपादन में मतभेद की स्थिति बहुत्र नहीं तो यत्र तत्र होती ही है। श्रीमेनारियाजी ने जो कुछ मनोयोगपूर्वक किया है उसमें मतभेद के स्थल हैं। पर कवि राजस्थान का है और श्रीमेनारियाजी भी राजस्थान के हैं। सदेशीयता के नाते इस विषय में उन्हीं का प्रामाण्य अधिक है। उन्होंने जिस लगन के साथ यह कार्य संपन्न किया है उसके लिए वे धन्यवादार्ह हैं। आकर-विभाग के सहायक श्रीरामबली पाडेय एम० ए० ने ग्रंथ में 'उक्तानुक्तदुरुक्तार्थव्यक्तीकरण' के द्वारा जो उसका वार्त्तिक किया उसके लिए वे आशीर्वादार्ह हैं। श्रीरामदास शास्त्री एम० ए०, साहित्यरत्न भी पाठातर की पूर्ति करके आशीर्वाद के भाजन हैं। मुझे सुख है कि गुरुदेव लाला भगवानदीनजी ने जिस कार्य का अनुष्ठान किया था उसकी पूर्णाहुति में मेरा भी कुछ योग है।

वाणी वितान भवन,
ब्रह्मनाल, वाराणसी–१
शारदीय नवरात्र, २०१५

**विश्वनाथप्रसाद मिश्र**
सपादक,
आकर-ग्रथमाला

# निवेदन

जैन कवि मानसिंह-रचित इस राजविलास ग्रंथ का प्रथम संस्करण आज से ठीक ४५ वर्ष पूर्व सन् १९१२ में प्रकाशित हुआ था और उसका संपादन स्वर्गीय लाला भगवानदीनजी ने किया था। यह इस ग्रंथ का द्वितीय संस्करण है।

प्रथम संस्करण का पाठ किस हस्तलिखित प्रति के आधार पर निर्धारित किया गया था, वह प्रति कहाँ से प्राप्त हुई थी, उसका लिपिकाल क्या था इत्यादि बातों का अब कुछ पता नहीं है। परंतु उस अज्ञात प्रति पर आधारित प्रथम संस्करण का जो पाठ मुद्रित रूप में हमारे सामने है उसे देखने से साफ झलकता है कि वह प्रति बहुत अशुद्ध थी, और किसी कुशल लिपिकार के हाथ की लिखी हुई नहीं थी। क्योंकि उसमें (प्रथम संस्करण में) पाठ की बहुत गड़बड़ी देखने में आती है। कहीं पंक्तियों की पंक्तियाँ गायब हैं, कहीं एक शब्द के दो तीन टुकड़े हो गए हैं, कहीं दो तीन शब्द मिलकर एक शब्द बन गया है और कहीं शब्द के शब्द बदलकर दूसरे रख दिए गए हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित एक छंद को देखिए। प्रथम संस्करण में यह इस रूप में छपा है—

सगति जो कीजियै तेह केही सती। धन्य कहि यैति के होइ ज्यों धनवती॥ आपणा उभय कुल जेण अजुवालय। धाइ राखी घणु दूध धवरा बिय॥ बाधए हच्छ हत्थेण सो बालय। सुदराकार तनु गोरष कुमालयं॥४०॥

—पृष्ठ २१

इसका वास्तविक रूप इस प्रकार है—

सगति जे कीजियै तेह केही सती।
धन्य कहियै तिके होइ ज्यौं धनवती॥
आपणौं उभय कुल जेण अजुवालिय।
परम पतिव्रता पण एम तिम पालय॥१३६॥
कोटि ते भूप नायन्न कारावियै।
धाइ राखी घणु दूध धवरावियै॥
बाधए हत्थ हत्थेण सो बालय।
सुदराकार तनु गोरस कुमालय॥१४०॥

—द्वि० स० पृष्ठ १५

इसके अतिरिक्त प्रथम संस्करण में प्रूफ-संशोधन संबंधी त्रुटियाँ भी बहुत रह गई थीं और इन कतिपय कारणों से उसका कुछ ऐसा रूप बन गया था

प्रति का पाठ हूबहू देने का प्रयास किया है, फिर भी आकर-विभाग की प्रणाली से कुछ भेद होने से उस साँचे में उसे ढाल दिया गया है। प्राचीन ग्रंथों के उच्चारण को प्रकट करने के लिए जहाँ तक साध्य हो चद्रबिंदु का प्रयोग करना उचित है। इसलिए उनके सपादन में इस विभाग के सहायक ने परिश्रमपूर्वक उसकी योजना कर दी है। 'अभिधान' में मूल के सकेत नहीं थे। इसकी योजना भी विशेष प्रयास द्वारा विभाग के सहायक ने की है। **राजविलास** में प्रयुक्त छदो का उल्लेख तो भूमिका में यथास्थान किया गया है, पर उन छदों का स्वरूपविवेचन नहीं। यह कार्य भी विभाग के सहायक ने अभिनिवेशपूर्वक सपन्न किया है। उनके सपादन में पाठातरों की योजना का अवकाश ही नहीं था। उन्हें एक ही हस्तलेख मिला था। यह उचित समझा गया कि सभा में जो हस्तलेख है उसके पाठातर भी इसमें सकलित कर दिए जायँ। लालाजी का सपादित मुद्रित सस्करण इस सस्करण के प्रकाशित हो जाने से निष्पन्न हो जाएगा इसलिए उस सस्करण के पाठ भी पाठातर में सकलित कर दिए गए हैं।

प्राचीन ग्रथों के सपादन में मतभेद की स्थिति बहुत्र नहीं तो यत्र तत्र होती ही है। श्रीमेनारियाजी ने जो कुछ मनोयोगपूर्वक किया है उसमें मतभेद के स्थल हैं। पर कवि राजस्थान का है और श्रीमेनारियाजी भी राजस्थान के हैं। सदेशीयता के नाते इस विषय में उन्हीं का प्रामाण्य अधिक है। उन्होंने जिस लगन के साथ यह कार्य संपन्न किया है उसके लिए वे धन्यवादार्ह हैं। आकर-विभाग के सहायक श्रीरामबली पाडेय एम० ए० ने ग्रंथ में 'उक्तानुक्तदुरुक्तार्थव्यक्तीकरण' के द्वारा जो उसका वार्त्तिक किया उसके लिए वे आशीर्वादार्ह हैं। श्रीरामदास शास्त्री एम० ए०, साहित्यरत्न भी पाठातर की पूर्ति करके आशीर्वाद के भाजन हैं। मुझे सुख है कि गुरुदेव लाला भगवानदीनजी ने जिस कार्य का अनुष्ठान किया था उसकी पूर्णाहुति में मेरा भी कुछ योग है।

वाणी-वितान भवन,
ब्रह्मनाल, वाराणसी–१
शारदीय नवरात्र, २०१५

**विश्वनाथप्रसाद मिश्र**
संपादक,
आकर-ग्रथमाला

# निवेदन

जैन कवि मानसिंह-रचित इस राजविलास ग्रंथ का प्रथम संस्करण आज से ठीक ४५ वर्ष पूर्व सन् १९१२ में प्रकाशित हुआ था और उसका संपादन स्वर्गीय लाला भगवानदीनजी ने किया था। यह इस ग्रंथ का द्वितीय संस्करण है।

प्रथम संस्करण का पाठ किस हस्तलिखित प्रति के आधार पर निर्धारित किया गया था, वह प्रति कहाँ से प्राप्त हुई थी, उसका लिपिकाल क्या था इत्यादि बातों का अब कुछ पता नहीं है। परंतु उस अज्ञात प्रति पर आधारित प्रथम संस्करण का जो पाठ मुद्रित रूप में हमारे सामने है उसे देखने से साफ झलकता है कि वह प्रति बहुत अशुद्ध थी, और किसी कुशल लिपिकार के हाथ की लिखी हुई नहीं थी। क्योंकि उसमें (प्रथम संस्करण में) पाठ की बहुत गड़बड़ी देखने में आती है। कहीं पंक्तियों की पंक्तियाँ गायब हैं, कहीं एक शब्द के दो तीन टुकड़े हो गए हैं, कहीं दो तीन शब्द मिलकर एक शब्द बन गया है और कहीं शब्द के शब्द बदलकर दूसरे रख दिए गए हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित एक छंद को देखिए। प्रथम संस्करण में यह इस रूप में छपा है—

सगति जो कीजियै तेह केही सती। धन्य कहि यैति के होइ ज्यों धनवती॥ आपणा उभय कुल जेण अजुवालय। धाइ राषी घणु दूध धवरा विय॥ बाधए हच्छ हत्थेण सो बालय। सुदराकार तनु गोरप कुमालय॥४०॥

—पृष्ठ २१

इसका वास्तविक रूप इस प्रकार है—

सगति जे कीजियै तेह केही सती।
धन्य कहियै तिके होइ ज्यौं धनवती॥
आपणौं उभय कुल जेण अजुवालिय।
परम पतिव्रता पण एम तिम पालय॥१३६॥
कोटि ते भूप नायन्न कारावियै।
धाइ राखी घणु दूध धवरावियै॥
बाधए हत्थ हत्थेण सो बालय।
सुदराकार तनु गोरस कुमालय॥१४०॥

—द्वि० स० पृष्ठ १५

इसके अतिरिक्त प्रथम संस्करण में प्रूफ-संशोधन संबंधी त्रुटियाँ भी बहुत रह गई थीं और इन कतिपय कारणों से उसका कुछ ऐसा रूप बन गया था

कि उसे पढकर इस ग्रंथ के ऐतिहासिक एवम् साहित्यिक महत्त्व का ठीक ठीक मूल्याकन करना कठिन था।

प्रस्तुत संस्करण राजविलास की एक प्रामाणिक हस्तलिखित प्रति के आधार पर तैयार किया गया है। यह प्रति उदयपुर के राजकीय पुस्तकालय, सरस्वती भवन में सुरक्षित है और इस ग्रथ की मूल तथा प्राचीनतम प्रति है। इसमें १० × ६ इच साइज के १६८ पन्ने हैं। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियाँ और प्रत्येक पक्ति में २४।२५ अक्षर हैं। इसकी लिखावट सुवाच्य एवम् अक्षर बडे बडे लगभग आध इच आकार के सुंदर रूप में हैं। प्रति सफेद रग के कागज पर पक्की काली स्याही में लिखी गई है। परतु प्रत्येक विलास का शीर्षक, प्रत्येक छद का नाम व उसकी क्रम-सख्या तथा प्रत्येक विलास के नीचे की पुष्पिका लाल स्याही में अकित हैं। यह प्रति स० १७४६ में महाराणा जयसिंह के राजत्वकाल में लिपिबद्ध हुई थी। इसकी अतिम पुष्पिका का लेख यह है—

'इति श्रीराजविलास ग्रथ सपूर्णः ॥ श्रीरस्तु ॥ लिखित कवि श्रीमानसिहजी श्रीमद्बृहत्तटाके। श्रीचित्रकूटाधिपतिः राणा श्रीजयसिहजी विजयमान राज्ये स० १७४६ कार्तिक दीपमालिका बुद्धवासरे आचद्रार्क चिरनद्यादयं ग्रथः ले [illegible] श्रीदो वरदो भवतुः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः।'

उपर्युक्त प्रति के अलावा राजविलास की दूसरी कोई प्रति कहीं से प्राप्त नहीं हुई। अतएव इस सस्करण के लिए मैने केवल इसी एक प्रति का उपयोग किया है और यह हूबहू इसकी अनुकृति है।

इसके प्रारभ में एक भूमिका जोड़ दी गई है जिसमें इस ग्रथ के रचयिता का इतिवृत्त, इसकी कथावस्तु का साराश, इसके ऐतिहासिक तथा साहित्यिक महत्त्व आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इस ग्रंथ में राजस्थानी शब्दों का प्रचुर प्रयोग हुआ है। अतएव इसमें प्रयुक्त राजस्थानी के कुछ बहुत कठिन शब्दों का एक कोश इसके अंत में लगा दिया गया है। आशा है, इस नवीन रूप में यह संस्करण पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

पुस्तक में कहीं कहीं छापे की भूलें रह गई हैं। अतः एक शुद्धिपत्र इसके अत में लगा दिया गया है। यदि पाठक इस शुद्धिपत्र के अनुसार पहले इसमें सशोधन कर बाद में इसे पढना प्रारभ करेंगे तो इससे उनको अपने अध्ययन में सुविधा होगी।

उदयपुर ( राजस्थान )
२६-११-१६५८

विनीत
**मोतीलाल मेनारिया**

*

# भूमिका

हिंदीसाहित्य के निर्माण में जैन कवियों का भी बहुत हाथ रहा है। अनेक जैन कवियों ने अपनी रचनाओं द्वारा हिंदी के भंडार की श्रीवृद्धि की है। इन जैन कवियों की अधिकांश रचनाओं में जैनधर्म का निरूपण किया मिलता है और साहित्यिक सौंदर्य उनमें कम पाया जाता है। परंतु कुछ ऐसे ग्रंथ भी हैं जो साहित्य एवम् इतिहास की दृष्टि से भी बड़े महत्त्व के हैं। ऐसे ग्रंथों में मान कवि का प्रस्तुत ग्रंथ राजविलास भी है।

हिंदीसाहित्य के इतिहास-ग्रंथों में कवि मान का विशेष इतिवृत्ति नहीं मिलता और थोड़ा बहुत जो मिलता है वह भी संदिग्ध है। मिश्रबंधु-विनोद में इनका कविताकाल सं० १७१७ बतलाया गया है और कहा गया है कि इन्होंने राजविलास नाम का एक ग्रंथ बनाया जिसमें महाराणा मान-सिंह का वर्णन है[1]। परंतु मिश्रबंधुओं के ये दोनों ही कथन निर्मूल हैं। मेवाड़ में मानसिंह नाम के कोई महाराणा ही नहीं हुए हैं, न राजविलास का रचनाकाल ही सं० १७१७ है। इसका लिखना सं० १७३४ में प्रारंभ हुआ था।

लेकिन इधर राजस्थानीसाहित्य में दो एक स्थानों पर इनका उल्लेख मिलता है जिससे इनके व्यक्तिगत जीवन पर थोड़ा सा प्रकाश पड़ता है। कविराजा बाँकीदास ने एक स्थान पर इनके विषय में लिखा है—

'मानजी जती राजविलास नाँव रूपक राणा राजसिंह रौ वणायौ[2]'।

इससे मालूम पड़ता है कि ये कोई जैन कवि थे, न कि चारण या भाट जैसा हिंदी के कुछ विद्वानों ने अनुमान किया है।

उदयपुर के सरस्वती भंडार में राजविलास की एक हस्तलिखित प्रति सुरक्षित है। यह सं० १७४६ की लिखी हुई है और इस ग्रंथ की प्राचीनतम अथवा मूल प्रति है। इसकी पुष्पिका में इस ग्रंथ के रचयिता का नाम 'मान-

---

१—दूसरा भाग, पृ० ४६२

२—राजस्थानी बाताँ, बात-संख्या १११

सिंह' दिया हुआ है जिससे विदित होता हे कि मानजी का पूरा नाम मान-सिंह था और कविता में ये अपना नाम कवि मान लिखा करते थे।

परतु यह मानसिंह नाम भी इनका वास्तविक नाम मालूम नहीं पड़ता। कदाचित् इनका वास्तविक नाम कल्याणशाह था। इस बात का सकेत इन्होंने अपने इस राजविलास ग्रथ में एक स्थान पर किया है—

"कलियान साहि कवि मान कहि, सक्कर चौकी छीर युत"

—आठवाँ विलास, पद्य ६५।

ऐसा लगता है कि इनका असली नाम कल्याणशाह था जिसको दीक्षा के पश्चात् बदलकर 'मानसिंह' कर दिया गया था। इस 'मानसिंह' नाम का लघु रूप 'मान' है जिसके आगे 'कवि' लगाकर इस नाम का प्रयोग इस ग्रथ में स्थान-स्थान पर किया गया हे।

मानसिंह नाम के एक और जैन कवि मेवाड़ में (?) हो गये हैं जिनकी लिखी 'बिहारीसतसई की टीका' प्रसिद्ध है। स्वर्गीय बाबू जगन्नाथ-दास रत्नाकर ने 'बिहारीसतसई' के टीकाकार इन मानसिंह और राजविलास के रचयिता मानसिंह दोनों को एक व्यक्ति माना है और अपनी इस कल्पना के आधार पर बिहारीसतसई की टीका का निर्माणकाल स० १७३४ निर्धारित किया है।[3] परतु यह उनकी भ्राति है बिहारीसतसई के टीकाकार मानसिंह और राजविलास के कर्ता मानसिंह दोनों एक व्यक्ति नहीं हो सकते। क्योंकि इन दोनों की भाषा-शैली सर्वथा भिन्न है। राजविलास के प्रणेता मानसिंह की भाषा बहुत प्रौढ एवम् परिमार्जित है और उसमें सैकड़ों शब्द राजस्थानीभाषा के प्रयुक्त हुए हैं। अर्थात् इनकी भाषा राजस्थानी मिश्रित व्रजभाषा है, शुद्ध व्रजभाषा नहीं है। इसके विपरीत 'बिहारीसतसई' के टीकाकार मानसिंह की भाषा बहुत शिथिल है, और वह प्रायः शुद्ध व्रजभाषा है। उसमें एक शब्द भी कहीं राजस्थानीभाषा का देखने में नहीं आता। उदाहरण लीजिए—

कहा लड़ैते द्रिग करे, परे लाल बेहाल।
कहुँ मुरली कहुँ पीत पट, कहूँ मुकुट बनमाल॥

---

३—नागरीप्रचारिणी पत्रिका भाग ६, अंक १, पृ० १०१–१०३

टीका—श्री ब्रंदावन मैं सकल सखीन के संग गनगोर पुजवे कुं श्री राधा जु फुल पाती लेतुं है। तिहाँ श्री कनइया जु सकल सखीन के संग ठाढ़े मुरली बजावत है। तिहाँ श्री राधा जु को सरुप देखकै बिककै कनइया जु मुरछित होय गिर परै। तब श्री राधा जु सुं सकल सखी कहै है। कहा०। अहो श्री राधे तुम श्री ऐसे लाड़ले नैन कीधे। परे०। इनको देखत ही श्री कनइया गिर परै हैं। कहुँ०। कितहुँ मुरली गिरी है। कितहुँ पीताबर गिर्‌यो है। कहुँ०। कितहुँ मुगट वै गयौ है। अर कितहुँ फुलन की चौसर गिरी है।[४]

—बिहारी-सतसई की टीका

राति बोली हुई पुब्ब दिसि रत्ताड़ी।
बेगि आवे जिते भूप सू बट्टड़ी॥
तितै हारीत रिषि गगनै गति हल्लियौ।
बोल बापै तदा आइ इम बुल्लियौ॥
अहो जोगिद करि उच्चर्‌यौ आपणौं।
थिर थई नाथजी रजसिरि थापणौं॥
रवनि सुनि देव मुनि अप्प ऊभौ रह्यौ।
किजियै भूप तुहि मडि मुख यों कह्यौ॥
मंडियौ मुख तिणौं स्वमुख तंबोलय
नखियौ हेत करि पीक निर्मोलय॥
देखि उच्छिष्ट निज वयण टाली दिय।
लिहिय रिषि मुख तणौं पाय झल्लै लियं॥
कहय रिषि एम तैं बाल किद्धौ किसौ।
अमर हुइ देह नित एह हूंतौ इसौ॥
नेट तो पाय थी राज जायै नहीं।
किद्ध तू भूप मैं एह वाचा कही॥

—राजविलास, पहला विलास, पद्य ५३, ५६

और भी—

सुनत पथिक मुँह माह निस, चलत लुवैं उहि गाम।
बिनु बूझै बिनु ही कहै, जियति बिचारी बाम॥

---

४—उदयपुर के सरस्वती भंडार की हस्तलिखित प्रति, पृ० ५१

टीका—श्री कृष्ण राधा जु सुं कहै है। राजा नल दमयंती रानी को बन मैं सोवत छोंड परदेस गए। तब रानी जाग देखै तो राजा नहीं तब सकल बन मैं फिर फिर देख्यौ। पर राजा पाए नहीं। तब चली चली अपने पीहर आय रही। तब बिरहा अगन तैं चहौंधों लुवैं चलीं। जे जे पंथ आय निकरै तिहाँ माह मैं लुवैं चलत जाने। सो उहाँ ते कोउ पथी जीहाँ राजा नल सराइ मैं आय सोएहिं। तिहाँ और पथीन के आगे लुवैं चलन की बात माह मास मैं सुनी। चल०। वा गाँम लुवैं चलत हैं ता के पीहर के गाँम को नाँम लियो तब। बिन०। जीय०। पथी के बुझै बिना कहे बिना ही राजा नल दमयती कौं तब जीवती जानी। सुख पायौ। इत्यर्थः[५] ॥

—बिहारी-सतसई की टीका

बरी सब्ब बाला, रमा ज्यौं रसाला।
मनी मुत्तिमाला, लही लाख लाला॥
दुरमा दुसाला, हयं हींसवाला।
सरूव सिघाला, पुलै ज्यौं पॅखाला॥
सिगारे सुडाला, महा मत्तवाला।
हलते हठाला, मनौं मेघमाला॥

—राजविलास, पहला विलास पद्य ७१–७३

उल्लिखित बिहारी-सतसई की टीका की दो प्राचीन लिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं। इनमें एक स० १७७२ की[६] और दूसरी स० १७७३ की[७] लिखी हुई हैं। इनके आधार पर बिहारी-सतसई के टीकाकार मानसिंह का आविर्भावकाल सं० १७७० के आस-पास ठहरता है। मिश्रबधु-विनोद में इनका रचनाकाल स० १८२३ बताया गया है जो अशुद्ध है।[८]

कहने का अभिप्राय यह है कि मान कवि का लिखा हुआ यह एक ही ग्रंथ राजविलास अभी तक मिला है और इनकी लिखी बिहारी-सतसई की

---

५—उदयपुर के सरस्वती भडार की हस्तलिखित प्रति, पृ० ६४

६—उदयपुर के सरस्वती भंडार के हस्तलिखित ग्रंथों की सूची, पृ० २३६

७—नागरीप्रचारिणी-पत्रिका, भाग ६, अंक १, पृ० १०२

८—मिश्रबंधु-विनोद, भाग दूसरा, पृ० ७७२

जो टीका बतलाई जाती है वह वास्तव में इनकी लिखी हुई नहीं है। वह इनसे भिन्न मानसिंह नाम के किसी दूसरे कवि की रचना है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है इस राजविलास ग्रंथ का प्रारंभ सं० १७३४ में हुआ था। इस बात का स्पष्ट उल्लेख इस ग्रंथ में दो स्थानों पर हुआ है :—

( १ ) सुभ सवत दस सात, बरस चौतीस बधाई।
उत्तम मास असाढ, दिवस सत्तमि सुखदाई॥
बिमल पाख बुधवार, सिद्धि बर जोग सपत्तौ।
हरषकार रिषि हस्त, रासि कन्या ससि रत्तौ॥

तिन द्यौस मात त्रिपुरा सुतवि, कीनौ ग्रथ मडान कवि।
श्री राजसिंघ महाराण कौ, रचियहिं जस जौं चद रवि॥

—प्रथम विलास, पद्य ३८

( २ ) सवत सु सत्त दह सतक सार,
बच्छर चौतीसम धरि विचार।
सब लोक ऊँक निज निज सचैंन,
आसाढ सेत सत्तमी एँन॥
देवी सु आइ बरदान दीन,
कवि मान ग्रंथ आरभ कीन।
चीतौर धनी कहियै चरित्र,
पढि छंद विविध रचि जस पवित्र॥

—प्रथम विलास, पद्य ५८–५९

इसकी समाप्ति कब हुई, इस बात का निर्देश इस ग्रंथ में नहीं है। लेकिन यह भी एक विचारणीय प्रश्न है। इसमें महाराणा राजसिंह के जीवन संबंधी सं० १७३७ तक की घटनाओं का समावेश हुआ है। महाराणा की आज्ञा से उनके पाटवी कुँवर जयसिंह ने औरंगजेब के शाहजादे अकबर के साथ चित्तौड़ में ठहरी हुई शाही सेना पर उक्त संवत् के आषाढ माह में आक्रमण किया था और उसे वहाँ से मार भगाया था।[९] इस आक्रमण का पूरा विवरण इस ग्रंथ के अंतिम विलास में मिलता है। इसके चार माह बाद

९—राजविलास, अठारहवाँ विलास, पद्य २

अर्थात् कार्तिक महीने में महाराणा की मृत्यु हो गई थी।[१०] लेकिन उनकी मृत्यु का उल्लेख इस ग्रंथ में नहीं है। इससे जान पड़ता है कि सं० १७३७ के आषाढ और कार्तिक माह के बीच किसी समय यह ग्रथ लिखा जा चुका था। क्योंकि यदि यह महाराणा की मृत्यु के बाद समाप्त हुआ होता तो उनकी मृत्यु का उल्लेख इसमें अवश्य किया गया होता। इसके अतिरिक्त इस ग्रथ के अतिम विलास में आशीर्वाद के पॉच 'कलस कवित्त' जो दिए गये हैं[११] उनसे स्पष्ट झलकता है कि उनकी रचना के समय महाराणा राजसिंह विद्यमान थे।

इस हिसाब से इस ग्रथ का निर्माणकाल स० १७३४–३७ ठहरता है।

राजविलास एक ऐतिहासिक काव्य है। इसमें मेवाड़ के महाराणा राजसिह ( प्रथम ) का जीवन चरित वर्णित है। यह अठारह खडों में विभक्त है जिनको विलास कहा गया है। इनका साराश यहॉ दिया जाता है —

पहला विलास—इसमें सरस्वतीवदना के पश्चात् मेवाड़ देश और चित्तौड़ के किले का वर्णन किया गया है। तदनतर महाराणा राजसिह के पूर्व पुरुष महाबली बापा रावल का इतिवृत्त प्रारभ होता है। बापा रावल के वृत्तात में उनके जन्म, बाल्यकाल विवाह आदि विषयक प्रायः सभी महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला गया है। किस प्रकार बापा रावल ने चित्तौड़ के तत्कालीन मौर्यवशी राजा चित्रंग को हराकर उस पर अपना अधिकार जमाया इसकी भी कहानी इसमें कही गई है।

दूसरा विलास—इसमें बापा रावल से लेकर राजसिंह के पिता महाराणा जगतसिंह ( प्रथम ) तक के मेवाड़ के राजाओं की वशावली दी गई है। वंशावली के बाद इसमें महाराणा जगतसिंह के राज्य-वैभव तथा उदयपुर नगर का चित्र खींचा गया है। इस विलास में महाराणा राजसिंह के जन्म का वृत्तान्त भी दिया गया है। और यहीं से इस काव्य का मुख्य विषय आरंभ होता है।

तीसरा विलास—इसमें महाराणा राजसिंह के विवाह का वर्णन है।

---

१०—ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ० ८८८

११—पद्य १०३–१०७

इनका प्रथम विवाह बूँदी नरेश राव छत्रसाल की बड़ी कन्या के साथ हुआ था। उनकी छोटी कन्या जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) के साथ व्याही गई थी। दोनों के विवाह का मुहूर्त एक ही दिन था। दोनों की बरातें जब राजद्वार पर पहुँचीं तब वहाँ तोरण बदाई के सिलसिले में दोनों में कहा-सुनी हो गई। महाराजा जसवंतसिंह ने कहा कि हम हिंदुओं के सिरमौर हैं और पहले हम तोरण बँदाएँगे।[१२] महाराणा राजसिंह ने कहा कि तोरण बंदाई की रस्म पहले हम पूरी करेंगे।[१३] तलवारें खिंचने ही को थीं कि इतने में छत्रसाल वहाँ आ पहुँचे और किसी तरह समझा बुझाकर जसवंतसिंह को शांत किया।[१४] तोरणबदाई की रस्म पहले राणा राजसिंह ने पूरी की, बाद में जसवंतसिंह ने। बड़ी धूमधाम से दोनों का विवाह-संस्कार सपन्न हुआ। विवाह कर महाराणा राजसिंह जब घर लौटे तब उदयपुर के नर-नारियों ने उनका बड़ा स्वागत किया।[१५]

चौथा विलास—इसमें उदयपुर के 'सबरितुविलास' नामक बाग का वर्णन है। इस बाग को राणा राजसिंह ने अपने कुँवरपदे के समय बनवाया था। कवि ने इस बाग का २३ पद्यों में अच्छा वर्णन किया है।

पाँचवाँ विलास—महाराणा राजसिंह स० १७०६ में मेवाड़ की गद्दी पर बैठे थे। इस विलास में उनकी गद्दीनशीनी और उनके व्यक्तित्व का वर्णन है। यह वर्णन अतिरंजनापूर्ण एवम् कुछ स्थानों पर अस्वाभाविक है। कवि ने महाराणा राजसिंह की राम, कृष्ण, शिव, कल्पवृक्ष आदि से उपमा दी है और एक स्थान पर उनको साक्षात् ब्रह्म ही कह दिया है[१६]। इस विलास के अंतिम भाग में कवि ने महाराणा राजसिंह के बडे कुँवर जयसिंह और छोटे कुँवर भीमसिंह के व्यक्तित्व और शौर्य-पराक्रम पर भी थोड़ा सा प्रकाश डाला है[१७]। यह विलास ६३ पद्यों में समाप्त हुआ है।

---

१२—पद्य ८७-८८
१३—पद्य ६०
१४—पद्य ६२-६३
१५—पद्य १०३-१०७
१६—पद्य २१-३६
१७—पद्य ५६-६६

छठा विलास—इस विलास में महाराणा राजसिंह द्वारा की गई मालपुरा की लूट का वर्णन है। राजसिंह के समय में मालपुरा एक बहुत समृद्ध नगर और सैनिक दृष्टि से बड़े महत्व का स्थान था। यह उस समय मुगल बादशाहत का एक सुदृढ थाना भी था। सं० १७१५ में महाराणा राजसिंह ने इस पर आक्रमण किया और लूटपाट मचाकर इसे चौपट कर दिया। महाराणा की यह लूटपाट वहाँ पूरे सात दिन तक रही[१८]। मुगल सिपाही भाग गए और एक बहुत बड़ी धनराशि महाराणा के हाथ लगी।

सातवाँ विलास—इसमें महाराणा राजसिंह का रूपनगर ( किशनगढ ) की राजकन्या चारुमती के साथ विवाह का वर्णन है। रूपनगर के राजा रूपसिंह का देहात होने पर उसका पुत्र मानसिंह उसका उत्तराधिकारी हुआ। बादशाह औरंगजेब ने उसकी बहिन चारुमती की सुंदरता का हाल सुनकर उससे विवाह करना चाहा। मानसिंह को भी विवश होकर यह संबध स्वीकार करना पड़ा। लेकिन चारुमती औरंगजेब के साथ विवाह करना नहीं चाहती थी। इसलिए उसको जब इस बात का पता लगा कि उसका विवाह औरंगजेब के साथ किया जा रहा है तब वह बहुत दुखी हुई और उसने महाराणा राजसिंह की शरण ली। उसने महाराणा को एक पत्र भेजा। इस पत्र में उसने अपनी मनोव्यथा का पूरा हाल लिखते हुए प्रार्थना की कि आप मेरे साथ विवाह कर मेरे धर्म की रक्षा करें[१९]। इस पर महाराणा राजसिंह एक बड़ी सेना लेकर रूपनगर पहुँचे और चारुमती से विवाह कर उसे अपने यहाँ ले आए।

आठवाँ विलास—इसमें महाराणा राजसिंह की रूपनारायण की यात्रा तथा राजसमुद्र झील का वर्णन है। रूपनारायण का मंदिर उदयपुर से कोई ५३ मील उत्तर दिशा में है। यह यात्रा महाराणा राजसिंह ने स० १७१७ में की थी। वहाँ से लौटते समय उन्होंने मार्ग में राजनगर के पास गोमती नदी को देखा और वहाँ एक तालाब बनवाने के विषय में अपने सरदार सामंतों से पूछताछ की। इस पर उनके राजपुरोहित ने उनसे कहा कि आपके पूर्वज महाराणा अमरसिंह ने यहाँ तालाब बनवाने का काम आरंभ किया था पर नदी के वेग के कारण तालाब का बाँध टिक न सका।

---

१८—पद्य ३१

१९—पद्य २५-३७

यदि किसी तरह यहाँ तालाब बनवाया जा सके तो वह समुद्र की बराबरी का होगा और उससे आपका नाम अमर हो जायगा [२०]। महाराणा उस समय कुछ न बोले और उदयपुर लौट आए। इसी वर्ष मेवाड़ में भयकर अकाल पड़ा और मेवाड़ की प्रजा भूख के मारे त्राहि त्राहि करने लगी। तब महाराणा ने अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए राजसमुद्र को बँधवाना आरभ किया। इसका प्रारभ सं० १७१७ में और इसकी प्रतिष्ठा स० १७३२ में हुई थी। इसकी प्रतिष्ठा के समय अनेक ब्राह्मण, चारण, भाट आदि राजसमुद्र पर एकत्र हुए थे जिनको महाराणा की ओर से कई हजार घोडे, कई हजार हाथी, कई गाँव और अतुल्य धन दान में दिया गया था[२१]।

नवाँ विलास—इसमें कवि ने मेवाड़ से हटकर तत्कालीन मारवाड़ ( जोधपुर राज्य ) की राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। उस समय जोधपुर राज्य पर महाराजा जसवतसिंह का राज्य था। दिल्ली के राज सिहासन को प्राप्त करने के लिए जब मुगल सम्राट शाहजहाँ के पुत्रों में झगड़ा हुआ तब जसवतसिंह ने दारा का पक्ष लिया था। इसलिए औरगजेब इनसे बहुत अप्रसन्न था। परतु जसवतसिह को इसकी कुछ भी परवा न थी। औरगजेब के बादशाह बन जाने पर भी वे उसके विरुद्ध बने रहे और उसकी नीति का विरोध करते रहे। एक बार जब वे अहमदाबाद में थे तब बादशाह ने उनके लिए एक सिरपाव भेजा और दिल्ली आकर मिलने के लिए लिखा। परतु जसवतसिंह ने वह सिरपाव किसी दूसरे को दे दिया और दिल्ली में बादशाह के समुख उपस्थित होने से इनकार कर दिया। इस तरह जसवतसिंह और औरगजेब के बीच वैमनस्य चलता रहा। परतु वह इनका बिगाड़ कुछ नहीं सका। न तो वह इनको दिल्ली बुला सका, न इनके राज्य पर हाथ डाल सका। स० '१७३५ में महाराजा जसवंतसिंह की काबुल में मृत्यु हो गई। उनके मरते ही औरगजेब उनके कुटुबियों से बदला लेने का प्रबध करने लगा। अपना एक दूत भेजकर उसने जोधपुर के राठोड़ों को कहलाया कि महाराजा जसवन्तसिंह का इकट्ठा किया हुआ सब धन मुझे सौंप दो। ऐसा करने से जोधपुर की सारी धरती पर तुम्हारा अधिकार बना रहेगा और बादशाह मेहरबानी फरमा कर कुछ और धरती तुमको

---

२०—पद्य १०७-१११

२१—पद्य १५८

देगा[२२]। लेकिन राठौड़ों ने इस बात को स्वीकार नहीं किया। इस पर क्रुद्ध होकर औरंगजेब ने एक सेना अपने शाहजादे अकबर की अध्यक्षता में जोधपुर पर भेजी और खुद भी अजमेर में आ बैठा। मुगल सेना का डेरा जोधपुर से पाँच कोस की दूरी पर था[२३]। राठौड़ों ने एक चालाकी की। उन्होंने शाही फौज के सेनापति को सधि के बहाने से दिन भर बातों में उलझाए रखा और पाँच सौ साँड़ों के सींगों पर जलती हुई मशालें बाँधकर उनके प्रकाश में आधी रात में मुगल सेना पर हमला किया[२४]। इस आकस्मिक आक्रमण से मुगल सेना घबड़ा गई और हारकर पैंतीस कोस पीछे हट गई। इसकी सूचना जब अजमेर में औरंगजेब को मिली तब वह सुन्न रह गया। सोचा, इस झगडे का अत इस प्रकार नहीं होगा। अतः उसने भी चालाकी का बदला चालाकी से लेने का निश्चय किया। एक दूत भेजकर उसने जोधपुर के राठौड़ों को कहला भेजा कि मेरा इरादा आप लोगों से लड़ने का नहीं है। मैं तो केवल आप लोगों की परीक्षा करना चाहता था।[२५] मैंने देख लिया कि आप बड़े वीर और अपनी आन पर डटे रहनेवाले हो। राठौड़ इस लल्लो-चप्पो में आ गए। उन्होंने आगे युद्ध करने का विचार छोड़ दिया और जसवतसिह के दोनों पुत्रों को लाकर बादशाह के नजर किया।[२६] इसी सयय बादशाह ने यह वादा किया कि दिल्ली पहुँचते ही हम जसवंतसिह के बड़े पुत्र ( अजीतसिह ) को जोधपुर का राजा घोषित कर देंगे।[२७] फिर वह अजीतसिंह और राठौड़ दुर्गादास आदि सरदारों को अपने साथ लेकर दिल्ली चला गया। परतु बहुत समय व्यतीत हो जाने पर भी जब इस संबध की कोई राजाज्ञा नहीं निकली तब राठौड़ों को औरगजेब की नीयत में सदेह होने लगा। एकदिन अवसर देखकर उन्होंने बादशाह को उसकी प्रतिज्ञा की याद दिलाई। किंतु बादशाह मुकर गया। उसने कहा कि तुम्हारे और मेरे बीच प्रेम कैसे रह सकता है।

---

२२—पद्य ७३
२३—पद्य ९६
२४—पद्य १००
२५—पद्य १२३-१२४
२६—पद्य १२७
२७—पद्य १२९

तुम्हारा महाराजा जसवंतसिह बहुत अभिमानी था। उसके कारण उज्जैन के युद्ध में मेरी सेना की बहुत हानि हुई थी। धौलपुर में जिस तरह उसने मेरे रनवास को लूटा उसकी याद आज भी मुझे दुःख दे रही है।[२८] फिर भी यदि जसवंतसिह का सब धन तुम मुझे दे दो तो तुम्हारी इच्छा की पूर्ति की जा सकती है। यह सुनते ही राठौड़ सरदारों की कोपाग्नि भड़क उठी। वे दिल्ली की शाही सेना पर टूट पडे। उन्होंने जगह जगह आग लगा दी। शाही सेना हार गई और ये लोग अजीतसिंह को दिल्ली से निकालकर जोधपुर में ले आए। इस घटना से बादशाह और भी झल्ला उठा। उसने एक महती सेना जोधपुर पर भेजी। इस विपत्ति का सामना करने के लिए राठौड़ सरदारों ने महाराणा राजसिह से सहायता लेना निश्चय किया और एक पत्र भेजकर उनसे सहायता की[२९] याचना की। महाराणा ने सहायता देना स्वीकार किया। राठौड़ दुर्गादास, सोनिग आदि सरदार जसवतसिंह के पुत्र अजीतसिंह को लेकर मेवाड़ में चले आए।[३०] महाराणा ने अजीतसिंह की बड़ी आवभगत की और बारह गाँवों सहित केलवे का पट्टा देकर उनको अपनी शरण में रखा।[३१]

दसवाँ विलास--इसमें महाराणा राजसिंह पर औरगजेब की चढाई का वर्णन है। औरगजेब को जब इस बात की सूचना मिली कि राजसिंह ने अजीतसिह को अपनी शरण में रखा है तब उसने फरमान भेजकर महाराणा से अजीतसिह को माँगा।[३२] परतु महाराणा ने उसकी माँग को ठुकरा दिया।[३३] इस पर बादशाह ने उन पर चढाई कर दी। चढाई की सूचना मिलते ही महाराणा ने अपने सरदार सामतों की एक सभा बुलाई और किस स्थान पर शाही सेना का मुकाबला करना चाहिए इस सबध में उनकी राय ली। पुरोहित गरीबदास ने निवेदन किया कि बादशाह के पास सेना बहुत है। अतएव उससे बराबरी के तौर पर लड़ना उचित नहीं है।

---

२८—पद्य १३४

२९—पद्य १८०-१८६

३०—पद्य २०२-२०३

३१—पद्य २०४-२०६

३२—पद्य ६

३३—पद्य ६-२६

महाराणा उदयसिंह और महाराणा प्रतापसिंह सम्राट अकबर की चढाई के समय चित्तौड़ और उदयपुर को छोड़ पहाड़ों में चले गए थे। वे अवसर देखकर दिन अथवा रात में मुगल सेना पर छापा मारते और शाही प्रदेश को बरबाद करते थे। जब शाही सेना से लड़ना होता तब घाटियाँ में जाकर लड़ते थे। इसलिए सम्राट अकबर तथा उसके सेनापतियों को मेवाड़ में कभी पूरी सफलता नहीं मिली। महाराणा अमरसिंह भी इसी नीति का अनुसरण कर जहाँगीर से लड़ते रहे। इस समय आपको भी इन पहाड़ों का लाभ उठाना चाहिए। आपको इन घाटियों में शत्रु-सैन्य को घेरकर उसे भूखों मारना और परास्त करना चाहिए।[३४] महाराणा को यह राय पसद आई। वे अपने सामंतों आदि को लेकर पहाड़ों में चल दिए। पहला मुकाम उदयपुर से पाँच कोस दक्षिण में देवी माता के पहाड़ों में हुआ। यहाँ पानड़वा, मेरपुर, जवास, जूड़ा के भोमिए सरदार तथा पचास हजार भील उनकी सहायता के लिए उनसे आ मिले। महाराणा ने उनको आज्ञा दी कि दस-दस हजार के झुंड बनाकर घाटों तथा नाकों पर बादशाह का रास्ता रोको तथा उसकी रसद और खजाना लूटकर हमारे पास पहुँचाओ। वहाँ से महाराणा नैणवाड़ा पहुँचे।[३५] महाराणा के पहाड़ों में चले जाने की सूचना मिलनेपर बादशाह ने अपने सेनापति को एक बड़ी सेना के साथ उनका पीछा करने के लिए पहाड़ों में भेजा। पर महाराणा के योद्धाओं ने उसे मार भगाया। मुगल सेना की एक टुकड़ी शाहजादे अकबर की अध्यक्षता में उदयपुर नगर में भी पहुँची। परतु उसने नगर को खाली पाया। बादशाह ने चित्तौड़, माडल, पुर, वैराट, भैंसरोड़गढ, मदसौर, नीमच जीरन, ऊठाला, कपासन, राजनगर और उदयपुर में अपने थाने नियत किए।[३६] तब महाराणा को रोष आ गया और उन्होंने अपने सरदारों का युद्ध कर शाही थानों को उठा देने का आदेश दिया।

ग्यारहवाँ विलास—इनमें देसूरी के घाटे की लड़ाई का वर्णन है। इस घाटे की रक्षा के लिए महाराणा ने रूपनगर के सोलकी विक्रम और घाणेराव के राठौड़ गोपीनाथ को नियुक्त किया था।[३७] इन दोनों ने बड़ी

---

३४—पद्य ७१–८०

३५—पद्य ८६-९८

३६—पद्य ११६

३७—पद्य १

वीरता से युद्ध किया और शाही सेना पर विजय पाई एवम् उसका खजाना लट लिया।

बारहवाँ विलास—इसमें उदयपुर की लड़ाई का वर्णन है। इस थाने पर रावत उदयभान[३८] और अमरसिंह चौहान तैनात थे। इन्होंने बहुत थोड़े घुड़सवारों के साथ इस थाने पर आक्रमण किया और मुगल सिपाहियों को मार भगाया। विशेष कर उदयभान ने इस लड़ाई में बड़ी वीरता प्रदर्शित की। उसकी वीरता से प्रसन्न होकर महाराणा ने उसे एक घोड़ा, सिरपाव, तलवार, रत्नजटित कटार, बीड़ा और बारह गाँव दिए।[३९]

तेरहवाँ विलास—इसमें झाड़ोल के पास नेनवाड़ा की लड़ाई का वर्णन है। एक बार शाहजादा अकबर अपने सेनापति हसनअली खाँ के साथ नैनवाड़ा के पहाड़ों में बारह कोस भीतर महाराणा के डेरे तक पहुँच गया। वहाँ उसका रावत महासिंह,[४०] रावत रतनसिंह[४१] और राव केसरी सिंह चौहान[४२] से सामना हुआ। उन्होंने अकबर की सेना को तीन-तेरह कर दिया इस पराजय की खबर लेकर शाहजादा आदि सब के सब बादशाह के पास पहुँचे। वहाँ उन्होंने निवेदन किया कि हिंदू अपने देश में स्थान-स्थान पर झुंड बनाकर संगठित रूप में लड़ते हैं और हमारे लिए ठहरने का कोई उपयुक्त स्थान ही नहीं है। हम पहाड़ों में जहाँ जाते हैं वहाँ वे हमें मारते हैं। इसलिए यहाँ से चित्तौड़ चला जाना चाहिए। इस सलाह के अनुसार बादशाह ने सेना सहित चित्तौड़ की ओर प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचने पर उसे जीवित रहने की आशा हुई।[४३]

चौदहवाँ विलास—इसमें चित्तौड़ के युद्ध का वर्णन है। चित्तौड़ में तोपें आदि लगाकर बादशाह ने अपना मोरचा दृढ कर लिया और प्रण किया कि बिना मेवाड़ को जीते दिल्ली नहीं लौटूँगा। परतु शक्तावत केसरीसिंह के

---

३८—कोठारिया के रावत रुक्मांगद का पुत्र

३९—पद्य २३

४०—बेगूँवाले कालीमेघ का पौत्र

४१—सलूंबर के रावत रघुनाथ सिंह चूँडावत का पुत्र

४२—पारसोली का

४३—पद्य २७-३५

पुत्र गगदास[४४] ने वहाँ उसे चैन नहीं लेने दिया। एक दिन गगदास ने चित्तौड़ के पास ठहरी हुई मुगल सेना पर जोरदार आक्रमणकर उसे तितर-बितर कर दिया और उसके ६ हाथी छीनकर महाराणा के नजर किया। इस पराक्रम से महाराणा का चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। उन्होंने एक घोड़ा, गाँव और सिरपाव देकर गगदास की प्रतिष्ठा बढाई।[४५]

पद्रहवाँ विलास—इसमें महाराणा राजसिंह के द्वितीय कुँवर भीमसिंह के गुजरात के आक्रमण का वर्णन है। जिस समय शाही सेना चित्तौड़ से इधर-उधर बिखर रही थी उसी समय कुँवर भीमसिंह गुजरात पर पिल पड़े और वहाँ ईडर को उजाड़कर अहमदाबाद, जूनागढ, बड़नगर इत्यादि स्थानों में खलबली मचा दी। इस के समाचार जब महाराणा के पास पहुँचे तब वे बहुत हर्षित हुए। परतु इस समाचार के साथ उनके पास गुजरात की प्रजा की तबाही की खबर भी पहुँची थी। इसलिए उन्होंने कुँअर भीमसिंह को घर लौट आने के लिए एक पत्र लिख भेजा।[४६] इस से भीमसिंह को बड़ी निराशा हुई। उनकी इच्छा इतनी जल्दी घर लौटने की नहीं थी। परतु पिता की आज्ञा होने से उन्हें विवश होकर घर लौटना पड़ा

सोलहवाँ विलास—इसमें राठोड़ सॉवलदास[४७] और मुगल सेनापति रुहिल्ला खाँ की लड़ाई का वर्णन है। रुहिल्ला खाँ बदनोर के थाने पर नियुक्त था। उस के पास बारह हजार अश्वारोहियाँ की एक बड़ी सेना थी। महाराणा ने अपने सामंत सॉवलदास को उस पर चढाई करने का आदेश दिया। रुहिल्ला खाँ सॉवलदास के सामने न टिक सका। वह परास्त हुआ और अपना सारा सामान पीछे छोड़ बदनोर से भाग गया। बदनोर पर सॉवलदास का अधिकार हो गया।

सत्रहवाँ विलास – इसमें महाराणा राजसिंह के मत्री दयालदास द्वारा किए गए मालवा के आक्रमण का वर्णन है। दयालदास ने सीधी धार पर

---

४४—बानसी का

४५—पद्य—३६-४१

४६—पद्य ३६-३६

४७—प्रसिद्ध राव जयमल का वशधर और बदनोर का स्वामी

हमला किया और मालवा के अनेक शाही थानों में जगह-जगह आग लगा दी। उसके पहले ही धक्के से शाही सेना विभ्रांत हो उठी और जान बचाकर इधर-उधर भाग निकली। उसके भाग जाने पर दयालदास ने कई स्थानों पर अपने नए थाने स्थापित किए। बादशाह के कई थाने उठा दिए, कइयों को लूट लिया। और लूट में मिली धन सपत्ति प्रजा में बाटकर उसे निहाल कर दिया।[४८] इसकी खबर जब औरगजेब के पास पहुँची तब उसके हृदय को भारी चोट लगी। वह मन ही मन कहनेलगा कि मेरे सबधियों ने मुझे महाराणा के साथ न उलझने के लिए बहुत समझाया था। परतु मै ने उनका कहना नहीं माना। उसका फल भोग रहा हूँ। मेरा सब खजाना खाली हो जायगा, पर महाराणा मेरे सामने नहीं झुकेगा।

अठारहवाँ विलास—यह इस ग्रथ का अतिम विलास है। मेवाड के सभी थानों से शाही अमल उठ गया था। केवल चित्तोड़ अभी तक महाराणा के हस्तगत नहीं हुआ था। वहाँ शाहजादा अकबर ५०००० सेना डाले पड़ा था जिसमें एक हजार हाथी, अनेक घोड, कई बड़ी-बड़ी तोपें रथ आदि थे।[४९] यह सेना वहाँ की प्रजा को बहुत कष्ट दे रही थी। उसने चित्तोड़ के कई प्राचीन महल-मदिरों को भी गिरवा दिया था।[५०] यह दुर्दशा देखकर महाराणा राजसिंह के ज्येष्ठ कुँवर जयसिह एक बड़ी सेना के साथ एक रात्रि को यकायक उस पर जा टूटे। यह आक्रमण स० १७३७ के आषाढ महीने में हुआ था।[५१] इस आकस्मिक आक्रमण से मुगल सेना की भारी हानि हुई। उसके अनेक सिपाही हाथी, घोडे आदि मारे गए। कुँवर जयसिंह के सैनिकों ने शाहजादे अकबर का खजाना लूट लिया, उसके तबू तोड़ डाले और उसका नक्कारा छीन लिया। स्वयं अकबर ने वहाँ से भागकर बड़ी कठिनाई से अपनी जान बचाई।[५२] वह वहाँ से अजमेर चला गया। जिन सरदारों ने इस आक्रमण में भाग लिया था उनको कुँवर जयसिंह ने गाँव और सिरपाव देकर समानित किया।[५३]

---

४८—पद्य २८

४९—पद्य ६

५०—पद्य ७

५१—पद्य २

५२—पद्य ९६-९७

५३—पद्य १००

ऊपर जो साराश दिया गया है उससे स्पष्ट है कि राजविलास एक चरित्रकाव्य है। इसके अधिक भाग में राणा राजसिह की कीर्ति-कथा कही गई है और यही इसका मुख्य विषय है। लेकिन कथा-सूत्र को मिलाने के लिए इसक रचयिता ने इसके प्रथम दो विलासों में मेवाड़ के प्राचीन इतिहास पर भी थोड़ा-सा प्रकाश डाला है। उदाहरण के लिए इसके पहले विलास में बापा रावल का जीवन बृत्तात है और दूसरे विलास में बापा रावल से लेकर राजसिह के पिता महाराणा जगतसिह तक के मेवाड़ के राजाओं की वशावली।

मानजी महाराणा राजसिह के समसामयिक थे। अतएव महाराणा राजसिह के विषय की जो भी बातें उन्होंने अपने इस ग्रथ में बतलाई हैं वे प्रायः ठीक हैं और ठीक होनी भी चाहिए। क्योंकि यह सब कवि का अपनी आँखों देखा हाल है। लेकिन देखना यह है कि महाराणा राजसिह के पहले का जो बृत्तात इसमें दिया गया है वह किस हद तक विश्वसनीय है और इतिहास की कसौटी पर कितना खरा उतरता है।

कवि मान ने बापा रावल का वल्लभीपुर ( सौराष्ट्र ) के राजा गृहादित्य का पुत्र बताया है और लिखा है कि उन्होने मौर्यवशी राजा चित्रग से चित्तौड़ का किला छीना था।[५४] परतु उनके ए दोनों ही कथन भ्रमात्मक है। इतिहासकारों के मतानुसार बापा रावल महेद्र ( द्वितीय ) के पुत्र थे[५५] और उन्होंने राजा मान मोरी से चित्तौड़ का किला लिया था।[५६] वस्तुतः चित्रग मोरी बापा रावल के समकालीन ही नहीं थे, वे बापा से कोई ४०० वर्ष पहले हुए थे। राजविलास में दिया हुआ बापा रावल सबधी सारा बृत्तात जैन कथाओं तथा किवदतियों के आधार पर लिखा गया है और इतिहास की दृष्टि से अत्यत दोष पूर्ण है।

इसके द्वितीय विलास में दी हुई वशावली भी बहुत गड़बड़ है। अध्ययन की सुविधा के लिए इस वशावली को हम निम्नलिखित तीन भागों में विभक्त करते हैं—

---

५४—प्रथम विलास, पद्य १०६, पद्य १२८-१३१

५५—ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ० ४०४

५६—वही: पृ० ४०८

( क ) बापा से लेकर रणसिंह ( कर्णसिंह ) तक।

( ख ) रणसिंह ( कर्णसिंह ) से हमीर तक।

( ग ) हमीर से जगतसिंह तक।

( क ) बापा रावल से लेकर रणसिंह ( कर्णसिंह ) तक मेवाड़ की गद्दी पर २६ राजा हुए हैं। इन राजाओं के नाम प्राचीन शिलालेखों, दान पत्रों आदि में मिलते हैं और इतिहासकारों ने भी इन नामों को स्वीकार किया है। नामावली इस प्रकार है —

१ बापा २ खुँमाण ( पहला ) ३ मत्तट ४ भर्तृभट ५ सिंह ६ खुँमाण ( दूसरा ) ७ महायक ८ खुँमाण ( तीसरा ) ९ भर्तृभट ( दूसरा ) १० अल्लट ११ नरवाहन १२ शालिवाहन १३ शक्तिकुमार १४ अंबाप्रसाद १५ शुचिवर्मा १६ नरवर्मा १७ कीर्तिवर्मा १८ योगराज १९ वैरट २० हसपाल २१ वैरिसिंह २२ विजयसिंह २३ अरिसिंह २४ चोड़सिंह २५ विक्रमसिंह और २६ रणसिंह।[५७]

लकिन राजविलास में जो वशावली दी गई है[५८] वह उक्त वशावली से बहुत भिन्न है। इसमें कुछ नाम उलट-पुलट रख दिए गए हैं, कुछ छोड़ दिए गए हैं और कुछ नाम कृत्रिम रख दिए गए हैं। राजविलास के अनुसार यह वशावली इस प्रकार की बनती है—

| | | |
|---|---|---|
| १ बापा | २ खुँमाण | ३ कुबेर |
| ४ त्रिपुरसिंह | ५ गोविंद | ६ महेंद्र |
| ७ कीर्तिधवल | ८ शक्तिकुमार | ९ शालिवाहन |
| १० नर ( वाहन ) | ११ अंबाप्रसाद | १२ नरवर्मा |
| १३ अल्लू | १४ सिंहराज | १५ जोगराज |
| १६ गात्रसिंह | १७ हंसराज | १८ भट्टू |
| १९ वैरिसिंह | २० महणसिंह | २१ करमसिंह |
| २२ पद्मसिंह | २३ जैत्रसिंह | २४ तेजसिंह |
| २५ समरसिंह | २६ चौडसिंह | २७ रत्नसेन |
| २८ धूड | २९ डूँगरसिंह | ३० पुजाजी |
| ३१ नरपुज | ३२ प्रतापसिंह | ३३ रणसिंह |

५७—वही, पृ० ५२१-५२२

५८—राजविलास, दूसराविलास, पद्य १-२२

( ख ) रणसिंह ( कर्णसिंह ) से मेवाड़ के राजघराने की दो शाखाएँ फटी थीं—रावलशाखा और राणाशाखा । रावलशाखा वाले मेवाड़ के स्वामी और राणाशाखा वाले सीसोदे के जागीरदार रहे, और सीसोदे में रहने के कारण सीसोदिया कहलाए ।[५९]

रावलशाखा के अंतिम प्रतिनिधि रत्नसिंह थे । ये रावल समरसिंह के पुत्र थे । इतिहास-प्रसिद्ध राणी पद्मिनी इनकी स्त्री थी । इनके समय में दिल्ली के बादशाह सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया । रत्नसिंह इस अवसर पर युद्ध में लड़ते हुए मारे गए । उनके साथ रावलशाखा की इतिश्री हो गई और राणाशाखा के लक्ष्मणसिंह सीसोदे से आकर मेवाड़ की गद्दी पर बैठे ।[६०]

इनसे तीसरी पीढी में हमीर हुए । नीचे के वंशवृक्ष से इन बातों का स्पष्टीकरण हो जायगा—

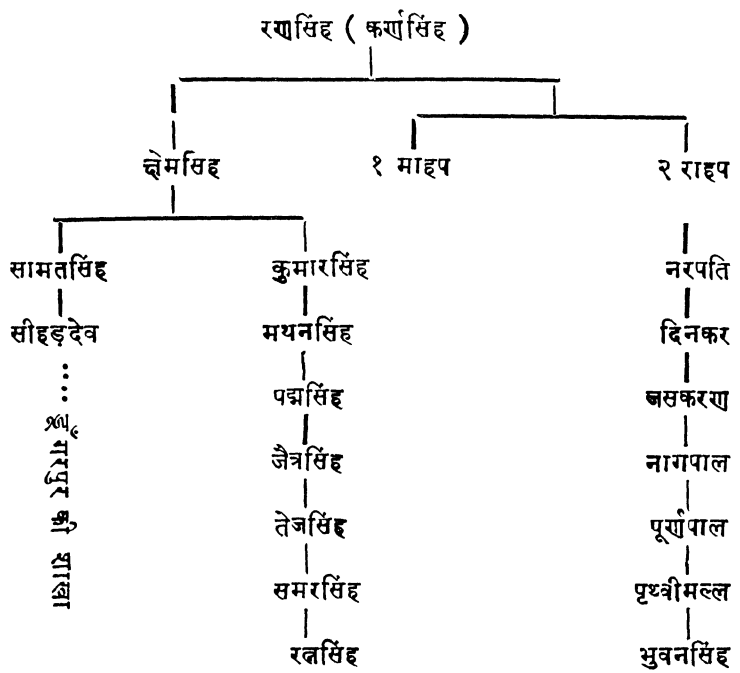


५९—ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ० ४४७

६० वही, पृ० ४८३-४८४

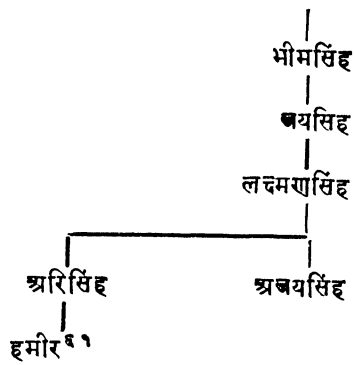


रणसिंह से रावल और राणा नामक दो शाखाओं के निकलने की यह घटना मेवाड़ के इतिहास की एक बहुत महत्वपूर्ण घटना है और राजविलास में भी इसका वर्णन मिलता है—

करन पुत्र दुअ कहिय, जिट्ठ राहप त्रिभुवन जस।
माहव दुतिय महिंद, बाघ रिपु करन अप्प बस॥
राणा पद राहपहिं, लीन करि उत्सव लक्खह।
सवत तेरह सुद्ध, पच दस बरस प्रतक्खह॥
थपि एकादस कुलदेवि थिर, याग भाग बंधिय जुगति।
दुहुँ बेर बरस मडे सु दुति, नौमी दिन पूजै नृपति॥

किंतु राजविलास का यह वर्णन इतिहासविरुद्ध है। इसमें राहप को रणसिंह ( कर्णसिंह ) का ज्येष्ठ पुत्र तथा माहप का द्वितीय पुत्र बताया गया है और क्षेमसिंह का कहीं जिक्र ही नहीं है।

वस्तुतः रणसिंह के तीन बेटे थे—क्षेमसिंह, माहप और राहप। उनकी मृत्यु के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र क्षेमसिंह मेवाड़ के राजसिंहासन पर आसीन हुए और शेष दोनों भाई एक दूसरे के बाद सीसोदे के सामत रहे[६३]।

इसके अतिरिक्त राहप से लेकर हमीर तक के राणाओं की जो नामावली राजविलास में दी गई है वह भी ठीक नहीं है। शुद्ध नामावली ऊपर दी जा चुकी है। राजविलास में यह इस रूप में पाई जाती है—

---

६१. ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ० ५२२
६२. राजविलास, दूसरा विलास, पद्य २३
६३. ओझा; उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ० ४४७

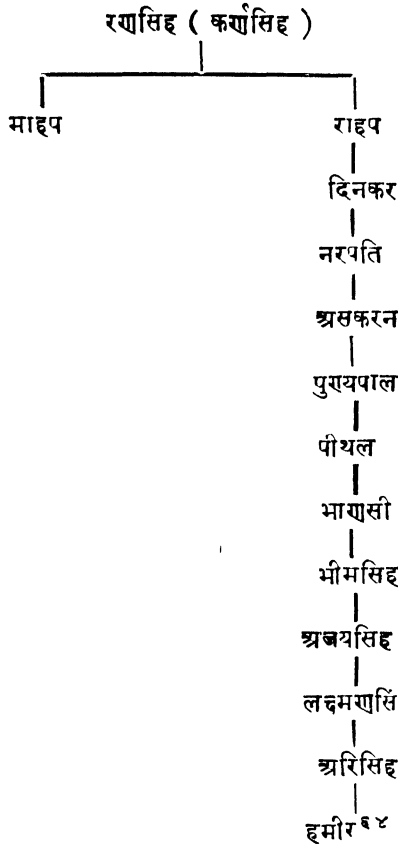


( ग ) हमीर से राणा जगतसिह तक के राजाओं की नामावली राजविलास में शुद्ध रूप में दी गई है और वह इतिहास ग्रथों में दी हुई वशावली से पूर्णतः मिलती है।

राजविलास के द्वितीय प्रकरण में मेवाड़ के प्राचीन इतिहास के सिलसिले में दो एक घटनाओं के सवत् भी दिए गए हैं। जैसे—

( १ ) राणा पद राहपहिं, लीन करि उत्सव लक्खह।
सवत तेरह सुद्ध, पंच दस बरस प्रतक्खह॥

—पद्य २३

६४. राजविलास, दूसरा विलास, पद्य २३–३०

( २ ) रतनसेन रावर वर रजिय,
सवत दस पण तीसहिँ सजिय
—पद्य १५

( ३ ) कुभ राण अखियात कलि,
लख हेम लगाया ।
पनरासै पचरोतरै,
परगट परनाया ॥
—पद्य ३२

परतु ये सवत् ठीक नहीं है । ये इतिहास मेँ दिए हुए सवतोँ से मेल नहीँ खाते ।

चित्रग मोरी और बापा रावल के युद्ध वर्णन मेँ कवि मान ने बारूद, तोप और गोलोँ का उल्लेख किया है—

( क ) गोरा नारि सु सोर धन, सस्त्र भृत्य सु बिचार ।
हय गय रथ पायक हसम, भरि अन धन भडार ॥
—प्रथम विलास, पद्य ६६

( ख ) मिलिय बापा वीर मोरिय,
जुरै दुहुँ वर वीर जोरिय ।
सनन सद्द अवाज सोरिय,
गनन गुजत बहय गोरिय ॥
—प्रथम विलास, पद्य १०७

यह काल-दोष है । भारतवर्ष में तोपोँ का प्रयोग पहले पहल बाबर ने इब्राहीम लोदी की लड़ाई में किया था । इससे पूर्व तोपोँ का प्रयोग यहाँ किसी ने किया हो ऐसा इतिहास से विदित नहीं होता ।

इसी प्रकार बापा रावल की विजय पर विमान से देवताओँ का उन पर फूल बरसाने का वर्णन भी कुछ चौँका देनेवाला है —

देव देवि विमान दरसिय,
व्योम हूत सु कुसुम बरसिय ।
सजल सहज सुगध सरसिय
चवत मान सुजान सरसिय ॥
—प्रथम विलास, पद्य १२७

धार्मिक काव्यों में इस तरह का वर्णन क्षम्य हो सकता है। परतु राजविलास जैसे ऐतिहासिक काव्य में यह बहुत अस्वाभाविक मालूम पड़ता है।

राजविलास की भाषा राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है। इसमें राजस्थानी शब्दों का प्रचुर प्रयोग हुआ है और कहीं-कहीं क्रियापद, कारक-चिह्न आदि भी राजस्थानी के देखने में आते हैं। राजस्थानी से प्रभावित इस प्रकार की ब्रजभाषा को राजस्थान में 'पिंगल' कहते हैं। कोई शाहजहाँ के समय से इस ढग की भाषा में काव्यरचना करने का चलन राजस्थान में हुआ है और इस भाषा का पहला ग्रंथ पृथ्वीराज रासौ है। यह सं० १७०० के आस पास लिखा गया था।[६५] इस के नमूने पर बाद में जसवतउद्योत ( १७०५ ), शत्रुशासाल रासौ ( स० १७१० ), रसन रासौ ( सं० १७३२ ) राणा रासौ ( स० १७३७-५५ ), केसरीसिह-समर ( स० १७५४ ), हमीर रासौ ( स० १७८५ ) इत्यादि अनेक चरित्र काव्य यहाँ रचे गए जिनमें से एक यह राजविलास भी है। इसकी भाषा का पृथ्वीराज रासौ की भाषा से बहुत साम्य है। इसमें भी अरबी फारसी के शब्द बहुलता से प्रयुक्त हुए हैं और ये शब्द वही हैं जो पृथ्वीराज रासौ में पाए जाते हैं। जैसे इतमाम, इसम, फुरमान, नबाब, हुजूर, कोतिल, कसब, उजबक, कबिल, नकाब, नेजा, नोबत, मीर, रसूल, बखत, चिराग, चोज, कहर आदि।

रासौ के ये शब्द वीर काव्यों के लिए एक तरह के टैकनिकल शब्द बन गए हैं और हिंदी राजस्थानी के छोटे-बड़े प्रायः सभी वीर-काव्यों में इनका प्रयोग पाया जाता है।

इन शब्दों के अलावा राजविलास में अनेक शब्द ऐसे देखने में आते हैं जो ठेठ मेवाड़ी बोली के हैं और राजस्थानी की अन्य बोलियों में नहीं मिलते। इनमें से कुछ शब्द अब अप्रचलित ( Obsolete ) भी हो गए हैं। उदाहरण के लिए 'बोली' शब्द को लीजिए।

"राति बोली हुई पुन्न दिसि रत्तड़ी"[६६]

"मास षट बोलियाँ रीझियो सो मुनी"[६७]

"सत्त दिन बोलियाँ नतरे यह समै"[६८]

---

६५—देखिए राजस्थान का पिंगल साहित्य, पृ० ४७

६६—राजविलास, प्रथम विलास, पद्य १५३

६७—वही; पद्य १५१

६८—वही, पद्य १५८

'व्यतीत' के अर्थ में उक्त शब्द का प्रयोग अब मेवाड़ में कहीं नहीं होता। यह अब बोलचाल की मेवाड़ी तथा साहित्य की मेवाड़ी दोनों से निकल गया है।

मान जी ने इस ग्रथ में राजस्थानी भाषा के कुछ शब्दों को तो उनके मूल रूप में रखा है, परंतु कुछ को ब्रजभाषा की प्रकृति के अनुकूल परिवर्तित कर दिया है। अतएव कहीं कहीं इन शब्दों के मूलरूपों को ढूँढने में बड़ी कठिनाई होती है। यथा—

| मूल रूप | परिवर्तित रूप |
|---|---|
| बाहर | बहरि |
| नाली | नारि |
| हेड़ | हेट |
| भड़ | भर |
| गोली | गोरिय |

इसके सिवा इसमें राजस्थानी भाषा के कुछ शब्द ऐसे भी देखने में आते हैं जिनको एक नहीं, बल्कि कई तरह से बदला गया है। जैसे 'सुडाल' शब्द को लीजिए। इस शब्द के इस ग्रथ में 'सुडाल' सुंडार' 'सोंडाल' और 'सोंडार' ये चार रूप मिलते हैं।

कुछ अन्य शब्दों के साथ भी ऐसा ही हुआ है। जैसे—
रसद–रसित–रस्त–रस्ति

पृथ्वीराज रासो एक बृहद ग्रथ है और यह भी कहा जाता है कि उसके प्रणयन में कई व्यक्तियों का हाथ रहा है। अतएव समूचे रासो की भाषा एक समान नहीं है। कहीं सरल, कहीं कठिन और कहीं ऊबड़-खाबड़ है। किंतु राजविलास अपेक्षाकृत एक छोटा ग्रथ है। इसलिए इसकी भाषा में उतार-चढाव प्रायः कम दृष्टि गोचर होता है। आदि से लेकर अत तक इसकी भाषा सामान्य रूप से प्रौढ, परिमार्जित एव विषयानुकूल है।

यदि राजविलास की भाषा में थोड़ा-सा अटपटापन कहीं है तो उन स्थलों पर जहाँ वस्तुओं की नामावली प्रस्तुत की गई है—

( क ) किते बहु मौलिक वस्त्र बखान,
मडै जरबाफ सुखमल साज।

मसजर नारीय कुंजर मिश्रु,
सुमै सिकलात दुमास सहश्रु ॥१०६॥
तनोसुख सूर पटोर दर्याइ,
खीरोदक चैनी पीताबर व्हाइ।
मनोसुख पामरी साहिबी पाढ,
हीरा गर सेंनीय हीर सगाढ ॥११०॥
भरुच्छिय भैरव सारु सभार,
सुसी महमुदी सु सिंदली सार।
झना टुकरी श्री साप अटॉन,
सेला पचतोरिय खासे सुजॉन ॥१११॥
मलमल साहि चौतार दुतार,
उपै इकतार सुघौत अपार।
सु सारिय चौरसे रग रॅगील,
दिखावहिं आध दलाल असील ॥११२॥

—दूसरा विलास

( ख ) ऐराक आरबी अस्व ऐॅन,
सोभत श्रवन सुदर सुनैॅन।
काश्मीर देस काबोज कच्छि,
पय पथ पौन पथ रूप लच्छि ॥८॥
बगाल जाति के बाजि राज,
काबिल सुकेक हय भूर काज।
खधार उतन केहिं खुरासान,
बपु ऊँच तेज बर बिबिध बान ॥९॥
हय हींस करत के जाति हस,
कबिले सु किहाडे भौॅर बस।
किरड़िए खुरहडे के सु रत्त,
पीलडे केक लीले पवित्त ॥१०॥

—छठा विलास

ऐसे स्थानों पर इसकी भाषा कुछ उखड़ी हुई, कुछ कर्णकटु और कुछ दुरूह हो गई है।

## छंद

दो एक छंदों को छोड़कर कवि मान ने इस ग्रंथ में उन्हीं छंदों का प्रयोग किया है जिनका प्रयोग पृथ्वीराज रासो में हुआ है। वे छंद ये हैं—

दोहा, कवित्त ( छप्पय ), गीतामालती, पद्धरी, हनुफाल, दंडमाली, कामुकीबाताण, विराज, दंडक, विअक्खरी, निसानी, मोतीदाम, भुजंगी, वृद्धिनाराच, उद्धोर, विद्युतमाला, लघुनाराच, मुकंदडाभर, त्रोटक, रसावला, चंद्रायना, हंसचार, त्रिभंगी और गुणावेलि।

इनमें कुछ छंद मात्रिक और कुछ वर्णिक हैं। इनमें जो छंद मात्रिक हैं उनमें मात्राओं का क्रम प्रायः ठीक देखने में आता है, पर जो छंद वर्णिक हैं उनमें यत्र तत्र छंदोभंग पाया जाता है।

इन्होंने अपनी रचना में 'सु' 'यु' 'ह' 'ब' आदि वर्णों का प्रयोग भी बहुत किया है। ऐसा पाद-पूर्ति के लिए किया गया है। इससे छंदोभंग नहीं होने पाया है, पर अनेक स्थानों पर एक दूसरा 'निरर्थक दोष' आ गया है।

## अलंकार

राजविलास के अध्ययन से विदित होता है कि कवि मान को अलंकार-शास्त्र का अच्छा ज्ञान था। इस काव्य में इन्होंने स्थान स्थान पर शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों की अच्छी छटा दरसायी है। शब्दालंकारों में इन्होंने अनुप्रास एवम् यमक का और अर्थालंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि सादृश्यमूलक अलंकारों का प्रयोग विशेष किया है। इनके अलंकारों में कुछ नवीनता भी दृष्टिगत होती है। हमारे प्राचीन कवि शत्रु समूह पर झपटते हुए वीर की उपमा कुपित सिंह से, भूखे बाज से, अजेय यमराज से देते आए हैं। परंतु कवि मान ने ऐसे वीर की उपमा आकाश से टूटते हुए तारे से दी है—

( १ ) तुट्टैव ज्यौं खहतार, कलि उदय भान कुमार।[६९]
मह यवन सेन सुमध्य, योधार मंडिय युद्ध॥

---

६९—राजविलास, बारहवाँ विलास, पद्य ६

( २ ) राजा उत घन रोस रस, तारक रित ज्यौं तुट्टि ।
मालव धर उद्धसि महि, लच्छि अनत सु लुट्टि ॥[७०]

यह एक बहुत सुंदर उपमा है। इससे लपकते हुए वीर की गति का पूरा चित्र सामने आ जाता है।

अलकारों की दृष्टि से राजविलास की एक और विशेषता उल्लेखनीय है। यह पिंगलभाषा का एक पहला ग्रथ देखने में आया है जिसमें डिंगल के प्रसिद्ध अलंकार 'वैणसगाई' का भी प्रचुर प्रयोग हुआ है।

वैणसगाई एक प्रकार का शब्दानुप्रास है। इसके कई भेद-उपभेद हैं। इसका एक साधारण नियम यह है : छंद के किसी चरण के प्रथम शब्द का प्रारंभ जिस वर्ण से हुआ हो उसके अतिम शब्द का प्रारंभ भी उसी वर्ण से होना चाहिए। जैसे—

अकबर समँद अथाह, सूरापण भरियो सजल ।
– – – –
मेवाड़ो तिण माँह, पोयण फूल प्रतापसी ॥
– – – –

वैणसगाई डिंगल का अपना एक खास अलकार है। इसका निर्वाह कठिन माना गया है, और अनिवार्य भी। परतु कवि मान ने इसे पिंगल-भाषाकाव्य में भी सफलता पूर्वक ला उतारा है, जिससे उनकी विलक्षण काव्यदक्षता का पता लगता है।

राजविलास में से वैणसगाई के दो उदाहरण यहाँ दिये जाते हैं—

( १ ) रावर पद गहि रग, वीर बापा सु सिद्धि वर ।
– – – –
बापौती सु बहोरि, धरिय भानेज अन्य धर ॥
– – – –
पच लक्ख हय पवर, सहस दस मत्त सु सिंधुर ।
– – – –
पनर लक्ख पायक्क, सुसत्त सय सुंदरि सुंदर ॥
– – – –

---

७०—वही, सत्रहवाँ विलास, पद्य २

नव हत्थ देह सु प्रमान निज, भच्छ सवा मन जास भल ।
पल बावन टोहर इक्क पय, बापा रावर अतुल बल ॥[७१]

( २ ) सुनंत राज विप्र सद्द, नेह हिंद नायक ।
सजी सु चातुरग, सेन लच्छि ईस लायकं ॥
प्रधान सज्जि दति पंति सेन, अग्ग सचला ।
सिंदूर पूर जास सीस, चारु चौंर चचला ॥[७२]

## वर्णन-चातुर्य

वैसे यदि देखा जाय तो यह पूरा का पूरा ग्रथ साहित्यिक सौदर्य से परिपूर्ण है । परतु इसके वे स्थल जहाँ सेना का, समरभूमि का, युद्ध का, वर्णन किया गया है, विशेष रूप से बहुत प्रभावोत्पादक एव चित्रमय है । उक्त विषयों का वर्णन हमारे और भी अनेक कवियों ने किया है । परतु उन्होंने ऐसे स्थानों पर सयुक्ताक्षरों, विशेष कर टवर्ग के सयुक्ताक्षरों, का प्रयोग बहुत किया है । इससे उनके वर्णन में कुछ कृत्रिमता आ गई है । परंतु मान जी ने ऐसा प्रायः नहीं किया । बल्कि ऐसे मौकों पर इन्होंने अपनी भाषा को और भी सरल रखा है । इससे इनके ये वर्णन अत्यत सजीव बन गए हैं । उदाहरण—

( क )

मिलिय बापा वीर मोरिय, जुरै दुहुँ वर वीर जोरिय ।
सनन सद्द अवाज सोरिय, गनन गुज्जत बहत गोरिय ॥
छुट्टि बाननि भान छाइय, उमड़ि मनु घनघोर आइय ।
धींग धसमस करत धाइय, पेखि कायर नर पलाइय ॥

---

७१—राजविलास, प्रथम विलास, पद्य २४०

७२—वही, तीसरा विलास, पद्य ६७

ठनकि गज घटा सु ठननन, भनकि भेरि नफेरि भननन ।
खनकि खग्ग उनग्ग खननन, झनकि ज्यौं झल्लरी झननन ॥
किलकि कर कट्टैं कटारिय, देखिये दीरघ दुधारिय ।
ढु ढि ढुंढि सु पिशुन ढारिय, बीर निज निज बल बकारिय ॥
झाट झर मँडि बजि खग झट, घुमतु घायल घाव घण घट ।
गिद्ध पीवत श्रोन गट गट, जिद ढूँढत फिरत सिर जट ॥
सूर झूझत सार सारह, झरत सीस सुरग झारह ।
धुकत धर धर लगत धारह, मडि मुख मुख मार मारह ॥
नृतत वीर कमध नच्चिय, रोस रस रन रग रच्चिय ।
सिधु सुर सहनाइ सच्चिय, मास रुहिर सु पक मच्चिय ॥
वित्त आयुध होत लथबथ, रबाक किन चकचूर किय रथ ।
भिरत भींच सुभार भारथ, प्रगटि मनु दुर्योध पारथ ॥
सँमुख सजिय सूर सूरह, प्रचलि स्रोन प्रवाह पूरह ।
झाक बजत होत झूरह, नयन रत्त सुबीर नूरह ॥
देत निज निज पति दुहाइय, समरि परमेसर सहाइय ।
घुरिय घाट त्रिघाट घाइय, भूत प्रेत पिसाच त्राइय ॥
उड़िय रेनु सुढकि अबर, झमकि डोरू नद्द डबर ।
तवत गायन देव तुबर, सुरीय मन रन जानि संबर ॥
समर हय गय फिरत सूनह, चरन पयदल होत चूनह ।
लहिय उयरें साइँ लोंनह, दपटि गज घट चित्त दूनह ॥
ढहिय सिंधुर परिय ढेरह, मानु अजन वर्ण मेरह ।
घिरिय दुहुँ दल करिय घेरह, जोध इक बहु करत जेरह ॥[७३]

( ख )

चतुरग चमू सजि सिधुर चचल बक बिरुद्दरु दान बहैं ।
अवधूत अजेज तुरंग उतगह रगहिं जे रिपु कट्टि रहैं ॥
अवगाढ सु आयुध युद्ध अजीत सु पायक सत्य लिये प्रचुरं ।
चित्रकोट धनी सजि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुर ॥
अति बद्दिढ अवाज भगी दिसि उत्तर पथ पुर पुर रौरि परी ।
त्रहकर सु त्रबक नूर त्रह त्रह खँग महा खिति बज्जि खुरी ॥

---

७३—राजविलास, पहला विलास, पद्य २०६-२२१

उड़ि अबर रेनु बहू दल उम्मडि सोखि नदी दह मग्ग सर ।
चित्रकोट धनी चढि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुर ॥
करते बहु कूच मुकाम क्रमं क्रमि पत्त सु नागर चालपहू ।
भहराय भगे धर लोक महा भय सून भए अरि नेर सहू ॥
असुरेस कै गेह सुबड्ढि उदगल डुल्लिय दिल्लिय मन्नि डर ।
चित्रकोट धनी चढि राज सी राण यु मारि उजारिय मालपुर॥
दल बिंटिय मालपुरा सु चहौं दिसि ऊपम चदन जानि अही ।
तहँ कीन मुकाम घुरत सु त्रबक सोच परयो सुलतान सही ॥
नर नाथ रहे तहँ सत्त अहोनिसि सोवन मोरस धीर धर ।
चित्रकोट धनी चढि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुर ॥
भर चौकिय देत चहौ दिसि भूपति सौरभ टक्क आराब सजैं ।
हुसियारि कहैं बर जाध हकारहि हींसत है गजराज गजैं ॥
सु हलाल हजार जरै सब हो निसि घोष सु नौबति नद्द घुर ।
चित्रकोट धनी सजि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुर ॥
धक धूनिय धाय सु कोट धकाइय गौरव रु पौरि गिराइ दिये ।
ढम ढेर करी हट श्रेणि ढुँढारिय ककर ककर दूरि किये ॥
पतिसाह सु दज्झन नेर प्रजारिय अबर पावक झार अर ।
चित्रकोट धनी चढि राजसी राण यु मार उजारिय मालपुर ॥[७४]

युद्ध-सबधी वृत्तातों के सिवाय नखसिख, सरोवर, उपवन, अकाल इत्यादि अन्य विषयों के वर्णन भी इसमें मिलते हैं। और ये भी अपने रग-ढग के अप्रतिम एव बहुत प्राणवान हैं। उदाहरणार्थ अकाल-पीड़ित लोगों का यह वर्णन देखिए—

बसुमति अन्न बिहीन, दीन दुखित तनु दुब्बल ।
ससत निसत सरफरत, कितकु तरफरत ग्रहित गल ॥
कितकु करुन कुननत, मक्खि भिननत दसन मुख ।
कितकु धीर न धरत, हीय हहरत दुसह दुख ॥
टलटलिय बिटल घन टलबलत, गिरत परत अतक हरत ।
हट श्रेंणि चौक त्रिक उमग मग, रक करकति ररबरत ॥[७५]

---

७४—राजविलास, छठा विलास, पद्य २८–३३
७५—राजविलास, आठवाँ विलास, पद्य १३३

भूख से कराहते हुए दीन-दुखी लोगों का यह शब्द-चित्र कितना वास्तविक है, कितना मार्मिक।

## उपसहार

महाराणा राजसिंह एक बहुत बड़े हिंदू नेता थे। ए जैसे वीर थे वैसे ही युद्ध-सचालन में भी निपुण थे। प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टाड इनके विषय में लिखता है—

"समर पटुता और स्वदेशाभिमान की पराकाष्ठा दिखाकर जिस दिन हिंदू-कुल-सूर्य महाराणा प्रताप ने इस लोक से बिदा ली उसी दिन से मेवाड़ भूमि विषाद रूपी भयकर अंधकार से ढँक गई थी। अमरसिह, कर्णसिंह और जगतसिंह ने उस अधकार को दूर करने का भरसक प्रयत्न किया पर उनको कोई सफलता नहीं मिली। लेकिन वीर केसरी राजसिंह ने अपने प्रचड शौर्य और जाज्वल्यमान स्वदेश प्रेम के बल से उस अधकार को भली भाँति दूरकर मेवाड़ के विनष्ट गौरव का पुनरुद्धार किया। राणा राजसिंह वीर शिरोमणि राणा प्रतापसिंह के सुयोग्य वशधर थे। इसी कारण उन्होंने उस भयकर प्रलय काल में दलित, पीड़ित एव अभागी भारत-सतान का उद्धार करने के लिए अपने अनुपम पराक्रम से औरगजेब के विरुद्ध कठोर युद्ध किया था। भारत की उस भयावह दुर्दशा के समय यदि वे उत्पन्न न हुए होते तो हिंदू-सतान और हिंदू-धर्म दोनों का शीघ्र ही लोप हो जाता।"

"अपने देश की रक्षा के लिए उन्होंने युद्ध-विशारद सेनानी तथा तेजस्वी योद्धा के समान जो अपूर्व रण-कौशल प्रदर्शित किया उसकी यदि स्वयं अनत देव भी सहस्र मुख से अनत काल तक प्रशसा करें तो पार नहीं पा सकते। विशेष कर भारत-सतान के उद्धार के निमित्त उन्होंने जिस असीम वीरता और महानता का परिचय दिया उस वीरता और महानता की उपमा इस ससार में नहीं है।[७६]

---

७६—टाड राजस्थान का हिंदी अनुवाद ( वें० प्रे० बंबई ) पृ० ४६५-४६६।

ऐसे महापुरुष का जीवन-चरित्र जिस ढग से, जिस सहृदयता से जिस निष्ठा और सचाई से लिखा जाना चाहिए उसी तरह पर यह राजविलास लिखा गया है। इस दृष्टि से यह काव्य हिंदी-साहित्य को कवि मान की अपनी एक स्थायी देन है, और उनकी अपनी कीर्ति का एक अचल स्मारक भी।

उदयपुर
२०-४-५६

मोतीलाल मेनारिया

# अनुक्रमणिका

**पहला विलास**

[ सरस्वती-वंदना, रावल श्रीबापाजी की उत्पत्ति, रावलपद की स्थापना तथा चित्रकोट को राजधानी बनाने का वर्णन ] १–२५

**दूसरा विलास**

[ राजसभा का वर्णन ] २६–४३

**तीसरा विलास**

[ बूँदी दुर्ग में प्रथम पाणिग्रहण के समय कमवज्र के साथ युद्ध मे राजकुमारजी की विजयप्राप्ति का वर्णन ] ४४–५६

**चौथा विलास**

[ [illegible] बाग का वर्णन ] ५७–५८

**पाँचवाँ विलास**

[ राणा श्रीराजसिंहजी का पट्टाभिषेक, विरुदावली प्रभृति का वर्णन ] ५९–६७

**छठा विलास**

[ राणा श्रीराजसिंहजी का दिग्विजयवर्णन ] ६८–७१

**सातवाँ विलास**

[ रूपनगर में महाराणा राजसिंहजी के पाणिग्रहण का वर्णन ] ७२–८१

**आठवाँ विलास**

[ राजसमुद्र का वर्णन ] ८२–१०१

**नवाँ विलास**

[ महाराणा श्रीराजसिंहजी के शरणागत विजयपंजर-विरुद का वर्णन, अनेक सुमतिप्रकाश ] १०२–१२६

**दसवाँ विलास**

[ महाराणा श्रीराजसिंहजी तथा बादशाह औरंगजेब के समर-संवाद का वर्णन ] १२७–१४३

**ग्यारहवाँ विलास**

[ देवसूरी दुर्घाट पर रोमी के साथ प्रथम युद्ध का वर्णन ] १४४–१५४

**बारहवाँ विलास**

[ उदयपुर के कुँवर उदयभानकृत द्वितीय युद्ध का वर्णन ] १४६–१४८

**तेरहवाँ विलास**

[ सुलतानमुखभंजन और गोरीदलगंजन का वर्णन ] १४६–१५३

**चौदहवाँ विलास**

[ सगतावत गग कुँवरजी द्वारा बादशाह के हस्तीयूथ के ग्रहण का वर्णन ] १५४–१५६

**पंद्रहवाँ विलास**

[ श्रीभीमसेन कुमार द्वारा गुर्जर देश में युद्ध का वर्णन ] १६०–१६४

**सोलहवाँ विलास**

[ सॉवलदास कमधजकृत युद्ध का वर्णन ] १६५–१६८

**सत्रहवाँ विलास**

[ मालपद देश में साह दयालकृत युद्ध का वर्णन ] १६६–१७३

**अठारहवाँ विलास**

[ महाराणा श्रीजयसिहजी का चित्रकोट दुर्ग में बादशाह औरगजेब के शाहजादा अकबर के ऊपर रतिवाह वर्णन ] १७४–१८६

## परिशिष्ट

१— [illegible] १६१–२१६

२—अभिधान २१७–२२६

३—छंद-विमर्श २२७–२३०

४—पठातर-सकलन २३१–२५२

### चित्र

१—महाराणा राजसिह मूल पृष्ठ १ के सामने

२—राजसमुद्र का एक दृश्य मूल पृष्ठ ६६ के सामने

३—उदयपुर के सरस्वती भवन की सवत् १७४६ की हस्तलिखित प्रति के आरभ, मध्य एवम् अतिम पृष्ठों के प्रतिचित्र 'सपादकीय' के मध्य

# राजविलास

महाराणा राजसिंह

[ जन्म सं० १६८६ ]　　[ मृत्यु सं० १७३७

# राजविलास

## पहला विलास

( दोहा )

सेवत सुर नर मुनि सकल, अकल अनूप अपार।
बिबुध मात बागेस्वरी, दिन दिन सुखदातार ॥ १ ॥
देवी ज्यौं तुम करि दया, कालिदास कवि कीन।
वरदायिनि त्यौं देहु बर, निर्मल उक्ति नवीन ॥ २ ॥
पइयैं बर कविराज पद, लच्छी बंछित लील।
तुम तुट्ठै जगतारनी, सुमति सँयोग सुसील ॥ ३ ॥
कौन गिनैं मरु रेतुकन, को घन बुंद कहंत।
को तारायन परि कहैं, त्यौं गुन आदि अनंत ॥ ४ ॥
जपियहि तुमकौं जग-जननि, अधिक ग्रंथ आरंभ।
कवित कथा मंगल करन, दूरि हरन दुख दंभ ॥ ५ ॥
सांप्रत देहु सरस्वती, बानी सरस बिलास।
भारति जग पोषनि भरनि, इच्छित पूरन आस ॥ ६ ॥
चित्रकोट पति राज चिर, राजसिंह महाराण।
सूर्यबंस बर सहस कर, खल-खंडन खूँमाण ॥ ७ ॥
गावत जसु जस छंद गुन, पावत सुख भरपूर।
सुपसायैं तुम सारदा, दुरित प्रनासहि दूर ॥ ८ ॥
बीणा पुस्तक कर प्रबर, बाहन बिमल मराल।
सेत बसन भूषण सजै, रीझी देत रसाल ॥ ९ ॥

( कवित्त )

रीझी देत रसाल, रंग रस मैं सुररानी।
गुनवंती गयगमनि, बागदेवी ब्रह्मानी ॥

तिमि तुल्ल कुखिस मध्य तिवलिय उरज उभय अनोपमां।
किधौं नालिकेर कि कनक कुंभ सुकुंभि कुंभ सुऊपमां॥
कंचुकी जरकस कसिय कोमल आदि अमिय अहारनी।
अद्‌भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ १७॥

भुज दंड लंब बिसाल श्रीभर कनक भूरि सुकंकनां।
पौचीय गजरा बहिरखा प्रिय बाहुबंध सु बंधना॥
महिँदीय रंगहिं पानि मंडित बेलि सोभ बधारनी।
अद्‌भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ १८॥

करसाख कमनिय रूप कोमल मुद्रिका बर मंडनं।
उपमान मूँगफली सु उत्तम अरुन नखर अखंडनं॥
पुस्तकरु बीन सुपानि पल्लव बेद राग बिथारनी।
अद्‌भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ १९॥

कहियै निगोदर हार कंठहिं मुत्ति माल मनोहरं।
मखतूल गुन चौकी कनक मनि चारु चंपकली उरं॥
तपनीय हंसरु पोति तिलरी कंठश्री सुख कारनी।
अद्‌भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ २०॥

बिधु सकल कल संजुत्त बद्दनी चिबुक गाड़ सु चाहियै।
बिद्रुम कि बंधूजीव वर्णो सहज अधर सराहियै॥
दुति दसन बीज सु पक्क दारिम भेष जन मनहारनी।
अद्‌भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥२१॥

रसना सुरंगी श्रवति नव रस तालु मृदुतर तासयं।
सत पत्र पुष्प समान सुरभित अधिक बदन उमासयं॥
कलकंठ बचन बिलास कुहकति अगम निगम उछारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥२२॥

सुकराय चंचु कि भुवन मनि सिख नासिका बर निरखियै।
कलधौत नथ मधि लाल मुत्तिय ऊपमा आकरषियै॥
मनु राज दर गुरु सुक्र मंगल सोह बर संभारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥२३॥

अरबिद पुष्प कि मीन अक्ष सु प्रचल खंजन पेखियं।
सारंग सिसु दृग सरिस सुंदर रेह अंजन रेखियं॥

निसपति मुखि मृगनयनि, कांति कोटिक दिनकरकर।
सचराचर सचरनि, अगम आगम अपरंपर॥

भयहरनि भगत जन भगवती, बचन सुधारस बरसती।
राजेस रांण गुण संवरत, सुप्रसन्न हौ सरस्वती॥ १०॥

( गीतामालती )

सुप्रसन्न सरसुति मात सुभिरत कोटि मंगल कारनी।
भारती सुभर भँडार भरनी बिकट संकट वारनी॥
देवी अबोधहिँ बोध दायक सुमति श्रुत संचारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ ११॥

आई निरंतर हसित आननि महि सुमाननि मोहनी।
संकरी सकल सिँगार सज्जित रुद्र रिपुदल रोहनी॥
बपु कनक कांति कुमारि बिधिजा अजर तूँ ही जारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ १२॥

पयतल प्रबाल कि लाल पल्लव दुति महावर दीपए।
अँगुली नख दह विमल उज्जल जोति तारक जीपए॥
अनवट अनोपम बीछिया अति धुनि मनोहर धारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ १३॥

झमकंति झंझरि नाद रुणझुण पाय पायल पहिरना।
कमनीय क्षुद्रावली किंकिनि अवर पय आभूषना॥
कलधौत कूरम समय मल क्रम पाप पीड़ प्रहारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ १४॥

कदली सुखंभ अधो कि करिकर जंघ जुग वर जानियेँ।
सुचि सुभग सार नितंब प्रस्थल बाघ कटि बाखानियेँ॥
बापिका नाभि गँभीर सुवणित महा रिपुदल मारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ १५॥

चरनालि कटि तट लाल चरना पवर अरु पट कूलयं।
मेघला कंचन रतन मंडित देव दूख दुकूलयं॥
दीपती दुति जनु भानु द्वादस अथ तिमिर अपहारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ १६॥

तिमि तुल्ल कुखिस मध्य तिवलिय उरज उभय अनोपमां।
किधौं नालिकेर कि कनक कुंभ सुकुंभि कुंभ सुऊपमां॥
कंचुकी जरकस कसिय कोमल आदि अमिय अहारनी।
अद्‌भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ १७॥

भुज दंड लंब बिसाल श्रीभर कनक भूरि सुकंकनां।
पौचीय गजरा बहिरखा प्रिय बाहुबंध सु बंधना॥
महिँदीय रंगहिं पानि मंडित बेलि सोभ बधारनी।
अद्‌भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ १८॥

करसाख कमनिय रूप कोमल मुद्रिका बर मंडनं।
उपमान मूँगफली सु उत्तम अरुन नखर अखंडनं॥
पुस्तकरु बीन सुपानि पल्लव बेद राग बिथारनी।
अद्‌भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ १९॥

कहियै निगोदर हार कंठहिँ मुत्ति माल मनोहरं।
मखतूल गुन चौकी कनक मनि चारु चंपकली उरं॥
तपनीय हंसरु पोति तिलरी कंठश्री सुख कारनी।
अद्‌भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ २०॥

बिधु सकल कल संजुत्त बदनी चिबुक गाड़ सु चाहियै।
बिद्रुम कि बंधूजीव वर्णो सहज अधर सराहियै॥
दुति दसन बीज सु पक्क दारिम भेष जन मनहारनी।
अद्‌भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥२१॥

रसना सुरंगी श्रवति नव रस तालु मृदुतर तासयं।
सत पत्र पुष्प समान सुरभित अधिक बदन उमासयं॥
कलकंठ बचन बिलास कुहकति अगम निगम उछारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥२२॥

सुकराय चंचु कि भुवन मनि सिख नासिका बर निरखियै।
कलधौत नथ मधि लाल मुत्तिय ऊपमा आकरषियै॥
मनु राज दर गुरु सुक्र मंगल सोह बर संभारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥२३॥

अरबिद पुष्प कि मीन अक्ष सु प्रचल खंजन पेखियं।
सारंग सिसु दृग सरिस सुंदर रेह अंजन रेखियं॥

संभृत्त जुग जनु सुधा संपुट बिस्व सकल बिहारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥२४॥

मनु कनक संपुट सुघट मंजुल पिसित पुष्ट कपोल दो।
दीपंत श्रुत जनु दोइ रवि ससि लसत कुंडल लोल दो॥
इन हेत अति उद्योत आनन बिघन सघन बिडारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥२५॥

कोदंड आकृति भृकुटि कुटिलिति मानु भमहिं सुमधुकरं।
लहि कमल कुसुम सुवास लोयन स्चैर संठिय वपु सरं॥
कि अवर उपमा कहय लवु कवि सत्रु जय संहारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥२६॥

सु विसाल भाल कि अष्टमी ससि चरचि केसरि चंदना।
बिदुली लाल सिंदूर सुवणित बर्ण पुष्प सुबंदना॥
अनि तिलक जटित जराउ ऊपित सकल काम सुधारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥२७॥

सिर भाल संधि सुसीस फूलह सहस किरन समानयं।
राखड़ी निरखत चित्त रजति वेणि व्याल बखानयं॥
मोतिन सुमाग जवादि मंडित अधम लोक उधारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयत जय जगतारनी ॥२८॥

अंसुक कि इंदु मयूप उज्जल झीन अति दुति झलझलं।
सुरवरहि निर्म्मित सरस सुरभित परम पावन पेसलं॥
मन रंग ऊढ़ति महामाई बिपति कंद बिदारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥२९॥

चंबेलि जूही जाइ चंपक कुंद करणी केवरा।
मचकुंद मालति दवन मुग्गर चारु कंठहिं चौसरा॥
तंबोल मुख महकंत त्रिपुरा ब्रह्मरूप बिचारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥३०॥

अज अजर अमर अपार अवगत अग अखंड अनंतयं।
ईस्वरी आदि अनादि अव्यय अति अनोप अचितयं॥
कर जोरि कहि कवि मान किंकर अरजतं अवधारनी।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥३१॥

( कवित्त )

जय जय जग तारनी, सारदा सुमति समप्पन।
कुमति कुकवित कुभास, कठिन कलिमल दुख कप्पन॥
अकल अनोपम अंग, मात पूरन चितित मन।
सदा तास सुभिरंत, धवल मंगल लहियै धन॥
श्री राजसिघ राना सबल, महिपतियाँ सिर मुकटमनि।
गावत तास गुरु छद गुण, धणियांणी दिज्जै स धुनि॥३२॥

( दोहा )

धणियांणी दीजै सु धुनि, सरसी वाँणि सुसाल।
चित्रकोट पति जस चऊँ, रचि रचि छद रसाल॥ ३३॥

इन परि सुनि कवि कृत अरज, मात होइ सनमुक्ख।
बोली यौं अमृत बचन, सकल समर्पन सुक्ख॥ ३४॥

गावहु गावहु सुकवि गुन, ठिक करि मन इक ठाँऊँ।
राज राण जस छंद रचि, हौं तुम्ह पूरौं हाँऊँ॥ ३५॥

सुवर दयौ श्री सरस्वती, आई अभिमुख आइ।
सीस चढ़ाय लयौ सुकवि, प्रनमि सुत्रि करन पाइ॥ ३६॥

उद्यम ग्रथह काज अम, दिवस महा भल देखि।
कीनौं आलसि दूरि करि, लाभ अनंत सुलेखि॥ ३७॥

( कवित्त )

सुभ संवत दस सात, बरस चोतीस बधाई।
उत्तम मास अषाढ़, दिवस सत्तभि सुखदाई॥
बिमल पाख बुधवार, सिद्धि बर जोग संपत्तौ।
हरषकार रिपि हस्त, रासि कन्या ससि रत्तौ॥
तिन द्यौस मात त्रिपुरा सतवि, कीनां ग्रंथ मंडान कवि।
श्री राजसिघ महाराण कौ, रचियहिँ जस जौं चंद रवि॥ ३८॥

अति पावस उल्हरिग, करिग कंठल धुरकाली।
आसा बंधि असाढ़, हरप करसणि कर हाली॥

बद्दल दल बित्थुरिग, चारु चपला चमकंतह ।
गज्ज घोष गंभीर, मोर गिरि सोर मचंतह ॥
आदीत सोम छबि आवरिग, घण आयौ घमसाण घण ।
बरसत बुंद बड़ बड़ बिमल, जलधर बल्लभ जगत जण ॥ ३६ ॥

( पद्धरी )

आसाढ़ मास आयौ अनूप, रचि उत्तर कंठल स्याम रूप ।
बद्दल चढ़ंत बज्जत सु बाइ, उल्हरिय सुपावस समय आइ ॥४०॥
चहुँ ओर जोर चपला चमक्क, झलहलत तेज रबि सम झमक्क ।
धुरहरत घोर घण गुहिर घोप, पावंत सुनिव संसार पोप ॥४१॥
केकी करंत गिरवर किंगार, सजि पंख छत्र नाचंत सार ।
महि मिलिय सयल सिरि मेघमाल, बरसंत बुंद बड़ बड़ बिसाल ॥४२॥
जल बहत जोर खलहलत खाल, पयधार पतत दगगग प्रनाल ।
पप्पीह चीह पिउ पिउ पुकार, भूरूह बिहस्सि अट्टार भार ॥४३॥
धोवंत सिहरि घन धवल धार, पुहवी सु कीन जल थल प्रचार ।
नीलांणी धर बरसंत नीर, चितरंग आनि मनु पहरी चीर ॥४४॥
महियल सुरंग उपजै ममोल, अति अरुन अंग कोमल अमोल ।
बगपंति स्याम बद्दल बिहार, हिय मेव पहरि मनु मुत्ति हार ॥४५॥
सब हलकि चली सलिता सँपूर, बज्जंत बारि लग्गत बिधूर ।
उछलंत छोल ऊज्जल अपार, पथ थकित पथिक को लहय पार॥४६॥
निर्य्यामक बलन न लगंत नाव, तट उपट बहत अति जोर ताव ।
भौंरह परंत लागंत भीर, तरुवर उखारिलै चलिय तीर ॥४७॥
निरखंत नीर नीरधि नमाय, छबि चंद सूर राखी सु छाय ।
हलहलत भरित सरवर हिलौर, रव समझि परंत न भेक रौर ॥४८॥
डहडहत हरित डंबर डहक्क, कोकिल करत उपवन कुहक्क ।
मालती कुंद केतकी मूल, फूलै सु वृक्ष चंपक स फूल ॥४९॥
गिरि भेदि शृग किय गलम गात, निरझरण झरत झरहरनि घात ।
गहराय पत्त गहबर गहक्क, मधुकर सुगुंज तरुवर महक्क ॥५०॥
टपकंत बुद तरु पत्र डाल, मंडव सु कीन द्रुम वल्लि माल ।
बग ठग लगाय पावस बइट्ठ, दारा सु बकी पतिव्रता दिट्ठ ॥५१॥

झुकि बिटपि सजल मारुत झकोर, घन उमड़ि घुमड़ि बरसंत घोर।
चतुरग चंग रचि इंद्र चाप, बिरहनि करत बिह्वल बिलाप ॥५२॥

यामिनी तमस अति च्यारि याम, करि कोप काय बाधंत काम।
धनवंत लोक निज धवल धाम, बरसत मेघ बिलसंत बाम ॥५३॥

जगमगति निसा खद्योत जोति, हत्थे सुहत्थ नन सुद्धि होति।
पर मुग्ध लब्ध पंथक प्रमोद, बेताल करत बन घन बिनोद ॥५४॥

झर मंडि इंद तम रह्यौ झुक्कि, धाराधर पर बद्दल सु धुक्कि।
हुंकार नाद बन सिंह हुक्कि, ढूँढंत भक्ष निसिचार ढुक्कि ॥५५॥

बोलंत झिल्लि इक सॉस बैन, मानिनि बियोग मन मथत मैंन।
दीसंत मग्न दामिनि दमक्क, चितचोर मज्झ उपजै चमक्क ॥५६॥

सारंग करत गायन सुजान, रीझंत जेह सुनि राय राण।
मल्हार थटत माचंत मेह, नर नारि चित्त बाधत नेह ॥५७॥

संवत सु सत्त दह सतक सार, बच्छर चौतीसम धरि विचार।
सब लोक ऊंक निज निज सचैंन, आसाढ़ सेत सत्तमी अैंन ॥५८॥

देवी सु आइ बरदान दीन, कवि मान ग्रंथ आरंभ कीन।
चीतौर धनी कहियै चरित्र, पढ़ि छंद बिबिध रचि जस पवित्र ॥५९॥

सब हिंदवॉन कुल रवि समान, राजंत राज श्री राजराण।
इकलिंग रूप मेवार ईस, याचक जन मन पूरन जगीस ॥६०॥

लहियै जु नाम तस लच्छि लील, संपजै संग सज्जन सुसील।
दारिद्र दुक्ख नासंत दूरि, ह्वै रिद्धि सिद्धि संपति हजूरि ॥६१॥

( दोहा )

देस देस फिरि देखते, अति उत्तम खिति आज।
धर्म्म देस मेवार धर, सब देसॉ सिरताज ॥ ६२ ॥
जिण घर हरि घर देस जिहि, ग्राम ग्राम प्रति ग्राम।
असुरायन धरनी अवर, रटैं नहीं जहॅ राम ॥ ६३ ॥
दरसन षट जहॅ देखियै, पंडित पढ़त पुरान।
बेद च्यारि जहॅ बाँचियै, तेज नहीं तुरकान ॥ ६४ ॥
सकल जहॉ पूजै सुरभि, नव देवल निपजंत।
ह अन्याय इक निमिख को, भाषा भल भाषंत ॥ ६५ ॥

गाम नगर पुर कोट गढ़, बसैं बहुत सुख बास।
सुंदर नर नारी सकल, बित्तवंत बर बास ॥ ६६ ॥
पग पग जल जहँ पाइयै, नदी तलाब निवान।
सालि गोधुमा सेलड़ी, सर्प्पिस सुरभि सुखान ॥ ६७ ॥
मौठ मसूर मापा मुदग, जौ बहु चना जुवार।
धान नीपजै जिहि धरा, अमित अमाप अपार ॥ ६८ ॥

( कवित्त )

हद्द न्याय हिंदवान, राण श्री राज सु राजहिं।
पिसुन चोर पिल्लियहिँ, न्याय करि साधु निवाजहि ॥
बसैं सकल सुख बास, गाम पुर नगर कोट गढ़।
सुदर रूप सुजान, सधन नर नारि सुकृत दृढ़ ॥
तीरथ तलाब तटनी तहाँ, निसि बासर निरभय निगम।
सब देस देस देखे सु परि, देस न को मेवार सम ॥६९॥

( हनफाल )

मालउ मरु मेवात, मुलतान मरहट मात।
महि मगध मध्य मंडाण, ठिक करिग पेखी ठाँण ॥ ७० ॥
अैराक आरब्ब अच्छ, कहि अंग बंगरु कन्छ।
कर्णाट फुनि कवोज, चखु दीठ चित करि चोज ॥ ७१ ॥
कासी रु दीठ कलिग, वैराट बब्बर संग।
कुरु कासमीर कहाय, देखंत नाँवहि दाय ॥ ७२ ॥
कोसलरु काँकण किद्ध, दिल कांवरू दिसि दिद्ध।
धायौ धँधेरा धाट, लिखि लयै लाडरु लाट ॥ ७३ ॥
रहि दीठ हबसी रूम, भिलवारि भोट सु भूम।
खंधार खग खुरसाण, गंधार नैं गुँडवाण ॥ ७४ ॥
पढ़ि गौर गंगा पार, धर भिन्न माल सु धार।
देख्यौ यु गुर्ज्जर देस, लच्छिन न जहँ सुभ लेस ॥ ७५ ॥
विचरंति झालावारि, धावंत कट्टी धारि।
छप्पन रु बागरि छेह, अटि देखि देस अछेह ॥ ७६ ॥

निज निरखि नागर चाल, नर अस्व मुख नेपाल।
पंजाब पहु पंचाल, बसुधा बिदेह बँगाल ॥ ७७ ॥

पुनि फिरयौ देस फिरंग, रुचि न किय जहँ मन रंग।
सोधयौ सिंधु सुवीर, नर नारि मुख नहिँ नीर ॥ ७८ ॥

सोरट्ठ सिघल साज, रमि रह्यौ धर त्रिय राज।
दक्षिन विदरभित देस, भल रूप भासन भेस ॥ ७९ ॥

द्रग द्रविड़ देस यु दिट्ठ, चवि चविड़ लोक सु चिट्ठ।
रोहिल्ल गक्खर राह, उत्तर दिसा अवगाह ॥ ८० ॥

बसुमती देस बिदेस, भरि रही नव नव भेस।
किहि देस अति गुरु कान, जहँ सोइ असुक जान ॥ ८१ ॥

किहि अस्वमुख नर काय, किहि एक जघ कहाय।
किहिँ त्रिया राज करंत, कहुँ स्वेत काक कहत ॥ ८२ ॥

कहुँ लब कुच तिय किद्ध, पुहवी अनादि प्रसिद्ध।
कहुँ जनत कामिनि जात, तब पवन राखत तात ॥ ८३ ॥

खिति कहूँ जल अति खार, कहि देस जल दुख कार।
कहुँ कुहुर नीर कढ़त, ढिग ढोल तहँ ढमकत ॥ ८४ ॥

किहि धरा पुरुष कुरूप, सुंदरी सकल सरूप।
लब नहीँ किहि कण लूण, गो वहत किहिं धर गोण ॥ ८५ ॥

इत्यादि देस अनेक, अति अधम नर अविवेक।
समझैं न धर्म सुसार, गरथल अग्यान गमार ॥ ८६ ॥

सब देस में सिरदार, उत्तम जहाँ आचार।
महि मेदपाट समान, पुहवी न कोइ प्रधान ॥ ८७ ॥

धर लोक जहँ धनवंत, बाणी सु मिट्ठ बदंत।
धारत निज निज धर्म्म, सुंदराकार सुसर्म्म ॥ ८८ ॥

अति दत्त चित्त उदार, आदरैं पर उपकार।
लेवा सुलच्छी लाह, सौभाग धारक साह ॥ ८९ ॥

जहँ हिदुपति जयवत, कवि मान राज करंत।
श्री राजसिघ सु राण, बिरुदैत बड़ बाखाण ॥ ९० ॥

( दोहा )

मेदपाट महि मंडणह, चित्रकोट गढ़ चारु ।
मानौं मुग्धा माननी, हिय मानिक को हार ॥ ९२ ॥
अति उतंग अंबर अचल, अकल अभेद अभीत ।
चित्रकोट पर चक्रतैं, आदि अनादि अजीत ॥ ९२ ॥
तुग बिसाल त्रिकोट तहँ, कोसीसावलि कंत ।
प्रौढ़ पौरि दुर्घट सु पथ, बज्र कपाट बणंत ॥ ९३ ॥

( कवित्त )

गुरु चौरासी गढ़नि, मही मेवार सु मंडन ।
अकल अभेद अभीत, बिसम पर चक्र बिहंडन ॥
तुंग बिशाल त्रिकोट, थिर सु कोसीसा थाटह ।
पौरि बुरज गुरु प्रबल, कठिन अग्गला कपाटह ॥
बहु कुंड वापि सर जल बिमल, बिबुधालय बसुधा बदित ।
देखे यु दुर्ग्ग सब देस के, चित्रकोट मो बसिय चित ॥ ९४ ॥

( दडमाली )

गढ़ चित्रकोट सु गाइयै, बसु सुजसु पटह बजाइयै ।
कुंती बहू गढ़ कोटयं, जग नहाँ कोइ न जोटयं ॥ ९५ ॥
उत्तंग गिरि सम अंबरा, दिसि च्यारि दुर्ग्गाडंबरा ।
सकुनी न जहँ संचारयं, पहुँचै न जहँ पदधारयं ॥ ९६ ॥
प्राकार तीन प्रचंड हैं, मनु अमर आइसु मंड हैं ।
सुबिसाल गज सँग बीस के, उत्तंग गज इकतीस के ॥ ९७ ॥
कोसीस पंकति कंतए, पढ़ि मोरचा सम पंत ए ।
जहँ नारि गुरु जंबूरयं, छुटटंत रिपु दल चूरयं ॥ ९८ ॥
गुरु बुरज गिरि सम गात ए, बर पौरि सत्त बिख्यात ए ।
भारी कपाट सु भग्गला, अति गाढ़ शृंखल अग्गला ॥ ९९ ॥
कहिं परधि द्वादस कोस की, अनभंग अंग अदोस की ।
दल देव निर्म्मित दुर्ग्गए, अरि दलन गर्व्व अलग्गए ॥१००॥
तरहटी तीर तरंगिनी, गंभीर गंग सु संगनी ।
गढ़ सज्जियै चतुरंगनी, आवै न किहि आसंगनी ॥१०१॥

गढ़ मध्य बहु गंभीर है, सरकुंड वापि सनीर है।
निरखै सुसर्व्व निवान जू, यहु असिय च्यारि प्रमान जू ॥१०२॥

मुख भीमकुंड सु मानियै, जसु तीर गोमुख जानियै।
पयधार पतत प्रवाहनी, अवलोक तें उच्छाहनी ॥१०३॥

उठि प्रात तन्छ अन्हाइयै, गुरु रोग सोग गमाइयै।
अति एह तीरथ उत्तमं, सु प्रसंसित पुरुसोत्तमं ॥१०४॥

महि चित्रकोट सु मंडनी, दुग्गायु आसुर दंडनी।
प्राधानता प्रासादयं, बोलत नभ सों बादयं ॥१०५॥

कल कीरथंभ सु कोरनी, नर नारि नैन निहोरनी।
नभ लोक मिलि नव खडयं, खल चक्रतिन चढ़ि खंडयं॥१०६॥

मेवार घर सम मेदनी, नन अवर चित्ता उमेदनी।
महि चित्रकोट समानयं, गढ़ कोन आवहिं गानयं ॥१०७॥

रिनथंभ मंडव रेवतं, सुर असुर किनर सेवतं।
आबू सुगढ़ आसेरयं, अवगाढ़ गढ़ अजमेरयं ॥१०८॥

ग्वालेर अलवर गज्जना, विक्रमरु बंधुर वज्जना।
गूगौर नरवर गाहियैं, सिवसाहि गढ़ साराहियैं ॥१०९॥

मंडोवरं मैदानयं, गढ़ गागरौंनि गुमानयं।
दौलताबाद सुदेखयो, पुहवी सु पूना पेखयो ॥११०॥

हिसारगढ़ हरणौरयं, सोवर्ण गिरि सच्चौरय।
गढ़ देव ईडर गौरवं, बैराट बंधु बौरवं ॥१११॥

कहि कॅगुरा कल्यानियं, टिल्ला पहार सु ठानियं।
सुनियै सिवाना सारका, महि मध्य मंडल मारका ॥११२॥

तारागनं त्रिकुटाचलं, नासक्य त्र्यंबक कुंडलं।
यों कोट दुर्ग्ग अनेकयं, बाखानियैं सु विवेकयं ॥११३॥

इन चित्रकोट सु उप्पमं, इल दुर्ग्ग कौन अनोपमं।
इन और कोटहि अंतरं, पति भृत्य जानि पटंतरं ॥११४॥

इन मंड आदि न आवहीं, पर्य्यंत पार न पावहीं।
इह देव अंसी अक्खियैं, पढ़ि मान बोल परक्खियैं ॥११५॥

( दोहा )

चित्रकोट चित्रांगदे, मोरी कुल महिपाल।
गढ़ मंड्यौ अवलोकि गिरि, देवंसी दाढाल ॥११६॥
संगहि लिय सीसौदियै, दुर्ग एह रिपि दान।
बापा रावर बीरवर, बसुमति जास बखान ॥११७॥
पाट अचल मेवारपति, रघुबंसी राजान।
बापा रावर बड़ बखत, थिरि चीत्तौर सुथान ॥११८॥
तूठौ क्यौं रिपि राय तिहिँ, तसु को जननी तात।
गह्यौ तिनहिं किन भंति गढ़, बापा बड़ बिख्यात ॥११९॥
सो प्रबंध रचियै सरस, रजन मन महरान।
उत्तम नृप गुन अंखतै, कमला कित्ति कल्यान ॥१२०॥

( कवित्त )

चित्रकोट गढ़ चारु, मंडि चित्रांगद मोरिय।
रिधू करत तहँ राज, ढाहि अरिजन ढढोरिय ॥
तीन लक्ख तोपार, सहस त्रय मदझर सिधुर।
सहस सु रथ भर सस्त्र, प्रबल पायक अपरपर ॥
घन सेन जानि पावस सु घन, जय करि रिण रिपु जुग्गवै।
अति तेज देस दस अट्ठ सौं, भू मेवारहिँ भुग्गवे ॥१२१॥

मेदपाट मालवौ, सिधु सोबीर सवा लख।
सोरठ गुज्जर सकल, कच्छ कावोज गौड़ रुख ॥
बावन धर बैराट, ढुढि बागरि ढुंढारह ॥
नरवर नागर चाल, खग्ग छप्पन खैरारह ॥
दाखिए देस ए अट्ठ दस, चित्रागद मोरी सु चिर।
मह चित्रकोट तिन मडयौ, थप्यौ नाम निज अवनि थिर ॥१२२॥

( कवित्त )

चित्रांगद तें सत्तमैं, पाटैं नृप चित्रंगि।
राज करै चीतौर रिधू, खल दल खग्ग नि षंगि ॥१२३॥

## अथ बापा रावल उत्पत्ति

( कवित्त )

पच्छिम दिसा प्रसिद्ध, देस सोरट धर दीपत ।
नगर वल्हिका नाथ, जंग करि आसुर जीपत ॥
राजत श्री रघुबंस, पाट रघुनाथ परंपर ।
गृहादित्य नृप गरुअ, धरा रछिपाल धर्म्मधुर ॥
हय गय सुयान पायक हसम, अंतेउर परिवार अति ।
नन नंदन तेहि नरिंद नैं, गाढ़ी पूरब कर्म्म गति ॥१२४॥

सकल देव सेवत, क्षितिप पूजत दरस षट ।
देत नवग्रह दान, हत्थि हय हेम हीर पट ॥
तीरथ भेपज तंत्र, करत इक अंगज कज्जह ।
आरतिवत अतीव, रचै नहि चित्त सु रज्जह ॥
सोवंत इक निसि सुख सयन, पत्त सुपन पच्छिम पुहर ।
ससि भाल सीस गंगा सरित, उज्जल वृप आसन सुहर ॥ १२५ ॥

भनहिं ईस सुनि भूप, राज रघुबंसी राजन ।
सुत ह्वै हैं तुअ सकल, सबल जसु वखत सु साजन ॥
परि तसु आनन पदम, नयन निज तुम न निरक्खहु ।
लहियै जो कछु लेख, रंच आरति जिन रक्खहु ॥
नारी सु नंद काके निलय, राज रिद्धि तनु इत रहय ।
निज कृतब सत्थ चल्लैं नृपति, काम दहन सचौ कहय ॥ १२६ ॥

( दोहा )

निरखि सुपन जग्गयौ नृपति, ईस बचन उर धारि ।
आन्यौ चित संतोप अति, आरति सब अपहारि ॥ १२७ ॥
काहू सौं ही सुपन कथ, न कही आप नरिंद ।
दिन दिन धन धन दिहियैं, आहर अति आनंद ॥ १२८ ॥
मेदपाट महि मंडलें, नागद्रहापुर नाम ।
सोलंखी संग्राम सी, धनवति सुता सुधाम ॥ १२९ ॥
निरखि वल्हिका नाथ निज, दिय पुत्री बरदान ।
राजन बरि आये रमनि, सुंदर सची समान ॥ १३० ॥

सोलंखिनी सुलच्छिनी, राजन सरिस रमंत।
अन्य बरस कै अंतरे, गरभ धर्‍यौ गुनवंत॥ १३१॥

गरभ बालही पितृ गृह, आई अति उच्छाह।
पेम मिली माता पिता, बंधु कनिष्ट सु व्याह॥ १३२॥

बंधव बरि आयौ सु बधु, रति सम सुंदर रंग।
धाम आप कै धनवती, चलन कियौ चित चंग॥ १३३॥

मात पिता बंधुनि मिली, यहै कीन अरदास।
रहौ सु बाई रंग रस, चतुरंगौ चौमास॥ १३४॥

मात पिता बच मानिकैं, पावस बरजि पयान।
रही तहाँ राजन रवनि, औसर आवनि जानि॥ १३५॥

( कवित्त )

गृहादित्य नृप गरुअ, भीम भारथ रिपु-भंजन।
काल राति किय काल, गाढ़ गिरिवर गय गजन॥
हुअ हा हा रव हूक, कहर नृप त्रिय सत किन्नौ।
संसकार करि स्नान, दान जल अंजलि दिन्नौ॥
संथप्पि सुता सुत रज्ज सिरि, नव नरपति परधान नव।
ऐ ऐ सुपुत्त थिनु अत्थि इल, बीयौ आइ भुँजै बिभव॥ १३६॥

सुनिय बत्त संग्राम, सीह परिवार समेतह।
धसकि परी धनवती, अवनि मुरझाइ अचेतह॥
सखियनि करी सचेत, धवल उट्ठी धीरज धरि।
सती सत्त संग्रह्यौ, पिता बरजंत बिबिहि परि॥
निज उअर फारि काढ़यौ गरभ, पावक पिंड पइट्ठयौ।
धनि धन्य कहै सुर धनवती, पति सम प्रान परट्ठयौ॥ १३७॥

( छंद कामुकी वाताण )

अट्ठ मासं सुयं नंखि आधानयं।
परठियं साँइ सत्थैं तिनैं प्रानयं॥
अमर बानी बदैं धन्य आवासयं।
बरसए मेह ज्यौं पुप्फ बरसावयं॥ १३८॥

सगति जे कीजियै तेह केही सती ।
धन्य कहियै तिके होइ ज्यौं धनवती ॥
आपणाँ उभय कुल जेण अजुवालियं ।
परम पतिव्रता पण एम तिम पालयं ॥ १३९ ॥

कोटि ते भूप नायन्न कारावियै ।
धाइ राखी घणुं दूध धवरावियै ॥
बाधर हत्थ हत्थेण सो बालयं ।
सुंदराकार तनु गोरस कुमालयं ॥ १४० ॥

पंच धाएण सो आप पोसिज्जए ।
चित्त चाहत ते दित तसु चिज्जए ॥
मज्जण न्हाँण आभूषणैं मडियं ।
सुभग सुचि अंसुकं अंग सालंकियं ॥ १४१ ॥

चंद सिय पख बर जेम नित कल चढ़ै ।
बियौ मासै जितौ एह दिवसें बढ़ै ॥
सोम सम बयण जिम लच्छि-संतानयं।
बोलियै अधिक कि तास बाखाणयं ॥ १४२ ॥

नाम बापौ ठव्यौ बज्जि नीसानयं ।
दिद्धए हेम हय ईहकं दानयं ॥
निरखि नाना तणै चित्त अति नेहयं ।
मोर मनि जिमि बसै सजल दल मेहयं ॥ १४३ ॥

एक दस बरस तिहिं अति क्रम्या अनुक्रमै ।
साहस धीरवर बीर जोबन समै ॥
बनहि क्रीड़ा तणौ बिसन तिहिं नरबरू ।
पंच सय सत्थ बालेण संपरवरू ॥ १४४ ॥

एकदिन एक जोगिद अवलोकियौ ।
सिद्ध हारीत गिरि कंदरा संठियौ ॥
थिर तिहाँ रुद्र इकलिग नौ थानयं ।
प्रणमिया उभय योगिद प्राधानयं ॥ १४५ ॥

पुप्फ फल करिय रिषिराय तब पूजियौ।
मिट्ठ बयणैं कहै अद्य धनि मोजियौ ॥

देव तुम दरसणै दूरि नट्ठौ दुखं ।
सकल संपत्ति मिलि अद्य सुहुवै सुखं ॥ १४६ ॥

सेव दो जॉम लग तॉम तिण साचवी ।
नयण बयणे मिल्यॉ प्रीति बॉधी नवी ॥
चरण रिखि वर तणै अधिक रंज्यौ चितं ।
हद्द लग्गौ सुयोगिद बापै हितं ॥ १४७ ॥

मंगि आदेस आयो तदा मंदिरै ।
सयन किद्धां-निसा-चित्त मुनि संभरै ॥
जो हुवै प्रात तो पास तस जाइयै ।
खीर ने खंड घृत तास खचराइयै ॥ १४८ ॥

प्रात हूवॉ पचावै परमान्नयं ।
मंडकं सरस घृत खंड भिस्टान्नयं ॥
ऊजलै अवरें तेह आछादियं ।
करपि कोदंड कर सिलिमुखं संधियं ॥ १४९ ॥

क्रमि क्रमैं पत्त सो तत्थ गिरि कंदरा ।
वाघ बाराह निवसै तिहॉ बंदरा ॥
पाय} बंदन करी दिद्ध परसादयं ।
सिद्ध वर किद्ध आहार सुस्वादयं ॥ १५० ॥

इण परें सरस भोजन सदा आणए ।
युक्ति योगिदनी भक्ति भल जाणए ॥
मास पट बोलियॉ रीझियो सो मुनी ।
धन्य तूं बालका एम बोलै धुनी ॥ १५१ ॥

अब हम गमन मन प्रात बड़ आवनॉ ।
सौंपि के रज्ज तो पछ सिद्धावना ॥
पूरियौ अंग तस अधिक उत्सक पणैं ।
आव ए तहति कहि मंदिरै आपणैं ॥ १५२ ॥

राति बोली हुई पुब्ब दिसि रत्तड़ी ।
वेगि आवै जितै भूप सु बट्टड़ी ॥
तितै हारीत रिषि गगन गति हल्लियौ ।
बोल बापै तदा आइ इम बुल्लियौ ॥ १५३ ॥

अहो जोगिद करि उच्चरयौ आपणौ ।
थिर थई नाथ जी रज्ज सिरि थापणौ ॥
रवनि सुनि देव मुनि अप्प ऊभौ रह्यौ ।
किज्जिये भूप तुहि मडि मुख यों कह्यौ ॥ १५४ ॥

मडियौ मुख तिणै स्वमुख तबोलयं ।
नंखियौ हेत करि पीक निर्मोलयं ॥
देखि उच्छिष्ट निज बयण टाली दियं ।
लिहिय रिपि मुख तणौ पाय झल्लैलियं ॥ १५५ ॥

कहय रिपि एम तें बाल किद्धौ किसौ ।
अमर हुइ देह नित एह हूतौ इसौ ॥
नेट तो पाय थी राज जायै नहीं ।
किद्ध तूँ भूप में एह वाचा कही ॥ १५६ ॥

अप्पि बर एम योगिद वर अतिक्रम्यौ ।
राग धरि तित्थ अड़सट्ठि फरमण रम्यौ ॥
सदन सपत्त बापौ हुवौ संभ्रम ।
माल्हतो हंस गति मोद मन मभ्रम ॥ १५७ ॥

सत्त दिन बोलिया नंतरै यह समैं ।
रंग रस वनह क्रीड़ा भणी बनि रमैं ॥
चैत सुदि तीज नौ दीह सौ चारुयं ।
सकल सुहव तिया करिय सिगारुयं ॥ १५८ ॥

नगर नागद्रहा हूंत ते नीसरी ।
केलि करिबा चली बनहिँ हरषैं करी ॥
गावए नवनवी भास करि गीतयं ।
रिज्झए मान कवि रसिक तिहि रीतयं ॥ १५९ ॥

( दोहा )

जाति जाति निज झुंड जुत, बाला करत बिनोद ।
रास देइ निज रंग मैं, पतिवति सकल प्रमोद ॥ १६० ॥

अकस्मात तब सिह इक, कोप कियैं महकाय।
उतरि सिहरि आकास तैं, अबलनि मध्य सु आय ॥ १६१ ॥

बिफुरयौ सो बहु बाउ ज्यौं, बबकि बिलूरैं बाल।
कै भग्गी भय भीति कै, बनिता केक बिहाल ॥ १६२ ॥

सूर वीर देखै सकल, हल्लि किनहिं नह नाइ।
सिह मग्ग संगहि रह्यौ, बाला अति बिललाय ॥ १६३ ॥

( कवित्त )

सुनि बापा नृप सोर, अबलैगन मध्य सु आवहिं।
चापर धनुष चढ़ाय, सहज टंकार सुनावहिं ॥
उहि छिन सिंह अदिट्ठ, होत सब बाला हरषिय।
प्रवर पुरुष सु प्रधान, नयन धरि नेहा निरखिय ॥
मन कामदेव अवतार मिनि, कितनिक इक्क सुमंत करि।
बरमाल घल्लि गर तब बर्यौ, इक सत अठ उत्तम कुँवरि ॥१६४॥

( दोहा )

पानि ग्रहन कीनों नृपति, इक सौ सुंदरि अट्ठ।
तरु-मंडप सहकार तन, मंजरि मौर सु मिट्ठ ॥१६५॥

सहज सिगारित सुंदरी, बिबिध सहज बादित्त।
गीत सु सहजैं गावहीं, ऐ ऐ अद्भुत चित्त ॥१६६॥

पुत्री परनित सुन पिता, सकल तत्थ संपत्त।
कर छोड़ावनि हरष करि, बहु विधि अप्पिय बित्त ॥१६७॥

करी सु करहा बहु कनक, हीरा मोक्तिक हार।
पंच वर्ण जरबाफ पट, आए सधन अपार ॥१६८॥

हय दस किन किन बीसहय, दीन दायजै दान।
साकति स्वर्ण पलान सब, गिनत सहस त्रय मान ॥१६९॥

दासी किन इक किन सु दुइ, सब विधि जांन सुजान।
पुत्री प्रति दीनी पिता, सकल अधिक सनमान ॥१७०॥

( छंद विराज )

बरी सर्व्व बाला, रमा ज्यौं रसाला ।
मनी मुत्ति माला, लही लाख लाला ॥ १७१ ॥
दुरमा दुमाला, हयं हीसवाला ।
सरूवं सिघाला, पुलें ज्यों पंखाला ॥ १७२ ॥
सिंगारे सुंडाला, महा मत्तवाला ।
हलंते हटाला, मनौं मेघमाला ॥ १७३ ॥
सची सी सहेली, पढ़ें जे पहेली ।
करती सु केली, दिनेसं दुहेली ॥ १७४ ॥
सबैं लीन सथ्थैं, अमानै सु अथ्थैं ।
महा द्विरद मथ्थैं, चढ़ें चारु पथ्थैं ॥ १७५ ॥
घुरंती घमस्सैं, निसानं निहस्सैं ।
करी कुभ कस्सैं, जयं जै सु जस्सैं ॥ १७६ ॥
भणैं बिरुद भट्टा, घनैं घाघरट्टा ।
थटै बाजि थट्टा, बहैं सेनु पट्टा ॥ १७७ ॥
पुरं सु प्रवेसं, निहारैं नरेसं ।
बहू बालबेस, बनीता बिसेसं ॥ १७८ ॥
सु संग्रामसीहं, अमंगं अबीहं ।
करैं हर्ष कोड़ं, जगानंद जोड़ं ॥ १७९ ॥
नियं पुत्ति पुत्तं, सु लोके सपुत्तं ।
दिए ग्राम दानं, सिसोदा सुथानं ॥ १८० ॥
बसै तत्थ बासं, उमंगें उल्हासं ।
रची राजधानी, सिवा सुप्रमानी ॥ १८१ ॥
प्रगट नाम पायौ, सिसौदा सुहायौ ।
सबर एह साखा, भनैं देवि भाखा ॥ १८२ ॥
भलौ काम भोगी, स्वबामा सँयोगी ।
रमैं रत्ति दीहा, जपै को सुजीहा ॥ १८३ ॥
किनैं चित्रकोटें, सुजंपी सजोटें ।
बरं ब्याह बित्तं, चित्रंगी सुचित्तं ॥ १८४ ॥

उपन्नौ अचिज्जं, कहै मंत्रि कज्जं ।
पठायौ सुपत्ता, दियं पुत्ति दत्तं ॥ १८५ ॥
क्रमैं ब्याह किन्नौं, लछी लाह लिन्नौ ।
नियं पुत्ति नाथं, समप्पै सुसाथं ॥ १८६ ॥
हयं दो हजारं, सुवर्णे सिंगारं ।
दिये मत्त दंती, खरी आनि खंती ॥ १८७ ॥
दयौ अद्ध देसो, मिवारं महेसो ।
दई केइ दासी, रची रूप रासी ॥ १८८ ॥
जरी पाघ जामा, समप्पैं सकामा ।
दयो कोटि हेमं, प्रगटि आनि पेमं ॥ १८९ ॥
सुथानें संपत्तौ, रमैं रंग रत्तौ ।
बनीता बिनोदं, महा चित्त मोदं ॥ १९० ॥
कितै काल बित्तौं, वदी दूत बत्तौं ।
चित्रंगी चढ़ाई, करैं कच्छ जाई ॥ १९१ ॥
चलौ चित्रकोटैं, इला दुर्ग्ग ओटैं ।
रखौ अप्प राजा, सजौ बेगि साजा ॥ १९२ ॥
सुने दूत सद्दं, निसानं सु नद्दं ।
भयौ मान भायौ, उमंगे यु आयौ ॥ १९३ ॥

( दोहा )

चित्रकोट आए सुचढ़ि, बापा नृप बर बीर ।
मोरी चित्रंगी मिलै, साहसवंत सधीर ॥ १९४ ॥
चित्रंगी तब हो चढ़ै, बंब निसान बजाइ ।
बापा बीरहिं राखिकैं, चित्रकोट चित चाइ ॥ १९५ ॥
चितिय बापा बीर चित, नृप इन दे निज धीय ।
बंधन बंधै पेमकैं, कीनै अनुग स्वकीय ॥ १९६ ॥
हम हूँ नृप निज थान हैं, इह नृप इनके थान ।
करैं न हम पर किकरी, यो न तजैं अभिमान ॥ १९७ ॥
रहय कवन उद्योत रवि, सिह बहय नहिँ सीर ।
इंद कवन आधीन हुइ, हम राजा रनधीर ॥ १९८ ॥

चित्रंगी मुक्किव चल्यौ, जे जे सुभट जुझार।
अवनि गांव तिन दै अधिक, किए सु आज्ञाकार ॥ १९९॥

चित्रंगी कच्छहिं चलिय, पिट्ठिय सु पुच्छिय पंच।
बापा बीर महाबलिय, सज्यौ कोट लहि संच ॥२००॥

गोरा नारि सु सोर घन, सस्त्र भृत्य सु विचार।
हय गय रथ पायकह सम, भरि अन धन भंडार ॥२०१॥

( कवित्त )

बापा नृप बर बीर, भौन निज दुर्ग भलाइय।
चित्रंगी चित चंड, सथ दल सज्जि सवाइय ॥
चढ़यौ कच्छ पर चूक, धरनि खुरतारहिँ धुज्जिय।
खल कुल अति खरभरिय, भग्ग अरिभूमि सुतज्जिय ॥
दीसंत मग्ग नन दिसिवि दिस, रवि मंडल छायौ सु रज।
दिसि छंडिभग्गि दिगपालदस, गद्यत गुहिर सु सद्द गज ॥२०२॥

( दोहा )

जुरयौ जाइ चित्रंग नृप, काल कीट ककाल।
कच्छ विभच्छ उधंस किय, भरिय रोस भूपाल ॥ २०३ ॥
परयौ पाइ कच्छाधिपति, दंड मानि रस ठानि।
पुत्रि देइ हय गय प्रवर, जग जोरवर जानि ॥ २०४ ॥

( कवित्त )

कच्छ देस निज करिय, जग मोरी नृप जित्तिय।
कूच कूच प्रति कूच, पुहवि मेवारहिं पत्तिय ॥
दुर्ग मुक्कि निय दूत, कह्यौ पयसार सुकज्जह।
कह्यौ सो करि कोप, सबर सीसोदा सज्जह ॥
सुनि तय्यौ ताम मोरी ससुर, बुल्लय एह असोचि बच।
गढ़ छंडि आउ रिन मंडि गुरु, सबरं तन विधि एह सच ॥२०५॥

निठुर ससुर बच सुनत, तमकि मंगिय तोषारहिं।
सज्जि तुरिय सथ परवर, सनाह सिर टोप सुधारहिं॥
बिहसि सकति कटि बंधि, तौंन बहु सर तरवारिय।
चंड चित्त कर चाप, हय सु इक लख हकारिय ॥

इक सहस दंति मदझर अनड़, लख पंच पायक्क लिय ।
चढ़ि समुख चढ़यौ चित्रकोट तैं, बापा वीर महाबलिय॥२०६॥

( दोहा )

सस्त्र-यांन भरि इक सहस, घुरत निसाननि घोस ।
कायर थरहरि कंपई, सूर नरन संतोस ॥ २०७ ॥

उत तौं मोरी दल अधिक, चित्रंगी चित चंड ।
आयौ गढ़पति ऊपरै, मंडिय दुहुँ रिन मंड ॥ २०८ ॥

( छंद दडका )

मिलिय बापा वीर मोरिय, जुरै दुहूँ बरवीर जोरिय ।
सनन सद्द अवाज सोरिय, गनन गुंजत बहत गोरिय ॥२०९॥

छुट्टि बाननि भांन छाइय, उमड़ि मनु घनघोर आइय ।
धौंग धसमस करत धाइय, पेखि कायर नर पलाइय ॥२१०॥

ठनकि गज घंटा सु ठननन, भनकि भेरि नफेरि भननन ।
खनकि खग्ग उनग्ग खननन, झनकि ज्यौ झल्लरी झननन॥२११॥

किलकि कर कहैं कटारिय, देखिये दीरघ दुधारिय ।
ढुढि ढुंढि सुपिसुन ढारिय, बीर निज निज बल बकारिय॥२१२॥

झाट झर मँडि बजि खगझट, घुमत घायल घाव घण घट ।
गिद्ध पीवत श्रोन गटगट, जिद ढूँढत फिरत सिर जट ॥२१३॥

सूर झूझत सार सारह, झरत सीस सुरंग झारह ।
धुकत धर धर लगत धारह, मंडि मुख मुख मार मारह॥२१४॥

नृतत नीर कमंध नच्चिय, रोस रस रन रंग रच्चिय ।
सिधु सुर सहनाइ सच्चिय, मॉस रुहिर सु पंक मच्चिय॥२१५॥

बित्त आयुध होत लथबथ, रथकि किन चकचूर किय रथ ।
भिरत भींच सु भार भारथ, प्रगटि मनु दुर्योध पारथ ॥२१६॥

समुख सज्जिय सूर सूरह, प्रचलि श्रोन प्रवाह पूरह ।
झाक बज्जत होत झूरह, नयन रत्त सुबीर नूरह ॥२१७॥

देत निज निज पति दुहाइय, समरि परमेसर सहाइय ।
घुरिय घाट त्रिघाट घाइय, भूत प्रेत पिसाच भाइय ॥२१८॥

उड़िय रेनु सु ढंकि अंबर, झमकि डोरू नद्द डंबर।
नवत गायन देव तुंबर, सुरीय मन रन जानि संबर ॥२१६॥

समर हय गय फिरत सूनह, चरन पय दल होत चूनह।
लहिय उयरैं माँइँ लोनह, दपटि गज घट चित्त दूनह ॥२२०॥

डहिय सिधुर परिय टेरह, मानु अजन वर्ण मेरह।
घिरिय दुहुँ दल करिय घेरह, जोध इक वहु करत जेरह २२१॥

रुड मुड रुडत रड़वड़, लटकि कधहिँ सीस लड़वड़।
देत दल विचि बोर दड़वड़, गगन गुंजत सद्द गड़वड ॥२२२॥

झलकि सेन सु सार झलमल, हलकि कायर काय हलमल।
कहर सोर सजोर कलकल, देखिये अनभंग दुहुँ दल ॥२२३॥

झरत लोह सु छोह झड़झड़, कटकि हड्ड सु जड्ड कड़कड़।
दड़कि अरि सिर परत दड़दड़, हँसिय नारद वीर हड़हड़ ॥२२४।

अंत पंतिय पय अलूझत, धियौ अप्पन को न बूझत।
झपटि लटि योधार झूझत, मार मचि तरफरिय मूझत ॥२२५॥

बित्त लरत सु सत्त बासर, आहटे मनु अमर आसुर।
भरिय रोस असोस भासुर, सद्द जय जय उच्चरिय सुर ॥२२६॥

भगग मोरी सेन भग्गिय, वीर बापा जयति बग्गिय।
लोथि लोथि सु जेट लग्गिय, जंग इन समथो ब जग्गिय ॥२२७॥

योगिनी सुर जपत जयजय, गहियतें चित्रकोट हय गय।
वीर बापा बलिय लहु वय, जग प्रथमहि कोन निज जय ॥२२८॥

देव देवि विमान दरसिय, व्योम हूँत सु कुसुम बरसिय।
सजल सहज सुगंध सरसिय, चवत मॉन सुजान चुरसिय ॥२२९॥

( दोहा )

चित्रकोट गहि चित सुरस, बापा नृप बड़वार।
मोरी कन्छहिँ मुंचि वर, करि निज आज्ञाकार ॥ २३० ॥
देस लियै निज अट्ठ दस, मोरी आनहिँ मेटि।
बापा बीर अनत बल, सत्रव सकल समेटि ॥ २३१ ॥
आए नृप दुर्ग्गहिँ अतुल, नोबति बज्जत नाद।
मडय को नृप महियलहिँ, बापा नृप संवाद ॥ २३२ ॥

( कवित्त )

जय पत्ते जुरि जंग, महा मोरी दल मोरिय।
बापा नृप बर बीर, बखत बल रज्ज बहोरिय॥
करि सुराज चित्रकोट, नाद नोबत्ति निसानह।
हय गय पय दल हशम, गनक को गिनय सु ज्ञानह॥
पेखंत सघन उल्लटि प्रजा, बनिता कलस बँधाइ बर।
चित चूंप सिँगारिय सकल गृह, तोरन मंडिय तुंग तर॥ २३३॥

( दोहा )

तोरन मंडप तुंग तर, सोवन रतन सिँगार।
मुकर पंति पट कूल मय, दीपत राजदुआर॥ २३४॥
राजमहल संपत्त रसु, सोवन तुला सँचिट्ठ।
जज्ञ सुमंडिय जय तिकौ, बाघासनहिँ बइट्ठ॥ २३५॥
इंद्रसभा की ऊपमा, थटि हय गय भट थट्ट।
बंदीजन बुल्लाय बिरुद, भारे चारन भट्ट॥ २३६॥

( कवित्त )

सत्तम दिन निसि समय, प्रहर पछिलय प्रसिद्धह।
सुपन पत्त श्रोकार, सोइ हारीत सु सिद्धह॥
अवनी पति प्रति अखि, बीर बापा सुनि बत्तह।
तुमहि सु हम सतुट्ठ, दीन चित्रकोट सु दत्तह॥
पय रज्ज अचल मेवार पति, बचन एह सदेह बिनु।
अब रावर पद तुझ अप्पियहिँ, सुत सतति सबहँ सुदिन॥ २३७॥

( दोहा )

सिद्धि अप्पि रावर सुपद, अंगहि धरि निज अंस।
गय योगिद सु गगन गति, पढ़ि भूपति सु प्रसस॥ २३८॥
जग्गौ बापा बीर जब, उदयौ अरक अभंग।
राजन अति उत्साह रचि, रावर पद गहि रंग॥ २३९॥

( कवित्त )

रावर पद गहि रंग, वीर बापा सु सिद्ध वर।
बापौती सु बहोरि, धरिय भानेज अन्य धर॥
पंच लक्ख हय पवर, सहस दस मत्तसु सिधुर।
पनर लक्ख पायक्क, सत्त सय सुदरि सुंदर॥
नव हत्थ देह सु प्रमान निज, भष्प सवा मन जास भल।
पल बावन टोडर इक्क पय, बापा रावर अतुल बल॥ २४०॥

———

# द्वितीय विलास

( छंद विश्रछरी )

बापा रावर पाट विराजय । रावल श्री ग्वॅमान सुराजय ॥
नगर तिनहिँ थमणौ निपाइय । सिंध मालवपति समर हराइय ॥ १ ॥
रावर श्री कुबेर रयणायर । दान करन तप तेज दिवायर ॥
रावर त्रिपुरसही वहु विक्रम । सत्यवंत हरिचंद भूप सम ॥ २ ॥
गोविद रावर रिनहिँ थिर सुहर । गट्ट गुमान जानि सुर गिरवर ॥
श्री माहेद्र नाम महरावर । विभव अनंत सत्य वसुधा वर ॥ ३ ॥
कीरतिधवल धवल कीरतिधर । सकुँतकुमार रावर जनु श्रीधर ॥
सारिवाहन रावर सक बंधिय । सिह समान सकलधर सद्धिय ॥ ४ ॥
रावर श्री नर लील रढालह । पुहवीपति सु प्रजा प्रतिपालह ॥
अवपसाउ सु जंग अभंगह । श्री नर ब्रह्म बखानि सु चंगह ॥ ५ ॥
अल्लू रावर राजनीति अति । इंद नरिंद एक जनु गति मति ॥
विरद आघाट साख उतपन्निय । महिमंडल नृप नृप करि मन्निय ॥ ६ ॥
जुद्ध जुड़ण रिपु मलन जसोभ्रम। धारन सिघ राज क्षत्रीधम ॥
जागराज रावर जयवतह । साहस सिह समान सुमंतह ॥ ७ ॥
रावर गात्र गिरुआ जस गज्जय । तीखै अरि तनु तेह सु तज्जय ॥
रावर हस मदन सम रूपह । भेटहिँ जसु पय वड़ वड़ भूपह ॥ ८ ॥
भटटू रावर जास महा भट । कृतव ऊँच निज राखन कुलवट ॥
भटेवरा नृप तातैँ भनियहिँ । अति अवगाढ़ सुभट सिरि गिनियहिँ ॥९॥
वैरसिंघ रावल अतुली वल । देखिय सायर सरिस जास दल ॥
महणसीह रावर महिमागर । नूर जास नित नित नर नागर ॥ १० ॥
करमसीह ऊँच कृत कीनह । पदमसीह रावर सु प्रवीनह ॥
जैतसीह रावर जोधारह । सुनियहिँ तेजसिह सिरदारह ॥ ११ ॥
समरसीह रावर जस सारह । श्री पृथीराज रास सुविचारह ॥
पृथा सोम चहुआन सु पुत्तिय । पानिग्रहन संभरि पुर पत्तिय ॥ १२ ॥

दलिय युद्ध जयचंद पंगदल । समरसीह रावर दल संकुल ॥
संपत्तो दिल्लीस सहाइय । पृथीराज चहुआंन सु पाइय ॥ १३ ॥

रावर चौड हिंदु मग राखन । वसुधा नायक वीर बिचक्षन ॥
घण दाता ग्याता खल घायक । सबल उथप्पन अबल सहायक ॥ १४ ॥

रतन सेन रावर वर रज्जिय । संवत दस पण तीसहिँ सज्जिय ॥
पद्मनि सिंहलदीपहिँ परनिय । हरि हर बंभ देव मन हरनिय ॥ १५ ॥

अलावदी आलम चढ़ि आइय । बरस एक रहि पुल बंधाइय ॥
बनिता देन असुर वहिकाइय । मरदानै तव मारि मचाइय ॥ १६ ॥

भय मन्निय असपति तबभग्गिय। जय जय रतनसेन जसजग्गिय॥
धनि जननी जिन उयरहिँ धरियौ। इल अवतार रूप अवतरियौ ॥ १७ ॥

भूमि चूँड रावर भट भारी । सज्जत सेन दहल धर सारी ॥
डूँगरसी रावर नन डुल्लय । हरषि समर समुह ते हल्लय ॥ १८ ॥

रावर पुंजा रिण रस रंगिय । निज कर करि अरि सेननि खग्गिय॥
श्री नरपुंज सु दान समप्पय । कवि वर दुग्ग दारिद्रहिँ कप्पय ॥ १९ ॥

प्रतापसीह रावर सु प्रतापह । छत्र धारि नृप भिर जसु छापह ॥
करन समान सुकरन कहावहिँ । तिन समान नृप कोइ न आवहिँ ॥ २० ॥

इत्यादिक रावर अवतारिय । जटा मुकुट ईश्वर अनुहारिय ॥
राजथान चित्रकोट सु रज्जय । गुरु गहिलौत साख धुर गज्जय ॥ २१ ॥

सूरवीर दातार सुसीलह । लच्छीपति सम जसु जस लीलह॥
मगन कहत एह कवि मानह । वसुधा नायक सरस बखानह ॥ २२ ॥

( कवित्त )

करन पुत्र दुअ कहिय, जिट्ठ राहप त्रिभुवन जस ।
माहव दुतिय महिद, बाघ रिपु करन अप्प बस ॥
राणा पद राहपहिँ, लीन करि उत्सव लक्खह ।
संवत तेरह सुद्ध, पंचदस बरस प्रतक्खह ॥
थपि एकादस कुल देवि थिर, याग भाग बधिय जुगति ।
दुहुँ बेर बरस मंडै सु दुति, नौमी दिन पूजै नृपति ॥ २३ ॥

( दोहा )

राना राहर रंग रस, इच्छित पूरन आस।
रावर पद माहप रच्यौ, जूवराज करि जास ॥ २४ ॥

( छंद नीसानी )

राहप रान अजेय रिन, जननी धनि जाया।
कृतव ऊँच किये जिनहिँ, मह जज्ञ मंडाया॥
अजा सिह दुहुँ घाट इक, पानिय तिन प्याया।
राणा पद लिय रंग सौं, कुल कलस चढ़ाया ॥ २५ ॥

दिनकर रान दिनेस दुति, सक बंध सवाया।
राना श्री नरपति रिधू, बिधि आप बनाया॥
जयवंता जसकरन जग, करमेत कहाया।
सज्जन जनहिँ सुहावना, अपरहिँ असुहाया॥ २६ ॥

पुन्य पाल राना प्रगट, परमेश्वर पाया।
मुख देखत रिधि सिधि मिली, मन सोच मिटाया॥
पीथल राण अडोल पग, पतिसाह बुलाया।
अनमन बाए अतुल बल, भल दंड भराया ॥ २७॥

भूमि भोग पति भाणसी, राना सु रिझाया।
दै हैं मुँह मांग्या दरव कुंदन सु कटाया॥
भीम सरीसे भारथनि, भल भीम भलाया।
सत्रव कहूँ न रहि सकै, सब जगत सुधाया॥ २८ ॥

रान अजयसी वीर रस, खल जूह खिलाया।
नारद तुवर नच्चिया, गुण ग्रंथव गाया॥
लखमसीह जस लोभिया, बसु घण बरसाया।
राजस गुण जुत रति रवन, अवतार उपाया ॥ २९ ॥

अरसी राख महा अनड, हल्लय न हलाया।
सिधुर तुरग समप्पनां, दत नाम दिपाया॥
सीस जाम गंगा सलित, सिव रूप सुहाया।
रज्ज बहोरि हमीर रांण, रिधू बोल रहाया॥ ३० ॥

खेतल राण समाहि खग, अरि कटक उड़ाया।
पर दुख कातर पुहवि पति, वड़ विरुद वुलाया॥
लाखणसी राणा सु लछि, तनु सोवन ताया।
बस बिभूपन दल बहुल, दिल दत्ता दिढ़ाया॥ ३१॥

मोकल राण उदार मन, निज सुजसनि पाया।
वैरी पकरि बिभच्छना, जनु सिह जगाया॥
कुंभ राण अखियात कलि, लख हेम लगाया।
पनरासै पचरोतरै, परगट परनाया॥ ३२॥

कुंभलमेर अजीतगढ़, वहु लोक बसाया।
महन रंभ आरंभ करि, महि दंद मिटाया
चित्रकोट चित चूँप सौं, कमठान कराया।
कुंभसामि देवल कलस, धज दड धराया॥ ३३॥

राणा जाच्या रायमल, लख दान सु ल्याया।
संपति जिहिं पाई सकल, भव दुःख भगाया॥
राण सग्राम सुरोस रस, सजि कटक सवाया।
नरवर दुर्ग निसान लिय, लछि नगर लुटाया॥ ३४॥

उदयसिघ राणा अनम, जग नाम जनाया।
अलकापुर सम उदयपुर, वर नगर बसाया।
राण प्रताप सु रुद्र रस, मह जंग मचाया।
अवदुल्ला सरिखा असुर, गज सहित गिराया॥ ३५॥

सहस बहुत्तरि दल सकल, खग मारि खिसाया।
साहि अकब्बर संकयो, ए बीर उपाया॥
अमरा रांण सदा अमर, गुण गीतहिं गाया।
अरिजन भुज बल आहनिय, घन सुजस घुराया॥ ३६॥

करण राण चढ़ती कला, संसार सुणाया।
वसुधा-नायक अति बिभव, गुरु बखत गिणाया॥
जगतसिंघ राणा सुजय, जस करि जग छाया।
आखत मान निधान ए, भनते मन भाया॥ ३७॥

( कवित्त )

जगतसिंघ जोधार, राण हिदू मग रक्खन ।
अनम अगम अकलंक, वेद व्याकरन विचक्खन ॥
एकलिंग अवतार, आदि नर वर अतुलह बल ।
मुख देखत निधि मिलत, जगत जंपत जस परिमल ॥
सुकृत सुमेर सीसोद नृप, साहसीक सुदर सुमति ।
श्री करन रान पाटहिं प्रवर, पुन्यवंत मेवारपति ॥ ३८ ॥

( छंद हनूफाल )

श्री जगतसिह सुरान, बिरुदैत बड़ बाखान ।
सु श्रिय सुरेस समॉन, दाता सु हय गय दान ॥ ३९ ॥
ऐ हिदु कुल आदीत, अनमह अभंग अजीत ।
रक्खन सु रविकुल रीति, गावै सु कवि जस गीत ॥ ४० ॥
कालॉकि जन केदार, सब हिदु सिर सृंगार ।
दुतिवंत जिन्ह दरबार, दिन दिनहिं दय दय कार ॥ ४१ ॥
पुहवी प्रजा प्रतिपाल, देख्यौ सु दीनदयाल ।
रिण रंग अॅग रढाल, भट जानि भीम भुजाल ॥ ४२ ॥
बसुमती रक्खन बीर, नित नवल जिन्ह मुख नीर ।
सग्राम साहस धीर, सौवर्ण वर्ण सरीर ॥ ४३ ॥
नित सिंघ रूप निसंक, बलवंत कट्टन बक ।
कट्टन सुरोर कलंक, मुख जानि पूर्ण मयंक ॥ ४४ ॥
छाजंत सीसहिं छत्र, पटि कनक दंड पवित्र ।
चामर ढुरंत सुचंग, भल करन रिपु मद भंग ॥ ४५ ॥
चंचल सु रांन चढ़ंत, पर भूमि हलक पड़ंत ।
रिपु नारि वनहिं रुड़ंत, गह तासु ग्रंथ गड़ंत ॥ ४६ ॥
कर झलि वर करवाल, परठंत पिसुन पयाल ।
रतिरवन रूप रसाल, असुरेस चित नटसाल ॥ ४७ ॥
खनकंत जसु कर खग्ग, लुलि अनम नर पय लग्ग ।
भुवि छंडि के रिपु भग्ग, कर गहत धनु ज्यौं कग्ग ॥ ४८ ॥

सग सिधु सरस समाव, अति सबल दल उमराव ।
दै ना सु पर धर दाव, पहु करन लाख पसाव ॥ ४६ ॥

खल झल्लि कीजत खूँन, हय गय सु हाटक हूँन ।
दल जानि पावस दून, चलतैं सु गिरि हुइ चून ॥ ५० ॥

अति दत्त चित्त उदार, इल करन पर उपगार ।
भरना सु पुन्य भँडार, कवि जपत जय जय कार ॥ ५१ ॥

जिन मानधाता जाय, करि परम पावन काय ।
निज खंति तीरथ न्हाय, मन सत्त हेम मँगाय ॥ ५२ ॥

वर तुला अप्प बइट्ठ, जगतेस रान सु जिट्ठ ।
बसु कनक जलधर बुट्ठ, दाता न जिन सम दिट्ठ ॥५३॥

कुंदनहिँ कुती कीन, दिल उचित दान सुदीन ।
नरनाथ नित्य नवीन, लहि लच्छि लाहा लीन ॥ ५४ ॥

श्री उदयपुर सृगार, जगनाथराय जुहार ।
प्रासाद वर प्राकार, जगतेस पुन्य अपार ॥ ५५ ॥

बर कनक बिसवा बीस, ब्रह्मड रवि इकबीस ।
जगतेस राण जगीस, बहु बेर किय बगसीस ॥ ५६ ॥

अभिनवा बसुमति इंद, द्युतिवंत जॉनि दिनंद ।
कट्टन सुरिपु कुल कद, श्री करण रॉण सुनंद ॥ ५७ ॥

अवदात सुजस अपार, पभनंत नांवहि पार ।
यह धर्म्म नृप अवतार, जगतेस जस जयकार ॥ ५८ ॥

भुवि दीप सायर भांन, सुर सेल चंद समान ।
महकंत जस कहि मांन, जगतेस रांन सुजान ॥ ५९ ॥

( दोहा )

तिय बसुमति भालहिँ तिलक, जिगमग जोति जराउ ।
निपुन सुमति नर निर्म्मयौ, बहु बिधि बरन बनाउ ॥ ६० ॥

राजथांन महारान कौ, सकल अवनि सृंगार ।
उदयापुर बर नगर इह, इंद्रलोक अनुहार ॥ ६१ ॥

प्रवर बिकट पुर चहुँ परधि, पर्वतमय प्राकार ।
चहुघाँ तें पर चक्र कौ, सपनै नहिँ संचार ॥ ६२ ॥

कोसीसावलि सोह कर, प्रबल बुरज प्राकार।
खंभ सु प्रबल कपाट युत, प्रौढ़ पौरि पतिहार ॥ ६३ ॥

बसति जहाँ बहु बिधि बरन, द्वादस कोस बिसाल।
थान थान कमठान थिर, ऋतु पट ही सु रसाल ॥ ६४ ॥

चहुँ दिसि बाग सु वाटिका, जल सारनि कृषि जान।
सायर सम सरवर सजल, नदी सु कुंड निवान ॥ ६५ ॥

पल्ल खचित सम भूमि बहु, प्रबल ऊँच प्रासाद।
गोख जारि सोवन कलस, बदत गगन संवाद ॥ ६६ ॥

राजलोक सुरलोक सम, पात्र सु पात्र नवीन।
विविधि वृंद वारांगना, कंचुक पुरुष प्रवीन ॥ ६७ ॥

राजसभा सिंहासनहिँ, राजत श्री महरान।
आतपत्र चामर उभय, सोभ सुरेस समान ॥ ६८ ॥

बैठे निज निज बैठिकहिँ, सुभट राय साधार।
प्रोहित मंत्री सर प्रवर, हुकमदार हुजदार ॥ ६९ ॥

दलपति गनपति दंडपति, गजपति हयपति सार।
रथपति पयदलपति प्रगट हैं, जिन्ह अति अधिकार ॥ ७० ॥

कोसरु कोठागार पति, साख साख भर भूप।
षटभाषा नव खंड कै, नर जहँ नव नव रूप ॥ ७१ ॥

सुश्रूषिक पार्श्वग गनक, लेखक लिखन अभूत।
महिंक संधिक यष्टि धर, अनुग दुवारिग दूत ॥ ७२ ॥

श्रीपति सेठ सुसार्थपति, सौदागर संगर्व्व।
मागध चारन भट्ट कवि, गायन गन गंधर्व्व ॥ ७३ ॥

वादित्रिक मौष्टिक विविध, पायक वैद्य प्रसिद्ध।
नट बिट बटुक सु गल्ह नर, सभा संपूरि समृद्धि ॥ ७४ ॥

## राजसभा वर्णनम्

सकल सवर कमठान युत, सहसक खंभ सरूप।
गजसाला रथसाल गुरु, आयुधसाल अनूप ॥ ७५ ।

हयसाला बहु वरन हय, कोस सु कोठागार।
विविध वस्तु धन धान कैं, भरै सु सुभर भंडार ॥ ७६ ॥

करभसाल उन्नत करभ, वृषभसाल वृष जानि।
बेसरिसाल त्रिसाल बहु, बेसरि वर्ग बखानि ॥ ७७ ॥

सीह क्रौड़ चित्रक सरभ, सीह घोस कपि रिच्छ।
संभर गैडा रोझ मृग, स्वापद साल सु अच्छ ॥ ७८ ॥

पारावत बहु रंग कै, मैना मोर चकोर।
सुक मराल सारस बतक, विहगसाल बरजोर ॥ ७९ ॥

अलखंडौ खलि जालियुत, भोजनसाल सुभंत।
नौबतिसाल विनोद नित, बहु बादित्र बजंत ॥ ८० ॥

मंगलीक दरबार सुख, देवालय दीपंत।
धजादंड सोवन कलस, व्योमहिं बाद बदंत ॥ ८१ ॥

गृह गृह मंदिर धवल गृह, गृह गृह प्रति जिन गेह।
गृह गृह हरिहर गेह गुरु, गृह गृह अर्थ अछेह ॥ ८२ ॥

गृह गृह भोग विलास बहु, गृह गृह मंगल माल।
गृह गृह हरष वधाउनै, गृह गृह सर्व रसाल ॥ ८३ ॥

गृह गृह नित पानिग्रहन, गृह गृह पुत्र प्रसूति।
गृह गृह न्याति सु न्योंति यहिं, गृह गृह अगिनति भूति ॥ ८४ ॥

जाति गोत बहु वंसयुत, बसत अठारह वर्ण।
निय निय कर्म सबै निपुन, सधन सुभास सुवर्ण ॥ ८५ ॥

असन बसन बसु बासु पसु, जान दान सनमान।
वाहन भोग सुरूप भल, भाषा भूषण गान ॥ ८६ ॥

( मोतीदाम )

उदैपुर इंद्रलोक अनुहार, बसैं सुखवासहिं वर्ण अठार।
गृह गृह मंदिर पौरि पगार, भरै धन कंचन रूप भंडार ॥ ८७ ॥

बसै तहँ राज कुलीस छतीस, हयद्दल गयदल पैदल हीस।
बहू विधि न्याति सुविप्रनि बृंद, पढ़ैं चहुँ वेद पुरानरु छंद ॥ ८८ ॥

पुरोहित भट्टरु पाठक व्यास, तिवारिय चौबे दुबे सु प्रकास।
सुजोइसि पंडित केउ बभाइ, कितै श्री पात सुत्रह्म कहाइ ॥ ८९ ॥

कलाधर भूधर श्रीधर केइ, यशोधर जैधर लखलख लहेइ।
गजाधर गनधर गोप गुविद, महीधर गिरिधर वालमुकुंद ॥ ९० ॥

बसैं तहँ सेठ सु सारथवाह, बडे संघनायक श्रावक साह।
धरैं जिन सासन जैन सुधर्म, श्रद्धालु कृपालु दयालु सुकर्म ॥ ९१ ॥

बसैं तहँ कायथ केउ हजार, लिखैं बहु लेख अलेख लिखार।
सदा तिन एक सयान सुबुद्धि, रँगै रस रूपहिं ऋद्धि समृद्धि ॥ ९२ ॥

बसैं बिरुदाइय भट्टनि राव, लहैं नृप द्वारहिं लाख पसाव।
सु चंडिय नंदन चारन चंग, रहैं नृप संग महा रस रंग ॥ ९३ ॥

कितेइ बसंत सुनार कँसार, सुजी सुत्रधार भराए रँगार।
सिलावट जट्ट कुडंभि अहीर, कुलालरु मालिय भोइय भीर ॥ ९४ ॥

तमोलिय तेलिय बृंद तल्यार, सिलीकर नापित लक्ख लखार।
चितारे लुहारे सु कागदि केज, खरादि जरादि किते रँगरेज ॥ ९५ ॥

किते सब नीक मनीगर सच, सुधौप कलीलि करानि प्रपंच।
डमंकर भाभर भुंजे कलार, बन कर भीलरु ऊँड़ किरार ॥ ९६ ॥

नटा बिट मागध बटुक सनूर, सुमोचिय म्लेच्छ मतंग समूर।
रैवारिय रट्ठिय कट्ठि चमार, पनीगर पायक खेट प्रचार ॥ ९७ ॥

सुगायन पण्य त्रियानि प्रभृति, बिभौ युत पैंनि अनेक बसंति।
नियंनिय बासनि नार निनारि, प्रजा जनु अंबुधि नीर अपार ॥ ९८ ॥

गृहं गृह दंपति भोग सँजोग, गृहं गृह निर्भय नूर निरोग।
गृहं गृह संपति लच्छि सुलच्छि, गृहं गृह दासिय दास सुअच्छि ॥ ९९ ॥

गृहं गृह मंगल गीत उछाह, गृहं गृह पुत्र सु पुत्रिन ब्याह।
गृहं गृह बादित्र पुत्र प्रसूति, गृहं गृह जानि अनंत प्रभूति ॥ १०० ॥

बिराजहिं केउ बजार प्रबंध, सचैंधित गंधित गंध सुगंध।
उवैं इक सूत अपार सुहट्ट, भरै बहु संपति थट्ट उपट्ट ॥ १०१ ॥

कितै तहँ देवल देव सुथान, लगै गुरु खंभ महा कमठान।
धजा दंड कुंदन कुंभ सु कंत, सिंहासन श्री जिनराज सुमंत ॥ १०२ ॥

कितै तहँ आवतु हैं नर नारि, कितै प्रभु पूजहिं अष्ट प्रकार।
झनंकति झल्लरि घंट टनक, झलंमलि दीपक योति निझंक ॥ १०३ ॥

कहूँ रघूवीर कहूँक रमेस, कहूँ हरसिद्धि कहूँक महेस।
कहूँ इकदंत गजानन आप, पुलै तिन पेखत पाप सँताप ॥ १०४ ॥

कितेइ उपाश्रय चौकिय बंध, चद्रोपक मुत्तिय पाट प्रबंध।
उपै तिन मध्य महा मुनिराय, सु संकुल संघहिं सेवित पाइ ॥ १०५ ॥

वदै चहुं वेद सुधर्म बखान, सिखावहिं सुव्रत श्री गुरु ग्यान।
किती धमसाल नैसाल पौसाल, पढ़ैं तहँ उतम बाल गोपाल ॥ १०६ ॥

कितै तहँ जौहरि जौहरवाल, सुमानिक मुत्तिय लाल प्रवाल।
पना पुखराजरु लीलक पच्च, मँडै नग हीर जिगंभिग जच्च ॥ १०७ ॥

कहूँ कहुँ हट्ट परै टकसाल, सु गारहिं सोवन रूप सुझाल।
सबै बर सचय तोले तुलानि, जितैं तित चित्र अनोपम जानि ॥ १०८ ॥

कितेइ सरापनि हट्ट सुभासि, दिपंत दिनार रुपैयन रासि।
सु थैलिय अग्ग धरैं बदरानि, सु छेदत भेदत लेत पिछानि ॥ १०९ ॥

कितै तहँ कुदन रूप सुनार, सु गारत यंत्रनि कट्टत तार।
गढ़ैं बहु भूषन भाँति बनाउ, जिगंभिग हीर जरंत जराउ ॥ ११० ॥

कितै बहु मौलिक वस्त्र बजाज, मँडै जरवाफ मुखमल साज।
मसज्जर नारिय कुजर भिश्रु, सुभै सिकलात दुमास सहस्रु ॥ १११ ॥

तनोसुख सूफ पटोर दरथाइ, खीरोदक चेनी पितांबर ल्हाइ।
मनोसुख पाँमरी साहिबी पाट, हीरागर सेनिय हीर सगाढ़ ॥ ११२ ॥

भरूच्छिय भैरव मारू सभार, मुसी महमुँदी सु सिदलि सार।
झुनां टुकरी श्री साप अटांन, सेला पँचतोरिय खासे सुजान ॥ ११३ ॥

मलंमल साहि चौतार दुतार, उपै इकतार सु धौत अपार।
सु सारिय चोरस रंग रँगील, दिखाँवहिं आघ दलाल असील ॥ ११४ ॥

कितेइ कंठारिय मंडि कटार, प्रधान कृपांण अनंत प्रकार।
सु श्रीफरु एलचि लौंग सुपारि, सचे घन हिंगरु सार सुधारि ॥ ११५ ॥

मृगंमद केसरि और कपूर, कालागरु चंदन कंकु सिदूर।
रसंचिस गंधक सं हरतार, हरीत्रि गरू त्रिफलानि सभार ॥ ११६ ॥

सु खारिक दाख मखानै बदाम, घनै पिसता अखरोट सुनाम ।
चिरौंजिय सक्कर पिंडखजूरि, सिता बहु भाँति सु संचय भूरि ॥ ११७ ॥

सुमस्तकि लीलि मजीठ अफीम, यवाँनी पंच जायफरू सीम ।
ठटै बहु ठट्ट सुगंठित ठाइ, कितै इक आनन नाउँ कहाइ ॥ ११८ ॥

कितेकन हट्टिय हट्ट कनिंक, बहू बिधि तंदुल गौहुं चनंक ।
मसूररु मुंगरु मौठ सु माख, घनैं जव झारिरु दारि सभाख ॥ ११९ ॥

घनै घृत तैलरु ईख अलेख, सबै रस हींग तिजारे बिसेख ।
सु बेचहिँ सच्च तराजुनि तोल, सबै मुख बोलत अमृत बोल ॥ १२० ॥

कितेइ कंदोइ निहट्ट इकट्ठ, मंडै बहु भंति मिठाइय मिट्ठ ।
जलेबिय घेउर मुत्तयचूर, चिरौंजिय कोहलापाक सँपूर ॥ १२१ ॥

सु अमृति मोदक लाखणसाहिं, गिंदौरनि पैरनि गंज सुचाहि ।
पतासे हेसमि खंड पँगेरि, तिनं गनि केसरिपाक सु हेरि ॥ १२२ ॥

साबूनिय रेवरि माठिय सोठ, फबंतिय फेंननि लग्गत ओठ ।
तपै घृत सौरभ मध्य कढ़ाह, करैं खंड चासनि बास सराह ॥ १२३ ॥

कितै इत मोरनि हट्ट अमांन, प्रबेचहिँ पाके अडागर पान ।
गठै बहु बीरिय बीटक बुद्ध, सुगारिय क्वाथरु चूरन सुद्ध ॥ १२४ ॥

कितै तहँ गंध सुगंधिय तेल, जुही करनी मुगरेल चंपेल ।
सु केतकि केवरा कुंदरू जाइ, गुलाब सु मालति गंध सुहाइ ॥ १२५ ॥

घनै अतरादिक सौंधे जवादि, कुमंकुमा नीर किये कुसुमादि ।
सु केसरि चंदन चोबनि अग्ग, महं महि थान बजार सुमग्ग ॥ १२६ ॥

किती तहँ मालनि फूलनि माल, गुहैं कर चौसर झाक झमाल ।
सु कंचुकि गिंदुक कंकन भंति, बिलोकहिं बांम करैं मन खंति ॥ १२७ ॥

कितै तहँ गुंड गरीनि के गंज, सिँघारे अनार सियाफल संज ।
जँभीरिय सेव सदाफल जानि, पकै महु बेर हिमंत बखानि ॥ १२८ ॥

कितै ऋतु ग्रीषम राइनि आम, केरा सहतूतरु दाख सकाम ।
पकै खरबूजै सु अमृत खांन, मँडै घन मेवा कहैं कत मांन ॥ १२९ ॥

मंडै ऋतु पावस पावस जात, घनै सरदा सरदादि सुहात ।
ऋतू ऋतुवंत रसाल विवेक, मँडै तरकारिय भंति अनेक ॥ १३० ॥

कितै पटवानि के हट्ट प्रधान, गटैं बहु भूषन पाट विज्ञान।
कितै करि दंत चढ़ाइ खरादि, उतारहिं नूटक चंग प्रसाद ॥ १३१ ॥
कितै तहँ बौहरे आसुर वृंद, करैं बहु वस्त्र व्यापार समुंद।
कराहिय कंटक लोह कुठार, सचै गुजरातिय कग्गर तार ॥ १३२ ॥
लसैं कोटवालि सु चौतरे ऊँच, बैठे कोतवाल करैं खलखंच।
निबेरहिं सत्य असत्य सु न्याउ, बहू चर वृंदनि सेवत पाउ ॥ १३३ ॥
कहूँ सु जगातिय लेत जगाति, रहैं रखवारि कितै दिन राति।
गहैं कर पैंचिय इंच सुदान, दियावहिं श्री महारान सु आन ॥१३४॥
सुजी भरभूँजे कँसार ठँठार, धरे सिकलीगर सस्त्र सुधारि।
कितै रँगरेज रँगै बहु रंग, सु चूनरि पाग कसुभिय चंग ॥१३५॥
कितै इक मोचिय बाजि पलांन, रचैं सु खार सु पाइनि त्रान।
जिती जग जाति तितै तिन कर्म, सबे सुख लोक बढ़ैं धन धर्म ॥१३६॥
कितै मन हट्टिय कंगहि काच, बहू विधि मुँदरी हार सुवाच।
पना नग मुत्तिय लाल प्रवाल, करी रद कुंपिय बिदुलि भाल ॥१३७॥
कितै पटदर्सन आस्रम अैंन, साला जल बाग समेत सचैंन।
लहैं बहु दांनरू मांन भुगति, सबै जग सेवत योग युगति ॥१३८॥
कहूँ कठियार क्रीणत कबार, भरै कोउ प्रोहन ईंधन भार।
अलेखहिं लादे पसूनि सुचार, करें क्रय घासिय घास अपार ॥१३९॥
कहूँ नट नच्चत जूझत मल्ल, कहूँ कहुँ पिक्खन ख्याल नवल्ल।
कहूँ बर पंडित बोलत बाद, कहूँ निपजंत नये सु प्रसाद ॥१४०॥
कहूँ तिय सोहव गावति गीत, बजैं डफ ढोल मृदंग पुनीत।
कहूँ नृप दासि बडारनि झुड, सजै तनु सार सिंगार सु मंड ॥१४१॥
कितेइ सौदागर अस्व सिंगारि, दिखाउन आँनहि राजदुआरि।
बहू रंग चंचल वेग विज्ञान, तत थेइ थेइ सुनच्चत तांन ॥१४२॥
कितै उमराव हयग्गय सैंन, कितै बहु सेठ रु साहस चैंन।
कितै पसु वृंद कितै नर नारि, मचैं बहु भीर बजार मझार ॥१४३॥

( दोहा )

धान - मढी लोहन - मढी, रुई-मढी सुभ संज।
अनछादित सुस्थित अमित, गिरिवर सम बहु गंज ॥ १४४॥

बंधि गंठि बहु भंति कन, ढोवत कितै हमाल।
कै बारदि केई सकट, सब दिन रहत सुकाल ॥१४५॥

सुदर तिय केऊ सहस, सीस सुघट पनिहारि।
कोकिल ज्यौं कलरव करहिँ, भरहिँ छानि बर बारि ॥१४६॥

कितै पखालिय महिष वृप, भरै ममक के नीर।
हय गय नर तिय पनघटहिँ, सब दिन रहत सभीर ॥१४७॥

मेदपाट जनपद सु मधि, सहर उदयपुर साज।
महारान करनेस सुव, जगतसिंह युवराज ॥१४८॥

रानि जनादे रूप रति, सत सीता सु विचारि।
राजसिंह राना रतन, जाए जिन जयकार ॥१४९॥

( कवित्त )

सवत सोरह सरस, बरस छह असिय बखानह।
ससि अमृत ऋतु सरद, धरा निप्पयनिय सु धानह ॥
मगल कातिक मास, पढम पख बीय पवित्तह।
बलवंतौ बुधवार, निरखि भरनी सु नखित्तह ॥
निभिनाथ उदित गय पहर निसि, मेष लगन मन्यौं सु मन।
जगतेस रान घर सुत जनम, राजसिंह राना रतन ॥१५०॥

बिकसत हरिहर ब्रह्म, सूर ससि अधिक सुहाइय।
इद ताम उच्छाह, सकल सुर हरप सवाइय ॥
गावहिँ अपछरि गीत, व्योम दुदही सु बज्जिय।
खल मंदिर खरहरिय, धमकि आसुरि धर धुज्जिय ॥
गिर परिय ताम तुरकनि गरभ, यवन करत केऊ यतन।
जगतेस रान घर सुत जनम, राजसिंह राना रतन ॥१५१॥

( छद पद्धरी )

जगतेस रान घर सुत जनम।
धर हरिय असुर धर तबहि धंम ॥
गिर परिय ढरिय यवनेस गेह।
खल नगर सीस बरसत, खेह ॥ १५२ ॥

अति इंद्रलोक मंड्यौ उछाह।
सुर कहत सह जय जय सराह ॥

गावंत मधुर अच्छरि सु गान।
बज्जंत देव दुंदुभि बिमान ॥ १५३ ॥

दीनी बधाई सु दासि दौरि।
गय गमनि हसित मुखि जानि गौरि ॥
यहु सुनत ताहि कीनै पसाव।
झिगमिगत अग भूषन जराव ॥ १५४ ॥

बर बिबिधि घोस नौबति सु बज्जि।
गगनहिं गँभीर प्रति सद्द गज्जि ॥
गावंत नारि सोहव सु गीत।
पटकूल पहिर भूषन सु पीत ॥ १५५ ॥

बीती सु निसा प्रगट्यो बिहान।
झलहलत तेज उग्यौ जु भान ॥
रस रग चित्त जगतेस रान।
दीन्हैं अनेक हय गय सु दान ॥ १५६ ॥

रुपि जन्म गेह रमा रसाल।
बहु लंबभुज पत्रहिं बिसाल ॥
बधनह मुक्कि तब बदिवान।
हरखे सुलोक सब हिदुथान ॥ १५७ ॥

चंदननिमाल घर घरहिं बार।
सब सहर हट्ट पट्टन सिंगार ॥
तोरन सुबधि प्रति द्वार तुंग।
रबि मडि यान देखत रग ॥ १५८ ॥

बसुपाल बेगि जोइसि बुलाय।
आसीस बिप्र दीनी सु आय ॥
रबि रूप चिर जगतेस रान।
थिर करहु रज्ज पहु हिदुथान ॥ १५९ ॥

दिनौ समान बैठक्क दीन।
पढ़ि लिखत जन्मपत्री प्रवीन ॥

मंड्यौ सुताम धुर लगन मेष।
बहु वीर्य वित्ताकारक बिसेस ॥ १६० ॥

बपु भुवन लगन अज ससि बइट्ठ।
बहु ऋद्धि बृद्धिकारक बलिट्ठ ॥
दुतिवंत सहज सुंदर सु देह।
नर नारि निरखि दृग धरत नेह ॥ १६१ ॥

गिनि मिथुन लगन वर सहज गेह।
अति उच्च राहु लच्छी अछेह ॥
मन हरख नित्य मंगल महंत।
बल वित्ताकार पंडित बदंत ॥ १६२ ॥

अरि भवन लगन कन्या उमग।
सविता बइट्ठ बर बुद्ध संग ॥
भाखै सुजान रिपु करन भग।
अति तेजवंत जगहि अभग ॥ १६३ ॥

कहियै सुलगन कुल गृह कलित्र।
प्रगटै सु तहाँ भृगु सनि पवित्र ॥
भामिनी भूरि संपजै भोग।
संपदा सुक्र निज गृह सँयोग ॥ १६४ ॥

कृत धर्म भवन धन लगन केत।
दिल सुद्ध होइ इह दान देत ॥
भल मकर लगन गुरु भवन भाग।
भूपाल एह निस्चै सभाग ॥ १६५ ॥

बर एह जन्मपत्री बिचार।
कहियै सु नवग्रह सुखकार ॥
रवि जन्म नाम तह मेष रासि।
पुक्करी योनि नर गन प्रकासि ॥ १६६ ॥

नरनाथ चिरंजी तुम सु नद।
दुतिवंत देह अभिनव दिनंद ॥

इन आउ दीर्घ ए हम अमीस।
जगदीस सकल पूरहु जगीस ॥ १६७ ॥

सुनि विप्र बचन मन भयौ सुख्ख।
दीनौ सुद्रव्य नट्ठौ यु दुख्ख ॥
गुरु मान देइ मुक्कै सुगेह।
उच्छाह अन्य कीन्है अछेह ॥ १६८ ॥

वर पत्त जाम तीजौ बिहान।
भनि मत्र दिखाए सोम भान ॥
जन्म तें रयनि छट्ठी जगाय।
श्रीफल तमोर दीनै सुभाइ ॥ १६९ ॥

बहु करत क्रोड़ दस दिवस बित्त।
बकसंत हेम हय गय सु वित्त ॥
सूतक निवारि किय जननि स्नान।
सुत निरखि निरखि हरषत सुजान ॥ १७० ॥

अनुक्रमें दिवस द्वादसम आइ।
महाराण सकल परिजन मिलाइ ॥
जेउन सुचित्त वंछित जिवाँइ।
पहिराय बसन भूषन बढ़ाइ ॥ १७१ ॥

बोले सुराण तिन अग्ग बत्त।
पत्ता सु एह हम पढ़म पुत्त ॥
श्री राजकुँआर सुनाम सच।
पभनहु सु तुमहिं मिलि मान पंच ॥ १७२ ॥

( कवित्त )

राज राज सुभ रखन, राज रिपु राजदवन रिन।
राज रूप रति रवन, राज दरसन सु रसाइन ॥
राज कनक तनु रग, राज सुरपति चित रजन।
राज नाउ युग रिधू, राज कहियै रिपु भंजन ॥
अवतार लयौ मेटन असुर, सीसोदा त्रिहु जग सुजस।
जगतेस रान नंदन जयौ, राजसिंह बर बीर रस ॥१७३॥

( छंद मोतीदाम )

कहै तब नाम सु राजकुँवार, प्रमोदित चित्त सबै परिवार ।
दियै बर बिप्रनि कंचन दत्त, पहू जगतेस महा सुख पत्त ॥१७४॥

सिंगारिय सिंधुर अस्व सनूर, सुतंबल वग्गत नोपति तूर ।
हलाल सजोति सुगीति सहर्ष, पुजी जलदेविय उज्जल पस्व ॥१७५॥

दिन दिन बाढ़त सुंदर देह, निसापति सेतपस्ने जनु नेह ।
बियौ नर मास प्रमान बधंत, तितै दिन एकहिं मज्झ तुलत ॥१७६॥

पल पल प्यावत मा पय पान, बधै जिन काति महा बलवान ।
धराधिप राखिय पंच सु धाइ, करावहिं मज्जन न्हाण सु काइ ॥ १७७ ॥

अलकृत कुंदन अंग उपंग, उमंगहिं राखत धाय उछग ।
झलमल तेज जरक्कस झूल, फबै तिन ऊपर बूँटिय फूल ॥ १७८ ॥

खिलावहिं मुक्कि सु खेलन अग्ग, गहै युग हक्कि सु ढोरिय लग्ग ।
लिलाटहिं केसर आड अनूप, रमै रस रंगहिं पिस्वन रूप ॥ १७९ ॥

हिंदोलत माइ सुवर्ण हिंदोल, लमैं जनु सारग लोचन लोल ।
सुगावहिं सहुल राउर गान, सदा मुख पेखत सुस्ख विहान ॥ १८० ॥

किलक्कत माइ निहारि कुँआर, हियै बढ़ि हर्ष दुहूँ घन प्यार ॥
हसत सु आनन अबुज अप्प, सदा सु प्रसाद विसाद विलेप ॥ १८१ ॥

करै महाराण सु नंदन कोड़, हलैं किन ओर नरिंदहिं होड़ ।
तुला प्रतिमासहिं मुत्तिन तोल, उमेदहिं देत सु दान अमोल ॥ १८२ ॥

विनोदहिं बत्सर एक व्यतीत, पयंवरु चाल चलै सु पुनीत ।
चढ़ैं कवहूँ हय चंचल चित, दुहूँ दिसि हत्थ समाहत दुत्त ॥ १८३ ॥

सु केलि चढ़ैं कवहूँ करि कुत, उदै युत पिस्वत रूप अचभ ।
सुखासन बैठत अप्प सुसाज, रिधू जग राण सु नंदन राज ॥ १८४ ॥

दिनं दिन आवहिं राज दिवान, सबै नृप वर्ग करै सनमांन ।
अति द्युति अग सु पुन्य अंकूर, सभा मधि उग्गिय जानि कि सूर ॥ १८५ ॥

अनुक्रमि वर्ष दुतीय सु आइ, सबै नर नारि सुनंत सुहाइ ।
बुलै तब राजकुँआर सुबोल, सुधा रस सयकर कै सम तोल ॥ १६८ ॥

तनू सुख पत्त सुवर्ष तृतीय, प्रमोदित भोजन भुंजत प्रीय ।
मया करि अप्प जिवॉवति माइ, अपूरव चीरहिं बाउ उड़ाइ ॥ १८७ ॥

रच्यो वर आसन आडनि रूप, सँधप्पिय कुदन थार सरूप।
कमोदिय तंदुल जानि कपूर, परोसिय घीउ सु सक्कर पूर ॥ १८८ ॥
सुभाउत तीउन भूरि सँधान, प्रसंसिय ऊपर तें पय पान।
अघाइ चलू भरि वारि अमोल, तईवर तामल बग तमोल ॥ १८९ ॥
चतुर्थ सु पंचम षष्टम चारु, अतीत सँवत्सर यों अधिकार।
सँपत्तिय वर्ष सु सत्तम सार, करें वर केलि सु राजकुमार ॥१९०॥
प्रधान सु बंधहि लीलक पाघ, अमोलिक अमुक जामैं आघ।
बिराजत जरकस के कटिबध, सुकटहिं चोसर फूल सुगंध ॥१९१॥
प्रधान सु धोते पटोरे सुहाइ, जिगमिग मोजरि योति जराइ।
सुसोभित कंचन हीर सिंगार, कलाकर रूप कि देवकुमार ॥१९२॥
वखानिय या विधि अष्टम वर्ष, हदै निज आठैंहि जाम सुहर्ष।
लरावहिं मल्ल महारस लुद्ध, करी मदमत्त भरै वर क्रुद्ध ॥१९३।
नवं नव नाटिक गीत सु नित्त, दिजैं दसमें वहु वदिन दत्त।
एकादस वर्षहिं अग अनंग, रमैं कवि मान सदा रस रग ॥१९४॥

# तृतीय विलास

( दोहा )

पानि ग्रहन बूँदी प्रथम, कीनौ राजकुँआर।
कवि वर चित्त प्रमोद करि, अरकैं सो अधिकार ॥ १ ॥

( कवित्त )

हाड़ा नृप अति हठी, हसम जितंन रखन हठ।
सबर राव छत्रसाल, मारि सब सत्रु किए मठ ॥
राजथॉन रमनीक, बिकट बूँदी गढ़ बिलसत।
बिबिध बस्त्र बाजार, सकल श्रीयुत जन सोभित ॥
बहु बाग बावि सर जल बहुल, गुरु उत्तंग जिन विष्णु गृह।
कवि आप कहै ऊपम किती, अलकापुर सम सोभ इह ॥ २ ॥

( दोहा )

कन्या दो तिन भूप कै, सुदर तनु सुकमाल।
बर प्रापति अवलोकि बर, मत्र बोलि महिपाल ॥ ३ ॥
कहैं सु मंत्री मत कहि, बर प्रापति भइ बाल।
सबर सगपन अटक रहु, बर घर रिद्धि बिसाल ॥ ४ ॥
सगपन कीनौं सबर सौं, बेगि होइ बरदाइ।
समरसीह रावर सजै, प्रथु दिल्लीस सहाइ ॥ ५ ॥
तिन कारन हो मत्रि तुम, सगपन सबर सँभारि।
कन्या दीजै हरषि करि, सुजस लहैं ससारि ॥ ६ ॥

( छद भुजगी )

सुनौ सॉइ मंत्री कहै मंत सच्चं, इला नाह जोई जिनं बंस उच्चं।
धुअं जास राजं धरै क्षत्रि धर्म, सबै हिदु शृंगार सारं सु सर्मं ॥ ७ ॥

उथप्पै दलं बद्दलं आसुरानं, पनं पावनं नीति थप्पै पुरानं।
अभंगं अभीतं उतंगं अजेजं, असंकं सु कंकं अरीणाम हेजं ॥ ८ ॥

अनेकं अभेदं अनोपं अठिल्लं, अरोगं सुभोगं अरीणाम पिल्लं।
अनेकं बलं बुद्धि बिग्यान अंगं, जयं जैत हत्थं महाजोध जंगं ॥ ९ ॥

सरं सद्धवेधी बरं सूरबीरं, धकै धीग धुज्जै अरी व्है अधीरं।
करैं केवि कालं कृपानं करालं, पठावैं पिसूनं जनं जे पयालं ॥ १० ॥

प्रभा कोटि रूपं प्रचंडं प्रतापं, दमैं दैत्य देह सहैं कौन दापं।
हठालं हियालं गहैं आन हद्द, सुवर्णाद्रि तुल्लं अडुल्ल सु सद्दं ॥ ११ ॥

हलक्कैं सुहे रैं हरावै हमीरं, उड़ावैं अरि पुंभिका ज्यौं समीरं।
बहू आयुधं युद्ध सन्नद्ध बद्धो, बली कौन जा मुख मंडै बिरुद्धौ ॥ १२ ॥

बसै गेह जाकै महा लच्छिबासं, बलं चातुरंगं सुचंगं बिलासं।
धनी हिंदुआनं सदा नीतिधारै, महामाइ महिसेस ज्यौं मीर मारै ॥१३॥

जसं राजसं तामसं जासि जो रैं, रसा कौन राजा रिनं ताहि रो रैं।
खलं खग्ग मग्गैं करैं खंड खंडं, अनत्थान नत्थैं सु दंडै अदंडं ॥ १४ ॥

सदा सात कौभं हयं दंति दत्ता, सदा जा सुरेसं सराहै सु सत्ता।
बद एक जीहा गुनं के बखाना, रजै आज जग मज्झ जगतेस राना ॥१५॥

प्रभू मोहि जो सच्चि कर मंत्र पूछै, इला ईस महाराण जगतेस अच्छै।
नहीं बिस्व में और अवनीस ऐसे, तुमैं मन्न मन्नैं महीपाल तैसे ॥ १६ ॥

यही हिंदुनाथं यही हिंदुईसं, यही हिंदुपालं महंतं महेसं।
यही हिंदु आधार हिंदूनि त्रानं, प्रजापालकं पाल गो-बिप्र प्रानं ॥ १७ ॥

नियं बंस अवतंस तसु पाट नंदं, दुति दीपए देह मानौं दिनंदं।
तिनं अंग बर लछिनं दोइ तीसं, अखै कोटि वर्ष प्रजा दै असीसं ॥ १८ ॥

नरां रत्न श्री राजकूँआर नामं, धराधीस सच्चौ कला कोटि धामं।
बहू धीर गंभीर दातार बित्तं, भन्यौ जास अवतार अवतार भुत्तं ॥ १९ ॥

पवंगा रुहं पेखि बैरी प्रकंपै, चमू जोरवर आसुरी सीम चंपै।
मनौ म्लेछ ईसं त्रिनं तूल मातं, गुरुर्नयन हेमं समं गौर गातं ॥ २० ॥

मही तैं जिनैं खेदि कड्ढै मेवासी, बसैं बानरं ज्यौं दरी मध्य बासी।
रुरै जास भै काननं म्लेच्छ रामा, ससी आननी नैंन सारंग स्यामा ॥२१॥

बियौ नाहिं ऐसौ बरं बाल कज्जं, सिवं सुंदरंगं सरुवं सकज्जं।
सुधर्मा सुकर्मा सुसंतं सुहाई, जुरैं जुद्ध भारी जिनै जैति पाई ॥ २२ ॥

वसुद्धाधिपं वीर आजानबाहू, कियैं कोटिजा होड़ चल्लै न काहू ।
धुवं बिरुद ए राजकुँआर धारै, अजेजां उथप्पै सुपख्यां उधारै ॥ २३ ॥

( कवित्त )

कहियै राजकुँआर, सार अरि उर संचारन ।
सबर स्वकुल सिगार, अवनि सिर भार उतारन ॥
अति दत्त चित्त उदार, मदन मूरति मनमोहन ।
गोरीसं गज गृहन, रौर रिन घन रिपु रोहन ॥
बर एह बाल कज्जें सुबर, सकल अवनि नृप कुल सिहर ।
किज्जैब यहै मत्री कह्यो, इन सौं नहिं को अवर बर ॥ २४ ॥

( दोहा )

सत्य बचन अवनीस सुनि, मन्नि सु मंत्री मंत ।
समझि रान जगतेस सुअ, कन्या योगहिं कत ॥ २५ ॥

निस्चै इह आखै नृपति, कुलमनि राजकुँआर ।
हमहूँ मन याही सुमति, सगपन यह श्रीकार ॥ २६ ॥

आगैं हूँ इन आपनैं, सगपन सरस संबंध ।
ए आहुट्ठ अनंत बल, बंधन मेल्हहिं बंध ॥ २७ ॥

रूपवती दुति जानि रति, गुरु पुत्री हम गेह ।
राजकुँआरहिं रीझिकैं, सा हम दई सनेह ॥ २८ ॥

यों कहि सद्दे अवनिपति, जे बर योतिस जान ।
लिखैं सुपानिगृहन लगन, कारन कोरि कल्यान ॥ २९ ॥

लेख सु तबही नृप लिखै, योग्य रांन जगतेस ।
वंधै प्रति ता बाँचतैं, बायक बिनय बिसेस ॥ ३० ॥

( छंद पद्धरी )

स्वस्ती श्री उदयापुर सुथान, रवि हिंदवान जगतेस रान ।
कालंकिराय कट्टन कलंक, बंकाधिराय कट्टन सु बंक ॥ ३१ ॥
आजानबाहु अनमी अभंग, आचारिराय रविकुल उत्तंग ।
मेवासिराय भंजन मेवास, तुरकेस बंधि दीजै यु त्रास ॥ ३२ ॥

आहुट्टराय दल बल असंख, भूभाररराय रिपु करन भंग्व ।
अजेजराय नत्थै अनत्थ, सामंतराय सेना समत्थ ॥ ३३ ॥

छत्रपतिराय सिर एक छत्र, श्री सबरराय साधंत सत्रु ।
ध्रुवदेव धराधर सरिस धीर, बसुधाधिराय बल बिकट बीर ॥ ३४ ॥

प्रचलंत यवनपति जा पयान, भरि गैन रेनु धुंधरिग भांन ।
दिगपाल दसौं भज्जें दहक्कि, किलकै यु बीर उट्ठै कुहक्कि ॥ ३५ ॥

बैताल फाल मडै बिनोद, मिलि चलैं झुड चौसट्ठि मोद ।
हरषै यु रुद्र करि अट्टहास, सुर कहत सद्द जयजय सभास ॥३६॥

सलसलत सेस कलमलत कच्छ, झलझलत उदधि रलहलत मच्छ ।
खरभरत चित्त खल दल अधीर, चलचलत चक्र चहुँ डुलत मीर ॥३७॥

धसमसत धरनि गिरिवर धसक्कि, सर सरित कलित इह सलिल सुक्कि ।
मचि सोर जोर परि अमग मग्ग, जनु लक लेन रघुबीर जग्ग ॥३८॥

संजनित चित्र सुरराय संक, बीराधिबीर अरि हरन बंक ।
भय जास भीम पर धर भजत, तिय पुत्र भ्रात परिजन तजंत ॥ ३९ ॥

अरि बाम बाल बन गिरि अटंत, फलफूल खाइ अह निसि कटंत ।
सुख सेज मुक्कि कै सत्रु नारि, नट्ठी सु निसा औसर निहारि ॥ ४० ॥

अखंत खग्ग बल जसु अपार, जगतेस रान जग जैतवार ।
सोभंत सोभ सुरपति समान, नरनाह भव्य ऊपम निधान ॥ ४१ ॥

लिखितं सु बुंदिगढ़ तैं यु लेख, बर छत्रसाल रावह बिसेस ।
पय कमल सत्त बेरहिं प्रणाम, संदेस एह बीनवै स्याम ॥ ४२ ॥

सुख सकल अत्र प्रभु तुम सुदृष्टि, आरोग्य लाभ सयोग इष्ट ।
इच्छैं यु तुम्ह उत्तम उदंत, वंछंत चित्त ज्यौं पिक बसंत ॥ ४३ ॥

निय धर्म धरन तुम गुरु नरिंद, दीपंत तेज हिंदू दिनेंद ।
भूपाल तुम सु हौं परम भृत्य, निस्चै यु एह बर रीति नित्य ॥ ४४ ॥

गुरु पुत्ति अच्छि बर हम सु गेह, रति रंभ सरिस गति रूप देह ।
श्री राजकुँअर बर लहइ सोइ, हम हृदय हरष तब सिद्धि होइ ॥४५॥

किज्जेब एह हम चित्त कोड़, जुगती सु जानि जग एह जोड़ ।
लच्छीस योग ज्यौं तीय लच्छि, संयोग सची सुरराय स्वच्छि ॥४६॥

श्री राम जोग ज्यौं जानि सीय, पढ़ि नल नरिंद दमयंति प्रीय।
त्यों युगत एह मंनौत हत्ति, सगपन संबंध किज्जैव सत्ति ॥ ४७ ॥

इहि भंति लिख्यौ कग्गद अनूप, भल दीन भिती सिर नॉउ भूप।
हरषंत राव दिय अनुग हत्थ, सदै यु ताम प्रोहित समत्थ ॥ ४८ ॥

बोलैं नरिंद सुनु राज बिप्र, हम काम उदयपुर नगर क्षिप्र।
थिर रिद्धि मान तहँ हिंदुथॉन, श्री जगतसिंह राना सुजान ॥ ४९ ॥

तिन पाट पुत्र निय राज रूप, भल राजकुँआरहिं नवत भूप।
सो इच्छ सेन चतुरंग सज्जु, कन्या सु जिट्ठ हम बरन कज्जु ॥ ५० ॥

ल्यावहु सु बेगि इन लगन लील, ढलकंति ढाल मम करहु ढील।
आगम सु तास हम सुख अनंत, मनों सु सच्च सब एह मंत ॥ ५१ ॥

( दोहा )

मन हरषंत सु पट्टवैं, नालिकेर नर राव।
तपनिय साकति बर तुरग, भूषन कनक सुभाव ॥ ५२ ॥

जरकस के बहु योतियुत, प्रवर भंति सिरपाउ।
मुक्ताफल माला समनि, जरित कटार जराउ ॥ ५३ ॥

मेवा खादिम बहु मधुर, अरु कहि बहु अरदास।
पठयौ प्रोहित उदयपुर, अप्पि सु दल उल्हास ॥ ५४ ॥

( कवित्त )

सुमति राव छत्रसाल, दुतिय लहु पुत्रि आप दिय।
गजसिंह सु नृप गेह, पुत्र जसवंतसिंह प्रिय ॥
मारुवारि महिपाल, रनहिं रट्ठौर रढालह।
निपुन बुद्धि बर न्याउ, प्रवर स्व प्रजा प्रतिपालह ॥
इक दिनहिं दोइ पठए अनुग, सदल सज्ज श्रीफल सुकर।
इक पत्र उदयपुर बर उमगि, पत्तो इक्क सु योधपुर ॥ ५५ ॥

( दोहा )

प्रोहित भेटे हिंदुपति, जगतसिंह बरजोर।
राण तखत राजै रिधू, उभय चौर दुहुँ ओर ॥ ५६ ॥

बैठे निज निज बैठकहिं, सुभट राय साधार।
हय गज रथ पायक हसम पिरवत नॉवहिं पार ॥ ५७ ॥

अखिय विप्र असीस इह, जयतु रॉण जगतेस ।
चिरजीवहु चीत्तौरपति, बंछित फलहु बिसेस ॥ ५८ ॥

( कवित्त )

पुच्छैं यों महिपाल, रॉण जगपति जग रक्खन ।
कहौ बिप्र तुम कहाँ, बास बर नगर बिअक्खन ॥
किन भूपति संदेस, कौन कज्जैं इत आए ।
अखहु सकल उदंत, पास हम किन सु पठाए ॥
कहि बिप्र बास हम बुँदिगढ़, हाड़ा रावहिं मुक्कलिय ।
तिन पुत्रि दई प्रभु कुँअर प्रति, रंग रसाल सु मन रलिय ॥ ५६ ॥

( दोहा )

सुनि हरखै जगपति श्रवन, सगपन जानि सुमंत ।
भली मंडि प्रोहित भगति, आदर करिग अनंत ॥ ६० ॥
नालिकेर अप्यो नृपति, सदल सजाई सत्थ ।
प्रोहित राजकुँआर के, तिलक कढ्ढि निय हत्थ ॥ ६१ ॥
जैवंता दंपति युगल, हौ तुम पूरन हाम ।
होस हमारे हृदय की, कीजै देव सकाम ॥ ६२ ॥
प्रोहित ए आसीस पढ़ि, उत्सव मंडि अमोल ।
घन ज्यों घन त्रंबक घुरत, बोले निस्चल बोल ॥ ६३ ॥

( कवित्त )

प्रोहित सत्थ प्रसन्न, रॉन जगपति जग रूपह ।
दीन अनग्गल दान, अस्व सिरपाव अनूपह ॥
कनक रजत पटकूल, बसन भूसन बहु वित्तह ।
आदर भाव अनत, प्रेम पोखत पवित्तह ॥
आयौ सु निकट तब लगन अह, प्रोहित अरिक नरिंद प्रति ।
श्री करण रॉण पाटहिं सधर, प्रतपै राना जगतपति ॥ ६४ ॥

( दोहा )

प्रतपौ राना जगतपति, एहौ सुन अरदास ।
आयौ निकट सुलगन अह, अब हम पूरहु आस ॥ ६५ ॥
सत्थ सेन चतुरंग सजि, राजकुँअर बर रूप ।
प्रभु बूँदीगढ़ पाठवहु, अबला बरन अनूप ॥ ६६ ॥

( छंद वृद्धि नाराच )

सुनंत राज बिप्र सद्द, नेह हिंदु नायकं।
सजी सु चातुरंग सेन, लच्छि ईस लायकं॥
प्रधॉन सज्जि दंति पंति, सैंन अग्ग संचला।
सिंदूर पूर जास सीस, चारु चौर चंचला॥ ६७॥

सु मुत्तिमाल बिटि कुंभ, सोहए सु सिंधुरा।
ठनं ठनंकि घंट घोख, घं घमंकि घुंघरा॥
मदोनमत्त धत्त धत्त, पीलवॉन पट्टयं।
चरखिदार कुक्कए, गयंद जोर गट्टयं॥ ६८॥

सुवास दान गच्छ सुच्छ, गुंजए मधूपयं।
सुंडाल माल केवि काल, उद्धतं अनूपयं॥
मनों महत मेघमाल, हल्लई हरैं हरैं।
बहंत के बिरुद्द बंदि, भूमि पाइ जै भरैं॥ ६९॥

झिलंति रग रंग झूल, पट्टकूल पेसलं।
ढलक्कई सु पुट्ठि ढाल, टंकि बास उज्जलं॥
पताक लील रत्त पीत, सोहई स चिन्हयं।
सु दट्ठ दंत कंति सेत, काय सैल किन्हयं॥ ७०॥

हयं सुबंस जाति हंस, कासमीर कच्छि कै॥
कबिल्ल कै कंबोज केवि, कोंकनी सुलच्छि कै॥
उतंग अंग आरबी, अैराक कै उवन्नयं।
सु पौन पानि पंथ कै यु, पाइ ज्यौं पवन्नयं॥ ७१॥

बंगाल देस कै सु बेस साजि बाजि सोचनं।
कुरंग फाल उच्च खध, लोल लोल लोयनं॥
नृतत्त थेइ थेइ नृत्य, नट्ट ज्यौं सु नच्चई।
दिनेद जास रूव देखि, रथ्थ काम रच्चई॥ ७२॥

चलंत वेग चंचलं, उतंग दुग्ग आरुहैं।
खुरी प्रहार बज्जि खोनि, सैल खुंद नासहैं॥
सुनंत हीस सोर श्रोंन, सत्रु चित्त संकई।
उच्चैश्रवा अनोप रूप, बोलि कंध बंकई॥ ७३॥

प्रऊढ़ गूढ़ पक्ष राज, पुच्छ चौरैं पिक्खिए।
भले भले चढ़े यु भूप, तेजि भौंर तिक्खिए॥

प्रचंड रूप पयदलं, जुवान दिग्घ जंघ कै।
उडंत लोह वार पार, सार धार सिघ कै॥ ७४॥
भुजा प्रलंब रूप भीम, साहसीक सूर जू।
युद्धंत युद्ध योग जानि, सायुधेस नूर जू॥
मरोर तेसु पानि मुछ्छ, गाढ़ कै गयंद से।
अरोह कोहलल्ल अखिख, ज्यौं मसंद मल्ल से॥ ७५॥
वहंत ते विरुद्द बक, सद्द वेधि सायक।
कठोर जोर पानि कंक, घेरि भिच्छ घायकं॥
धरत पाय धापतैं, धरातलं धमक्कई।
हटाल बीर जैत हत्थ, रुद्द सेन रुक्कई॥ ७६॥
भरै सु यॉन भंति भंति, रासि हेम रूप सो।
पटंबर विसाल पाल, पामरी रु सूप सों॥
सु खग्ग तॉन चाप सेल, कत्ति के कटारयं।
सनाह टोप आदि सज्ज, भूप योग भारयं॥ ७७॥
असंख यों चमू उमंडि, भंति मेघ भद्दयं।
दिसा दिसान पूरि भूरि, ज्यौं जलं समुद्दयं॥
घुरंत दंति पुट्ठि घोप, नौवती निसान जू।
सु गज्जि व्योम जास सद्द, खोनि खोभ मान जू॥ ७८॥
चढ़ै तुरंग चचल, कुँआर राज काम से।
सु सेहरा विराजि सीस, ईस साभिराम से॥
ढुरंत चौंर दिग्घ चारु, वारिधार वर्णयं।
उतंग रूप आतपत्र, दंड जा सुवर्णयं॥ ७९॥
अनेक राय जूथ सत्थ, पत्थ से समत्थ हैं।
बहै बिरुद्द बंक बीर, हेम दॅन हत्थ हैं॥
दिनेस कंति दिग्घ देह, दुट्ठ सेन दाबटैं।
अडोल बोल अख्खनै, अनंत ते असी झटैं॥ ८०॥
सलक्कि सेस सेन भार, कुम्म संक सक्कई।
प्रकंपि मेरु पब्बयं, धरातलं धसक्कई॥
झलक्कि सिंधु नीर जग्गि, ईस जोग आसनं।
रविद बिंब ढंकि रेतु, संकि पाकसासनं॥ ८१॥
उमग्ग मग्ग सैल भग्ग, भग्गि भूमि आसुरी।
बजैं सुखोनि बाजि बेग, विद्यु ज्यौं खिवै खुरी॥

मिवास थॉन मुक्कि मिन्छ, भग्गि मंनि तंभयं ।
सरोवरं सलित्त मुक्कि, सिंधु नीर सोसयं ॥ ८२ ॥

महंत सेन यों उमंडि, ज्यौं पयोद पावसं ।
न बुज्झियै स्व ऑन मॉन, है दलं चहों दिसं ॥
क्रमंक्रमै करंत कूच, मंडि कै मुकामयं ।
संपत्त राज बिद सूर, बुंदियं सु ठामय ॥ ८३ ॥

( कवित्त )

सपत्तै सजि सेन, कुंमर श्री राजकुमारह ।
बुंदी बढ़िय अवाज, हरषि हाडा परवारह ॥
छत्रसाल महाराव, सेन चतुरंगनि सज्जिय ।
हय गय पयदल हसम, राज बर सनमुख रज्जिय ॥
संपत्त तबहिं फुनि रट्ठवर, जसा कुँवर गजसिंह सुअ ।
वर पानिगृहन कज्जें विहसि, धीर वीर रिनधर सु धुअ ॥ ८४ ॥

( दोहा )

उभय राज बर लगन इक, कन्या उभय सु कज्ज ।
पत्तै निय निय दल प्रचुर, कैलपुरा कमधज्ज ॥ ८५ ॥

( कवित्त )

उभय राज बर अनम, उभय रिनधीर अनग्गल ।
उभय जोर अहकार, उभय अति रोस महद्दल ॥
उभय व्याह इह प्रथम, उभय हठवत हठालह ।
उभय अगंज अभंग, उभय बायक प्रतिपालह ॥
इकमिक्कि भयै बुंदी उभय, हाड़ा दरबारहिं हरषि ।
श्री राजकुंआर महा सबर, नाहर ज्यौं कमधज निरखि ॥ ८६ ॥

( दोहा )

नाहर ज्यौं नाहर निरखि, कोपहिं होत कराल ।
त्यौं दुहुँ आपस में सु तकि, लोयन करिय सु लाल ॥ ८७ ॥

( कवित्त )

लोयन करिय सु लाल, कही कमधज्ज कहानिय ।
हम नरनाह अनादि, हद्द रक्खन हिंदवानिय ॥

हम से कोइ न हठी, होड़ हम किन प हल्लय।
संग्रामहिँ हम सूर, दुट्ठ दानव पय डुल्लय॥
बंदिहुँ प्रथम तोरन बिहसि, न तरकि कलहंतन करौं।
अति तुंग सिखर धर बर अचल, पूरव तैं पछिम धरौं॥ ८८॥

( दोहा )

पूरव गिरि पच्छिम धरौं, हौं कमधज्ज हठाल।
बदहु तोरन अप्प वर, कहा कियैं बिढ़ साल॥ ८९॥
कथन एह कमधज्ज कै, सुनि श्री राजकुँआर।
हुँकरि थप्पि स्वकध हय, बोले यौं बबकार॥ ९०॥

( कवित्त )

कब कै तुम नरनाह, कहौ कमधज्ज कहानिय।
जीति कहाँ तुम जंग, हद्द राखी हिदवानिय॥
तुम आसुर आधीन, धीय दै धरनि सु रक्खहु।
इन करनी हम अग्ग, ऊँच मुँह करि करि अक्खहु॥
पच्छै यु पाउ धरने नहीं, अग्ग आउ चौगान महिँ।
पुरुपातन अद्य परेखियैं, कुप्पि सु राजकुँमार कहि॥ ९१॥

( दोहा )

कुप्पिय राजकुँआर रिन, अभिनव ग्रीषम अग्गि।
कटुक रूप कमधज्ज कै, बचनहिँ बचन बिलग्गि॥ ९२॥

( कवित्त )

बचनहिँ बचन बिलग्गि, सूर निय निय संमाहिय।
बज्जि सिधु सहनाइ, ईस युग्गनि उम्माहिय॥
छुट्टि करी मदछक्क, हक्क बज्जी चाव दिसि।
कपत कायर काय, मिलिय दुहुँ सेन कढ़ि असि॥
तब बीच कीन हाडा नृपति, छत्रसाल रावहिँ अजब।
संगृहिय बाहु कमधज्ज कौं, समझावैं विधि अक्खि सब॥९३॥

हो कमधज्ज कुँआर, मार इनसौं नन मंडहु।
कैलपुरा ए क्रूर, भूलि मम अप्पन भंडहु॥
इन सौं सरभर कहा, यही युग युग हिदूपति।
अप्पन अनुग समान, मिच्छि आधीन प्रजाभति॥

आदित्य अपर ग्रह अतरा, अंतर त्यौं इन अप्पनहिं।
इन सौं यु टेक किज्जै नहीं, ए असुरेस उथप्पनहिं॥ ९४॥

( दोहा )

सुनि समझ्यौ कमधज्ज सुत, जग जसवंत सु आप।
राजकुँअर घन रोस रस, पेखै प्रबल प्रताप॥ ९५॥
तोरन तब बदिय प्रथम, राजकुँआर रढाल।
सिह रूप सीसोद सौं, अरि को मंडय आल॥ ९६॥

( कवित्त )

अरि को मडय आल, देव दानव दिगपालह।
मानव कितीक मात, प्रेत दीजै सायालह॥
जिन केहरि किय जेर, गिनै नहिं सो वर गड्डर।
पीवहि जेह पयोधि, कहा तिन अग्ग गॉउ सर॥
जगतेस रॉण सुअ जंग जहँ, डुलय तहॉ असुरेस दल।
श्री राजकुँआर सु सनमुखहिं, बपु कमधज्ज कितोक बल॥ ९७॥

रढनिय इहिं परि रक्खि, बंदि तोरन बर बीरहि।
श्रीवर राजकुँआर, सरिस सोभा सुसरीरहि॥
घन ज्यौं त्रंबक घुरत, विरुद बंदी बहु बुल्लत।
हय गय रथ बर थट्ट, परज पिखत बहु अद्भुत॥
लखिए न बैर तिहिं अप्प पर, मनु नर सायर उल्लटिय।
गावत गीत गौरी गहकि, तॉन मॉन नव नव थटिय॥ ९८॥

( दोहा )

ता पाछै कमधज्ज नैं, बंदिय तोरण बार।
उभय राज बर इंद ज्यौं, बरसै कंचन धार॥ ९९॥

( कवित्त )

बरसै कंचन धार, गज्जि घन ज्यौं बुँदीगढ़।
परनि प्रिया पदमनी, रिधू राखी सु अप्प रढ़॥
राजकुली छत्तीस, मज्झ नायक मुछ्छालह।
सीसोदा बर सूर, कुँअर राजेस रढालह॥
जसवंत परनि कमधज्ज कुल, नायक नृप गजसिह सुत।
हाड़ा नरिंद मंड्यौ हरष, संतोषै षटबरन युत॥ १००॥

( दोहा )

बर संतोषै षटबरन, हृदय सु पूरिय हॉम।
छत्रसाल बर राव छिलि, देत दाइजै दॉम ॥१०१॥

( कवित्त )

देत दाइजै दॉम, हत्थि हय हेम सज्ज सजि।
सज्जि सार सुखपाल, सेज बाले सु वृषभ रजि॥
दासी सुदर देह, सकल त्रीकला सुलक्खन।
मुक्ताफल मनि मढै, अंग कंचन आभूखन॥
दिन्नै यु गॉव हथलेव दत, कसव पटंबर विविधि भति।
श्री राजकुँआर सु सन्मुखहिँ, धरिय भेट हाडा नृपति ॥१०२॥

( दोहा )

धरिय भेट हाड़ा धनी, हय गय दासी हेम।
अधिक रट्ठवर अग्ग लैं, पोखिय प्रवर सुप्रेम ॥१०३॥

( कवित्त )

पेखिय प्रवर सुप्रेम, व्याह किन्नौ यु वेद विधि।
सुर नर करहिँ सराह, राखि रस रीति महा रिधि॥
जलधर ज्यौं याचकनि, देइ धन कचन दत्तह।
अनुक्रमि आए गेह, उभय बर राज उमत्तह॥
जगतेस रॉण सुअ करि सु जय, पत्ते इहिँ विधि उदयपुर।
प्रज मिलिय राज बर पिक्खनहिँ, अति दलमलियत उरहिँ उर ॥१०४॥

( दोहा )

अति दलमलियत उरहिँ उर, मिलिय सघन नर नारि।
पिखहिँ राजकुँआर प्रति, अनमिख नैंन निहारि ॥१०५॥

( कवित्त )

अनमिख नैंन निहारि, चित्त चितहिँ मृगनैंनिय।
गौरी गज-गामिनी, सकल कल बिधु बर बैंनिय॥
एसु इंद आकार, कुँअर श्री राजकुँआरह।
इन जननी सु प्रमान, कहिय करमेत अपारह॥
धनि धनि सु इनहिँ घर गेहनिय, हरपै जिन पूज्यौ सुहर।
जो देइ देव तो दिज्जिए, भव भव इनहिँ समान बर ॥१०६॥

( दोहा )

बर बामा मिलि मिलि बदै, भव भव हम भरतार ।
देव दया कर दीजिए, इहिं बर कै अधिकार ॥१०७॥

( कवित्त )

इहिं बर कै अधिकार, नहीं कौ अवर नरिंदह ।
इंद चंद अनुहार, देह दुति जॉनि दिनंदह ॥
बहु नर वर बिटियौ, गिनति कौ करै हयग्गय ।
पायक कौ नहिं पार, जपत बंदी सु जयज्जय ॥
श्री राज रॉण जगतेस सुव बुंदीगढ़ सुंदरि वरिय ।
निज महल आइ जननी सु नमि, सकल मनोवांछित सरिय ॥१०८॥

# चतुर्थ विलास

( कवित्त )

राजसिंह महाराॅण, पुहविपति आप कुॅवरपन ।
बिपुल लगायौ बाग, बियौ बसुधा नंदन-वन ॥
प्रबर कोटि तिन परधि, झुड सतपत्र कनक झर ।
बृद्धि तहाॅ बापिका, कही सनमुख दक्षन कर ॥
निज नगर उदयपुर निकट तैं, अगिनकोन घाॅ अक्खियै ।
सबरितुबिलास तसु नाॅम सति, नयन सु महल निरीखियै ॥ १ ॥

( छंद विद्युन्माला )

बिबिध सघन वृक्ष, लुबझुम केउ लक्ष ।
बाग सो बहू बिसाल, रितु पट हूॅ रसाल ॥ २ ॥
जुजुई सकल जाति, बेलि गुल्ल कैं बिभाति ।
भरित अठारह भार, परधि बन्यौ प्राकार ॥ ३ ॥
सारनी बहत सार, वृक्ष वृक्ष मूल वार ।
गिनियैं सदा गंभीर, सुरभि चलैं समीर ॥ ४ ॥
अंबर बिलगि अग, करनी बहु कदब ।
आॅबिली तरू असोक, थट्टै सु अजाॅन थोक ॥ ५ ॥
आॅवरी अगच्छि अैंन, चपकई दोप चैंन ।
अति अखरोट अखि, चारु चार जीह चखि ॥ ६ ॥
कटल बढल कुद, मालती रु मचकुद ।
करना कनैर केलि, राइनि सु राइवेलि ॥ ७ ॥
केतकी रु कचनार, केवरा प्रमोद कार ।
खारिक पिडखजूर, भाखियै अगर भूरि ॥ ८ ॥
गिनती कहा गुलाब, जभीरी जुही जवाब ।
जासूल जंबू सु जाइ, नारंगी निबौ निन्याइ ॥ ९ ॥
ज्यौं जातूत नालिकेर, गुलतरुरा गिरि मेर ।
चंदन महक्क चारु, दारिम सु देवदारु । १० ॥

तजरु तार तमाल, मोगरा मधूप माल।
दमन पतंग दाख, पिसिता यु एक पाख ॥ ११ ॥
फवतै तरू फरास, पारस पीपर पास।
पाडल बहू प्रसंस, बेतस बिदाम बंस ॥ १२ ॥
बटबोरं सिरीबोर, जानियै सुवर्ण जोर।
सुपारी सरोस सेव, सिंदूरी सदा सुटेव ॥ १३ ॥
संगर सरस दल, सुरुझना सदाफल।
बाग में गिनै विवेक, इत्यादि तरु अनेक ॥ १४ ॥
करत बिहंग केल, मिथुन मिथुन मेल।
मैन सारि सुआ मोर, चंचल बहू चकोर ॥ १५ ॥
सुनियै सबद सारु, हरप कुही हजारु।
कोकिल करैं कुहक्क, मंजरी भपैं महक्क ॥ १६ ॥
कावरि कपोत कारि, तूती फरु लेत तोरि।
लावारु तीतर लख, चचु चारु मेवा चख ॥ १७ ॥
बटेर बाज बखान, सगग उड़ै सिचान।
जोरावर जहाँ जत, अखतें न आवै अंत ॥ १८ ॥
महल तहाँ महंत, कनक कलस कंत।
रायाँगन बहु रूप, भले भले बैठें भूप ॥ १९ ॥
चहबचा पिखै चारु, छुट्टत नल हजारु।
दतीनि कै सुडा दड, उदक धारा अखंड ॥ २० ॥
बँगले बने बिबेक, आल्ही कोरनी अनेक।
सजल तहाँ सुसर, कमल कनक झर ॥ २१ ॥
रच्यौ राणा सीह, अनम सदा अग्रीह।
सरबरितुबिलास, बगीचा सदा सुबास ॥ २२ ॥
कुअरपनै सु केलि, बहू विधि वृक्ष बेलि।
गिनत न आवै गान, कहत कविद मान ॥ २३ ॥

---

# पंचम विलास

( दोहा )

पालिय प्रवर कुँआरपद, बरस तेइस बखान।
पाट बइट्ठै पुहवीपति, राजसिंह महारान ॥ १ ॥

( छंद लघु नाराच )

श्री राजसिंह रान जू, प्रभूत पुन्य प्रान जू।
पइट्ठियें यु पाटकौं, थटै यु भूप थाट कौ ॥ २ ॥

अनूप हेम आसनं, सुचिट्ठिकै सुखासनं।
महक्कि चारु मज्जनं, सुमज्जहु दुसज्जनं ॥ ३ ॥

कलं कनक्क कुंभ सौं, अनाइ गग अभ सौ।
सरीर कीन स्नानयं, विराजि अग वानयं ॥ ४ ॥

सुकोमलं सुरंगयं, अगुच्छि चीर अंगयं।
सुधोतक सुवासयं, रवीरोदकं यु खासयं ॥ ५ ॥

ध्रुव जनेउ धारए, कही सुबंस कारए।
प्रधान बंधि पाधयं, सुवर्ण सूत साधयं ॥ ६ ॥

जरीस जोति जामय, दिपंत कंठ दामय।
प्रसंसि पाइ मोजरी, जराउ हेम सजुरी ॥ ७ ॥

करं गृहैं कृपानयं, धियौ सु पचबानयं।
चढ़ै तुरंग चचलं, दहक्कि आसुरी दलं ॥ ८ ॥

जमाति भूप जुत्तयं, सभा तहाँ सँपत्तयं।
बजैं अनेक बज्जन, गभीर गैंन गज्जनं ॥ ९ ॥

ढमक्कि जंगि ढोलयं, रचै सुरग रोलयं।
निहस्सियं निसानयं, मृदंग मेघ मानय ॥ १० ॥

बजंत संख बीनय, नफेरियं नवीनयं।
तुटत तान तालयं, सुघंट घोप सालयं ॥ ११ ॥

सहनाइयं सुहावई, भनंकि भेरि भावई।
झणं झणंकि झल्लरी, द्रमकियं दुरद्दरी ॥ १२ ॥

हुड़क्कि जंत्र हृदयं, सारगि चंग सद्दयं।
गोरीस गीत गावईं, प्रमोद चित्त पॉवईं ॥ १३ ॥
बदंत बिप्र वेदयं, अनेकसं उमेदयं।
धखंत ज्वाल धोमयं, हवी प्रभृत्ति होमयं ॥ १४ ॥
भनैं बिरुद भट्टयं, सु बोलि बंदि थट्टय।
तिलक्क कट्टि तॉमयं, सु प्रोहित सकॉमयं ॥ १५ ॥
उच्छारि मुत्ति अखए, यहे आसीस अखए।
रिधू नरिंद राजयं, करौ स्वचित्त काजयं ॥ १६ ॥
समप्पितं सुरामयं, दए सु लख्ख दामयं।
उतंग अस्व अबरं, कनक्क चारु कुंजरं ॥ १७ ॥
दियौ सुअन्न दानयं, गिनैं यु कौन गानयं।
पयोद जानि पूरयं, दरिद्द कीन दूरयं ॥ १८ ॥
छजंत सीस छत्रय, समिट्टि सर्व सत्रयं।
दुरंत चौर उज्जलं, दिपैं हयं गयं दलं ॥ १९ ॥
अभंग जास सासनं, मनौ सुरेस आसनं।
रजंत राज रानजू, कहैं कवीद मानजू ॥ २० ॥

( कवित्त )

पुष्कर गंग प्रयाग, तित्थ अभिराम त्रिवैनिय।
जगन्नाथ जालिपा, देवि सुख सपति देनिय ॥
कासी बर केदार, द्वारिका नाथ सु देखिय।
गोदावरि गुनगेह, बैजनाथह सु बिसेखिय ॥
इकलिंग ईस अवलोकियत, दुख दोहग दूरहिं टरैं।
राजेस रॉण निरखत नयन, मान मनोवांछित फरैं ॥ २१ ॥

रस कूपिका रसाल, कलपतरु अज्ज चढ़ै कर।
पारस रस पौरसा, वेलि चित्रा सुदेव वर ॥
हय गय हाटक हीर, प्रवर सनमान पटंबर।
संपत्ता सुर रयण अद्य, दुझ्यौ मनु अबर ॥
तुम दरस सोइ तेजन तुरी, सकल लच्छि सुख संबरैं।
राजेस रॉण निरखत नयन, मान मनोवांछित फरैं ॥ २२ ॥

( छट्ट भुजगी )

तुही राम रूपं रवी बंस राजा, बजैं जास तिहूं लोक मैं सु बाजा ।
तुही लच्छि ईसं लहैं लच्छि लाहं, निराबाध तूही सदा हिदु नाहं ॥२३॥
तुही संकरं एकलिगं सरूपं, भनों आदि बंसै तुही हिदु भूपं ।
तुही ब्रह्म गोपाल ब्रह्मा बिराजै, नवै निद्धि आपैं पहूतं निवाजै ॥२४॥
इला इंद तूही दलै आसुरानं, करैं वज्र रूपं बिराजै कृपानं ।
तुही हिदुआ भान अरि तेजहारी, मधूसूदनं तुहि दरसै मुरारी ॥२५॥
तुही चारु मुखं मनौ पूर्ण चंदं, श्रवै अमृतं बैन लहरी समुद्दं ।
तुही नाग नत्थै तुही देत नागं, तुही पुष्कर तित्थ तूही प्रयागं ॥२६॥
रजै रूप तूही जगन्नाथ रायं, सदाचार रक्खैं सुभृत्यं सहायं ।
तुही गंग गोदावरी तित्थ गाजैं, तुही कीन केदार कालंकि काजैं ॥२७॥
धरा मध्य तूही बियौ मानधाता, तुही छत्रधारी बहू भूमि त्राता ।
तुही कासिका बिबुध जनपाल कहियै, सदा सैलराजां सिरै तस लहियैं ॥२८॥
तुही द्वारिकानाथ निज नैंन दिट्ठौ, मनौं अमृतै बरसयौ मेघ मिट्ठौ ।
तुही कसहर्त्ता कह्यौ सृष्टिकर्ता, भटों कोटि सेवै पदं भूमि भर्ता २९॥
तुही जोगमाया महाजंग जित्तैं, मधू सुभ निसुंभ महिसेष हत्तैं ।
तुही जोति ज्वालामुखी रूप जागैं, मही छंडि तो अग्ग खल जूह भागैं ॥३०॥
जितै बिरुद धारंति जालंधरानी, कही देव तैसी तुम्हारी कहानी ।
तुही कंटकं मेटनै कॉलकूटं, तुही अप्पई हेम माया अटूटं ॥३१॥
तुही विश्वनेता तुही कल्पवृक्षं, तुही पारसं पोरस ज्यौं प्रत्यक्षं ।
तुही बीर धीरं तुही चित्रबेली, करैं खल्ल खंड रिन रंग केली ॥ ३२ ॥
महादान आपैं तुही मेघमाला, सु दै हत्थि हेमं दुरंमा दुसाला ।
तुही नाथ सुर रत्न तूही निधान, तुही सर्व्व रस कुंपिका कै समानं ॥३३॥
सदा तं रिधू राण श्री राजसीह, अजेज अनंमी अभंग अग्रीह ।
लियें तंसु भुज आपन हिदु लाजं, रसा एक तूही सु राजाधिराजं ॥३४॥
तुही धर्मराजा धरा धर्म धारै, तुही आपदा खंडि कै के उधारै ।
निवेरै बहू भंति तं हद्द न्यावौ, यहू सं करैं लख्ख लख्खौं पसावौ ॥३५॥
तुही ईहको वृंद पूरंत आसा, तुही अप्पई दान चित्तैं उल्हासा ।
लसै साइ तो राज लीला हजार, कहो कौन लोपै तुम्हारी सु कारं ॥३६॥
भरैं दंड तुम अग्ग भारी भुवाला, बर बारणं बाजि बृंद बिसाला ।
तुही कामिनी बल्लहं रूप कामं, नऊ निद्धि पावै लियै तं सुनामं ॥३७॥

निपावंत देवालये तं नवीनैं, पढ़ैं वेद तो अग्ग ब्रह्मा प्रवीनैं।
तुही एक दातार पुहवी अनूपो, रसा रखवना राजतं राज रूपो ॥३८॥
त्रिहौ लोक धाराधरासं त्रिवेनी, दिसा व्योम तो लौं सिवा सौख्य देनी।
गिरा मान तौ लौं नई किन्ति गाजै, रिधू राजसी राण मेवार राजै ॥३९॥

( कवित्त )

राजसिह महाराण, बंधु वर बीर महाबल।
महाराज अरिसिह, मौज आपै हय मैंगल॥
सुरही बिप्र सहाय, अनम अरि जूह उथापन।
मृग रिपु कुल मृगराज, क्रूर दुख दोहग कप्पन॥
सुलतान गहन मोखन सगति, टेकवंत रिन नन टरैं।
ससार सरन महाराज कैं, आवै ते नर उग्गरैं॥ ४०॥

( छंद वृद्धि नाराच )

श्री राजसिह रान के रिधू सुबंधु रज्जए।
गिरा नरिंद किन्ति गाज गग जानि गज्जए॥
लिए सु सत्थ लक्ष लील लच्छि इंद लज्जए।
तपत जास खग्ग तेज तिख्ख मिच्छि तज्जए॥ ४१॥

बहू विवेक बुद्धि बीर बिस्व मैं बखानियैं।
प्रताप पुंज पुन्य पाज प्राक्रमी पिछानियैं॥
परोपगारवंत पूज्य पावनं प्रमानियैं।
यु जातरूप रूप तैं अनूप रूप जानियैं॥ ४२॥

अजेज गाढ़ आगरे इला धनी अभंगयं।
जुरैं सु जूह सत्थ जोध जीतईं सु जंगयं॥
प्रधान दान देत प्रेम पुष्करी पवंगयं।
पयोद ज्यों प्रससिए चवंत भास चंगयं॥ ४३॥

उदार चित अक्खियैं अहोनिसं उल्हासकं।
सुजान सर्व ग्रंथसार सिख्खवैं सहासकं॥
बिचित्र बित्त बाम बाजि बारन बिलासकं।
बिसाल किन्ति चंदबान सा प्रथी प्रकासकं॥ ४४॥

करंत केलि कोरि कंत कंति जानि काम जू।
बिसिष्ट बान बाल बेस बिटियौ सु बाम जू॥

नचंत पात्र नायका गृहंति राग ग्राम जू।
सदैव सौख्य सागरं सु मान ईस धाम जू॥ ४५॥

सहाय साधु स्याम सेव सत्यता सुहावई।
पुरान वेद पाठ कैं पढ़ैं प्रमोद पावई॥
सु देत लक्खु लक्खु दानदुःख कौ दुरावई।
महीद महाराज कौ गुनी सु बोल गावई॥ ४६॥

कृपान पानि दुट्ठ काल क्रूर युद्ध कारइ।
धसक्कि मिच्छि जास धाक धुज्जि भीति धारई॥
सुकज्ज सज्ज साहसीक संवर सुधारई।
बजंत सिंधु बद्यनं महंत सित्रु मारई॥ ४७॥

तनू उतंग तत्त तेज तीर बेग से तुरी।
खिवंत जानि विद्यु पाय खेंग संकरैं खुरी॥
मदोनमत्त रूप मेहकाय से लसैं करी।
करै सु दत्त किति काज सार सार जा सिरी॥ ४८॥

छकपकंति मिच्छि धारि धरा जास धक्क हैं।
सुसद्द बेधि अग संभु हद्द सीह हक्क हैं॥
चढ़ंत पुट्ठि चंचल चमक्क च्यारि चक्क हैं।
गिरिंद गाढ़ मैंन गात संगि राग हक्क हैं॥ ४९॥

नऊँ निधान लच्छिनाथ न्याउ स नरिंद जू।
दिपंति कंति देह रूप देखते दिनेद जू॥
पवित्त सीस आतपत्र चारु चौर चंचल।
सुरद्य जास देस सधि सिन्नु को न संचलं॥ ५०॥

नराधि रूप नाहरं निरंतरं निसकयं।
करी खलौ बिभच्छि कुंभ क्रूर नख ककयं॥
बलिट्ठ मुट्ठि वीर सो बहैं बिरद्द बंकयं।
अनाथ नाथ बिस्व ऊँट आन झल्लि अकयं॥ ५१॥

तिधार तिक्ख तेग तिग्म तेज ताप तोरई।
छतीस सत्थ धार छोह छीनि बंधि छोरई॥
मजेज जग मंडलौ मसंद मीर मोरई।
जयं जयं जपैं कवीद जास कित्ति जोरई॥ ५२॥

निहस्सई निसान नाद नेज नूर नायकं।
लसैं करी तुरंग लच्छि लक्ष लील लायकं॥
सनातनं सधर्म साहु सज्जनं सहायकं।
दबट्टई दरिद्द दोस दंति मत्त दायकं॥ ५३॥

मृजाद मेर महाराज मही सीस मंडनं।
बदैं सु बोल जास बिस्व बैहितं बिहंडनं॥
खलौं दलौं सु सज्जि खैंग खग्ग बेग खंडनं।
दयाल देव दूबरेंनि दुट्ठ सट्ठ दंडनं॥ ५४॥

सुरेंद चंद सूर तैं सरीर तास रूप हैं।
अनेक जूथ सत्थ भूप भेटई सु भूप हैं॥
समप्पई सु पत्त सिद्धि सोवनं सु सूप हैं।
धाराल सुद्ध जा दुधार धारि हत्थ धूप हैं॥ ५५॥

डहक्कि मिच्छि जास डिभ डिभ वाम सर्भरैं।
जिहान आन कौन जोध जग आइ सौ जुरैं॥
भुजाल भीच भारथौ भयंक भीम ज्यौं भिरैं।
अरस्सि महाराज कौ गुनी सु बोल उच्चरैं॥ ५६॥

अतैव अंस अक्खियैं इला अभंग आन जू।
दिनं दिनं सु मान देत राजसिह रान जू॥
तवत देवि त्रैपुरा त्रिलोक ऊँक त्रान जू।
सु सद्दए सुधा समं कहैं कविद मान जू॥ ५७॥

( कवित्त )

राजसीह महाराण, कुँअर करमेत कुलोद्धर।
जयवंता जग जोध, जग जीतन जोरावर॥
अरि उलूक आदित्य, घाउ मोरै पर गज घट।
देत सुकवि कर दत्त, प्रबर करि अस्व कनक पट॥
कुंजर सु मिच्छि कुंभहि कलन, कहिय कँधाला केहरी।
जयसीह कुँअर दिन दिन जयौ, उमगि गहन धर आसुरी॥५८॥

( छंद उद्धोर )

जय जय कुँअर श्री जयसीह। अति अवगाह अग अबीह॥
उत्तम सरूप सुक्रत अंस। प्रबर सु पुहवि माँझ प्रसंस॥५९॥

कट्टन दरिद्द दुख कलंक । मुख दुति जानि सकल मयंक ॥
अप्पय लच्छि चित्त उदार । सच्चा सूर कुल शृंगार ॥६०॥
कमनीय काय अप्प कुँआर । अभिनव मदन कौ अवतार ॥
उंपित सहज पर उपगार । हरखत देत द्रव्य हजार ॥६१॥
अंकुस सरिस जो अरि दूभ । गाहत आसुरी धर गब्भ ॥
धुज्जत असुर वर तस धाक । हक्क तव सीह वन घन हाक ॥६२॥
ऐ अवतार रूप अनूप । भेटहिँ जास बड़ बड़ भूप ॥
राजकुँआर राजस रीति । उथपि जिनहिँ सकल अनीति ॥६३॥
झलकत मज्झ नर वर झुंड । प्रकट कि तरनि तेज प्रचंड ॥
महिमा मेरु सबर मृजाद । वसुमति कौंन मडय बाद ॥६४॥
महितल सकल मान महत । आनहिँ कुँअर अरि कुल अंत ॥
सुरही विप्र करन सहाय । गीपति सरिस जसु जस गाय ॥६५॥
गिनियहिँ मेरु गिरिवर गाढ़ । डंकहिँ पिसुन नर असि डाढ़ ॥
घन तैं अधिक दृढ़ घन घाउ । दिसि दिसि देत पर धर दाउ ॥६६॥
सिधुर तुरग श्री श्रीकार । अखिय अबल जन आधार ॥
सागर तोल चित्त समाव । परतक्ष करन लख पसाव ॥६७॥
बामा सथ बैरिन बंधि । आनहि जेह अप्पन संधि ॥
निहिसित सत्थ नद्द निसान । उदधि सु नीर दल असमान ॥६८॥
दुज्जन भरत हय गय दंड । अधिक प्रताप आन अखंड ॥
विलसत विविधि बाम विलास । मनु रतिनाथ द्वादस मास ॥६९॥
रीझत देत रीझ रसाल । मैंगल मत्त मोतिन माल ॥
सूरति सहस किरन समान । अरि तम हरण इन उनमान ॥७०॥
सस्त्र छतीस धार सुजान । पीरन प्रबल दुज्जन प्रान ॥
नाहर ज्यौं सदैव निसंक । क्रूर सु कठिन जसु नष कंक ॥७१॥
पिल्लहिँ पिसुन ईष प्रबंध । सहजउ स्वास मरुत सुगंध ॥
बसुमति बिभव विलसन बीर । निरमल सुजस सुरसरि नीर ॥७२॥
प्रबर सुमग्ग धरन प्रवीन । खग बल करत खल दल खीन ॥
मंथर गति सु राज मराल । परठत अहित जनहिँ पयाल ॥७३॥
सोवन सरिस कंति सरीर । सुंदर सबल साहस धीर ॥
लच्छिन चारु तसु तनु लच्छि । पर उपगारवंत प्रतच्छि ॥७४॥

ससि रवि सुर सुरेस्वर संभु । उदधि सुमेरु सुरसरि अंभु ॥
अविचल ज्यौं लुं ए अवदात । बोलहिं मान त्रिजग बिख्यात ॥७५॥

( कवित्त )

बसुमति रख्खन बीर, बिमल मति धरन क्षत्रीबट ।
सीसौदा कुल सोभ, झारि नंखै अरि खग झट ॥
लीलापति बहु लच्छि, सुगुन गाहक दृढ़ सायक ।
न्यायवंत गुरु नयन, दत्त हय गय धनदायक ॥
भारथ समत्थ भुवि सुजस भर, भागवंत सु अभंग भर ।
श्री राजसिह महाराण कौ, भीमसिह कूँवर सबर ॥७६॥

( छंद दंडक )

भीमसिह कुँआर मह भट । झूरि नंखहि अरिन खग झट ॥
घाउ घल्लन सीह गज घट । बिरुदवंत सुमंत कुलवट ॥७७॥
बिभव तेज सदैव बढ्ढइँ । कुंति तैं कंटकनि कढ्ढइँ ॥
गिरि समान गुमान गढ्ढइँ । चढ़त हय रिपु चाक चढ्ढइँ ॥७८॥
दुज्जनौं सिर करत दंडह । अत्थि हय गय बल अखंडह ॥
खग्ग बल खल खेत खंडह । अकल अप्प सदा अदंडह ॥७९॥
जंग जीतन जोध जग जस । रपटि रिपु रलतलहिं रिन रस ॥
गौर गात सु गोध गुरु गस । बसुमती जिन कीन निज बस ॥८०॥
बंधि आनत सित्रु बामहिं । गाहि धर गढ़ कोट गामहिं ॥
जानि ऋतुपति अट्ठ जामहिं । धूपटै धन राज धामहिं ॥८१॥
सरस सुर सगीत सच्चइँ । नृतत पातुर नारि नच्चइँ ॥
राग रग सु तान रच्चइँ । मधुर धुनि सुनि मोद मच्चइँ ॥८२॥
सुरहि सज्जन जन सहायक । लच्छिपति सम लील लायक ॥
प्रचुर हय गय सेन पायक । नर प्रधान नराधिनायक ॥८३॥
भीम भय गढ़ कोट भज्जइँ । धसकि आसुरि धरनि धुज्जइँ ॥
राजराण सुपुत्त रज्जइँ । तिक्ख अरि तनु तेह तज्जइँ ॥८४॥
सकल रज्ज धुरा समत्थह । पिसुन पटकहि ज्यौं सु पत्थह ॥
सबल दल जिन चढ़त सत्थह । हेम हय गय देत हत्थह ॥८५॥
मत्त मीर मजेज मोरन । तुंग तर मैवास तोरन ॥
बीर बर गन धन बहोरन । जगत जय जस बाद जोरन ॥८६॥

क्रर जसु कर कठिन कंकह । झाक बज्जत धुनि झनंकह ॥
नित्य नाहर ज्यौं निसंकह । बिरुद मरद सु बहय बंकह ॥८७॥
गहकि आसुरि सेन गाहत । ढुंढि ढुंढि सु सत्रु ढाहत ॥
बज्र सम करबाल बाहत । सज्जि दल सुलतान साहत ॥८८॥
नूर नर नागर निरोगिय । अभय मन अहनिसि असोगिय ॥
भोगवैं बहु भूमि भोगिय । स्वामि ज्यौं सुंदरि सँयोगिय ॥८९॥
स्वर्ण रंग सरीर सुदर । प्रगट मनु पुहवी पुरंदर ॥
केवि जिन डर दुरत कंदर । मानईं खट ऋतु सु मंदिर ॥९०॥
निसुनि चढ़त निसान नद्दह । रंक रिपु कुल होत रद्दह ॥
भीम दल जनु मेघ भद्दह । सुकवि बोलत तसु सु सद्दह ॥९१॥
राज राण सुनंद रंगह । भीम रिपु दल करन भंगह ॥
गाजई जस जानि गंगह । चंद पूरन मास चंगह ॥९२॥
चिरंजीवि प्रताप जसु चिर । थान हय गय हौ बहू थिर ॥
सृष्टि तब लौं अचर सुरगिर । गहकि बोलत मान जसु गिर ॥९३॥

———

# षष्टम विलास

( कवित्त )

चढ़ै सेन चतुरंग, राण रवि सम राजेसर ।
मनौं महोदधि पूर, बारि चहुँओर सु विस्तर ॥
गयबर गुंजत गुहिर, अंग अभिनव ऐरावत ।
हयबर घन हींसंत, धरनि खुरतार धसक्कत ॥
सलसलिय सेस दल भार सिर, कमठ पीठि उठि कलकलिय ।
हलहलिय असुर धर परि हलक, रवनि सहित रिपु रलतलिय॥१॥

( छंद पद्धरी )

संबत प्रसिद्ध दह सत्त भास । बत्सर सु पंच दस जिट्ठ मास ॥
सजि सेन राण श्री राजसीह । असुरेस धरा सद्धन अबीह ॥ २ ॥
निर्घोस घुरिय नीसान नद्द । सहनाइ भेरि जंगी सुसद्द ॥
अति बदन बदन बढ्ढी अवाज । सब मिलै भूप सजि अप्प साज॥ ३ ॥
किय सेन अग्ग करि सैल काय । पिखंत रूप पर दल पुलाय ॥
गुंजंत मधुप मद झरत गच्छ । चरखी चलंत तिन अग्ग पच्छ ॥४॥
सोभंत चौर सिदूर सीस । रस रंग चंग अति भरिय रीस ॥
सौंडाल घटा मनु मेघ स्याम । ठनकंत घंट तिन कंठ ठाम ॥ ५ ॥
उनमत्त करत अगगग् अग्राज । बहु बेग जान पावै न बाज ॥
ढलकंत पुट्ठि उज्जल स ढाल । बर बिबिध वर्ण नेजा बिसाल ॥ ६ ॥
बोलत चलत बदी बिरुद्द । दीपंत धवल रुचि सुचि द्विरद्द ॥
गुरु गाढ़ गैंद गिरिवर गुमान । पढ़ि धत्त धत्त मुख पीलवान ॥ ७ ॥
ऐराक आरबी अस्व ऐन । सोभंत स्रवन सुंदर सुनैन ॥
कास्मीर देस कांबोज कच्छि। पय पंथ पौने पथ रूप लच्छि ॥ ८ ॥
बंगाल जात के बाजिराज । काबिल सु केक हय भूप काज ॥
खँधार उतन केहिं खुरासान । बपु ऊँच तेज बर बिबिध बान ॥ ९ ॥
हय हीस करत के जाति हंस । कबिले सु किहाड़े भोंर बंस ॥
किरड़िए खुरहड़े के सु रत्त । पीलड़े केक लीले पवित्त ॥१०॥

चंचल सुवेग रहवाल चाल। थेइ थेइ तान नच्चंत थाल ॥
गुंथिय सुजान करके सबाल। बनि कंध बक्क सोभा बिसाल ॥११॥
साकति सुवर्ण साजै समुख्ख। लीनै सु सत्थ हय एक लख्ख ॥
रवि रथ तुरंग सम ते सरूप। भनि बिपुल पुट्ठि तिन चढ़ै भूप ॥१२॥
पयदल सुसज्जि पौरष प्रधान। जंघालु जग जीतन जवान ॥
भट बिकट भीम भारत भुजाल। साधर्म्मि सूर निज सत्रुसाल ॥१३॥
निलवट सनूर रत्तो सु नैंन। गय थाट घाट अप घट गिनैन ॥
धमकंति धरनि चल्लत धमक्क। धरहरत कोट जिन सबर धक्क ॥१४॥
बंकी सु पाघ बर भृकुटि बंक। निर्भय निरोग नाहर निसंक ॥
सिर टोप सज्जि तनु त्रान सच। प्रगटे सु बधि हथियार पंच ॥१५॥
कटि कसै कटारी अरु कृपान। बंदूक ढाल कोदंड बान ॥
कमनीय कुत कर तोन पुट्ठि। मारंत सद्द सुनि सबल मुट्ठि ॥१६॥
गल्हार करत गज्जत गैंन। बोलंत बंदि बहु बिरुद बैंन ॥
मुररंत मुँछ गुरुभरिय मान। गिनि कोन कहै पायक सु गान ॥१७॥
बहु भूप थट्ट दल मध्य बीर। सुरपति समान सोभा सरीर ॥
श्री राजसिंह राणा सरूप। गजराज ढाल आसन अनूप ॥१८॥
सीसैं सुछत्र छाजत सारु। चामर ढलंत उज्जल सुचारु ॥
घन सजल सरिस दल घाघरट्ट। भाषत बिरुद बर बंदि भट्ट ॥१९॥
कालकिराय केदार कत्थ। असकत्ति राय थप्पन समत्थ ॥
हिंदू सु राय रख्खन सु हद्द। मुगलॉनराय मोरन मरद्द ॥२०॥
कबिलानराय कट्ठन सु कंद। दुतिबंतराय हिंदू दिनेद ॥
अरि बिकटराय जाड़ा उपाड़। बलवंतराय बैरी बिभाड़ ॥२१॥
अनपुट्ठिराय पुट्ठिय पलॉन। भलहलत रूप मध्यान भॉन ॥
रायाधिराय राजेस रान। जगतेस नंद जय जय सु जान ॥२२॥
बाजोनि चरन खुरतार बग्ग। मह अनड़ कट्ठि कीजंत मग्ग ॥
झलझलिय उदधि सलसलिय सेस। कलकलिय पिट्ठि कच्छप असेस ॥२३॥
रजथॉन सजल जलथान रैंनु। धुंधरिग भान रज चढ़िग गैंनु ॥
अति देस देस सु बढ़ी अवाज। नट्ठै सु यवन करते निवाज ॥ २४ ॥
हलहलिय असुर धर परि हलक्क। खलभलिय नैर पर पुर खलक्क ॥
थरहरैं दुर्ग मेवास थान। रचि सेन सबल राजेस रान ॥ २५ ॥

सुलतान मान मन्नी ससंक । बलवंत हिंदुपति बीर बंक ॥
आयौ सु लेन अवनी अभंग । आलम सुभयौ सुनि गात भंग ॥ २६ ॥

( कवित्त )

ऊचलि गय अग्गरौ, दंद मच्यौ अति दिल्लिय ।
हाजीपुर परि हक्क, डहकि लाहौर सु डुल्लिय ॥
थरस लयौ रिनथंभ, ध्रसकि अजमेर सु धुज्जिय ।
सूनौ भयौ सिरौंज, भगग भैलसा सु भज्जिय ॥
अहमदाबाद उज्जैनि जन, थाल मूँग ज्यौं थरहरिय ॥
राजेस राण सु पयान सुनि, पिसुन नगर खरभर परिय ॥२७॥

( छंद मुकुंद डामर )

चतुरंग चमूँ सजि सिधुर चंचल बंक धिरुद्दरु दान बहैं ।
अवधूत अजेज तुरग उतंगह रगहिँ जे रिपु कट्टि रहैं ॥
अवगाढ़ सु आयुध युद्ध अजीत सु पायक सत्थ लियै प्रचुर ।
चित्रकोट धनी सजि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥२८॥
अति बट्टि अवाज भगी दिसि उतर पंथ पुरंपुर रौरि परी ।
त्रहकंत सु त्रंबक नूर त्रहंत्रह खेंग महा खिति बज्जि खुरी ॥
उड़ि अंबर रेनु बहू दल उम्मड़ि सोखि नदी दह मग्ग सरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥२९॥
करतें बहु कूच मुकाम क्रमं क्रमि पत्त सु नागर चाल पहू ।
भहराय भगै धर लोक महाभय सून भयै अरि नैर सहू ॥
असुरेस कै गेह सुबट्टिउ दगल डुल्लिय दिल्लिय मन्नि डरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥३०॥

दल बिंटिय मालपुरा सु चहौं दिसि ऊपम चंदन जानि अही ।
तहँ कीँन मुकाम घुरंत सु त्रंबक सोच पख्यौ सुलतान सही ॥
नरनाथ रहै तहँ सत्त अहोनिसि सोवन मोरस धीर धरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥३१॥
भर चौकिय देत चहौं दिसि भूपति सौरभ टक्क आराब सजैं ।
हुसियारि कहैं बर जोध हँकारहिँ हाँसत है गजराज गजै ॥
सु हलाल हजार जरैं सब ही निसि घोष सु नौबति नद्द घुरं ।
चित्रकोट धनी सजि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥३२॥

धक धूँनिय धाम सु कोट धकाइय गौखरु पौरि गिराइ दियै ।
ढम ढेर करी हट श्रेणि ढुँढोरिय कंकर कंकर दूरि कियै ॥
पतिसाह सु दज्झन नैर प्रजारिय अंबर पावक झार अरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मार उजारिय मालपुरं ॥३३॥
तहाँ श्रीफरु पुंगिय लौंग तमारह हिँगुल केसरि जायफलं ।
घनसार मृगंमद लीलि अफीमि अँबार जरंत सु झारझलं ॥
उड़ि अग्गि दमग्ग सु ढिल्लिय उप्पर जाय परै सु डरैं असुरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥३४॥
धर पूरिय धोम धराधर धुँधरि धाम भरै धन धान धपैं ।
रवि बिंब तिहौं दिन गोप रह्यौ लुटि लच्छि अनत सुकौन लखैं ॥
सिकलात पटबर सूफ सु अंबर ईं धन ज्यौं प्रजरैं अगरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥३५॥
अति रोसहिं कीन इला तर उप्पर कंचन रूप निधान कढ़ै ।
भरि इभ्भ खजान सु खच्चर सू भर बित्तहि भृत्य अनेक बढ़ैं ॥
जस बाद भयो गिरि मेरु जितौ हरषै सुर आसुर नूर हरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुर ॥३६॥
जय हिंदु धनी यवनेसहिं जीतन मारन तूही यु म्लेच्छ महीं ।
अवतार तुही इल भार उतारन ते कर खग्ग प्रमान कही ॥
जगतेस सु नंद जयौ जगनायक बंस बिभूषन बीर बरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥ ३७ ॥
निज जीति करी रिपु गाढ़ नसाइय आए देत निसान खरै ।
पयसार सु कीन सिंगारि उदयपुर आइ अनेक उछाह करै ॥
कवि मान दिए हय हत्थिय कंचन बुद्धिय जानि कि बारिधरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥ ३८ ॥

( कवित्त )

मालपुरहिं मार यौं, कनक कामिनि घर घर किय ।
गारिय आसुर । सुबंस निय ॥
इन कुल नीति सु एह, गट्ठ आलम गहि मोखन ।
अनमी अनड़ अभंग, नित्य निर्मल निरदूषन ॥
अज सिंह पियै जल घाट इक, खग्ग तेज लीयै सु खिति ।
राजेस राण जगतेस सुत, पुन्यवंत मेवारपति ॥ ३९ ॥

*

# सप्तम विलास

( दोहा )

मारुवारि महिमंडले, रूपनगर वहु रूप।
राज करै तहँ रट्ठवर, मानसिंह मह भूप ॥ १ ॥
सो नृप औरंगसाहि कौ, अतुली बल उमराव।
सूर वीर सच्चौ सुभट, दैंन पर धरहिँ दाव ॥ २ ॥
भगिनी तस घर एक भल, सुभ लच्छिनी सयान।
वेप वाल षोरस वरस, नख-सिख रूप निधान ॥ ३ ॥
रमा रूप कैं रंभ रति, गौरी सै गुन ग्राम।
रूपसिंह राठौर की, सुता सु लक्षन धाम ॥ ४ ॥

( कवित्त )

धरनि प्रगट मरूधरा, वसैं तहँ रूपनगर वर।
मानसिंह तह माँहेप, रज्ज रज्जंत रट्ठवर ॥
वहनि तास गृह प्रवर, रमा रूपैं कि रंभ रति।
रूपसिंह पुत्ती सरूप, गात कचन गयद गति ॥
बोलंत मधुर धुनि पिक वयन, निसिपति आनन मृग नयन।
चउसट्ठ कला कुँवरी चतुर, मनमोहन मदिर मयन ॥ ५ ॥

( छद गुणावेलि )

कहियै श्री राजकुँआरी, अच्छी अच्छरी अनुहारी।
वपु सोभा कंचन वरनी, हरि हर ब्रह्मा मनहरनी ॥ ६ ॥
सुचि सुरभि सकोमल सारी, कव्वरि मनु नागिनि कारी।
सिर मोती माँग सु साजैं, रापरी कनकमय राजैं ॥ ७ ॥
लखि सीस फूल रवि लोपैं, अष्टमि ससि भाल सु ओपैं।
विँदुली जराउ वखानी, अलि भृकुटि ओपमा आनी ॥ ८ ॥
छवि अंजन दृग मृगछौना, तपनिय श्रुति जरित तरौना।
नकवेसरि सोहति नासा, पयनिधि सुत लाल प्रकासा ॥ ९ ॥

पल उपचित गच्छ प्रधानं, अति अरुन अधर उपमानं।
रद दारिम बीज रसाला, पढ़ियै मनु बिंब प्रवाला ॥ १० ॥
कलकंठ सु रसना कुहकैं, मुख स्वास कुसुम बर महकैं।
चित चुभी चिबुक चतुराई, ससि पूरन बदन सुहाई ॥ ११ ॥
मनु कामलता इह मोरी, नीकी गर पोति निबोरी।
कँठसिरी तिलरी कहियैं, चंपकली हंस सु चहियैं ॥ १२ ॥
मयंगल मोतिन की माला, मनि मंडित झाक झमाला।
चौकी चामीकर चंगी, रतनाली छबि बहु रंगी ॥ १३ ॥
अष्टादस सर अभिरामं, नवसर षटसर किहिं नामं।
हारावलि मंडित हेमं, पहिरी बर कंठहिं पेमं ॥ १४ ॥
उर उरज उभय अधिकाई, श्रीफल उपमा सम भाई ॥
लीलक कंचुकी निहारी, भुजदंड प्रलंब सभारी ॥ १५ ॥
बर करन कनकमय बधं, बिलसत दुति बाजू बंधं।
चूरो ककन सोंं चहियै, गजरा पौंचिय गुन गहियै ॥ १६ ॥
मुद्रिय अँगुरी मन मानी, कंचन नग जरित कहानी।
महँदीमय बेलि सु मंडी, तिन पानि सोभ बहु तंडी ॥ १७ ॥
मच्छोदरि तिवलिय मज्झै, बापी सम नाभि सु बुज्झै।
कटि मेखल मनि कुदन की, तरनिय सी सोभा तिनकी ॥ १८ ॥
चरना रंगित बहु चोल, पहिरन बर पीत पटोलं।
बर समर गेह सुचि बिबं, नीकै गुरु युगल नितबं ॥ १९ ॥
करि कर जंघा, युग कंतं, झझरि पय धुनि झमकंतं।
पाइल क्षुद्राबलि रंगं, आभूषन और उपंगं ॥ २० ॥
रुचि सहज पाइ तल रत्तै, जावक बर सोभ सु जित्तै।
गौरी सी सा गय-गवनी, रभा रति केहरि रवनी ॥ २१ ॥
जसु रूप अधिक इक जीहा, लहियैं क्यों पार सु लीहा।
कवि मान कहैं सुखकारी, नन ता सम को वर नारी ॥ २२ ॥

( कवित्त )

इक दिन आलम अंखि, बचन बिपरीति रज्ज बल।
सुनि राठौर सुजानि, मान मृगराज राजकुल ॥
हमहिं देहु चित हरषि, बहिनि तुम सुनिय रूप बर।
देहुँ तुमहि धर देस, गाँउ हय गय समान गुर ॥

रट्ठौर ताम आधीन रुख, तुरक बचन किन्नौ तहति ।
कलियुग प्रमान कवि मान कहि, कमधज कछवाहा कुमति ॥२३॥

( दोहा )

मानसिंह नृप सोचि मन, तुरक बिचारिस तप्प ।
कन्या तव ब्याहन कही, औरंजेबहि अप्प ॥ २४ ॥

( छंद त्रोटक )

सुनि बत्त सु रूप सुता श्रवनं, बिलखाइ बदन्न भई बिमनं ।
तिहिं सोचहिं अन्न रु पान तजैं, भहराइ परी नन धीर भजैं ॥२५॥
करुना कर तैं इह रीति करी, अब आसुर गेह तिया अमरी ।
गुरु संकट तैं मुाह कान गहैं, कुननंति सखी जन मंझ कहैं ॥२६॥
गिरि सृंग उतंगनि तें गिरौं, कुल कज्ज हलाहल पान करौं ।
जरतें भर पावत कुड जरौं, वरिहौं सुर आसुर हौं न वरौं ॥२७॥
जिन आनन रूप लँगूर जिसौं, पल सर्व भखैं सुर सौं युग सौं ।
जिन नाम मलेछ पिसाच जनौं, सुर ही रिपु हौं नन स्याम मनौं ॥२८॥
मन सोचति ही उपज्यौ सु मतौ, छिति छत्रपती बर हिंदु छतौ ।
श्री राजसि राण खूँमान सदा, अब ओट गहौं तिनकी सु मुदा ॥२९॥
पुहवी नन ता सम छत्रपती, रवि बंस विभूषन भाल रती ।
धर आसुरि मारन हिंदु धनी, सरनै मो रक्खन सोइ धनी ॥३०॥
लहि औसरि सुंदरि पत्र लिखैं, चित्रकोट धनी अबरूँ यु रखैं ।
हरि ज्यौं सु रुकंमनि लाज रखी, अबला यौं राखहु आस मुखी ॥३१॥
गजराज तजै खर कौंन गहैं, सुरबृक्ष छतैं कुन आक चहैं ।
पय पान तजै विष कोन पियैं, लहि पाचरु काचहिं कौन लियैं ॥३२॥
बग हंसनि क्यौं घर बास बसैं, न रहैं फुनि कोकिल कग्गर सैं ।
सस सिंहनि ज्यौं नन देखि सकैं, बिन बुद्धिय आसुर बादि बकैं ॥ ३३ ॥
नरनायक तो सम और नहीं, सरणागत वत्सल तूँज सही ।
प्रभु कै सु लुलि लुलि पाय परौं, कर जोरि इती अरदास करा ॥ ३४ ॥
सजि सेन सु आवहु नाह इतैं, अबला सु छुड़ावहु आसुर तैं ।
सु लई ज्यौं राघव सीत सती, हटकारक रावन राय हती ॥ ३५ ॥
करि भीर प्रभू निज कामिनि की, बलि जाउँ सदा तुम जामिनि की ।
इन कज्जहिं लाइक तूँज इला, कुल नीर चढ़ाउन देव कला ॥ ३६ ॥

लिखि लेख समै द्विज सहि लियौ, कहि भेद सु कग्गद हत्थ दियौ ।
मुख बैन दिढ़ाइरु सीख करी, धर पत्त बहू सु उमंग धरी ॥ ३७ ॥
पहुँच्यौ सु उदयपुर माँझ पही, महाराणहिँ भेटि असीस कही ।
जय हिंदु धनी जगतेस सुतं, श्रीराजसि राण जगत्त जितं ॥ ३८ ॥
गुदराइय लेख कुमारि गिर, अति हर्ष भयौ नरनाह उरं ।
करुनाकरि विप्र समान कियौ, दिल उत्सक उंचित दान दियौ ॥ ३९ ॥
महिमॉनिनि जानि दसारु मिलैं, घर आवत लच्छिय कौन टिलैं ।
इह चित्तहिँ ठानि कैँ बीरु बली, रति पाइ महारस रंगरली ॥ ४० ॥
घन नौवति नद्द निसान घुरै, अवनीस अनेक उछाह करै ।
चढ़ि चचल वाम मिलाप चहैं, कवि नायक यौं कवि मान कहैं ॥ ४१ ॥

( कवित्त )

अबलाकृत अरदास, विप्र मुख व सुनिरु वियक्खन ।
चित्रकोट पति चढ़ै, रूप कुँअरी पति रक्खन ॥
घुरत निसाननि घमस, गुहिर घन ज्यौं गय गज्जत ।
सुभ बदी जन सद्द, बाजि खुरतार सु बज्जत ॥
हय हंस चढ़ैँ चामर ढलत, धवल छत्र सीसहिँ धरिय ।
सोवन जराउ युत सेहरौ, सुंदरि व्याहन संचरिय ॥ ४२ ॥

( दोहा )

दैँन बधाई सोइ द्विज, रूप सुता प्रति रंग ।
आयौ सेना अग्ग तैँ, उद्यमवत अभंग ॥ ४३ ॥
अखिय आइ बधाइ इह, वारी तो बड भाग ।
राण राजसी राज वर, आए धरि अनुराग ॥ ४४ ॥
सुनि सु बधाई नृप सुता, उपज्यौ उर उल्हास ।
कनक रजत पटकूल करि, पूरन किय द्विज आस ॥ ४५ ॥

रूपनगर महाराण की, अधिक बढ़ी सु अवाज ।
मानसिंह नृप हरषि मन, सजैँ व्याह बर साज ॥ ४६ ॥
बंधै तोरन रतनमय, थप्पि रजत युग थंभ ।
कनक कलस मंडित मुकुर, देखत होत अचंभ ॥ ४७ ॥
चाँरिय मंडिय चित चुरस, कनक भंड बहु आँनि ।
मंडप खंभ सु कनकमय, गूडर जरकस तॉनि ॥ ४८ ॥

( छद रसावल )

राण राजेसरं, बीर हिदू बरं।
ऊँच तनु अबरं, सुरति साडंबरं॥ ४९॥
हंस हय सुदर, स्वर्ण साकति धरं।
प्रगट गति पातुरं, आरुहै आतुरं॥ ५०॥
सीस बर सेहरं, जरित हेमं जरं।
खग्ग कटि खडरं, सेत छत्र सिरं॥ ५१॥
चारु दो चामरं, कनक दड कर।
बिंभए दो नर, रूप रातंबर॥ ५२॥
भीर मत्ती पुरं, नैन नारी नरं।
निरखए नरबरं, उल्हस तै उरं॥ ५३॥
बाजि घन घुम्मरं, भूरि चढ़ै भरं।
सेन बहु सिधुर, प्रचुर पायक चरं॥ ५४॥
धोप नौबति घुरं, सोर बंदी सुरं।
धरनि रज धुधरं, ढंकियं दिनयरं॥ ५५॥
सोखि सलिता सरं, थान रिपु थरहरं।
अमग मग्गं परं, पत्त पहु मुरधरं॥ ५६॥
राग रमनी रसं, नाह अद्धी निसं।
पत्त पुर गोयर, तूर त्रबक घुरं॥ ५७॥
पोल सो तें जरैं पार को उच्चरै।
हिसइँ हैवरं, गज्ज घन गैवर॥ ५८॥
सरल सहनाइयं, गायनं गाइयं।
राग खभा इती श्रवन संभा इती॥ ५९॥
सोर सग गट्टयं, भौचपा छुट्टयं।
बिरुद बदी बदै, सरस जै जै सदै॥ ६०॥
रूपनैरं रली, गौरि घन ऊछली।
सेन सिँगारयं, सज्जि पैसारयं॥ ६१॥
बज्जनं बज्जईं, गन घन गज्जईं।
गावहीं गीतयं, बाम रस रीतयं॥ ६२॥
कीन निवछावरी, सूहवं सुदरी।
स्वर्ण सालकरी, मुत्ति थारं भरी॥ ६३॥

उच्छरैं दामयं रूप अभिरामयं।
इदं ज्यौं वर्षयं, बंदि बहु हर्षयं॥ ६४॥
मॉन रट्ठौर कै, द्वार कुल मौर कै।
तोरनं बदियं, अधिक आनंदियं॥ ६५॥
राजसी रान जू, प्रबल खग प्रान जू।
रट्ठवरि व्याहई, सद्धि पतिसाहई॥ ६६॥

( कवित्त )

व्याह बेर बपु प्रवर, रूप पुत्ती सिँगार रचि।
नखसिख रूप निधान, सोभ पाई सरूप सचि॥
सिर सेहरौ सतेज, स्वर्ण मणि जरित कांति कल।
सखि चहुँ ओर समूह, गीत गावंत सु मगल॥
रढ लीन भली तें रट्ठ वरि, परमेसर रखी सु पति।
श्री राज राण जगतेस कौ, पति पायौ सब हिदु पति॥ ६७॥
राजसिह महाराण, सरस कर गृहन समय लहि।
सजि अमोल सृगार, कांति सुरपति समान कहि॥
सोहत सिर सेहरौ, कनक नग लाल जरित सुभ।
कटि सुंदर करवाल, हस हय चढ़ैं थट्ट इभ॥
बहु भूप सेन बिचि बीर बर, हय गय मय गय ताम हुअ।
घन त्रंबक बर नौबति घुरहिं, जोति हलाल अपार हुअ॥ ६८॥

( दोहा )

बहु सेना बिचि बीर बर, अस्व हस आरोह।
सीस छत्र बर सेहरौ, चामर ढलत सु सोह॥ ६९॥

( चद्रायन )

चामर ढलत सु सोह उबारत द्रव्य अति।
बदी बोलत बिरुद चिरं चीतौरपति॥
पिखत प्रजा असंखन बुझहिं अप्प पर।
रँग मंडप रस रंग प्रपत्ते ईस बर॥ ७०॥

( दोहा )

रग मंडप बहु रंग रस, प्रबर दुलीच बिछाय।
रूप सुता रस रंग मैं, सकल सखी समुदाय॥ ७१॥

( चद्रायन )

सकल सखी समुदाय सुहाइग सुंदरिय ।
मंडप मध्य सु आइ अभिनव अच्छरिय ॥
बिप्र पढ़त बहु बेद हवन करि करि हवी ।
सूर चद सुर साखि सज्जन संठवी ॥ ७२ ॥

( दोहा )

सूर चंद सुर साखि सब, बर गॅटजोरा बधि ।
बॅधी मनु हित गंठि दृढ़, दंपति उभय संबंधि ॥ ७३ ॥

( चद्रायन )

दंपति उभय सबंध कंत कर गृहन किय ।
सुरपति सची समान सकल गुन रूप श्रिय ॥
कै रति युत रतिकंत एह उनमानियै ।
निस्चल दुहुँ जन नेह युगं युग जानियै ॥ ७४ ॥

( दोहा )

युग युग नेह सु उभय जन, सुरपति सची समान ।
रूप पुति वर रट्ठवरि, राजसिह महारान ॥ ७५ ॥

( चद्रायन )

राजसिह महारान संपत्तै चौंरि सजि ।
बज्जै बज्जन वृंद गगन प्रति सद्दि गजि ॥
गावति सूहव गीत कित्ति कलकंठ करि ।
सज्जन मिलै समूह कोटि उत्साह करि ॥ ७६ ॥

( दोहा )

सज्जन आइ मिलै सकल, मान कमध्धज गेह ।
चोरी मंडप चूंप चित, नरनायक बहु नेह ॥ ७७ ॥
बरतायै मंगल सकल, लिए सु फेरा लच्छि ।
होंस मनाई हीय की, अच्छि संपतिय अच्छि ॥ ७८ ॥
संतोसे नेगी सकल, दयै घनैं धन दान ।
चौंरी कमधज्जी चढ़ैं, राजसिह महारान ॥ ७९ ॥

( कवित्त )

राजसिंह महारान, प्रिया रट्ठौर सु परनिय।
रूप पुत्ति जनु रंभ, उभय कुल लज्ज सुधरनिय॥
धनि हिंदूपति धीर, प्रबर क्षत्रीपन पालन।
गो ब्राह्मन तिय गनहिँ, टेक गृहि संकट टालन॥
हिँदवान हद्द रक्खन हठी, बल असुरेस बिडार कहँ।
जगतेस रॉण सुत जग जयौ, कलह केलि जयकार कहँ॥ ८०॥

( दोहा )

कलह केलि जहँ तहँ करत, ऐ असुरेस अनिट्ठ।
जनम्यौ एह कलंकि जनु, ढिल्लीपति अति ढिट्ठ॥ ८१॥

( कवित्त )

ढिल्लीपति अति ढिट्ठ, साहि औरंग प्रेत सम।
अति दलबल असुरेस, अवनि सद्धत करि उद्धम॥
देस देस पति दमत, गृहत पर भूमि नगर गढ़।
बृद्धि करत निज बंस, दुट्ठ दीदार मत दृढ़॥
आधीन कियै जिन अवनि पति, कमधज कछवाहा प्रभृति।
श्री राज रॉण जगतेस कै, गिन्यौं साहि अकतूल गति॥ ८२॥

( दोहा )

राज रॉण जगतेस कै, मंडिय आलम मान।
रूपसिंह रट्ठौर धिय, परनी प्रिया प्रधान॥ ८३॥

( कवित्त )

परनि रट्ठवरि प्रिया, घोष नौबत्ति घुरंतह।
कर मुकलावनि करत, होत उच्छाह अनंतह॥
गावत सूहव गीत, नारि बहु मिलि मृगनैँ निय।
हरषित चित्त हसंति, परस्पर करत सु सैँनिय॥
उछ्छरंत मुति कंचन अधिक, धन जाचक जन घर भरिय।
श्री राजसिंह राना सबल, बिस्व सकल जस बिस्तरिय॥ ८४॥

( छंद पद्धरिय )

बित्थुरिय सयल संसार बत्त, ऐ राजसिह राना उमत्त ।
मिझयौ सु जिनहिँ पतिसाह मॉनि, परनी यु रूप पुत्ती प्रधान ॥८५॥
दाइजा ताम रट्ठौर देत, सचि मानसिह राजा सहेत ।
बारुन सु छहौं ऋतु मद बहंत, पिखंत रूप पर दल पुलंत ॥८६॥
मंडै न औरि करि आइ मुख्ख, भूलियहिँ पेखि जिन प्यास भूख ।
सुडाल किधौं अंजन सुमेर, ढाहन सु बक गढ़ करन ढेर ॥८७॥
सुभ दरस जास सेना सिँगार, हरषंत युद्ध मन्नैं न हार ।
ठनकत कनक घंटा ठनक्क, घमकंत चरन घुँघरू घमक्क ॥८८॥
सृंखला लोह लंगर सभार, आनै न चित्त अकुस प्रहार ।
सिंदूर चँवर बर सीस सोह, पटकूल झूल पूठहि प्ररोह ॥८९॥
अैराक अस्व आरब्ब उतंग, चंचल सचाल जिन रूप चंग ।
कांबोज कच्छि हय कासमीर, ततै तुपार जनु वुट्टि तीर ॥९०॥
पढ़ि पानि पंथ अर पवन पंथ, गिनि कनक तोल मोलह सु ग्रंथ ।
बगाल बाजि बर बिबिध बान, खंधारि खेँग खिति खुरासान ॥९१॥
साकति सुवर्ण वर सकल साजि, वनि रवि तुरंग ऊपम सु बाजि ।
धमकंत धरनि जिन पय धमक्क, झिलती सु झूल मुखमल झलक्क॥९२॥
खिजमति सु दार दीनी खवासि, रभा समान तनु रूप रासि ।
दासी सुजान नव रूप देह, जानत मंत पर चित्त जेह ॥९३॥
भूषन सु हेम नग जरित भव्य, दीनै अपार कंचन सु द्रव्य ।
मुक्ताफल गुरु बहु मोल माल, भल भेट करैं कमधज भुआल ॥९४॥
मृदु फास कनक सोलह महंत, जरबाफ बसन दुति जिगमिगंत ।
पटकूल और कहतैं न पार, सुखपाल सेज वारैं सु सार ॥९५॥
दाइजा एह नृप मान दीन, पहिराय सकल भूपति प्रवीन ।
मृगमद कपूर केसरि महक्क, दिसि पूरि सुरभि डंबरू डहक्क ॥९६॥
अर्चेयधि कर्दम सकल अंग, रस रीति राखि रट्ठौर रंक ।
भल भाव भक्ति भोजन सुभष्य, पूरी यु घंति नव नव प्रत्यक्ष ॥९७॥
महाराण दान जनु मेघमंड, उँनयौ कनक धारा अखंड ।
याचकनि चित्त पूरी जगीस अभिनवा इंद मेवार ईस ॥९८॥
चतुरंग चंग सेना संजुत्त, राजेस राण जगतेस पुत्त ।
रट्ठौरि रानि ब्याही सुरंग, आयै यु उदयपुर बर उमंग ॥९९॥

सिंगारि नगर किन्नौं सुरूप, प्रतिद्वार तुंग तोरन अनूप।
दरसत कंति मधि द्यौसकार, हीरा प्रबाल मनि मुत्तिहार ॥१००॥
जरबाफ बसन बहु मुकर जोति,किरनाल किरन तिन इक होति।
महमहति सुरभि बर पुष्पमाल, बहु भौंर भवत सोभा बिसाल ॥१०१॥
बाजार चित्र कीनै विचित्र, पटकूल जरी मुखमल पवित्र।
सिंगारि हट्ट पट्टन सुचंग, अति सोह साज तोरन उमंग ॥१०२॥
नागरिय नारि बहु बरन नेह, सृगार सकल सजि सजि सुगेह।
गावंत धवल मंगल सुगीत, रमनीक कंठ कलकंठ रीति ॥१०३॥
उतमाग पूर्ण कुंभह अनूप, भल सोंन वँदावहिं सँमुख भूप।
प्रभु धरत मध्य सोवन पुनीत, ऐ राजसिह राना अजीत ॥१०४॥
अति मिलिय प्रजा मनु दधि उलट्ट, पिखंत चित्र नर नारि थट्ट।
गोरी अनेक चढ़ि गोख गौख, पेखें नरींद पावंत पोख ॥१०५॥
यों हिदुनाह निय महल आइ, घुरतैं अनेक बाजित्र घाइ।
कुलदेवि मान पूजा सुकीन निति, नित्य सुख बिलसै नवीन ॥१०६॥

( कवित्त )

निति निति सुख्ख नवीन, रॉण बिलसै राजेसर।
लच्छि लाह यौं लेत, लेत ज्यौं लाह लच्छि वर।
देत अस्व बहु दान, सूर ऊगम सोवन सज।
पाटंबर सिरपाव गिरुय, गज्जंत देत गज ॥
मोतीनि माल सोवन महुर, मौज देत महाराण महि।
इन होड़ करैं को नृप अवर, कथन एह कविमान कहि ॥१०७॥

---

# अष्टम विलास

( दोहा )

मेदपाट फुनि मुरधरा, अंतर अचल अपारु ।
तहँ तीरथ सलिता सु तट, रूप चतुर्भुज चारु ॥ १ ॥

देवासुर मानवरु मुनि, आवत जात अनेक ।
बंछित दायक लच्छि बर, बदत तवत बिबेक ॥ २ ॥

बसत एक थल बैर बिनु, मृग मृगपति अहि मोर ।
मिलत देव दानव सु मन, यदुपति महिमा जोर ॥ ३ ॥

ता तीरथ भेटन सु हरि, उपज्यौ हर्ष अपार ।
राजसिंह महाराण तब, सजि दल बल श्रीकार ॥ ४ ॥

बढ़ी अवाज सु सकल बसु, बजत निसाननि बंब ।
सजै सूर सामंत नृपु, आनंदित अविलंब ॥ ५ ॥

( छंद पद्धरी )

अविलंब सज्जि दलबल अभंग, चढ़ि चित्रकोटपति चातुरंग ।
पटकूल बिबिधि उन्नत पताक, नौबति निसॉन बज्जत ऐराक ॥ ६ ॥

सिंधुर कपोल पट मद स्रवंत, निर्झरन जानि गिरवर झरंत ।
गुमगुमत भौंर गन परि सुभीर, गरजंत सजल जनु घन गुहीर ॥ ७ ॥

सत्तग चग धर संलगंत, सिंदूर तेल सीसहिं सुभंत ।
संदुरत चौंर सिर स्रव सु सेत, मह सुंड दंड सोभा समेत ॥ ८ ॥

दुति बिमल युगल दृढ दिग्घ दंत, धरहरत कोट जिन जोर दित ।
ठननंकि नद्द बहु बीर घंट, उनमूरि विटपि नंपत उझट ॥ ९ ॥

नूपुर सु पाइ घुँघरू निनाद, रुनझुनत चलत जनु बदत बाद ।
जंजरित भार संकर जॅजीर, सचलत चाल चचल समीर ॥ १० ॥

लहलहत मरुत युत लंब केतु, बैरख सुढाल ढलकंत सेतु ।
पभनंत धत्त धत पीलवान, तपनीय करांकुस तरित जॉन ॥ ११ ॥

चरखी अग्गरु चहुँघाँ चलंत, पय भरत इक्क बिरुदनि बदंत ।
बनि पिट्ठ डोल नौबति निसान, सुडाल सकल सुरपति समान ॥ १२ ॥

अरबी ऐराक आरब उपन्न, कास्मीर कच्छि कौंकनि सु कन्न ।
कांबोज जात काबिल कलिग, सैंधवि सुबीर सिहलि सुअंग ॥ १३ ॥

पय पंथ पौन पथ के प्रधान, बगाल चाल वर विविधि बान ।
मंजन सुरंग लाखी सु मोर, गंगा तरंग गुलरंग गोर ॥ १४ ॥

हरियाल हरित हीर हरि हंस, किरड़ै कुमैत चंपक सुवस ।
सुक पक्ष चास चंचल सलील, अलि रोझ रंग अँबरस असील ॥ १५ ॥

किलकिले कातिले हय कँधाल, तुरकी रु ताजि गरु रंग साल ।
सजाव बोर मुसकी सतेज, हेखनि सहेख हेखत सहेज ॥ १६ ॥

सिगार सार साकति सुवर्ण, जिगमगति जोति नग अधिक अर्ण ।
गुंथिय सुबेनि खंधहि सुमंत, ततथेइ तॉन नट ज्यौ नचत ॥ १७ ॥

पख्खरिय सजर पख्खर सभार, पहुँचै न पखि पाइनि प्रचार ।
आरुहै तिनहिँ भट नृप अनेक, सामत मत्त साधर्म टेक ॥ १८ ॥

बिरुदैत बीर आजानबाहु, सज सिलह कवच सुंदर सनाहु ।
सग्राम काम जिन अचल सीम, भारथ समत्थ जनु अग भीम ॥ १९ ॥

चौघंट चक्र चौरथ सुचंग, जिन जुत्त धुरा चचल तुरंग ।
चकडोल चारु कचन सु कुभ, संभरिय हेम धन रूप रंभ ॥ २० ॥

उत्तंग चक्र गंत्री अनूप, सोरठिय सेत जोए सरूप ।
घ्रननकि ग्रीव घुंघरनि माल, झणनंकि चरण झझर सु साल ॥ २१ ॥

बिन हक संक गति गंधवाह, क्षुर शृंग जरित सोवन सराह ।
बैठे सुपध वर बहिल बान, पचांग बास सुदर सयान ॥ २२ ॥

पयदल पयोद दल ज्यौं अपार, उन्नत सु अंग जगहिँ जुधार ।
करबाल कुत कोदंड चंड, सिप्पर सु तौन धर रन वितड ॥ २३ ॥

धसमसत धपत धर तोब धार, बेधंत पत्र गोरी प्रहार ।
पति भक्त सक्ति सायुध सु जोध, कल हान थान केहरि सक्रोध ॥ २४ ॥

दल प्रबल मध्य दीपै दिवान, रवि बिब रूप राजेस रान ।
ऐराकि अस्व आरोह जोह, नग हेम जरित साकति सुसोह ॥ २५ ॥

सिरि छत्र सहस दिनकर समान, चामर ढलंत गोखीर वान।
बिरुदैत बिरुद बोलत सु बोल, जय हिंदु नाह सासन अडोल ॥ २६ ॥

केदारराय कट्टन कलंक, पापिन प्रयाग हर पाप पंक।
महुवानराय गंगा समान, असुरानराय उत्थपन थान ॥ २७ ॥

उनमत्तराय अंकुस प्रहार, सामंतराय बर सिर सिंगार।
असमत्थराय उद्धरन धीर, बंकाधिराय बंधन सु वीर ॥ २८ ॥

दातारराय जलधर सु दान, तप तेजराय भलहलत भान।
उत्तगराय सिरि छत्र एक, इहि भंति बदत बंदी अनेक ॥ २९ ॥

खुरतार मार धरहरिय क्षोनि, झलझलिय जलधि जग्गीय योनि।
खल गृहनि परिय खलभल सँपूर, उड़ि रेनु गैनु अरबरिय सूर ॥ ३० ॥

कीजंत राह मह सैल कट्टि, छितिरुह सु छीन बन सघन खुट्टि।
थल बहत नीर थल नीर ठाह, उरझै कुरंग केहरि बराह ॥ ३१ ॥

आवंत पेसकस प्रति दिसान, बहु नाल बध नृप भरत आन।
पर नृपति कितै बंधन परंत, धन रासि जास कोसहिं धरंत ॥ ३२ ॥

हय हेख हेख गजराज गाज, करभनि कराह नर वर समाज।
कह कह बिसाल कलख सु सोर, बंबरिय बहरि दिसि विदिसि ओर ॥३३॥

डगमगति दुर्ग खरहरति खंड, बन गहन दुरत दुज्जन वितंड।
राजेस रान सु पयान साल, थरहरति दिल्लि जनु मूँग थाल ॥ ३४ ॥

( कवित्त )

थरहरि आसुर थान, खान सुलतान ससकिय।
भू मियानि भामिनी, हीय हहरति हरिलंकिय ॥
दुरति सु फिरति दरीनि, बाल निज रुदत बिमुक्कति।
हार डोर सुह मेल, तुटत भूषन बन तक्कति ॥

पर भूमि नगर पुर उजरि प्रज, दिसि दिसि बढ़िय सु दंद अति।
बिन बुद्धि बिकल अरि कुल सकल, चढ़त निसुनि चित्रकोट पति ॥ ३५ ॥

सिंधुर अस्व सिंगारि, लच्छि नग हेम लेइ लख।
कन्या वर करवाल, माल मुगतफल सनमुख ॥
आवत भेंट अनेक, अनम लुलि लुलि पय लग्गत।
गति मति तजत गइंद, जंग सु कठीरव जग्गत ॥

भय छॉहगीर बंकै सुभर, चलत चंड चित चं र गहि ।
राजेस राण सु पयान सुनि, मिलत अमिल रक्खन सु महि ॥३६॥

गहिल गात गुजरात, सीत चढ़ि सोरठ संकत ।
मालव जन मुख मुरझि, खान धर होत सु खंडित ॥
पूरब जनपद प्रचलि, बढ़िय बगाल उदंगल ।
कासमीर सु कलिग, कूह फुट्टी कुर-जगल ॥
पजाब पच पथ बिचलि प्रज, गोर सिधु धर गिरत गढ़ ।
राजेस राण सु पयान सुनि, दिग्गजहू न रहतं दृढ़ ॥ ३७॥

( दोहा )

कहि पयान महारान कौ, को बरनै कवि इंद ।
कुम्म पिट्ठि तहँ कसमसत, फन संकुरति फुनिंद ॥ ३८ ॥
गज्जतु घोप गजादि रव, तुरगति तरल तरग ।
दिसि पूरित महाराण दल, सागर ज्यौं महि सग ॥ ३९ ॥
इहि परि घन आडंबरहिं, कूच मुकाम करंत ।
पत्तै तीरथ पास पहु, हृदय सु हरप धरत ॥ ४० ॥
कनक कुंभ धज दड युत, सोभति सिपर उतग ।
मडप बहु मतवारनैं, सहसक खभ सुचग ॥ ४१ ॥
देवालय देखंत दृग, ठरै सुधा जन साज ।
मुक्ताफल अक्षत समुख, सु बधाए बृजराज ॥ ४२ ॥

( कवित्त )

सु बधाए बृजराज, दृग सु देवालय देखत ।
कनक रजत कर कुसुम, अमल मुक्ताफल अक्षत ॥
कर अंजलि कर कमल, विनमि किन्नौ सिर सावृत ।
भगति भाव भर हृदय, जयतु जदुपति मुख जपत ॥
डेरा उतंग दिय दिसि विदिसि, राजद्वार हय गय हसम ।
बाजार चौक त्रिक वस्तु बहु, सोह सकल श्री नगर सम ॥ ४३ ॥

प्रभु पद पूजन प्रथम, स्नान किन्नैं सु अंग सुचि ।
बिमल बसन पहिरीय, विचित्र रवि सरिस रूप रुचि ॥

कस्तूरीरु केसरि, कपूर हिंगलु मलयागिरि।
घनयक्ष कर्दम घोल, भार कुंदन कचोल भरि॥
एक सौ आठ वर रूप कै, भरै कुंभ गगादि जल।
कुमकुमा कुसुम केसरि मलय, मधि कपूर मृगमद सकल॥ ४४॥

दधि मधु घृत गोखीर, खंड तंदुल पंचामृत।
वर मंडक पकवान, विविध तीवन छतीस कृत॥
अमृत फल सरदा अनार, सहकार सदाफल।
केला कमरख कलित, सेव राइनि सीताफल॥
श्रीफल बिदाम न्यौंजा सरस, पिडखजूरि चिरौंजि युत।
अखरोट दाख पिसिता प्रमुख, को मेवा कहि वरनवत॥ ४५॥

अगररु तगरु अनाइ, प्रचुर पुंगीनि गज किय।
तज पत्रज रु तमाल, जायफल लौंग एलचिय॥
नागवेलि दल सदल, चारु चोवा अबीर अति।
अतर जवादि गुलाल, कुसुम चौसर अनेक भति॥
वादित्र गीत नाटिक विविध, आरति मगल दीप दुति।
धज छत्र चोर आहूत विधि, सकल सज्ज किय हिदुपति॥ ४६॥

श्रीपति गृह सिगार, खभ जरवाफ पटंवर।
बंधै व चंद्रोपक, बिचित्र मुक्ता मनि सुदर॥
बंधि द्वार तोरन, सुथार पटकूल मुकुर मय।
विविध कुसुम मडप, बनाय रचि तहँ रंभालय॥
तिन मध्य सिहासन कनक कौ, कमलापति बैठन सु किय।
स्वस्तिक सँवारि पँचधान कै, दीप धूप फलफूल श्रिय॥ ४७॥

( दोहा )

दीप धूप फल फूल श्रिय, परसति सुरति समीर।
गीत नृत्य वादित्र धुनि, गरजत गगन गँभीर॥ ४८॥

इत्यादिक अविलंब तैं, मंगल सकल मिलाय।
हरषै हिदूपति सु हिय, पूजन श्रीपति पाइ॥ ४९॥

सकल सेन सामत युत, अस्व हंस आरोह।
घन निसान नौबति घुरत, चामर ढलत सु सोह॥ ५०॥

बोलत बहु कविवर बिरुद, हिदूपति हरषंत।
प्रति दिसि दुब्बल दीन प्रति, बरषा धन बरषत ॥ ५१ ॥

अनुक्रमि हरि गृह आइकैं, देखि प्रभू दीदार।
रोमांचित चित अग रुचि, जपत जय जयकार ॥ ५२ ॥

( कवित्त )

जय जदुपति जगनाथ, जगतरक्षक जगजीवन।
जग हितकर जगजनक, निखिल जग दैत्य निकंदन ॥
केसव श्रीपति कृष्ण, मदनमोहन मधुसूदन।
माधव महित मुरारि, मान हरिबस सु मडन ॥
गिरिधर मुकुंद गोबिद गनि, गोवर्द्धनधर गरुरध्वज।
गोपाल गदाधर संखधर, चक्रपानि चौबाहु ब्रज ॥ ५३ ॥

बासुदेव बिधु बिष्णु, बेप बावन बलि बंधन।
बीठल कुंजबिहारि, सु ब्रज बृदावन भूपन ॥
बंसीधर बिख्यात, बिस्व रूपक बिस्वंभर।
बनमाली बैकुंठ, नाथ बसुपाल बेद बर ॥
बाराह बृपा कपि बिस्व बल, बिहित त्रिविक्रम बिमल मति।
बसुदेव नंद बारिद बरन, बारन बर बारुण बिपति ॥ ५४ ॥

पुरुषोत्तम सु पुरान, पुरुप पारग परमेसर।
पद्मनाभ पूरंन, प्रताप पावन पीतावर ॥
पुडरीक लोचन, प्रमान पावक मुख पीवन।
श्रीबछ लंछन सौरि, स्याम सुंदर रू स्याम घन ॥
अहिसेन अधोक्षज अच्युत अज, अघ बक बच्छ अरिष्ट अरि।
मह उदधि मथनरु अनत मति, हत कैटभ रिपिकेस हरि ॥५५॥

कमल नयन कंसारि, केसिभंजन कमलापति।
कुंजर सानिधिकार, दुष्ट दल मलन दलन दिति ॥
सारंगपानि सभाग, नाग नत्थन नारायन।
सिधु सयन कर सुखद, पुन्य तीरथ पारायन ॥
दामोदर द्वारावति धनी, यज्ञ मर्त्य संकलित यस।
जय जय सु जनार्दन जगत गुरु, राधाबल्लभ रास रस ॥ ५६ ॥

जयतु यसोमति नंद, नंदनंदन नरकांतक
गोपी प्रिय दधि ग्रहन, कालयवनहिं उपसांतक ॥
मधु मुर मर्दन दुअन, हमसि लघुपन माखन हर।
चकचूरन चाणूर, सबल सिसुपाल क्षयंकर ॥
देवकीनंद रवि कोटि दुति, जरासिधु सम जग जय।
दुर्योधन करन दुसासनह, क्षिति अनेक खल कीन खय ॥ ५७ ॥

करिकैं ब्रज पर कोप, मुसुलधारनि घन मंडिय।
बद्दल वसुमति व्योम, एक करि अधिक उमंडिय ॥
उदक चढ़त आकास, गोप गोपी सब गइयनि।
गोवर्द्धन गिरि गह्यौ, भीर पत्ती निज भइयनि ॥
बैराट रूप रचि विष्णु तब, कर अंगुरि पर धरि अचल।
बरसंत सत्त अहनिसि अवधि, सो संकट टाख्यौ सकल ॥ ५८ ॥

ध्रुव कौ ध्रुव करि धख्यौ, पैज प्रहलाद सँपूरिय।
द्रूपदसुता दुकूल, वृद्धि करि कीचक चूरिय ॥
अंबरीस उद्धख्यौ, सधन किन्नौं मु सुदामा।
दृष्टि त्रिलोचन दीन, रखि पन रुखमनि रामा ॥
भय भारथ पारथ सारथिय, रखि लयै टिट्टिभिय सुत।
उद्धरिय अहल्या आप हरि, गज रख्यौ गाहनि गृहत ॥ ५९ ॥

अज्ज सफल अवतार, अज्ज अमृत घन बुट्ठौ।
अज्ज भयौ आनंद, अज्ज परमेसर तुट्ठौ ॥
अज्ज अमर तरु फल्यौ, अज्ज सुरमनि संपत्तौ।
फरी मनोरथ माल, अज्ज अँग अँग रंग रत्तौ ॥
सुरधेनु अद्य मिलि सुर सुघट, राज रिद्धि पत्तै सुरस।
प्रगटै निधान मह सुक्ख कै, देखत ही यदुपति दरस ॥ ६० ॥

( दोहा )

इहिं परि करि हरि जस अधिक, प्रनुमि प्रभू कै पाइ।
अब अनंत अर्चत सुमति, ललित सहित लय लाइ ॥ ६१ ॥
सिहासन हरि सनमुखहिं, राजत हिद्दू राय।
बैठे बड़ बड़ भूप तहँ, इंद सभा मनु आइ ॥ ६२ ॥

दीपति अति दुति दीपकनि, घृत घनसार समेत।
घसि मृगमद केसरि मलय, द्वारनि करतल देत ॥ ६३ ॥

गावत बहु गंधर्व गन, बहु बादित्र बजंत।
सजि सिँगार बहु सुंदरी, नव नव नृत्य नचंत ॥ ६४ ॥

विप्र वेद धुनि उच्चरत, हवि मेवा मधु होम।
जव तिल वृहि पटकूल युत, विलसि ज्वाल बिन धोम ॥ ६५ ॥

कलस रजत के उदक भृत, अष्टोत्तर सत आनि।
पूजक पावन द्विज करत, स्नान सु सारँग पानि ॥ ६६ ॥

( छंद पद्धरिय )

करतै सु स्नान श्रीकंत काय, बहु गीत नृत्य वादित्र वाइ।
ढमकै सु ताम गुरु जगि ढोल, निहसै निसान करिकै निमोल ॥ ६७ ॥

मधु मेघनाद बज्जै मृदग, वीणा सु वंस डफ चंग संग।
भरहरिय भेरि भरि भूरि नाद, सुनियै न स्रवन तिन सुनत साद ॥ ६८ ॥

सु नफेरि सख ऊँकार सार, सहनाइ सरल सुर सौख्यकार।
घंटाल ताल कंसाल तूर, झल्लरि झनंकि सुर सोभ मूर ॥ ६९ ॥

सारगि पुगि सुनियै रसाल, द्रम द्रमकि द्रहकि दुरवरि दुझाल।
रुण झुणकि जंत्र तिन मधुर तति, बज्जत पिनाक रीझत सुमंति ॥ ७० ॥

घन भंति भंति बादित्र घोष, प्रति साद गैंन गज्जत सरोख।
खग मृगरु धेनु सुनि नाद सोइ, हत बुद्धि रहै जनु चित्र सोइ ॥ ७१ ॥

बनिता विचित्र बहु वाल बृद्धि, तजि लाज काज पिख्खन विलुद्धि।
रस सरस रीति रचि रंग रोलि, यदुनाथ सीस जल कलस ढोलि ॥ ७२ ॥

सुकुमार सुरभित तुसित सुचग, सुचि वास संग अँगोछि अंग।
कलधौत धौत पट विमल कंति, सिर पाग स्वर्ण मनि गन सुभंति ॥ ७३ ॥

जामा जरीनि कटि पट सजोति, किरनाल किरनि तिन इक्क होति।
अद्भुत उतरा संग पीतवान, पचांग वास पहिरै प्रधान ॥ ७४ ॥

नग लाल स्वर्ण अवतंस सीस, कुंडल जराउ युग श्रव जगीस।
कमनीय कनक नग कठ माल, बर मुति माल मौक्तिक बिसाल ॥ ७५ ॥

उरबसी हेम मानिक अनूप, पन्ना प्रवाल पुखराज जूप।
वहिरखा बाहु युग बाजुबध, सुश्री करत्त सोवन सबंध ॥ ७६ ॥

बरबीर बलय बेढिम सुवर्ण, जिगमिगति ज्योति नग अधिक अर्ण।
मुद्रिका पानि पल्लव प्रधान, नवरंग रत्न नव ग्रह समान ॥ ७७ ॥

मुरली प्रवाल कर अधर मध्य, सु प्रत्यक्ष जानि हरि राग सध्य।
मेखला स्वर्ण कटि रत्नसार, पदकरी पाइ वहु धन प्रकार ॥७८॥

इहि भंति अलंकरि सकल अंग, सजि रूव छत्र सिरवर सुचंग।
कस्तूरि मलय केसरि कपूर, कुंदन कचोल भरि भरि सँपूर ॥७९॥

भल चरन जानु कर अस भाल, उर उदर कट भुज रुवन साल।
हरि अरचि अतर चोवा जवादि, अरगजा गधि सु अबीर आदि ॥८०॥

चपक गुलाव जूही चमेलि, सेवंति सुरभि रुचि रायवेलि।
केवरा करणि केतकी कुद, मालती माल मचकुंद वृंद ॥८१॥

सतपत्र दमन मुग्गर सुवास, गुमगुमत भौर गन गंध आस।
डहडहति स्रवति रस पुप्फ दाम, ठहराय ठवत हरि कंठ ठाम ॥८२॥

लोवान अगर चंदन अबीर, महमहिय धूप धोमहिँ समीर।
सुरलोक सुरभि संपत्त सोइ, सुरनाथ सकल सुर हरप होइ ॥८३॥

वर कनक थाल सु विसाल माहिँ, सँजोइ दीप सह सक सप्राहि।
जिगमिगति योति तम छोति हारि, यौं सोइ सँमुख आरति उतारि ॥८४॥

( कवित्त )

आरति दीप उतारि, जपत जयकार नृपति जन।
अव सुभोग हरि जोग, विप्र ढोवंत वियक्खन ॥
कंचन थाल कचोल, कनक भृंगार गंग जल।
मेवा वहु मिष्ठान, तप्त सुरही घृत तंदुल ॥
पूपिका सघृत तीवन प्रचुर, सक्कर अमृत दधि सहित।
सु अघाइ कीन मुख हत्थ सुचि, तदनुसार तंबोल घृत ॥ ८५ ॥

सकल सूर सामंत, अंग चरचै यपि कर्दम।
घसि केसरि घनसार, मलय मृगमद सौंधे सम ॥
अतर जवादि अबीर, चारु चोवा फुलेल वर।
कुसुम माल तिन कंठ, सुरभि पसरत साडंवर ॥

अंबर सुरंग तरुवर सधर, उडत सु लाल गुलाल अति।
बढ़ि रंग बिलास प्रहास मनु, संध्या राग समान थिति ॥ ८६ ॥

( दोहा )

बंटिय मोहन भोग वर, मेवा घन मिष्ठान।
चरनोदक तुलसी सु दल, सकल लेत सनमान ॥ ८७ ॥

स्वर्ण कुंभ भरि स्वर्ण धन, रजत कुंभ भरि रूप।
करि कृष्णार्पण हरि सु कजि, भरि भंडार सु भूप ॥ ८८ ॥

मौक्तिक स्वस्तिक लाल मधि, लीलक पट अभिराम।
घंट कनक धज दंड सौं, धजबधी हरिधाम ॥ ८९ ॥

बैठे सायुध सुत सहित, रूप तुला महारान।
जलधर ज्यौं जग याचकनि, देत सु वंछित दान ॥ ९० ॥

इहिं पर सेव अनंत की, प्रभु करि विविध प्रकार।
हौस मनाई हीय की, सफल करयौ अवतार ॥ ९१ ॥

निज डेरा आए नृपति, सकल सेन घन सग।
दिसि दिसि प्रति महाराण दल, मनौ महोदधि गंग ॥ ९२ ॥

भल भल भोजन भगति भल, पंचामृत रस पोष।
पोषै निज प्रति भट प्रभृति, सुनत होत संतोष ॥ ९३ ॥

( कवित्त )

घेवर मुत्तियचूर, खंड चनका रु पतासा।
गिदोरा दहिवरा, दोवटा खाजा खासा ॥
पैरा खुरमा प्रगट, खेलना गुंझा खसखस।
कलाकंद कंसार, सरस सीरै सुनिये रस ॥
गुलगुला सकरपारा सबल, देखि दमी दादर भसत।
इद्रसा पान ओला प्रमुख, पुरुप नाउँ पंडित पढ़त ॥ ९४ ॥

सु जलेबी हेसमी, अकबरी और अमृती।
पुरी तिनंगिनी सोंठि, मठी साबुनी निखूती ॥
फेंनी फुनि रेवरी, स्वाद घन खंड सँठेली।
मरकी बरफी पील, सार घनसार सँभेली ॥

कलियान साहि कवि मान कहि, सक्कर चौकी क्षीर युत ।
मिष्टान विविध पोषै सुभट, जेंवत जो जिहि चित रुचत ॥ ९५ ॥

( दोहा )

सत्त अहोनिसि एक सज, प्रतिदिन चढ़त प्रमोद ।
सेवा चढ़ती सॉइ की, वरतै सघन बिनोद ॥ ९६ ॥

करि सुजात हरि भगति करि, करि निज बछित काज ।
उदयापुर को ऊमहै, राजराण ध्रुव राज ॥ ९७ ॥

घुरि निसानि सु विहान घन, बनि पताक गन तुग ।
सजि सिधुर मदझर सबर, ताते तरल तुरग ॥ ९८ ॥

सजै सकल सामंत नृप, दिनकर दुति दीपंत ।
तिन अग्गै तम तुरक दल, प्रति दिसि दूरि पुलंत ॥ ९९ ॥

सेझवाल सुखपाल रथ, बेसरि करभ अपार ।
सुधन सलीता तंबु कसि, भरै बिबिधि बहु भार ॥ १०० ॥

कनक तोल ऐराकि हय, चढ़ै राण चतुरंग ।
रज रंजित धरि गगन रवि, उरझत दलहि कुरंग ॥ १०१ ॥

प्रान पौन प्रेरित प्रबल, गाज गुहिर गति लोल ।
प्रति दिसि पूरित पेखियहिँ, दल ज्यों जलधि कलोल ॥ १०२ ॥

ससकि सेस कूरमि कसकि, मसकि महीधर मेर ।
झलझलि जलनिधि जल झलकि, कंपिय वरुन कुवेर ॥ १०३ ॥

सुखही सुख सौं सचरत, लहु लहु करत मुकाम ।
पिक्खत पुहवि पहार पथ, सजि सजि सहल सकाम ॥ १०४ ॥

अदभुत थानिक पिक्खि इक, सलिता सलिल समेत ।
निकरी आवा फारि नग, दिसि दिसि सोभा देत ॥ १०५ ॥

थपि मुकाम तिन थान कहि, सहल चढ़ै सु सनेह ।
केहरि क्रोड़ कुरंग कपि, गिरिवर पसु अनिगेह ॥ १०६ ॥

नग विचि जह निकरी नदी, देखत तहँ दीवान ।
नीम मात्र तिम नीर मधि, सरवर कौं सहिनान ॥ १०७ ॥

प्रोहित अरु प्रति भट प्रमुख, पूछै पुरुप पुरान।
अपरिपूर्ण इन उदक मैं, बध्यौ किन बंधान ॥ १०८ ॥
कहि प्रोहित तब जारि कर, कैलपुरा प्रभु काज।
गुरु सलिता ए गोमती, सलितनि मैं सिरताज ॥ १०९ ॥
अमर राण इहिं आइकै, किन्नों हौ कमटान।
परि सरिता पय पूरतैं, बध्यौ नहीं बधान ॥ ११० ॥
विधि किनहीं जौ ए बँधै, तौ सर सायर तोल।
होइ सही कैं हिदुपति, अवनि सुनाम अडोल ॥ १११ ॥
सुनि ऐसी मह प्रभु स्रवन, करी हाम सर काज।
अनुक्रमि आए उदयपुर, सब दल बहल साज ॥ ११२ ॥
संवत सतरासै सु परि, सवच्छर दस सात।
उतखौ मास असाढ़ कौ, बिन घन वज्जत वात ॥ ११३ ॥
स्रावन किपिन ह्वं स्रयौ, भाद्रव परि दुर्भख्य।
मेघ बिना नव खंड महि, प्रज चल चलिय प्रत्यख्य ॥ ११४ ॥
विकल भयै नर अन्न बिनु, भूखहिं अनख भखत।
कन तजत निज कामिनी, कामिनि तजत सु कंत ॥ ११५ ॥
मात पिता हूँ निठुर मन, बेचत बालक बाल।
ररवरि रंक करक परि, दिसि दिसि रौर दुकाल ॥ ११६ ॥
पसु पंखी पाए प्रलय, प्रजा प्रलय पावंत।
कोपिय काल कराल कलि, धीर न कोइ धरंत ॥ ११७ ॥

( कवित्त )

पश्चिम पवन प्रचड, वजत अहनिसि सु बंध बिनु।
अथिर उतारू आभ, प्रात प्रहरेक बहत पुनि ॥
क्रूर अधिक करि किरन, तपत मध्यानहिं तापन।
प्रचलत पश्चिम पहुर, अनिल सीतल असुहावन ॥
निसि तार नक्षत्र निर्म्मल निखरि, बहल बिद्युत गाज बिन।
भयभीत चिह्न दुरभक्ष के, देखि सकल जग भौ दुमन ॥११८॥

( छंद हनुफाल )

भयभीत परि दुरभक्ष, प्रज बिचलि चलिय प्रत्यक्ष ।
प्रगट्यौ सु प्रलय प्रचंड, खरहरिय क्षिति नव खंड ॥ ११६ ॥

नद नदिय सर सुखि नीर, धनवंत हूँ तजि धीर ।
तुलि अन्न कंचन तोल, महआघ मिलत न मोल ॥ १२० ॥

उत्तमहु तजि आचार, आदरिय एकाकार ।
सुचि साँच सत सतोष, दुरि गए अन्नहिं दोप ॥ १२१ ॥

बल बुद्धि बिनय बिबेक, कुल जाति पाँति सु टेक ।
परहरिय निय परिवार, लागंत अन्नहिं लार ॥ १२२ ॥

सगपन सयान सु गेह, नर नारि हूँ तजि नेह ।
बिन अन्न जग बिललंत, भूखेति अभख भखत ॥ १२३ ॥

उलटे बराक अनंत, चहुँ बरन दीन चवत ।
गृह गृहनि ग्रास उच्छिष्ट, अति अरस बिरस अनिष्ट ॥ १२४ ॥

मागँत कहि माँ बाप, कुननंत करत कलाप ।
दारिद्र तनु दुरवेस, कस्चित रु बढ़ि नख केस ॥ १२५ ॥

लिल्हरित पट लटकत, जन जन सु जिन्ह हटकत ।
कर मध्य खप्पर खंड, बपु हीन क्षीन बितंड ॥ १२६ ॥

भिननत मक्खी भूरि, चित चलित चिता पूरि ।
जहँ जुरत कछु तहँ खात, तजि वर्ग मात रु तात ॥ १२७ ॥

फल फूल मूल रु पात, तरु छालि हू न रहात ।
ररवरत लोक बराक, खोजत भाजी साक ॥ १२८ ॥

मन निठुर करि पिय मात, लहुबाल तजि तजि जात ।
केई सु विक्रय करंत, निज बाल तजत रुदंत ॥ १२९ ॥

परि पुहवि रंक करंक, को गिनति कहि करि अंक ।
दिसि बिदिसि बढ़ि दुर्व्वास, पल चरनि पूरिय आस ॥ १३० ॥

पसु पंखि प्रलय करंत, चुग चार हूँ न लहंत ।
मानसहिं मानस लग्गि, जहँ तहँ सु रोरति जग्गि ॥ १३१ ॥

इल नगर पुर उद्धंस, नर जात बहु निर्बंस ।
मुरझंत जल बिनु मीन, त्यौं बिस्व अन्न बिहीन ॥ १३२ ॥

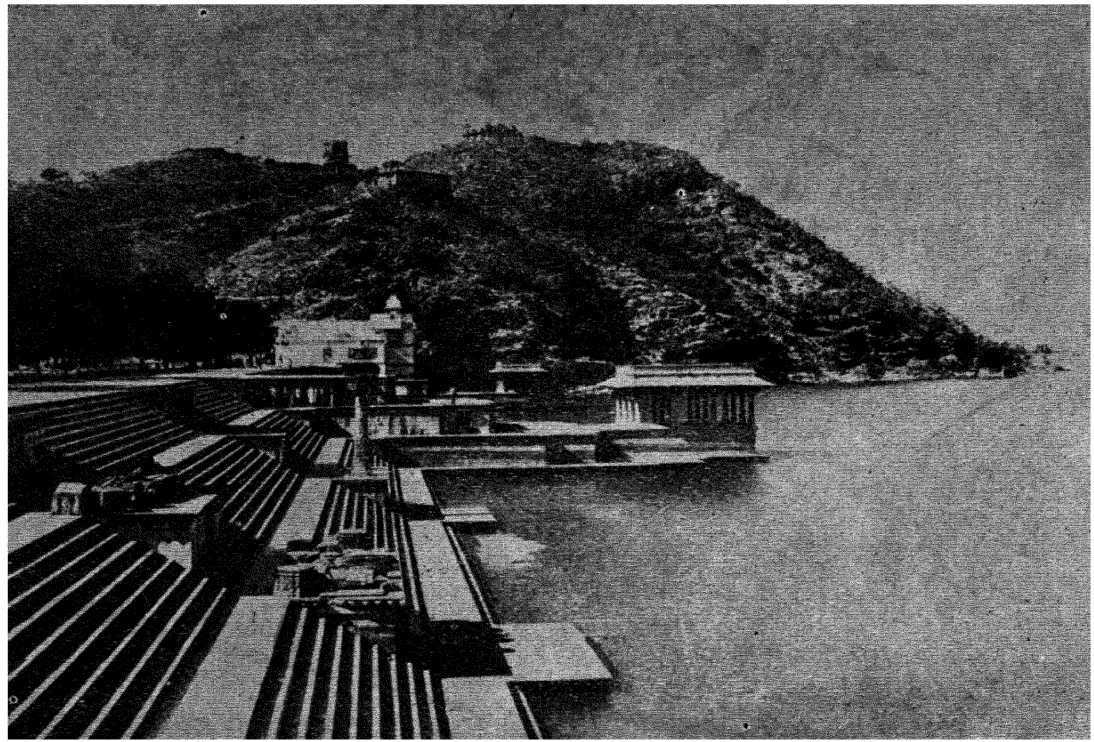

राजसमुद्र का एक दृश्य

[ पृष्ठ ६५–१०१ ]

( कवित्त )

बसुमति अन्न बिहीन, दीन दुखित तनु दुब्बल।
ससत निसत सरफरत, कितकु तरफरत ग्रहित गल ॥
कितकु करुन कुननंत, मक्खि भिननंत दसन मुख।
कितकु धीर न धरंत, हीय हहरंत दुसह दुख ॥
टलटलिय बिटल घन टलबलत, गिरत परत अतक हरत।
हट श्रेणि चौक त्रिक उमग मग, रंक करंकति ररबरत ॥ १३३ ॥

( दोहा )

अनाधार असरन असत, आसा भंग अतीव।
प्रलय होत प्रज पंखि पसु, जलचर थलचर जीव ॥ १३४ ॥

जानि महा दुर्भक्ष जब, दयावंत दीवान।
प्रतिपालन जग की प्रजा, मंत मतै मतिमान ॥ १३५ ॥

सिखरी बिचि गोमति सलिल, बंधि महा बधान।
करै कोटि धन खरच करि, सरवर उदधि समान ॥ १३६ ॥

प्रजा सकल इहिं बिधि पलैं, भगै भूप दुर्भक्ष।
अचल सुजस प्रगटे अवनि, सुक्रत मेर सदृक्ष ॥ १३७ ॥

ठीक एह ठहराइकै, सज्जि सैंन चतुरंग।
आए गोमति सलिल तहँ, अद्रि अनेक उतंग ॥ १३८ ॥

लेइ सु महुरत सुभ लगन, परठि नीम पायाल।
लगै नारि नर केइ लख, दूर भग्यौ सु दुकाल ॥ १३९ ॥

( कवित्त )

संबत्सर दह सत्त, सत्त दह सवत सोहग।
मण्डि महा कमठान, जानि दुरभष्ष सकल जग ॥
पोस अष्टमी प्रथम, बार मंगल बरदाइय।
नायक हस्त नक्षत्र, सिद्धि बर योग सुहाइय ॥
तिहिं दिवस सकल मंगल सहित, परठि नीम पायाल मधि।
राजेस राण रचि राजसर, नितु नितु बहु बिलसंत निधि ॥१४०॥

सहस एक गजधर सु, मंत कर कनक रूप गज।
एक एक गजधर सु, अग्ग सत सलपकार सज॥
विवुध विस्वकर्म्मा, समान सु सयान सलप स्रुत।
वेलि वृक्ष वहु विधि, विचित्र सुर असुर अलंकृत॥
लगि वेलदार नर उभय लख, क्षिण क्षितिधर झारंत खनि।
कंधै कुदाल दंताल कसि, तै नर उडति लरक गनि॥१४१॥

चउलख प्रवल मजूर, लगै कमठान नारि नर।
सकट अद्ध लख सकल, वृपभ लख लक्ख महिस वर॥
लक्खक करभ सु लेखि, और प्रवहन अपरंपर।
दिन प्रति सहस दिनार, खरच लग्गत साडंवर॥
प्रति दिसहिं कोस पंचदस परधि, हार डोर लगि गिरि गहन।
राजेस राण रचि राजसर, धर पद्धर किय सघन बन॥१४२॥

सलित पाट सुविसाल, अधिक डोरी अष्टादस।
मध्य पुलिन मरुथल, समान चलि सकत न मानस॥
वहुत वाह पटऋतु, प्रवाह वल सीर सजल जल।
सकति थान सोभा, निधान तिन तट सीहरि तल॥
थिर थप्पि नीम तिन थह प्रथम, पट्ट कट्टि पत्थर प्रवल।
घन रहट चरम डिंकुरी करि, सोपि रसातल जल सकल॥१४३॥

उग्गम दिसि तिन अग्ग, अचल इक कोस सहज तट।
तिन अग्गै फुनि नीम, दीन दुअ कोस दिग्घ थट॥
गज पण तीस गुहीर, साल सु विसाल साढ़ सत।
गज समान ग्रावा, गरिष्ट मनु मंडि महीभृत॥
सीसक सु पंक चूना सघन, चेजागर लक्खक चुनत।
ढोवंत सहस नर मिलि सलप, सो सुवन कहत न वनत॥१४४॥

खनत केइ नर खानि, पल्ल कट्टंत पहारनि।
करत अंस चौरंस, सुघन जंबू रस भारनि॥
गढ़त केइ गुरु ग्राव, सद्द सुनीयै न टंकि सुर।
सकटनि केइ धारंत, सवर मिलि मिलि सहसक नर॥
आनत उमग्गनि मग्ग परि, ज्यौं पटगर ताना तनत।
राजेस राण रचि राजसर, सो सुवत्त कहत न बनत॥१४५॥

सत बरस संबंध, नीम सोभत लगै नित।
लगी दिनार सु लक्ख, अधिक जल रासि उलिँचत ॥
बंध्यौ तद्नु बँधान, हिदुपति कीन महा हठ।
मह धन भयै मजूर, भग्यौ दुरभष्य भैर भठ ॥
मंगल गावंत मजूर तिय, लुव भुंव भूषन लसति।
आसीस बदंति अनेक तिय, चिरजीवहु चीतौरपति ॥१४६॥

इंद्रसभा अनुहारि, सभा सरवर उपकंठहि।
मडि आप महाराण, अग उलसत उतकंठहि ॥
सब नर तियनि सुनाइ, हुकम श्रीमुखहिँ हँकारत।
करहु सुधारि सु काम नवल कमठान निहारत ॥
चहुँ आर दरोगा चोकसिय, केइ सावधानी करत।
अवलधि पौनि छत्रीस प्रज, हार झोर जग मन हरत ॥१४७॥

सेढी बुरज सवार, चुनत केई चेजागर।
सिगी काम सपल्ल, पल्ल ढोवत केइ नर ॥
कितै महिप भरि गारि, पालि पूरत पब्बत सम।
गाहत कै गजराज, काज दृढ़ बंध क्रमं क्रम ॥
केई सु खोर चूना वहत, खनत केइ सर मध्य खिति।
राजेस राण रचि राजसर, इहि परि किय आरंभ अति ॥ १४८।

बरस सत्त बरसंत, प्रवल जलधर रितु पावस।
मिलि बहु सलित मिलाप, जलधि ज्यौं जानि महा जस ॥
सलित भखौ सु बिसाल, पंचदस कोस प्रमानह।
गंगाजल गोखीर, सुधा सेलरी समानह ॥
जंगम जिहाज सु गढ़ाइ जब, जल क्रीड़ा क्रीड़त नृप।
सीतल तरंग मारुत सहित, हरत ग्रीष्म ऋतु दाघ तप ॥ १४९ ॥

( छंद हसचार )

पढ़ मंतह नीम पयाल पइट्ठिय सु बिसालह गज साढ सयं।
गजधर इग सहस सल्प बिधि ग्यायक बेलदार नर लाख बियं ॥
ऊँडह सु अलेख लगै आरंभहिँ हरपित चित्तरु मुख हँसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद रच्यौ सुरसैं ॥ १५० ॥

गज्जंतै जल गंभीर गोमती नीर निरंतर सबल नदी।
बँधी गुरु हट करि उभय अद्रि बिचि वृद्धि पालि अति तुंग बदी॥
बहु कोस प्रमित दीरघ बलवंती दुर्ग रूप चहुँ दिसि दरसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरस॥ १५१॥

संख्या को कहैं बहू तहँ सेढ़ी राबल बुरज जानिकि सिखरी।
तिन ऊपर महल बिपुल अति तुगह कनक मोल कोर न निकरी॥
नव लाख लगौ धन तिहुँ नव चौकिय लच्छिवती गुरु पालि लसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१५२॥

जल भर्यौ अथग गंग जल जैसो सुचि सुगंध सीतल सरस।
षोड़स वर कोस सहज गोखीरह सुनियै सब देसहिं सुजसं॥
पीयूष सरिस पय युग मुख पीवत अधिक अमर नर तनु उल्हसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१५३॥

मंड्यौ मह यज्ञ भिलै बहु महिपति द्विज चारन घन भट्ट दलं।
गज बाजी यूथ सत्थ सेवक गन जॉनि कि उलटै उदधि दलं॥
सुप्रतिष्ठा कीन सत्त दह संवत बत्तीसै उत्तम बरसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१५४॥

मासोत्तम माह रच्यौ सु महोत्सव पेखन आये देवपती।
सुर वर तेतीस कोटि सिद्ध साधक जत्थ जुरै नव नाथ जती॥
बनि व्योम बिमान बिषणु सिव ब्रह्मह बिबिध कुसुम सुरभित बरसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१५५॥

गंधर्व नचंत सु गायन गावत गज्जत नभ घन राग गहैं।
बादित्र बहू बिधि घोप सु बज्जन रबि ससि रथ थिर होइ रहैं॥
वेदंतीय बिप्र सु वेद बदंतह हवन करत सु सत रसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१५६॥

दसमी रविवार बिचारि बिजय दिन सर प्रतिष्ठ्यौ हुअ सुख।
रचि कनक तुला राजन मन रंगहिं दूरि करन दारिद्र दुखं॥
जाचक जन केइ सु कीन अजाचक दान कि पावस घन बरसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१५७॥

हय दीनै दत्त सु केइ हजारह करी केई बगसीस कियै।
दीनै बहु ग्राम अनग्गल दौलति युग युग लौं जाचक जियै॥

करि हैं को यज्ञ सु इन कलिकालहिं यज्ञ सु इन सम जगत जसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१५८॥

धनि धनि तुम बंस पिता तुम धनि धनि धनि जननी जिन उयर धरै।
धनि धनि तुम चित्त उदार धराधिप काम सु चितित सफल करै॥
पुहवीं तुम धन्य सकल हिंदूपति धनि धनि तुम जीवित धुरसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१५९॥

निरखत सरोवर जानि पयोनिधि पालि कि पब्बय रूप पहू।
सलिता समिलन अधिक जल संचय बिलसत जलचर जीव बहू॥
सारस कलहंस बतक बग सारंग चक्रवाक युग सुक्ख बसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१६०॥

प्रगटे जे तित्थ प्रयाग रु पुष्कर एकलिग व अर्बुद सिखरं।
द्वारामति सेतुबध रामेस्वर रेवतगिरि मथुरेस वरं॥
सुकृत तिन दरस स्नान जिन सलिलहिं कलिमल संकट दुष्ट नसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१६१॥

गुरुतर कल्लोल मरुत युत गज्जहिं जग जन सेवित जास जलं।
केई नर नारि चतुष्पद क्रोडत दिसि दिसि पूरित नीर दलं॥
आयौ इहिं थानकि क्षीर उदधि इहि मेदपाट महि दरस मिसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१६२॥

नैननि निरखंत करहिं दृग निरमल स्नान सकल संताप हरैं।
पय पान करत सु पीड़ प्रणासहिं कवि मुख कितीक कित्ति करैं॥
अवतार सफल जिन दृग अवलोकित राज सरोवर चित्त रसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१६३॥

कोटिक धन जिन लग्गौ जिन कमठानहिं कोटिक धन युत जज्ञ कियौ।
निय नॉउ सुजस प्रगट्यौ नव खंडहिं जय हिंदूपति सफल जियौ॥
सुर भवन सुजस बोलै इह सुरगुरु बिबुधाधिप सुनि सुनि बिहसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१६४॥

चंपक सहकार सदाफल चंदन श्रीफल पुंगी सीयफलं।
सहतूत असोक बिदाम सरौसिय रंभा राइनि ताल कुलं॥

दारिम जमीरि दाख मोलसिरी तरवर सरवर सकल दिसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१६५॥

अखियात अचल युग युग अवनीपति निस्चल किय भल निज नामं।
ससि रवि सुर सैल अवनि सुर सलितह कंस मलन सिव बिधि कामं॥
श्री देवि सिवा सावित्री सुरवर तो लौं कित्ति कलानि हंसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१६६॥

अंबर बर पत्र मिखी पय अंबुधि लेखिनी बज्र सुरेस लिखैं।
अवदात तऊ परि पार न आवहिं राण सु हिदू धर्म रखैं॥
सुरही जन संत सु बिप्र सहायक बसुधा गय हय धन बगसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१६७॥

रबिबस बिभूषन जय हिदू रवि तिलक तुही सब हिदु जनं।
असुरेस उथप्पन बीर अभंगह घन दायक तुम सुजस घनं॥
राजैं राजेद रिधू तुम राजस दौलत काइम प्रति दिवसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१६८॥

सविता ज्यौं ससी सलिलनिधि ज्यौं सर रटियै ज्यौं बासर रजनी।
केहरि मृग कनक लोह अंतर कहि मौक्तिक जल कन मुकर मनी॥
इह भाँति सु राण असुरपति अंतर यौं उत्तम कवि उपदेसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१६९॥

खल खडन देव तुम्हारौ खग्गह को समरांगन होड़ करैं।
अवनीपति को तुव मीढ़ सु आवहिं तोयधि को निज बाहु तिरैं॥
जग राण सुनंद सदा चिरजीवहु बोलत मान सु ज्ञान वसैं।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्द रच्यौ सुरसैं॥१७०॥

( कवित्त )

सु रच्यौ राजसमुद्द, रूप अट्ठम रयणायर।
राजसिंह महाराण, हरष करि हिदू दिवायर॥
उत्तम तीरथ अवनि, सफल भव होत संपिखत।
राजनगर रमणीक, राजगढ़ सुख छहूँ ऋतु॥
धनि धनि सु बंस पित माय धनि, अवनि नाउ नितु नितु अचल।
जगतेस राण पाटै सु जय, बदत मान बानी बिमल॥१७१॥

महियल जितैं मंडान, देखियै जितै दिगंतह ।
सूर जितै संचरै, पवन जेतै पसरंतह ॥
जितै दीप अरु जलधि, जानि ससि तारक जहँ लग ।
जितै बृष्टि जलधार, जितै नर नारि रूप जग ॥
इल जितीक अष्ट कुली अचल, वसुमति देखिय सम बिसम ।
कवि मान कहैं दिट्ठौ न कहुँ, सरवर राजसमुद्द सम ॥१७२॥

---

# नवम विलास

( दोहा )

श्री राजेसर राण जय, जित्तन औरंगजेब।
खल खडनि खूमान ए, टलैं न ध्रुव ज्यौं टेव ॥ १ ॥

देव कहा दानव कहा, असपति कहा यु आइ।
राजसिह महाराण सौं, जोति न कोई जाइ ॥ २ ॥

अचल रज इकलिग वर, महियल ज्यौं गिरि मेर।
रिधू राण राजेसवर, जिन किय आलम जेर ॥ ३ ॥

किहि विधि बीत्यौ ए कलह, उपज्यौ क्यौं सु उपाइ।
सो संबंध गुँथिय सरस, सब प्रति कहौं सुनाइ ॥ ४ ॥

आदि बैर हिदू असुर, धरनि धर्म दुहुँ काम।
कोटिक इन वित्तै कलप, सबल करत सग्राम ॥ ५ ॥

वसुमति हिदू नृप वड़े, इला हिदु आधार।
धरनि सीम हिदू धनी, भामिनि ज्यौं भरतार ॥ ६ ॥

जोर भयै महि म्लेच्छ जब, तब हरि जानि तुरंत।
आप धरै अवतार दस, आनन असुरनि अत ॥ ७ ॥

इल त्यौं हरि अवतार इह राजसिह महाराण।
औरंग से असुरेस सौं जीतै जग जु ऑन ॥ ८ ॥

असपति परि औरंग अति, कूर कपट को कोट।
जिन मारै बंधव जनक, अल्लह दै विचि ओट ॥ ९ ॥

( छद पद्धरी )

दिल्लीस साहि औरंग दिट्ठ, रुक्केव पिता रजहिं वइट्ठ।
बिस्वास देइ तिन हनै बंधु, ऐ ऐसु दुष्ट उर रज्ज अंधु ॥ १० ॥

निय गोत सकल करिकैं निकंद, सुलतान भयौ छल बल सुछंद।
मन्नै न चित्त पर बुद्धिमंत, दसमुख समान अहमेवदंत ॥ ११ ॥

जिन जीति प्रथम उज्जैनि जंग, सेना असंख कमधज्ज संग।
दस सहस लुत्थि पर लुत्थि दिन्न, हय गय अनेक भय छिन्न भिन्न ॥१२॥

सग्राम धौलपुर फुनि सु सज्जि भय मन्नि साहि सूजा सु भज्जि।
पत्तौ सु भूमि दरियाव पार, इन साहि भीति तोऊ अपार ॥१३॥

अल्लह सु देइ निज अंतराल, सु मुरादि साहि उर जानि साल।
कर करिय छुरिय लहु बंधु कंठि, गुरु भार बंधि जिन पाप गंठि ॥१४॥

जय पत्त तृतिय अजमेर जुद्ध, बंधू सु साहि दारा बिरुद्ध।
सोई कहत लीनौ सँहारि, यौं सकल सहोदर जर उखारि ॥१५॥

एकल्ल भयौ पतिसाह आप, पहु प्रगट कलंकी ज्यौं प्रताप।
न सुहाइ जास पटदरस नॉउ, धींधिट्ठ दुट्ठ बहु पाप धॉउ ॥१६॥

नव लख तुरीय पखर सनाह, गय सहस पंच मनु बारिबाह।
सज होत सीघ्र जिन चढ़त सेंनु, रवि चंद चित्र ढँकै सु रेनु ॥१७॥

जिन साहिजाद पन अप्प जोर, घवल मचाइ गढ़ कज्ज घोर।
दौलताबाद लिन्नो यु दुर्ग्ग, सुलतान तास पहुँचाइ स्वर्ग ॥१८॥

गुरु गाढ़देव गढ़ देस गुंड, नृप छत्रसाहि जसु देत दंड।
हरि वर्ष हुँन इक लख्ख हेत, लग्गौ जु प्रेत मनु भख्ख लेत ॥१९॥

फुनि लयौ दुर्ग्ग पूना प्रधान, थिर धरिय तत्थ अप्पन सु थान।
भारत्थ दक्खनिय राइ भंजि, रख्यौ सु बोल असपत्ति रजि ॥२०॥

वस किनह बीजापुर बिसाल, भरि दड भूमि रक्खै भुवाल।
इहि भाँति दिसा दक्षिनहिं आँन, जिन साहि कीन जानत जिहान ॥२१॥

दिसि पुव्व सिद्धि आसाम देस, पयपंथ जास तिहुँ मास पेस।
मंडलह सोइ दरियाव मज्झ, जगता सु लई जिन करिग झुज्झ ॥२२॥

कुरु कासमीर कासी कलिग, बैराट धाट बब्बरह बंग।
बंगाल गौड़ गुज्जर बिदेह, सोरट्ठ सिधु सोबीर छेह ॥२३॥

मुलतान खान मरहट्ट सार, पंजाब पंच पथ सिधु पार।
मेवात मालपद आदि देस, जिन साहि आन बित्थर बिसेस ॥२४॥

दरबार जास घन दोइ दीन, अनमिष्प नैंन ठट्ठै अधीन।
सेवंत जोरि युग कर सु ठीक, महाराज राज बर मंडलीक ॥२५॥

उमराव खान इहि बिधि अनेक, प्रनमंत जास पय छंडि टेक।
द्वादस हजारि जनु हुकमि दूत, परवार छंडि परदेस पूत ॥२६॥

इक भरत दंड इक मिलत आइ, पारीयहिँ इक्क पतिसाह पाइ।
इक परत बंदि जसु नृप उधत, परिकर समेत तिय भ्रात पुत्त ॥२७॥

चौरासि अवल्लिय रूप चारु, चौबीस पीर क्रामाति धार।
थप्पै सु अप्प तुरकान थान, काजी कतेब कलमा कुरान ॥२८॥

रसना रटंत महमद रसूल, ईदह निवाज रोजा अभूल।
बाराह छडि गो सत्थ बैर, सुदि पष्ष बीय बंटै सु खैर ॥२९॥

गरबर बदंत पारसि गुमान, प्रासाद तित्थ खंडै पुरान।
महकाल थान मह जीव मंड, औरंगसाहि आलम अदंड ॥३०॥

( दोहा )

करै सोइ असपति कुरस, सब दिन हिंदू सत्थि।
जिन उज्जैनी जंग जुरि, लुंटिय असुरनि लुत्थि ॥ ३१ ॥

फुनि हुरंम धवलापुरहि, कर लुट्टी कमधज्ज।
महाराय जसवंत नै, कोटिक कनकह कज्ज ॥ ३२ ॥

सँमुख न मिलै साहि सौं, कूर राय कमधज्ज।
सिह रूप जसवंतसिह, जोधपुरा युग रज्ज ॥ ३३ ॥

सो दुख सल्लै साहि उर, गस धरि बंछै गैर।
मुरधरपति महाराय सौं, बहै अहो निसि बैर ॥ ३४ ॥

मुँह मिट्ठौ रुट्ठौ सु मन, पारधि ज्यौं सुर पुंगि।
असपति औरंगसाहि यौं, कमधज हनन कुरंगि ॥ ३५ ॥

( कवित्त )

अखै औरंगसाहि, सुनहु जसवंतसिह नृप।
महियल तुम महाराय, तरिण ज्यौं प्रगट रज्ज तप ॥
अब हम तौ असपती, भयैं तप पुब्ब भाग बल।
तुम आवहु हम सेव, अधिक तौ देहु अन्य इल ॥
हैं बिचि रसूल अब तुम रु हम, बहुरि कबहुँ कर नह बिरस।
नन लखै कोइ इह निपुन हूँ, गहिय साहि इहि भंति गस ॥३६॥

( दोहा )

कपट सु लखि कमधज्ज कहि, साहि कहौ सो संच ।
परि तुम बायक पलट तैं, खिन न करौ खल खंच ॥३७॥

तिन कारन तुम दुसह तप, जिय हम सह्यौ न जाइ ।
दीजै हुकम सु दूरि तैं, धर त्यौं लीजै धाइ ॥३८॥

( कवित्त )

सँमुख न मिलाँ साहि, निकट तुम सीस न नाऊँ ।
बदाँ तुम बिस्वास, और चढ़ि तीर न आऊँ ॥
देस संधि दिगपाल, रहौं रिपु थानहिं रक्खन ।
मैं इह मीनति होइ, और कछु बहुत न अक्खन ॥
सु बिहान आन सिर धारिहौं, तपै सोइ दिल्ली तखत ।
कमधज्ज राइ जसवंत कहि, राखौं पतिसाही रखत ॥३९॥

( दोहा )

नावै ढिग कमधज्ज नृप, सुनियौ औरंग साहि ।
निफल पुन्ब मति जानि निज, मतै मत मन माँहि ॥४०॥

( छंद पद्धरा )

फुनि रच्यौ एक पतिसाह फद, निय कैद करन कमधज नरिंद ।
फिरि लिख्यौ दुतिय फुरमान मान, बहु नरम भास राजस बिनान ॥४१॥

अवनी सुव धारै अधिक आन, परगना एकतीसह प्रधान ।
सजि उभय तुरंगम कनक साज, सिरपाव ऊँच जरकस समाज ॥४२॥

मुख बैन और यों अक्खि मिट्ठ, आलम पगार तुम बिरद इट्ठ ।
ध्रुव टेक एक तुम साँइ धर्म्म, कमधज्ज राय वर ऊँच कर्म्म ॥४३॥

पतिसाहि थंभ तुम भूमिपाल, दिल्ली यु नगर तुम ही सु ढाल ।
अहमदाबाद थानह सु ऐंन चिर रहौ हुकम हम मन्नि चैंन ॥४४॥

सुप्रसंस इती अनुगहि सिखाइ, पतिसाहि बेगि दीनौं पठाइ ।
पहुँतौ सु दूत महाराज पास, सु बधार अप्पि गुदरे बृहास ॥४५॥

अहमदाबाद थानह सु अक्खि, सिरपाव आदि गुदरे स सक्खि ।
राखै सुथान फुरमान राज, बसुमती बधारह बाजिराज ॥४६॥

सिरपाव साहि पठयौ यु सोइ, तिनसौं अमेल ज्यौं तेल तोइ।
तिहि कज्ज तेह पहिखो न ताम कछु जानि तत्थ कलिकूट काम ॥४७॥

पहुठ्यौ सोइ खावास पानि, महाराय मत जनु देव मानि।
सतोषि दूत पठयौ यु साहि, तपनीय साज हय दीन ताहि ॥४८॥

सिरपाव मुत्ति माला सतेज, सुभ खान पान आसन सहेज।
मनुहारि करी इक राखि मास, पठयौ सु दिल्ली पतिसाह पास ॥४९॥

औरंगसाहि भेज्यौ सु अत्थ, परख्यौ नरिंद सिरपाव पत्थ।
पहिराइ अन्य पुरुषहि सु प्रीति, वर हंस तास तनु तें व्यतीत ॥५०॥

ए ए सुबुद्धि कमधज्ज अग, सब कहत सूर सामंत संग।
घण घल्लि साहि विस्वासघात, महाराय करी सादूल मात ॥५१॥

पतिसाह जोर किंनौ प्रपंच, राठौर-राय चूक्यौ न रच।
जग मज्झ जास तप भाग जोर, किं करै तासु रिपु छल कठोर ॥५२॥

अवलोकि असुर पति कृत अनीति, भग्गौ विसास नृप मन अभीति।
अमरप गुमान बाढ़्यौ अछेह, राखै अमेल जनु अद्रि रेह ॥५३॥

इक कहै पुव्व पच्छिम सु एक, पग पगहिं पंथ भाषा प्रत्येक।
धर धरैं इक्क वर क्षत्रि धर्म्म, कलि करैं इक्क घन म्लेच्छ कर्म्म ॥५४॥

बाराह इक्क इक सुरहि बैर, इक हनत हक्कि इक करत गैर।
इहि भंति उभय नृप भौ अमेल, सल्लै सु साहि उर जानि सेल ॥ ५५ ॥

नन छल्यौ जाइ कमधज्ज नाह, अभिनव सु बुद्धि अबुधि अथाह।
चढ़ि समुख युद्ध जो करौं चूक, इनमौ न तऊ जित्तौ अचूक ॥ ५६ ॥

सब एक होइ एहि हिंदु साज, राजेस राण सगपन सकाज।
हाड़ा नरिंद गढ़पति हटाल, भल भावसिंघ बुंदी भुवाल ॥ ५७ ॥

तौ लेहिं दिल्ली चढ़ै तुरंग, जुरि जोर घोर हम सत्थ जंग।
बर वीर धीर बल बिकट बंक, सुलतान चित्त यों पत्त संक ॥ ५८ ॥

( कवित्त )

संकै चित सुलतान, द्योस निसि मन न मिटै डर।
जोधपुरा जसवंतसिंघ महाराइ जोरवर ॥
न मिलै चित निराट, सैल पापान रेह सम।
असुराइन उत्थपै, धरै धर इक्क क्षत्रि धम ॥

सिरपाव साहि औरंग कौ, पहिरैं नहिं कबहुँ सु पहु ।
अति टेक लियें असुरेस सौं, बैर भाव राखै सु बहु ॥ ५९ ॥

( दोहा )

जहाँ बैर तहाँ बैर बहु, मेल तहाँ बहु मेल ।
मन बित भग्गौ ना मिलै, तैसें तोय रु तेल ॥ ६० ॥

( कवित्त )

बढ़य बैर तें बैर, मिलन ते मिलन बढ़य मन ।
बित्त बित्त तें बढ़य, रिनह तें बढ़य अधिक रिन ॥
बुद्धि बुद्धि तें बढ़य, रज्ज तें बढ़य रज्ज रिधि ।
लोभ लोभ तें बढय, सिद्धि तें बढ़य सकल सिधि ॥
बढ़यं सु बीज वर बीज त, मान मान ते बढ़य महि ।
अवगाढ़ साहि औरग तें, गाढ़ अधिक राठौर गहि ॥ ६१ ॥

मन भग्गौ नन मिलय, मिलय नन भग्गौ मुत्तिय ।
सार भग्ग नन संधै, पल्ल रेहा सु प्रपत्तिय ॥
कोटिक कियै कलाप, दूध फट्टौ न होय दहि ।
वाक हीन फिरि वाक, किपि नन होइ लोक कहि ॥
तुट्टौ यु तार जोरै तऊ, परैं गंठि दुहुं मज्झ पुनि ।
औरंग करै सनमान अति, मिलै नहीं महाराय मनि ॥ ६२ ॥

इक कहि क्षत्री ऊँच, एक तुरकान सु अक्खहिं ।
विधि रक्खहिं इक बेद, राह कुतबाहिक रक्खहिं ॥
बधै इक्क बाराह, इक्क उर दुट्ठ सुरहि उरि ।
रटैं इक्क मुख राम, इक्क रसना रसूल रटि ॥
मन्नै सु इक्क दिसि पुव्व मन, इक पच्छिम दिसि अभिनमय ।
जसवंतराय दिल्लीस युग, राति द्योस बादहिं रमय ॥६३॥

( दोहा )

जसपति राजा जीव तें, ससकन भग्गी साहि ।
सल्लै आड़ौ सेल ज्यों, औरंग के उर माँहि ॥ ६४ ॥

( कवित्त )

जीवंता जसवंतराय, मुरधरहिं रट्ठवर ।
मिट्यौ न कबहूँ मान, साहि औरंगहि सरभर ॥
सेंमुख न किय सलाम, आन असपती न अक्खिय ।
कज्ज सु जान्यौ कियौ, हद्द हिंदवानी रक्खिय ॥
महाराज सोइ पतौ मरन, ब्रह्म विष्णु शिव जासु बस ।
ए ए असार ससार इह, सार एक युग युग सुजस ॥ ६५ ॥

( दोहा )

युगल पुत्त जसराज के, युगलहिं लहु पन जान ।
बरस इक्क पतै सु बय, सहस किरनह समान ॥ ६६ ॥

ते नृप सुत लहु जानि तब, अरि औरँग सुलतान ।
पिता बैर घन पुत्त सौं, पोषन लग्ग सु प्रान ॥ ६७ ॥

( कवित्त )

बैरी न तजै बैर, जानि निज समय जोरवर ।
मूसहि ज्यौं मंजार, मच्छ ज्यौं बगल मज्झ सर ॥
राजा जसपति रह्यौ, अहोनिसि हम सौं अड्डौ ।
अंगज तिनकै एह, जोर इनको कुल जड्डौ ॥
पारौंध पिसुन ए पत्तले, संपति हय गय लेहु सब ।
चितै सु साहि औरंग चित, इह औसर आयौ अजब ॥६८॥

( दोहा )

इह औसर आयौ अजब, महाराज गय मोष ।
भू असपतिहूँ अब भयौ, दूरि गयौ सब दोष ॥६९॥

बैरी स्वान बिडारियैं, कहैं लोक यों कत्थ ।
यवन सु थप्पौं जोधपुर, ए बालक असमत्थ ॥७०॥

राजा बिन को रट्ठबर, जुरिहैं हम सौं जंग ।
धरौं तुरक नृप मुरधरा, इह चितय औरंग ॥७१॥

पठयौ दूत सु जोधपुर, करि पतिसाहि किताब ।
सकल रट्ठबर सत्थ सौं, सो कहि जाइ सिताब ॥७२॥

( कवित्त )

सकल रट्ठबर सत्थ, सुनहु सामंत सूर वर।
जे राजा जसवंत, अधिक संचै धन आगर॥
सो मगै सुलतान, साहि औरंग समत्थह।
तौ सु योधपुर तुमहिँ, सकल मुरधर धर सत्थह॥
बगसैँ सु फेरि सु बिहान बर, महिरवान फिर होइ मन।
खपि जाय खान उमराव तसु, धरे सु साहि खजान धन॥७३॥

( दोहा )

तागीरी न तरकि तुमहिँ, मुरधर देस महत।
प्रभु सेवा तैँ पाइहो, औरहि अवनि सु अत॥७४॥
इहि पतिसाही रीति अति, कूर न मिट्टय कोइ।
अचल चलय सलसलय अहि, जल जो उत्थल होइ॥७५॥
सुनियो कमधज्जह सकल, मते मंत मतिमान।
पातिसाहि जान्यौ पिसुन, अक्खै करि अभिमान॥७६॥

( कवित्त )

हम जोधपुरा हिदु, धनी हम आदि मुरध्धर।
हम कुल इती न होइ, दड दै रहैँ साहि दर॥
जो कोपै यवनेस, तऊ इह धर सिर सट्टैँ।
राखैँ हम रजपूत, कूर दानव दल कट्टैँ॥
आसुरी रीति नाहीँ इहाँ, धन गृह दै रक्खैँ धरनि।
यौँ कहौ साहि औरंग सौँ, फुरमावै ऐसी न फुनि॥७७॥

( दोहा )

जान्यौ नृप जसवंत कौँ, पत्तौ ही पर लोक।
ऐसी फुनि औरंग यू, फुरमाओ जिन फोक॥७८॥
जानाँ कबहूँ एह जिन, हम तुम हुकमी होइ।
धन सट्टैँ रक्खैँ धरनि, खग्ग महाबल खोइ॥७९॥

( कवित्त )

खेती हम कुल खग्ग, खग्ग हम अखय खजानह।
खग्ग करैँ बस खलक, नाम हम खग्ग निदानह॥

खल दल खंडन खग्ग, खेत इच्छत हम खग्गह ।
छिति रक्खन फुनि खग्ग, अहितु भग्गौ इनि अग्गह ॥
खग धार तित्थ क्षत्री धरम, आवागमनहिं अपहरन ।
सो खग्ग बंध हम सूर सब, धरय न साहि खजान धन ॥८०॥

धन खजान नहिँ धरय, करय नन एह नबल कर ।
जे कीनी जसराज, सेव सो करिहैं सुंदर ॥
आगे हू आलमह, भये बड बड़े महा भर ।
किनहि न ऐसी कीन, धरै किन तुरक मुरध्धर ॥
निस्चै यु एह ह्वैहै नहीँ, रसना ए नर पट्टिहौँ ।
कमधज्ज रज्ज करतार किय, महियल सो क्यों मिट्टिहौँ ॥८१॥

( दोहा )

जा ऐसी यवनेस सौँ, जंपहु दो कर जोरि ।
किपि न दै रट्ठौर कर, कैसी लक्ख करोरि ॥८२॥
वेगि गयौ दिल्ली बहुरि, दूत साहि दरबार ।
सकल उद्दंत सुनंत हीँ, असपति कुप्पि अपार ॥८३॥

( कवित्त )

कितिक एह कमधज्ज, हमहिं सत्थैं रखै हठ ।
दौलति हमहिं यु दीन, सु तो समुझै न चित्त सठ ॥
रसा हमारी रहै, बहुरि हम सौँ खग बंधै ।
राजा करि हम राखि, सर यु हम ही पर संधै ॥
कृत हीन सकल का पुरुष ये, कुटिल तैँ यु सूधै करौँ ।
असपति साहि औरंग हौँ, धाराधर भुजबल धरौँ ॥८४॥

बैरी ए विप वेलि, फलै जनु रूप सरिस फल ।
जैसौ नृप जसवंत, भयौ त्यौँही ए हैँ भल ॥
मारवारि धर मारि, बिढिग इन गिन गिन बढ्ढौँ ।
करि पद्धर गढ़ कोट, केवि जन पद तैँ कढ्ढौँ ॥
ल्याऊँ सु खजाना लच्छि सब, कहौँ सोइ निस्चै करौँ ।
असपतीसाहि औरंग हौँ, तौ भल ढिल्ली पै भरौँ ॥८५॥

यौं कहि करि अभिमान, तबल टंकार त्रहंकिय ।
बज्जै चढ़न सुवग्ग, हेट हय गय रथ हंकिय ॥
नारि गोर धज नेज, बान कमनैत बिबिधि परि ।
कुहकबान नीसान, तोब सब्बान सोर भरि ॥
चतुरंगिनि सज्जिय असख, चमु जनु बित्थुरिय समुद जल ।
बढ़ी अवाज घन सकल बसु, जग्गि अग्गि आराय झल ॥ ८६ ॥

सहस तीन सुडाल, मेघमाला बिसाल मनु ।
अंजन गिरि उनमान, अग चगह उतग घनु ॥
झिलि कपोल गद झरत, गुंज मधुकर श्रणणंतह ।
दसन सउज्जल दिग्घ, घट घुँघरू त्रणणंतह ॥
पँचरंग झूल पटकूल मय, सुज्झिय ढाल सिदूर सिर ।
पीलवाज हथ अकुस प्रबल, बनि बहु बरन पताक बर ॥ ८७ ॥

उभय लक्ख बर अस्व, सजड पखर सपलानह ।
पखी वेग पवंग, पवन पय पर प्रधानह ॥
ऐराकी आरबी, खेंग कबिला सुरसानी ।
साणौरा सिहली, कच्छि काबोज किहाँणी ॥
कास्मीर किहाड़ा कौकनी, चलत जानि मारुत चपल ।
खुरतार मार धरहरिय खिति, प्रचलि सैल खुलि ईस पल ॥ ८८ ॥

पयदल सेन प्रचड, करपि कोदड उदडह ।
सनध बद्ध सायुद्ध, चित अहमेव सुचडह ॥
तौंन सकति कटि तेग, कुंत अरुढाल सु कत्तिय ।
गुरज हत्थ किन गरुअ, रोस भरि दिट्ठि सु रत्तिय ॥
मुररत मुछ्छ मयमत्त मनु, केइ तोब कंधै बहय ।
धमकंति धरनि जिन पय धमक, रुप्पि पाय रिन मुखर रहय ॥८९॥

सुभर रत्थ बहु सस्त्र, कवच बगतर कल हंकित ।
खच्चर भरित खजान, सहस इक डोरि सु सोभित ॥
बहु बिधि रखत बखत्त, करभ भरि भार अनंतह ।
चढ़्यौ बाजि चकतेस, घोप नौबती घुरतह ॥
मचि सोर जोर रव लोक मुख, हय हीसतु गज्जंत गय ।
सुनियै न सद्द घन भरि स्रवन, भूमि सकल हयकंप भय ॥ ९० ॥

सत्तारि खॉन सुसत्थ बलिय उमराव बहुत्तारि।
तरु बन धन तुट्टंत, पुहवि उन मग्ग मग्ग परि॥
रवि नभ ढंकिय रेनु, चलत गिरि भय चकचूरह।
सर सलिता दह सुक्कि, पसरि दिसि दिसि दल पूरह॥
फनधर सभार संकुरिय फन, कठिन कुंभ खुप्परि कटकि।
परि पंच कोस सु पराव पहु, झड रुप्पि बहु बिधि झटकि॥ ६१॥

कूच कूच बहु करिग खरिग त्रय त्रय स कोस खिति।
आए गढ़ अजमेर, प्रगटि आवाज जगत प्रति॥
मारवारि मेवार, खंड खैरार खरभरि।
बागरि छप्पन वहकि, डहकि गढ़वार चित्त डरि॥
कावोज कुक्क परि कलकलिय, प्रचलिय कच्छ बिभच्छ पह।
चलचलिय चहो दिसि चक्क चढ़ि औरंग साहि प्रताप यह॥६२॥

( दोहा )

गड्डि झड अजमेर गढ़, आए साहि औरग।
सवा लाख हय सेन सौं, रह्यौ सु रढ़ घन रग॥ ६३॥

सथ तुरंग सत्तारि सहस, सहिजादा सजि सेन।
पठयौ मुरधर देस पर, लछि कमधज्जी लेन॥ ६४॥

सो सिताब आवत सुन्यौ, सज्यौ रट्ठवर सत्थ।
हय गय पयदल घन हसम, सहस बतीस समत्थ॥ ६५॥

जोधपुरह तैं यवन दल, पंच कोस सु प्रमान।
आइ पर्‌यौ जॉन कि उदधि, आडंबर असमान॥ ६६॥

अनुग मुक्कि तिन अक्खि इह, सुनहु रट्ठवर सूर।
करौ कलह हम सत्थ कैं, सौंपौ धन संपूर॥ ६७॥

लेहु निमिष विश्राम लटि, आए हो तुम अज्ज।
कल्हि सही हम तुम कलह, कही बहुरि कमधज्ज॥ ६८॥

बीत्यौ बासर बत्ताही, परी निसा तम पूर।
छल करिकैं तब रिपु छलन, सजै रट्ठवर सूर॥ ६९॥

( कवित्त )

अद्ध रयनि तम अधिक, छलन रिपु इक्क कियौ छल ।
संड पंच सय शृग, जोइ युग युग हलाल झल ॥
हकिय सो वर हेट, उभय चर अरि दल अभिमुख ।
अप्प चढ़ै दिसि अवर, लियै बर कटक इक्क लख ॥
पिखिय चिराक प्रद्योत पथ, संड समुख धाए असुर ।
उत तैं सु वीर अज्जगैब कै, परै आइ अरि सेन पर ॥१००॥

( छंद भुजगी )

परै धाइ अरि सेनं रोस पूर, सजै सेन सायुद्ध रट्ठौर सूरं ।
कियै कंठ लंकालि कंकालि कूरं, झनंकी युखग्गैं बजी झाक झूरं ॥१०१॥

मची मार मारं जनं मुंख मुंखे, भिलै जानि गो मडलं सीह भूखे ।
सरं सोक बज्जी नभं ढकि सारं, भटक्के घनं सोर आराव भारं ॥१०२॥

धटक्कै धरा धुंधरं पूरि धोमं, बढ़ै बीर बीरा रस लग्गि व्योमं ।
फुरै योध हत्थं महा कूह फुट्टी, इतैं आसुरी सेन पन्छी उलट्टी ॥१०३॥
धपै धीग धींगं धरालं धमक्कै, चहौं कोंद तैं लोकपालं चमक्कै ।
जपै इट्ठ जप्पं जुरै जोध जोधं, करौं कंक बंकै भरै भूरि क्रोधं ॥१०४॥
मुरैं सार सारं ननं मुख्ख मोरै, पटे टट्टरं बान सन्नाह फोरै ।
धरैं सीस नब्बैं कमधं प्रचंडं, मही भिन्न भिन्नं रुरै रुड मुडं ॥१०५॥
लरैं द्रोन के सीस पच्छैं लटक्कैं, कहूं कंठ ज्यौं हड्ड जाड़ै कट्टकैं ।
घनैं घाउ लग्गै कितै बीर घूमैं, झुकंतै धुकंतै कितै फेरि झूमैं ॥१०६॥
हहक्कं तहक्कं कितै हाय हायं, परै धंखि खितं झरै हत्थ पायं ।
परैं दीप मज्झै कितैं ज्यौं पतंगा, उछं छेनि छंछै करै होम अंगा ॥१०७॥

भभक्कंत स्रौनं कटै कै भुसुंडं, बिना दंत दंती परै ह्वै बिहंडं ।
बहू बान बेधै कुनंनंति बाजी, गए चून ह्वै पैदलं मीर गाजी ॥१०८॥

सिवैं संग ह्वै उत्तमंगा सरोजा, चवंसट्ठि लागी टगी चित्त चोजा ।
पिये स्रौन पानं बहैं बाह पूरं, बहैं बाहु जंघा भुजंतं बिरूरं ॥१०९॥

बिना सत्थ केतै परै लत्थ बत्थ, रनं रोस रत्तौ रुपै पाइ हत्थैं।
मचै मुट्ठि युद्धं मनौं मल्ल मल्लं, अरे मत्त माहिष्ष ज्यौं द्वै अडुल्लं ॥११०॥

कितै कातरा काय ज्यौं एन कंपैं, नचैं नारदं तुंबरूं जैति जंपै।
गहक्कैं सिवा चित्त गोमायु गिद्धं, लहक्कैं पशू पंखिनी मंस लुद्धं ॥१११॥

कितै डूब जमदड्ढ कट्टैं कटारी, भरं झुंझए भीम ज्यौं रोस भारी।
तिनं मोह माया तजै गेह तीयं, पुकारैं बकारैं मनुं छाक पीयं ॥११२॥

सराहैं रु बाहैं कितै सैल सैलं, चुवै रत्त आरत्त ज्यौं नीर चैलं।
तुटैं चाप चर्म्मं धजा तेग त्रानं, बरं युद्ध आनुद्ध में भो विहान ॥११३॥

फिरै पील सूनै परै पीलवानं, लुटैं लच्छि लुंटाक पिक्खै सु प्रानं।
हयं नंखि रुंडं नियं छंद हिडै, बली तत्थ बड़ हत्थ रट्ठौर तंडै ॥११४॥

मनौं पाथ पाथोधि छंडी मृजादा, सबै सेन सत्थैं भगौ साहिजादा।
भगी सेन सुलतान की मन्नि भीतं, बड़ी जैति कमधज्ज सत्थै बदीतं॥११५॥

नियं जैति मन्नी यु बग्गैं निसानं, जपै देव जै जै सुरंगैं न यानं।
खलं खंडि खग्गैं वरं खेत सुज्झयौ, बहू लुत्थि आलुत्थि किन जाइ बुज्झयौ११६

परै मीर सै अट्ठ रिन इक्क पंती, गिनैं कौन है पैदलं और दंती।
भयौ खेम पेमं सबै अप्प सत्थैं, कहै मान यों छंद रट्ठौर कत्थैं ॥११७॥

( कवित्त )

कलह जीति कमधज्ज, सेन भग्गी सुलतानी।
झंड नेज झकजोरि, तोरि डेरा तुरकानी॥
हय गय लुट्टि हजार, लुट्टि केउ लख धन लिन्नौ।
स्वामि बिना सग्राम, कहर अरि दल संकिन्नौ॥
पैंतीस कोस पच्छौ पुल्यौ, सहिजादा सुबिहान कौ।
पत्तै सु बीर सब जोधपुर, हठ रख्यौ हिंदुवान कौ ॥११८॥

( दोहा )

परि पुकार अजमेर पुर, सुनि औरंग सु बिहान।
कमधज जुरि जीतै कलह, सेन भगी सुलतान ॥११९॥
जानै हिदू जोरवर, तजैं न टेक निदान।
कलह कियै नावे सु कर सोचै चित सुलतान ॥१२०॥

करतैं तौ हम ए करी, राठौरनि सौं रारि।
इन अग्गैं फुनि आहुटैं, ह्वै पतिसाही हारि ॥१२१॥

फिरि बसीठ फुरमान लिखि, पठयौ सें पतिसाह।
करन मेल कमधज्ज पैं, राखन रस दुहुँ राह ॥१२२॥

( कवित्त )

बुज्झय बचन बसीठ, मिट्ठ घन इट्ठ सुद्ध मन।
सुनहु रट्ठवर सूर, बीर तुम युद्ध बियक्खन ॥
कीनौ हम ए क्रूर, प्रबल तुम प्रान परक्खन।
परि तुम बड़ रजपूत, राह रखन अभंग रन ॥
हम तुम सु प्रीति ज्यौं आदि है, त्यौं राखहु रस रीति तुम।
आखै सु साहि औरंग अब, भूलि न कौ रक्खौ भरम ॥१२३॥

भूलि न राखहु भरम, नरम अति करिग चित्त तिय।
सजि चतुरंगिनि सेन, प्रबल हय गय पयदल प्रिय ॥
हम पै आवहु, हरषि, निरखि नृप जसपति नंदन।
रीझि करौं राजेंद्र अप्पि मुरधर आनंदन ॥
इनमैं अलीक जौ होइ कछु, सुक्रत तौ हम फोक सब।
कमधज्ज सुतौ सुलतान कहि, अलिय टेक मंडौ न अब ॥१२४॥

( दोहा )

अलिय टेक मंडौ न अब, जंपै यौं यवनेस।
रस राजस दुहुँ राखियै, करि सब दूरि कलेस ॥१२५॥
मन्नी सब कमधज्ज मिलि, सांत लख्यौ सुलतान।
नृप सुत करि अग्गै नृपति, सजि दल बल संधान ॥१२६॥
आए चढ़ि अजमेर गढ़, पय भेटे पतिसाह।
नृप सुत युग किन्नै निजरि, असपति चित्त उमाह ॥१२७॥

( कवित्त )

इक दह हय गय एक, सज्ज, सोवन सिंगारिय।
मनि इक मुत्तिय माल, उभय चामर अधिकारिय ॥

इक करबाल अनूप, एक जमदाढ़ सु अच्छिय।
पातिसाह प्रति पेस, लख्ख इग रुव सुलच्छिय॥
कमधज्ज करी रस रंग करि, भयौ मेल दुहुँ दीन भल।
हरष्यौ सु साहि औरंग हिय, आण दान बरती अचल॥१२८॥

( दोहा )

कहि आलम कमधज सुनहु, योगिनिपुर हम जाइ।
नृप गुरु सुत करिहैं नृपति, बहु सनमान बढ़ाइ॥१२९॥

तिहिं कारन हम सत्थ तुम, चलौ सकल चित चंग।
प्रभु सब करिहैं पद्धरी, भूलि न जानहु भंग॥१३०॥

बहु विधि बचन बिसात तैं, चूक न चितिय चित्त।
ढिल्लि नैर ढिल्लीस सौं, सब कमधज संपत्त॥१३१॥

सेव करत नृप सुतन सौं, बासर बहुतक बित्त।
परि न देत महराय पद, असपति चित अपवित्त॥१३२॥

( कवित्त )

ढिल्लीपति लखि ढिल्ल, कथन कमधज्ज कहावहिं।
पातिसाह परवरदिगार, कज्जु किन गहर लगावहिं॥
हम आए प्रभु हुकुम, देस हम हमकूँ दिज्जै।
थप्पि जोधपुर थान, नृपति गुरु सुत नृप किज्जै॥
सतपुरुस बैन डुल्लै न सहि, ध्रुव सु एह उर धारियहि।
रस कियै रसहि रस राखियै, अरज इती अवधारियहि॥१३३॥

सुनि सुबोल सुलतान, उलटि उलटी इह आखिय।
रस हम तुम कहा रह्यौ, सो ब तुमही चित साखिय॥
आगै हूँ तुम ईस, बह्यौ हमसौं गुमान बहु।
जुरिग उजैनी जंग, सेन हय गय मिडिय सहु॥
फुनि लुट्टि हुरम धवलापुरहि, सल्ल रीति सल्लै सदुष।
सो राज रीति तुम संग ही सोचि कहौ इहि कौन सुख॥१३४॥

रथण कनक अरु रूप, धनी तुम जे संचिय धन।
सो हम अप्पहु सब्ब, गिनिब हय गय खच्चर गन॥

तौ सु मेल हम तुमहिँ, पुहवि तबही तुम पावहु ।
अब हम सौँ अरदास कहा इह वृथा कहावहु ॥
मन्नै सु कौन महाराय के पुत्त न जानै कब प्रगटि ।
मयमत्त भयौ जनु पंचमुख, पातिसाह बचनहिँ पलटि ॥१३५॥

( दोहा )

रिपु जन मन राखैं न रस, गुन परि को न गहंत ।
पन्नग कौँ पय प्यावतैँ, समझि करैँ चित संत ॥१३६॥

( कवित्त )

रिपु जन कैँ रस कहा, कहा तिन बचन बिसासह ।
कहा पिसुन सु प्रतीत, कहा अरि कौ इकलासह ॥
महुरै कौ कहा मीठ, कहा हिम सैल सीत जग ।
कहा स्व प्रगटित अगनि, कहा पय पोषित पन्नग ॥
पतिसाह सु बोल पलट्टि कैँ, रढ़ लग्गौ सुख जान रुख ।
सुभ सीख तास कौ सीखवै, लायक नर जो मिलय लख ॥१३७॥

( दोहा )

सुनि ऐसी राठौर सब, भयै रोस भर भार ।
सब पतिसाही सेन पर, तुट्टैँ ज्यौँ खहतार ॥१३८॥

( छंद मोतीदाम )

जगै कमधज्ज महा रन योध, कियै दृग रत्त भयै भर क्रोध ।
बजी बर बीरन हक्क बहक्क, छुटै जनु इभ्भ महा मद छक्क ॥१३९॥

धरातलि धावत उट्ठि धमक्क, चहूँ दिसि दानव देव चमक्क ।
कढ़ी कर नागिनी सी करवाल, जितं तित ढाहत है गज ढाल ॥१४०॥

लसैँ मनु लोह कि अग्गि लपट्ट, झनंकत नद्द खरी खग झट्ट ।
खलं दल कीजत खंड बिहंड, जितं तित मीर परै बिन मुंड ॥१४१॥

कटक्कत हड्ड सुजड्ड करार, करै जनु कट्ठिय सैल कवार ।
भभक्कत स्रौन सुइभ्भ भसुड, जितं तित जोर मच्यौ खल खंड ॥१४२॥

परै जनु पत्थर रूप पठान, हयै जमदाढ़नि गट्ट जुवान ।
भजैँ नर कायर भारथ भीर, गजैँ प्रति सद्दनि व्योम गुहीर ॥१४३॥

कितै बिन सीस नचंत कमंध, लड़ब्बड़ मत्थ लटक्कत कंध।
कितै घन घाइनि छक्क घुमत, जित्तं तित दौरत पीसत दंत ॥१४४॥

उझंटिय आसुरि सेन अलेख, जितं तित सत्थर ह्वै रहै सेस।
गिनैं कुन गक्खर भक्खर ग्यान, बलोचिय लोदिय बिद्धिय बान ॥१४५॥

ररब्बरि खब्बरि रुम्मिय रुंड, झंझोरिय भूरिय भभ्भर झुंड।
रनं घन रोलिय मत्त रुहिल्ल, जितं तित मच्चिय रत्त चिहल्ल ॥१४६॥

खुरेसिय खग्ग कियै खय काल, हबस्सिय होइ रहै यु बिहाल।
सु सेंधर मुच्छिय केसरि बानि, जितं तित जाइ परै पय पानि ॥१४७॥

इहीं बिधि आलम कैं मुंह अग्ग, जितं तित जंग महा भर जग्ग।
भग्यौ दरबार भग्यौ भहराय, भगौ यवनेस सु अंदर जाय ॥१४८॥

खरभ्भरि आसुरखॉन जिहान, जितं तित रुक्किय आवन जान।
जरे दरबाननि गढ्ढ कपाट, घनं परि घेर रुकै जल घाट ॥१४९॥

रलंतलि लोग परी पुर रौरि, दुरै नर भग्गि दई द्रढ़ पौरि।
गृहं गृह कंचन रूब गड़ंत, भगै बहु भामिनि बाल रड़ंत ॥१५०॥

गहैं कुन कप्पर सार किरान, धरप्पर टिप्पर ठिल्लहिं धान।
मची घन लंबी कूह कराल, चहौं ढिग होइ रह्यौ ढकचाल ॥१५१॥

मुखं मुख जक्किय मारहि मार, हयै नर मेल्लिय केउ हजार।
ढंढोरिय ढिल्लिय किन्न सु ढिल्ल, कियै गढ़ कोट उथल्ल पुथल्ल ॥१५२॥

बिहंडिय खंडिय स्रेणि सुहट्ट, जितं तित कीजत गेह कुघट्ट।
लबक्कहिं लुट्टहिं लुट्टक लच्छि, गए तिन नाहर नंवन गच्छि ॥१५३॥

बिहॅसिय योगिनि वीर बेताल, महेस सु गुंथहिं मच्छय माल।
झरप्फहिं पंखिनि गिद्धिनि, झुंड, उडैं नभ केक गहैं पल तुंड ॥१५४॥

जितं तित लग्गिय लुत्थित जेट, पसू पल चारिनि पूरिय पेट।
बढ्यौ रस बैरिन सेन विभच्छ, सुरासुर मन्निय अद्भुत अच्छ ॥१५५॥

अरैं नन आसुर अड्डह आइ, लगी जनु मारुत ग्रीषम लाइ।
चकत्तह चूरि चमू किय चून, फिरैं हय हींसत सिंधुर सून ॥१५६॥

ससक्कहिं थक्कहिं औरंगसाहि, कलंमलि चित्त उठंत कराहि।
हहक्कहिं तक्कहिं मिडहिं हत्थ, महल्लनि मच्छ डुलावहिं मत्थ ॥१५७॥

गए कितहूँ तजि मीर गॅभीर, नहीं सु नवाबनि कै मुँह नीर।
तुरक्कन कोइ रह्यो हमनीर, भिरै इन सत्थ करै हम भीर ॥१५८॥

इहाँ बिधि युग्गिनि नैरहि आइ, वली कमधज्ज सुखग्ग बजाइ।
चलै चतुरंग चमू निय लेइ, दमामह दुट्ठनि कै सिर देइ ॥१५९॥

( कवित्त )

ढिल्लि नयर करि ढिल्ल, ढाहि आवास ढँढोरिय।
दुट्ठ महल दलमलिय, वग्घ के असुर बिरोलिय॥
चूरि चकत्ता चमू, चंग हय गय चतुरंगह।
लुट्टि अनंत सुलच्छि, रजत अरु कनक सुरंगह॥
भयभीत साहि औरंग भय, जरि कपाट अंदर दुरिय।
कमधज्ज सकल रक्खन सु कुल, कलह केलि इहि बिधि करिय ॥१६०॥

( दोहा )

करि यौं दिल्लियपुर कलह, रिन अभंग राठौर।
उद्धंसिय असुरान अति, अरयन कौ मुँह और ॥१६१॥
पहर तीन युग्गिनिपुरहिं, पारि ढारि परजारि।
कीन कुरूप कुदरसनी, नाइक बिन त्यौं नारि ॥१६२॥
करि अग्गैं महराइ कै, पुत प्रभाकर रूप।
चलै सज्जि चतुरंग चमु, अप्पन इला अनूप ॥१६३॥
आड़े जे आए असुर, सकल लिए सु सँहारि।
मारवारि पतै सुमहि, प्रमुदित सब परिवार ॥१६४॥

( कवित्त )

आए मुरधर इला, जीति योगिनिपुर जंगह।
सूर रट्ठवर सेन, सकल हय गय भर संगह॥
घोष निसान घुरंत, जोध पतै सु जोधपुर।
जिन जिन की जो अवनि थप्पि तिन तिन सुथान थिर॥
आलम औरंग महंत अरि, अति उद्धत आसुर अकल।
भारत्थ युद्ध तिन सत्थ भिरि, बसुमति लीनी अप्प बल ॥१६५॥

कितक दिननि कबिलेस, किन्न निय महल मंत कजि।
जुरै यवन घन जूह, खान उमराव खूब सजि॥

हय गय केउ हजार, पार पायक को पावहिँ ।
गुरजदार छरिदार, जोरि इतमाम जनावहिँ ॥
जुरि सेठ सेनापति जौहरिय, काजी कुल्लि दीवान बर ।
कोतवाल दूत सँधिपाल कैँ, दल बद्दल जनु साहिदर ॥१६६॥

कहि तब असपति कुप्पि, सुनहु स्रवननि नबाब सब ।
कहौं सोइ कीजिये, अरि सु आवै न हत्थ अब ॥
मुरधर कै मेवासि, तेग बंधी हम सौ तिन ॥
हमहू अदब उत्थप्पि, लरै हम महल कुलक्खन ॥
उमराव खाँन उद्धंसि कैँ, निधि लुट्टी दिल्ली नगर ।
हम सल्ल भंति सल्लै हियै, पत्तै तै रिपु जोधपुर ॥१६७॥

( दोहा )

तिन कारन हम मन तुरित, भंजन रिपु जनु भीम ।
काजी पूछहु बेगि कैँ, सजैँब किन दिन सीम ॥१६८॥

करत प्रस्न दिन सुद्धि कहि, काजी पिक्खि कुरान ।
भद्दव सित दुतिया भली, सजौ सेन सुलतान ॥१६९॥

( कवित्त )

संवत्सर छत्तीस, सीम सतरासैँ संवत ।
भद्दव दुतिया धवल, चढ़्यौ पतिसाह चंड चित ॥
दोय सहस गुरु दंति, पंति जनु हल्लिय पब्बह ।
उभय लक्ख उत्तंग, बाजि बर बेग सु सब्बह ॥
आराब नारि गोरह अधिक, रथ जत्री दो सहस रजि ।
औरंगसाहि आडंबरहिँ, सेन कोटि पायक सु सजि ॥१७०॥

आवत सुनि औरंग, साहि दल बद्दल सज्जह ।
दुर्गादास सोनिग, कलह कारक कमधज्जह ॥
आदि सकल रट्ठौर, भए इकमिक्क मंनि भय ।
मंत इक्क बर मंतैँ, युद्ध जिहिँ भंति लहै जय ॥
रिपु दुट्ठ धिट्ठ आरिट्ठ रिन, चमू जोर आवंत चलि ।
किज्जैब जुद्ध कबिलेस सौं, टेक छांडि ज्यौं जाय टलि ॥१७१॥

जंपै ताम सु जान, राय सोनिग रट्ठवर।
ईस बाल अप्पनै, सुकल दुतिया जनु ससि हर॥
सो न जोग संग्राम, नृपति जसवंत सु नदन।
सुभट लेरैं प्रभु संक, करैं भारथ रिपु कंदन॥
अप्पन अनाह सब ही सु सम, हिडहिं अरि मुख किन हुकम।
तिन काज रॉण श्री राज सौं, मिलि रक्खैं खित्री धरम॥१७२॥

ए हिदूपति आदि, धनी हिंदवान धरमधर।
इन सु बंस अकलंक, खग्ग असुरान खयंकर॥
इन सौं मिलत न ऐब, एह सरनागय बत्सल।
कालंकिन केदार, नीति गंगा जल निर्म्मल॥
नर नाह और इन से नहीं, अप्पहिं रक्खन जो सुपहु।
श्री राज रॉण जगतेस सुअ, बंकै बिरुद बदंत बहु॥१७३॥

अबल राय आधार, सबल सुलतान सु सल्लह।
सुर गिरि वर सम तुल्ल, अप्प अज्जेज अडुल्लह॥
चित्रकोट पति अचल, जास इकलिंग ईसवर।
ब्रह्म बेद बाहरू, उदधि जल दल आडंबर॥
पुहवी प्रसिद्ध ए छत्रपति, दुज्जन जन घन दल दमन।
श्री राज राण जगतेस सुअ, राजै ज्यौं सीता रमन॥१७४॥

मालपुरहिं मार यौ, दाह दिल्लीपुर दिन्नह।
रूप पुत्ति रट्ठवरि, साहि तैं सबल सुलिन्नह॥
गुरु हट कै गोमती, बंधि सलिता सु राजसर।
सीरोही सिर दंड, किन्न राना राजेसर॥
कित्तीब कहूँ मुँह कित्ति जस, बल अनंत हिदू सु बर।
अब धाइ गहैं तिन पय सरन, भंजहिं फिरि असुरान भर॥१७५॥

इन अनिट्ठ औरंग, रज्ज कज्जैं राजंधहिं।
बाप हन्यौ हनि बधु, पुत्त हनि सकल प्रबंधहिं॥
कूर गेह कलि गेह, जानि अहि ज्यौं दो जिभ्भह।
बचन जास चल विचल, मान मयमत कि इभ्भह॥
कर तैं सुछंद सेवा करत, पुत्ति देत होतन प्रसन।
मिलियै ब राण राजेस सौं, पातिसाह आवै पिसुन॥१७६॥

( दोहा )

सुनत एह सारी सभा, सोनिँग देव सुमंत।
राजा रावत रट्ठवर, भल भल सकल भनंत ॥१७७।

जान्यौं जग प्रभु जोरबर, राजसिह महरान।
सरन तकि कमधज्ज सब, जीवित जन्म प्रमान ॥१७८॥

ठीक मंत ठहराइ कैं, लिखै ललित फुरमान।
राना श्री राजेस कौं, बिनय बिबिध बाखान ॥१७९॥

( कवित्त )

स्वस्ति श्री सुभ थान, प्रगट पट्टन उदयापुर।
राजै श्री महाराण, रूप राणा राजेसर ॥
सुर नायक ससि सूर, जास ऊपम युग जानिय।
सुरतरु सुरमनि सिंधु, देव ज्यौं अधिक सु दानिय ॥
अरदास सकल कमधज्ज की, मन्नहु सॉई प्रसन मन।
पतिसाहि पिसुन पच्छैं पखौ, आवहिँ हम अब प्रभु सरन ॥१८०॥

संग्रामहिँ असमत्थ, समझि बिन लहु हम सॉई।
सॉई बिनु कहा सेन, तेज सॉई ही तॉई ॥
महाराय गय मोरव, सोइ होते समत्थ पहु।
अब प्रभु ही सों अदब, रहैं रटियै कितीक बहु ॥
कमधज्ज कहै इन कलह में, करि उप्पर निज जानियहिँ।
राजेस राण जगतेस सुअ, आलम तौ बस आनियहिँ ॥१८१॥

मारै हम बहु मुगल, दंद रचि जोर साहि दर।
युग्गिनि पुर परजारि, पारि कीनी धर पद्धर ॥
लच्छि अमित तहँ लुट्टि, चड चौकी चकचूरिय।
हय गय रथ भर हनिय, पेट पसु पंखिनि पूरिय ॥
कीनै यु खून असपत्ति कै, केतक मुख करि कित्तियै।
राजेस राण जगतेस सुअ, पहु पसाय अब जित्तियै ॥१८२॥

नागौरिय नृप कज्ज, दीन पतिसाह जोधपुर।
इहै आदि हम उतन, सो ब आवैं प्रभु उप्पर ॥

यदुपति ज्यौं पंडवनि, कलह मैं आरति कप्पहु।
नृप कै नंद रु नारि, थान निर्भय तहँ थप्पहु॥
आयौ ब साह औरंग चढ़ि, हम लरिहैं सब प्रभु हुकम।
राजेस राण जगतेस सुअ, रट्ठौरनि राखहु सरम॥१८३॥

रवि बंसी महाराण, राण राहप हरि रूपह।
श्री दिनकर सक बंध, न्याउ नरपाल अनूपह॥
कृतब ऊँच जसकरन, पुन्य पालह प्रथवीपति।
पीथल राण प्रचंड भाणसी राण देव भति॥
भल भीम अजैसी लखमसी, अरसी राण महा अडर।
सुलतान गहन मोखन सकल, राण एह राजेस बर॥१८४॥

राण हमीर सुरीति, राण खेतल अभंग रिन।
लाखनसी बहु लील, राण मोकल उदार मन॥
कुंभ राण जग कित्ति राण कुल रूप रायमल।
सबल राण संग्राम, उदय नित उदय राण इल॥
कायम प्रताप अमरह करण जगतसिह जग जोरबर।
सुलतान गहन मोखन सकल, राण एह राजेस बर॥१८५॥

रामचंद राजेंद, बंधु लच्छन सु बीर बर।
कृष्ण देव रिपु काल, कंस आसुर विधंस कर॥
कैरव कण कण करण, जंग जोधार जुधिष्ठिर।
अर्जुन भीम अभंग, सूर सहदेव अचल सर॥
नरनाह बिरुद पंडव नकुल, असुर संहारन बिरुद इन।
राजेस राण जगतेस सुअ, पुहवि रखी सो क्षत्रिपन॥१८६॥

तुम हिदूपति प्रगट, तुमहिँ दिनकर हिदूकुल।
तुम हिदू उद्धरन, बिरुद सरनागय बत्सल॥
तुम करुनाकर सुकृत, तुम सु कलियुग दुख कप्पन।
अबलनि तुम आधार, तुम सु असुरेस उत्थप्पन॥
इन धर अनादि अवनीस तुम, खग्ग तेज बंदै खलक।
राजेस राण जगतेस सुअ, तुम सब हिदू सिर तिलक॥१८७॥

सीसोदा चहुआँन, तुँअर पाँवार रट्ठवर।
हाड़ा कूरँभ गौड़, मोरि यादव बड़गुज्जर॥

झाला भट्टी डोड, दह्या देवरा बुंदेला।
बड़गोता दाहिमों, डाभि बारड़ बग्घेला॥
खीची पड़िहार सु चावड़ा, संखुल गोहिल धंधलह।
राजेस राण सब हिदुपति, टॉक पुँडीर सु सिधलह॥१८८॥

तिन प्रभु सरनहिं तक्कि, धाइ आवहिं आसा धरि।
राखहु श्री महाराण, हिदुपन सबल असुर हरि॥
दिसि दिसि में दीवान, साँइ सम कोइ न दिट्ठौ।
सुलतानह हम सत्थ, रोस करि औरंग रुट्ठौ॥
अमरख सुचित्त रक्खैं अधिक, क्षत्रीपन मेटंत खल।
असुराइन सौं ब उथप्पि कैं, बसुमति लीजै अप्प बल॥१८९॥

( दोहा )

इहिं बिधि गुरुता लखि अधिक, पठयौ दूत प्रसिद्ध।
पत्तौ सो उदयापुरहिं, अबिलंबन अबिरुद्ध॥१९०॥
हिदू पति भेटे हरखि, दिय पय नमि अरदास।
बिनय सु अक्खैं मुख बचन, सानंदित सोल्लास॥१९१॥
बंची सो अरदास बर, उपमा बिनय अनूप।
कमधज्ज रु कबिलेस कौं, सकल लिख्यौ सु सरूप॥१९२॥
देइ दिलासा दूत कौं, फेरि लिखै फुरमान।
सब राठौरनि सत्थ कौं सुंदर बिधि सनमान॥१९३॥

( कवित्त )

राज राण मति मेर, तदपि इह लखि चतुरं तन।
महाराय रावरह, राव रावत सब राजन॥
पूछै निय उमराव, कहौ कैसौ मत किज्जै।
काम पख्यौ कमधजनि, साहि दल सज्यौ सुनिज्जै॥
अक्खै सु ताम उमराव इह, जानि चित्त वृत्तिहिं जिन।
बेगैं बुलाउ प्रभु रट्ठवर, पुहवी रक्खहु अप्प पन॥१९४॥

सुनि इह श्री महाराण, लिखै फुरमान सु लाखन।
सनह रट्ठवर सर, सदा हम तमहिं सग्गपन॥

सजि आवहु हम सरण, भूलि नन धरहु चित्त भय।
हौं अभंग बर हिदु, खग्ग सब असुर करौं खय॥
सुलतान समर करि संग हौं म्लेछ्छ रहैं को हम सँमुख।
सत खंड करौं बर समर सजि, दुष्ट तुमहिँ जो देइ दुख॥१९५॥

सेख सकल संहरौं सैद पारौं सब पत्थर।
पच्छारौं सु पठान, लोदि बल्लोची भक्खर॥
सरवानी भंभरिय, हनौं हबसी निय हत्थहिं।
रन रोलवौं रुहिल्ल, मुगल सु करौं बिन मत्थहिं॥
गाड़ौं धर रूमी गक्खरी, उजबक्कनि सद्धौं सु असि।
कहि राज राण कमधज्ज हौं, रक्खौ यौं तुम रंग रसि॥१९६॥

ऊज्जर करि अग्गरौ, ढाहि ढिल्ली ढंढोरौं।
लाहोरिय धर लुट्टि, तटकि तुरकानी तोरौं॥
खनि नंखौ खंवार, बेगि खुरसान बिहंडौं।
परजारौं पट्टनहिं, देस भक्खर सब दंडौं॥
सु बिहान साहि औरंग कौ, गज समेत जीवत गहौं।
हौं राज राण तो हिदुपति, कहा अधिक तुम सौं कहौं॥१९७॥

बिस्तारौं बर बेद, पुहवि रक्खौं सु पुरानह।
काजी सत्थ कतेब, करौं सब छार कुरानह॥
चकता करौं सु चून, थान निज दिल्ली थप्पौं।
रक्खौं हिदू रीति, आसुरी रीति उत्थप्पौं॥
ईस्वर प्रसाद बर उद्धरौं, म्लेछ्छ तित्थ खंडौं सु महि।
रक्खौं सु सकल रट्ठौर कौं, कोपि राण राजेस कहि॥१९८॥

मीर मलिक मस्संद, भूत सम तेह भयंकर।
घन घेरे रिपु घल्लि, चुनिग चुनि हनौं निसाचर॥
युग्गिनि रख सज्जरक, बीर पंखिनि बेतालह।
देत भूत भख देहुँ, करौं असपति खय कालह॥
रक्खौं सु हिंदुपन बीर रस, बसुमति रक्खौं अप्प बल।
तौ राज राण जगतेस सुअ, खग्ग प्रान जित्तौं यु खल॥१९९॥

( दोहा )

बल बँधाइ सु बिसेस तैं, दल लिखि अनुगहि दीन।
बेगि बुलाए रट्टवर, हिदूपति सु प्रबीन॥२००॥

रंग बढ़ै सब रट्ठवर, ले निय परियन लच्छि ।
मेदपाट पति सौं मिलै, अब झख मारौ मिच्छि ॥२०१॥

( कवित्त )

इभ गरुये इगबीस, दोय दस सहस तुरंगम ।
कोटिक रूप रु कनक, पवर बहु रथ पवनंगम ॥
सतक जंत्रि भर सस्त्र, करभ युग सहस मत्त कल ।
कलहंतनहि सकज्ज, सहस पण बीस पयद्दल ॥
इतनै सु सत्थ परिकर अमित, महाराइ सुत मज्झ बर ।
राजेस राण सौं रट्ठवर, आइ मिलै असुरेस डर ॥२०२॥

गरुअ गात गजराज, सकल स्रंगार सुसोभित ।
कनक तोल तिन मोल, अस्व एकादस उप्पित ॥
खग्ग एक खुरसान, कनक नग जरित कटारह ।
इक हीरा सु अमोल, दाम दस सहस दिनारह ॥
कमधज्ज सकल कर जोरि करि,प्रभु नमि मुक्किय पेसकस ।
श्री राज राण जगतेस कै, रक्खी हित धरि रंग रस ॥२०३॥

( दोहा )

सब ही सनमाने सुभट, बर बैठक सु बताइ ।
बीरा और कपूर बर, सेंकर अप्पै सॉइ ॥२०४॥
खरच कज्ज सु बिचारि खिति, दीनै द्वादस ग्राम ।
नगर कैलवासौं निरखि, अवनि सकल अभिराम ॥२०५॥
किहिँ मुक्ताफल माल किहिँ, हय गय गॉउ सहेत ।
रीझि राण राजेस बर, दिन दिन सुभटन देत ॥२०६॥

———

# दसम विलास

( कवित्त )

करिय अहोनिसि कूच, साहि अजमेर सँपत्तह।
बंकागढ़ बिटुलिय, राजि पट महल सु रत्ताह॥
रहै तत्थ असुरेस, बिकट चौकी बैठाइय।
परिय कटक गढ़ परधि, जलधि ज्यौं दीप जनाइय॥
निसुनीब तत्थ आसुर नृपति, जानै हिदू जोरबर।
रवि बंस राण राजेस कौ, सरल गह्यौ बर रट्ठबर॥ १॥

( दोहा )

तप्पौ अधिक तुरकेस तहँ, सुनि हिदूपति नाम।
कलमलि उर कर मींड़ कहि, हा हिय रही सु हाम॥ २॥
हम सौं लरि भरि रक्खि हठ, गए सु तजि धर गेह।
क्यौं करि रहि हैं इक्खियैं, राण सरण अब एह॥ ३॥
जहाँ जाइ तहाँ जाइ कैं, गहौं यु तिन परि गैल।
तरु तरु पत्ता सु पत्ता करि, सब ढंढौरौं सैल॥ ४॥
स्वर्गहिं सेढिय जाल जल, पर्वत गुहा प्रदीप।
खनि कुदाल पाताल खिति, अरि आनौं अवनीप॥ ५॥

( कवित्त )

करि यों मानस कोप, दिन्न फुरमान दिग्ध गस।
कैलपुरा प्रभु कज्ज, बढ़हिं जिन सुनत बीर रस॥
सुनहु राण राजेस, साहि औरंग समक्खिय।
हम सु सत्रु बहु हठी, रट्ठवर क्यौं तुम रक्खिय॥
अप्पौ सु एह हम कज्ज अब, कैं कलहंतन सद्य करु।
नन रहै एह किनही नृपति, उदय अस्त रवि चक्क तर॥ ६॥

इन लुट्यौ अग्गरौ, देस दिल्ली धर दाहिय।
कियौ कलह हम महल, पालि सब ही पतसाहिय॥
मारि थान मेड़ता, अप्प बल लयौ योधपुर।
सल्लै ज्यौं नटसल्ल, राह सल्लै यु अम्ह उर॥

रक्खै यु तुम्ह तिन रिपुन कौं, बढ़ि हैं तौ अप्पन बिरस ।
राजेस राण रट्ठौर दै, साहि सत्थ रक्खौ सुरस ॥ ७ ॥

( दोहा )

बंचि साहि फुरमान विधि, पाइय सकल प्रवृत्ति ।
राण लिखै फुरमान फिरि, साहि जोग सब सत्ति ॥ ८ ॥

( कवित्त )

रक्खै हम रट्ठौर, सत्थ जसवंतराय सुत ।
इन जौ सत अपराध, कियै तौऊ इह संमत ॥
करन मतौ सो करहु, जोर कहा कहिय जनावहु ।
कहौ सु आवन कल्हि, अज्ज सोई किन आवहु ॥
जैहौ सु लेइ तब जानियहिं, प्रभु पन और सु पुरुष पन ।
राजेस राण कहि साहि सुनि, बसुमति रहि हैं बर बचन ॥ ९ ॥

आइ गहैं को इनहिं, देव कहा दैत रु दानव ।
रक्ख सज्ज खरिसाल, मिलहिं जौ कोटिक मानव ॥
अब हम त्यौं ही एह, स्नेह हम इन गुरु सद्यन ।
अप्पैं जौ इन छेह, तौ व कैसौ क्षत्रीपन ॥
कहियै सु आदि ही अह्म कुल, सरनागय वत्सल बिरुद ।
राजेस राण कहि साहि सुनि, महि उपगार बड़ौ मरद ॥१०॥

( दोहा )

गयौ अनुग अजमेर गढ़, असपति कर फुरमान ।
दीनौं हिदु दिनेद कौ, बीरा रस बाखान ॥११॥
बंचि बंचि दिल्लीस बर, बढ्यौ रोस बिसेस ।
फेर दुतिय फुरमान दिय, नागद्रहा नरेस ॥१२॥

( कवित्त )

मिडि देस मेवार, कोट गढ़ ढाहि ढेर करि ।
आऊँ उदयापुरहिं गाहि हय गय पाइनि गिरि ॥
रावर रावत राइ, आइ फिरि हैं जे अड्डै ।
संहरि तिन संग्राम, यवन धर थप्पौं जड्डै ॥

जरि थान थान थाना यतन, रुंधि राह चहुँ कोद रुख ।
राजेस राण सुलतान कहि, मंडय कौ हम सेन मुख ॥१३॥

तोयधि भुज बल तिरै, कवन तुल्लै गिरि कद्यहिं ।
पावक को मुँह पिवै, सिंह सनमुख रिन सद्यहिं ॥
महि कौ थंभय मरुत, नाग कहु कवनु सु नत्थय ।
गयन खंभ कौ देय, सोत्र जितैं हम सत्थय ॥
हट छंडि अलिय इन देहु हम, सीख कहा तुम सिक्खवैं ।
राजेस राण सुलतान कहि, अनम सोइ हमसौं नवैं ॥१४॥

( दोहा )

हिंदूपति फुरमान यों, बंचिहु तिय बरजोर ।
अप्प दयौ फुरमान इह, साहि करौ किम सोर ॥१५॥

( कवित्त )

जरहु थॉन तुम जितै, इक्क दिन तितै उठावहिं ।
आलम प्रथम उथप्पि, बहुरि औरहिं बैठावहिं ॥
मेदपाट महि रज्ज, सहस दस गाम ईस बर ।
एकलिग अम्ह दियै, कबहुँ नावै किनही कर ॥
आवौ ह्र सुरेस अनेक इहिं, कट्ठि बंक सूधे करैं ।
राजेस राण कहि साहि सुनि, तोयधि यों भुजबल तिरैं ॥ १६ ॥

ऊजर करि अग्गरौ, धाइ लाहोर लेहुँ धन ।
दिल्ली करौं दहल्ल, तोरि तुम तखत ततख्खन ॥
अलवर नरवर आइ, थान थप्पैं रिनथंभहिं ।
उज्जैनी आहनौं, धार मंडव हनि डिंभहिं ॥
गुजरात देस लै दंड गुरु, सज्जौं दल सोरठ सकल ।
राजेस राण कहि साहि सुनि, तुल्लौं यों सुरगिरि अतुल ॥ १७ ॥

( दोहा )

रोस राण परवान कौं, बंचत बढ़्यौ बिसेस ।
तृतिय बहुरि फुरमान तिन, अप्यौ इह असुरेस ॥१८॥

( कवित्त )

श्रीपुर तुम संहरयौ, कोप हम बिलय सुकिन्नह ।
रूप पुत्ति रट्ठवरि, लग्गि हम सौं फुनि लिन्नह ॥
दंड देत देवल्या, नालि बंधन सु निरंतर ।
दोइ सहस दीनार, ऐन सल्लै उर अंतर ॥
सल्लै यु सत्रु ए तुम सरन, सो ब सिताब समप्पियहिं ।
राजेस राण सु बिहान कहि, कलह मूल तैं कप्पियहिं ॥१९॥

राजथान निय रचौं, बास चित्तौर बसाइय ।
आनौं दिल्लिय यहाँ, सेन घन लच्छि सजाइय ॥
नौबति नद्द निसान, घोस इहिं तखत धुराऊँ ।
सचौ तौ हूँ साहि, बहुत कहि कहा बताऊँ ॥
फुरमान लिखेब कहा सु फिरि, तिहुँ तिहुँ बेर कही सु तुम ।
राजेस राण सुलतान कहि, अब जिनि कद्दौ दोस हम ॥२०॥

( दोहा )

यौं तीजौ फुरमान पहु, राण बंचि राजेस ।
क्रूर कोप करि लिखि कहैं, सुनि औरंग असुरेस ॥२१॥

( कवित्त )

जिहिं रक्खैं जगदीस, अप्प इकलिग ईस वर ।
जिहिं रक्खैं जोधार, राण अनर्मा राजेसर ॥
जिहिं रक्खैं योगिनी, रिधू चित्तौर सु रानी ।
जिहिं रक्खैं बावन्न, वीर मुख कह कह बानी ॥
पतिसाह मात आवै प्रगट, बरस सहस लौं जौ बिढ़य ।
सुलतान साहि औरंग तदपि, चित्रकोट कर नॉ चढ़य ॥२२॥

जौ हेमालय गरहु, गहौ जौ कासी करवत ।
जौ जीवत धर गड़हु, पड़हु जौ चढ़ि गढ़ परवत ॥
जौ जालंधर जाइ, सीस कालिका समप्पै ।
जौ दिसि दिसि बल देइ, काइ तिल तिल करि कप्पै ॥
जागती जोति ज्वालामुखी, जौ ज्वालावलि मैं धँसै ।
राजेस राण कहि साहि सुनि, बहुरि जनम ले भल बसै ॥२३॥

( दोहा )

अनुग हत्थ फुरमान इह, दयौ तृतीय दिवान।
तहिँ फुनि करिकैँ गति तुरत, सौंप्यौ जइ सु बिहान ॥२४॥

बंचि साहि सब ही बिगति, जानि हिदुपति जोर।
बढ़न कज्ज तब हीँ बिपल, बज्जी बंब बकोर ॥२५॥

धुर कत्तिय पंचमि सु धुव, सागर जल ज्यौँ सेनु।
सज्जि चल्यौ दिल्लीसवर, रवि नभ ढंकिय रेनु ॥२६॥

( छंद भुजगी )

चढ़्यौ सेन सज्जैँ सु बाजी चकत्ता,
मनौँ मास भद्दौँ महा मेघ मत्ता।
सजैँ सिंधुरं पाखरगं सनाहं,
करैँ बंधि खग्गं दुधारा दुवाह ॥२७॥

किनं पिट्ठि सज्जै लसँ नारिगोरं,
किनं पिट्ठि नेजा धजा बै किसोरं।
किनं पिट्ठि सोहै ढलक्कंति ढल्लैँ,
किनं लोह कोटी हटैँ मग्ग हल्लैँ ॥२८॥

किनं बंधि कट्टार सुंडार दंतै,
किनं पिट्ठि डोला चलै इक्क पतै।
ठनंकार घंटा रवं तं घनंकै,
घनं घुघरं पाइ ग्रीवा खनंकै ॥२९॥

झरै दान गधं भवैँ भौंरं झौरं,
लसैँ तेल सिंदूर फुन्नि सीस चौरं।
पढैँ धत्त धत्ता मुहं पीलवानं,
अगगग्ग गज्जैँ महा मेघ जानं ॥३०॥

चलैँ अग्ग पच्छैँ सभाला चरख्खी,
पुलै वायु बेगं नभं जानि पख्खी।
जरै सृंखला पाइ गट्टै जंजीरं,
किनं सात कोंभं सु कुंभं कॅटीरं ॥३१॥

कितै अग्ग करिणी करैं ताम चल्लैं,
उमत्तैं गुमंतै तरू कै उखिल्लैं।
किन पिट्ठि नोबत्त बज्जै निहस्सैं,
सुभै सेन मज्झै करी दो सहस्सैं ॥३२॥

हयं हंस बंसा तुला हेम तुल्ला,
कितै अंग ऐराक देसी असीला।
कितै कोकनी बाजि कच्छी कबिल्ला,
किहाड़ा खुड़ा रत्तड़ा केक निल्ला ॥३३॥

कितै सिघली जंगली जा सिंघाला,
कितै जाति साणौर सारंग फाला।
पंखाला जंघाला सिहाला पवगा,
कितै आरबी कासमीरा लतंगा ॥३४॥

कितै जाति कांबोज बंगाल देसा,
खुरासानि खंधारि खैगा खुरेसा।
कितै भौंर भारी जनौं अंग भ्रगा,
चलैं चंचलं चाल चाला सु चंगा ॥३५॥

कितै पौंन सत्थी धरा पौन पत्था,
रजै रूप राजी मनौं सूर रत्था।
कितै पानि पंथा तुटै जानि तारा,
कितै जाति तेजी तुरक्की तुपारा ॥३६॥

कितै पर्व्वती अस्त्र प्राकंम पूरै,
सजी साकती स्वर्ण सोभा संपूरै।
कितै थाल मज्झैं ततत्थेइ नच्चैं,
तिनै लोयनं लोल संसार रच्चैं ॥३७॥
झिलंती जरी झूल सा पंचरंगै
रजैं पूछ ज्यौं चौर सालं तरंगै।
सिखा दीप ज्यौं ऊँच सोभै सुकर्णं,
गुही केस बालं कचं स्याम वर्णं ॥३८॥
बढ़्यौं हेख हेखा रवं सोर सोरं,
कियै कंध बंकै चलै बंधि कोरं।

उभै लख्ख यौं पख्खरे है अनूपं,
चढ़ै खान सुलतान राजान चौपं ॥३६॥

पुलै अग्ग पाले हटाले पघाले,
रिसाले रुपाले रँगाले सिघाले।
मदाले मुछाले मताले मरद्द,
दझाले दुझाले कितं नाद रद्द ॥४०॥

झुझारे करारे अकारे झिलंते,
खिलारे खुमारे अखारे खिलंते।
डिंभारे डरारे डरँ ना डहक्कैं,
गिरा गुंजतें गैन गज्जै गहक्कैं ॥४१॥

हसंते लसंते धसंते हलक्कैं,
कलं कूदते खुंद करतें किलक्कैं।
सजै आयुध स्वाँग छत्तीस संघैं,
कटारी कृपानहुँ दो तौंन बंधैं ॥४२॥

गहैं तोब कंधै भरैं सोर गोरी,
गुरु गज्जि आवाज जानौ कि होरी।
धनुर्बान कंमान जे हत्थ धारैं,
प्रहारे उड़ंते खहं पख्ख पारैं ॥४३॥

सजै टोप संनाह युं युद्ध मंता,
गदा गुर्ज कत्ती किनं हत्थ कुता।
दुरंती लसैं पिट्ठि गट्टी सु ढल्लं,
मिलै कोटि पाला दलं जानि मल्लं ॥४४॥

भरै यान जंत्री सु आराब भारं,
सयं पंच बीसं सजै साज सारं।
धुरा अस्व जोए किनं सेत धोरी,
जुपे जंत्रि किहिँ संबरं रोझ जोरी ॥४५॥

दलं मध्य दिल्लीसरं अप्प दीपैं,
जनौं मान लकेस को सोइ जीपैं।
बन्यौ रूप आरोह ऐराक बाजी,
सुभै स्वर्ण माणिक्य साकति साजी ॥४६॥

छजै दंड सोवर्ण जा सीस छत्रं,
उभै उद्यलं चौरं दुरते पवित्रं।
चहूँ ओर जा गुर्ज बरदार चल्लैं,
छरीदार हज्जार के सेन ठिल्लैं ॥४७॥

भरी खच्चरं सहस स्वर्णं खजान,
गिनै कोन करहा दलं नत्थि गानं।
सजी नारि पिट्ठैं छुटंती हवाई,
कितै स्वान चीता सु सत्थैं सजाई ॥४८॥

उड़ै रैनु ब्यूहं सु ढंक्यौ अयासं,
भयौ भानु बिबं मनौं संझ भासं।
महा सेल कट्ठैं करैं सुद्ध मग्गं,
भरं भूरुहं भर करं क्रखि भग्गं ॥४९॥

करंतैं पयानं उरझैं कुरगा,
जनौं जलधि समेल कालिदि गंगा।
नदी ताल द्रह कुड बहु सुक्कि नीरं,
घुरै घोष निर्घोप नोबति गुहीरं ॥५०॥

मच्यौ सेन सोरं सुनै कौ सु सहं,
गजैं नारिगोरा मनौं मेघ भहं।
प्रति द्यौस दर हाल कीये पयानं,
प्रपत्तौ दलं मज्झ मेवार थानं ॥५१॥

( दोहा )

मेदपाट पत्तौ सु महि, चढ़ि औरँग असुरेस।
बोलि सकल उमराव बर, राण तदा राजेस ॥५२॥

( छद पद्धरी )

रस राजनीति राजेस रान, दरबार जोरि बैठे दीवान।
छाजंत सीस नग जरित छत्र, पढ़ि उभय चौर उज्जल पवित्र ॥५३॥

हय हत्थि पयद्दल मिलि असंख, जिन सजत दिल्लिपति होत झंख।
महाराय सबल पद धरन धीर, बोले सु ताम अरिसिंह बीर ॥५४॥

जयसीह कुँअर बोले सुजान, भलहलत तेज जनु जिट्ठ भान ।
भल भीम रूप भीमह कुमार, बोले सु जंग बहु जैतवार ॥५५॥

रावर सु बोलि जसकरन रंग, असुरेस सल्ल अनमी अभंग ।
भल मंत भेद धर भावसिंघ, रानाउत रक्खन जोर रिंघ ॥५६॥

महाराय मनोहरसिंघ मान, गिरि मेर नंद गिरिवर गुमान ।
दलसिंह सिंह रिपु दलन दुट्ठ, कंकाल कलह जनु कालकुट्ठ ॥५७॥

भगवंतसिंघ कुँवर सभाग, बर फतेसिंघ गुरु खाग त्याग ।
सु गुमानसिंघ अरिसिंघ नंद, दरबार आइ जनु ससि दिनेंद ॥५८॥

रजवट्ट रूप सवलेस राव, चहुवान चंड चित लरन चाव ।
झाला नरेंद सद्दै जुझार, कहि चंद्रसेन जसु अचल कार ॥५९॥

केसरीसिंघ रावत सु कित्ति, जसु कुँवर गंग मह जंग जित्ति ।
झनकंत खग्ग झाला सुजैत, दिल्लीस गहन जौ दाव दैत ॥६०॥

गढ़पति पँवार दाता दुझल्ल, बर बीर राव भनि बैरिसल्ल ।
महसिंघ बंक रावत उमत्त, चवियैं सु चौड हर चंड चित्त ॥६१॥

रन अचल सु रावत रतनसेन, फदै स रिपुन ज्यौं फंदि एँन ।
सामलहदास कमधज्ज क्रूर, नरनाह बिरुद जिन मुक्ख नूर ॥६२॥

रावत रढाल रिन मानसिंघ, जित्तन सु जग भुज सबल जंघ ।
केसरीसिंघ चहुवान राव, घन घटै मिन्छि जिन खग्ग घाव ॥ ६३ ॥

लीयैं सु चौंडहर नीति लज्ज, केसरीसिंघ रावत सकज्ज ।
महुकंमसिंघ सगता सुभास, राठौरराय बर दुर्गदास ॥६४॥

सोनिंग देव सामंत सूर, चालुक्कराय बिक्रम बिरूर ।
रावत रुखमांगद सुभट रूप, जसवंतसिंघ झाला सु भूप ॥६५॥

गोपी सु नाह राठौर राइ लहि समर समय जनु सोर लाइ ।
प्रोहित सु राजगुरु जग प्रसिद्ध, सु गरीबदास बहु मंत सुद्ध ॥६६॥

गढ़पती महेजा अमरसिंह, बर रतनराव खीची अबीह ।
सद्दै सु अनी उमराव सब्ब, आदर समान जिन गुरु अदब्ब ॥६७॥

प्रणमेवि सकल महाराण पाइ, बैठक सु कीय बैठे सुआइ ।
श्रीराजसिंघ राना सनूर, कहि नाम देत बीरा कपूर ॥६८॥

( कवित्त )

सुनहु सकल सामत, रान जपै राजेसर।
सजि दल बल सब्बान, इत्थ आवहिँ असुरेसर ॥
युद्ध करैँ जिहि थान, बेगि सौ थान बतावहु।
भज्जैँ जहँ यवनेस, असुर सहरि घर आवहु ॥
बिन युद्ध कियै बुज्झै न इह, दिल्लीपति औरँग दुमन।
इक मंत होइ सब अवनिपति, पच्छौ ए पारौ पिसुन ॥६६॥

अक्खैँ तब उमराव, जोरि कर युगल सॉइ सम।
असुर कहा हम अग्ग अबहिँ ठिल्लैँ करि उद्धम ॥
सिहासन सोभियहिँ, सॉइ हम हुकम सु किज्जै।
दिसि दिसि सज्जिय दुग्ग, रटक रिपु सौँ इहि लिज्जै ॥
जै हैँ सु भज्जि इह यवन दल, कबलौँ रहि करिहैँ कलह।
गहि लेहुँ असुरपति गज चढ़्यौ, सजि तुरंग पख्खर सिलह ॥७०॥

( दोहा )

गरीबदास प्रोहित सु गुरु, अक्खिय तिन फिरि एह।
एक सुमंत सु अरज इक, अब धारहु सु सनेह ॥७१॥
प्रभु हम सकल पहारपति जित्तहु पर्वत जोर।
घाट घाट रिपु घेरिकै, बेगैँ देहु बहोरि ॥७२॥
बिग्रह इह कै बरस लौँ, सु बढ़्यौ जानि बिसेस।
अगनित दल असुरेस प, हम मन इह अंदेस ॥७३॥

( कवित्त )

ये सब अद्रि अभंग, नीर छाया युत निर्भय।
जंग करहु यवन सौँ, जरिग घन घाट सदा जय ॥
लगैँ न तह इन लग्ग, असुर कोटिक जो आवहिँ।
बंकै निज बर बीर, मंडि अब असपति ढावहिँ ॥
आपके पंच सत पंच अरि, होइ तऊ रक्खैँ यु हनि।
इहिँ मंतहिँ श्री महाराण निति, असपति दल अकतूल गिनि ॥७४॥

उदया राण अभंग, सक्क चीतौर समै सर।
आए इनहीँ अचल, अर्‌यौ जब साहि अकब्बर ॥

सर भर किय संग्राम, बरस द्वादस लौं बिग्रह ।
अंत भगौ असुरेस, गयौ सिर पटकि स्वयं गृह ॥
ए अचल किए इक लिंग हर, अचल राज कै काज तुम्ह ।
इहिँ मंतहिँ श्री महाराण निति, अप्प सु जानि रु मन्नि अम्ह ॥ ७५ ॥

प्रगटै राण प्रताप, जग फुनि इहिँ गिरि जित्तै ।
घोघुंदा पुर घाट, घेरि आसुर सब घत्तै ॥
अबदुल्ला सु नवाब, गिरुअ गज सहित गिराइय ।
मानसिघ निय मान, गयौ कूरंभ गमाइय ॥
दल सहस बहत्तरि असुर दलि, हिंदूपति रक्खिय सु हद ।
इहि मंतहिँ श्री महाराण नित, मुगल ईस छंडै सु मद ॥ ७६ ॥
अमर राण अवदात, साहि जहँगीर सज्जि दल ।
आयौ चढ़ि असुरेस, मज्झ मेवार सु महियल ॥
थप्पि च्यारि असिथान, लैन बसुमति सु हटयौ बहु ।
सत्त बरस लौं सीम, नेटि अरि भग्गि रहै नहु ॥
असि च्यारि थान इक दिन उठै, अमर राण लिन्नी सु इल ।
इहिँ मंतहिँ श्री महाराण निति, बसुधा धरए अतुल बल ॥ ७७ ॥

कुसल रहैँ निय कटक, बैरि दल होइ बिहंडह ।
रुक्कै आवति रसत, भूख मरि ह्वैँ अरि भंडह ॥
भग्गैँ असपति भोर, इत्थ ज्यौं बहुरि न आवहिं ।
इहै मंत अह्म ईस, कियै सद्यन सुख पावहिं ॥
करियै न पिसुन भायौ कबहिँ, कथन खलक यौं करि कहैँ ।
राजेस राण इहि मंत तैं, दूध डग दोऊ रहैँ ॥ ७८ ॥

( दोहा )

सु बचन प्रोहित के यु सुनि, राजसिह महाराण ।
कुसल जैति दुहुँ कज्ज ए, मन्यौ मंत प्रमान ॥ ७९ ॥
करन दुर्ग्ग सज्जि कैँ कलह, जित्तन दल असुरेस ।
जानि सु परवत दल प्रबल राण चढ़ै राजेस ॥ ८० ॥

( कवित्त )

राण चढ़ै राजेस, सहस पण बीस तुरग सजि ।
घुरत निसाननि घोष, रबि सु ढकिय हय खुर रजि ॥

मयंगल दल मयमत, घटा उट्ठी कि स्याम घन।
पयदल सहस पचीस, सज्ज सायुध सूरं तन॥
रथ जंत्रि सहस सस्त्रहिं भरिय, करहा गिनति परंत किहिं।
जग मज्झ कवन जननी जन्यौ, जंग आइ जितै सु जिहिं॥ ८१॥

सत्थ चढ़ै अरि सिघ, बंधु महाराय बीर बर।
जैत हत्थ जैसिघ, कुँवर करमैत कुलोधर॥
भीम कुमार सभाग, जोध रावर जसवंतह।
भावसिघ भूपाल, अरिन जन करन सु अंतह॥
महाराय मनोहरसिह, चढि नृप दलसिह सु बीर नर।
सामंत राण राजेस कै, कलह कूर कंकाल कर॥ ८२॥

नृप अरसिह सुनंद, कुँवर भगवंतसिह भर।
फतैसिह करि फतै, गुनी सु गुमानसिह गुर॥
सबल राव सबलेस, चंद झाला रु जैत चिर।
सगतावत रावत्त, केसरीसिघ सिंह कर॥
पॉवार सु बैरीसल्ल पहु, महासिघ रावत मरद।
रावत चौडावत रतनसी, महुकमसिघ, सु बड़ विरद॥ ८३॥

सॉवल दास सकाज, राज रक्खन सु रट्ठ वर।
मानसिह रावत्त, सु मंत चौडाउत सुंदर॥
चाहुवॉन चतुरंग, राव केहरि रिन केहरि।
रावत केहरि रूप, चंड चौडाउत उच्चरि॥
रावत रुखमांगद बीर रस, सोलंकी विक्रम सु ध्रुव।
नृप दुर्गदास सोनिग सम, सकल रट्ठवर सत्थ हुव॥ ८४॥

युग झाला जसवत, गोप रट्ठौर जैत कर।
प्रोहित गिरवर प्रगट, बखत वल बखत सीह बर॥
रतनसेन खीची सु, वीर कन्हा सगतावत।
अबूमलिक अजेज, डोड महासिह सुहावत॥
गढपती महेजा अमर गिनि, झाला नृप वरसिघ झिलि।
चढ़ि चलै सज्जि चतुरंग चमु, मनौं उदधि सुरसरित मिलि॥ ८५॥

( दोहा )

मनौं उदधि सुरसरित मिलि, गुरु लहु अगनित भूप।
सत्थ राण राजेस कै, चढ़ै बीर रस चूंप॥ ८६॥

देवी पानिय देव गिरि, पंच कोस सु प्रमान।
प्रथम मुकाम तहाँ प्रवर, मंडि महा मंडान॥ ८७॥

सोर भटक अरु सेन सुर, गिरिवर अंबर गाज।
स्रवनन सद्द सुन्यौ परै, अरि दल बढ़त अवाज॥ ८८॥

प्रथम मुकामहिँ हिदुपति, मिलै आइ मेवासि।
पानौरा मेरहपुरा, जूरा पुरा जवासि॥ ८९॥

सजि पुलिद सब पल्लिपति, सहज पचासक सत्थ।
ध्रुव पय रोपन धनुषधर, समर सूर सु समत्थ॥ ९०॥

तरकस युग युग पिट्ठि तिन, संपूरित सर युद्ध।
कथै कत्थ नट बिकट लौं, दुरय न तिन रिपु युद्ध॥ ९१॥

तरु दल छेदै तक्कि कैं, व्योमहिँ उड़त विहंग।
वदि लाखक मैं दुज्जनहिँ, वेधत बान अभंग॥ ९२॥

प्रनमि हिदुपति पाइ सब, ठट्टै महलहिँ ठट्ट।
मनौं गंग यमुना मिली, सलिल समेल सुघट्ट॥ ९३॥

हुकम दयौ तिन करन हर, भारहु घाट सभार।
दस दस सहस रहौ सु भर, पिसुन न ह्वैं पैसार॥ ९४॥

खरच सु लेहु खजान तैं, ध्रुव पद रोपौ धीर।
रसित रुक्कि रिपु रुक्कि कैं, मारौ वड बड़ मीर॥ ९५॥

यौं कहि सब अभिमानि कैं, सबनि दयै सिरपाव।
अस्व कनक भूषन अषय, बसुधा ग्राम बढ़ाव॥ ९६॥

पंच फौज तिन रचि प्रबल, रहै घाट गिरि रुक्कि।
आवन जान न लहैं अरि, थान थान मग थक्कि॥ ९७॥

पत्त नैंनबारा सु पहु, गिरिवर तहँ गुरु गाढ़।
भार अठारह तरु भरित, अहनिसि लगत असाढ़॥ ९८॥

( कवित्त )

अहनिसि लगत असाढ़, नित्य बरषै तहँ नीरद।
नदी नाल नीझरन, सरस बसुधा रसाल सद॥

चहूँ ओर गुरु अचल, घाट दुर्घट घन घट्टिय।
बंकौगढ़ बहु बिकट, नारि अरि दलन निहट्टिय ॥
पत्तै सु थान महाराण तिन, नैनबारा गुरु गढ़ निपट
असपति अनेक आवै तऊ, जयति हिदुपति खग्ग झट ॥९९॥

समुह दल जैसिघ, कुँवर रक्खैं स कलापह।
दल सु भीम दक्खनहिँ मंडि बहु सुभट भिलापह ॥
भुजा बाम भगवंतसिह, महाराय बंधू सुअ।
रखैं पीठि महाराय, मनोहरसिह मेरु धुअ ॥
दिसि च्यारि रक्खि दिगपाल ए, च्यारि च्यारि हाजार हय।
नव सहस तुरग बिचि हिदु नृप, जुद्ध राण राजेस जय ॥१००॥

पातिसाह दल प्रबल, तदपि महराण तेज तिन।
परैं न अग्गैं पाउ, हिरनपति ज्यौं हूतासन ॥
तरु तरु थभतु तकतु, जकतु जहँ तहँ गुरु जंगल।
ज्यौं कुरंग जंगली, समै समतल महि मंडल ॥
सापुरस सीह सी बान इन, अचल अचल हैं आदरत।
औरंग सु सोवत ओझकत, चौंकि चौंकि उट्ठत चित ॥१०१॥

( दोहा )

असपति अहनिसि औझकतु, राण तेज असहेज।
आयौ कै आयौ सु अब, अनमी हिदु अजेज ॥१०२॥
मंडै भूलि न हूँ महल, सहल न चढ़त जगीस।
दहल राण राजेस की, दुरयौ रहत दिल्लीस ॥१०३॥
डरत डरत असुरेस दल, करत मुकाम सु कोस।
आए उदयापुर निकट, दुज्जन पूरित दोस ॥१०४॥
बसुधाधर देखै बिकट, औघट घाट अजीत।
थंभ्यौ निज दल तिनहि थह, भयौ साहि भयभीत ॥१०५॥
धसैं न कौ धाराधरहिँ, धर सम आए धाइ।
राणनि सुनि ये बत्त रुचि, कबिलेस सौं कहाइ ॥१०६॥

( कवित्त )

आवत जिन अहमेव, उनहिँ अहमेव सु आवहु।
देखि देखि निज दुर्ग, कहा निज मन कंपावहु ॥

धर सम आए धाइ, धसौं अब क्यौं न धराधर।
जुरौ आइ इत जंग, रोस करि लेहु रट्ठवर॥
पिखिब पहार परि क्यौं रहै, पय पय क्यौं थंभौ सु पथ।
राजेस राण कहि साहि सुनि, पवन बेग पक्खरहु रथ॥१०७॥

( दोहा )

लरौ तौ आवहु अचल बिचि, न तरु कि छंडिब देस।
जाहु साहि जुग्गिनिपुरहिं राण कहत राजेस॥१०८॥
संदेसा यौं स्रवन सुनि, लग्गी अरि उर लाइ।
रोस पूर महाराण कौ, सद्द हियै न समाइ॥१०९॥

मनु मद पीनौ मक्कडहिं, डसि बृस्चिक लगि भूत।
किं किं कौतुक ना करै, सो दिल्लीपति सूत॥११०॥

( कवित्त )

कथन राण अति क्रूर, भूरि भृकुटी चढ़ाइ करि।
दब्बि अधर कर मीडि, भूत भासुर सरोस भरि॥
चढ़न कह्यौ चकतेस, बरजि तब खान बहादर।
अहो कविले आलंम, बिकट अग्गैं पहार बर॥
नन लाग नारि गोरान, कौ हय रु हत्थी निबहै न तहँ।
इहि मंत अन्य दल पट्ठवहु, अप्पन साहि रहौ सु इहँ॥१११॥

मानि बहादर मंत, दिलीपति रह्यौ मानि डर।
सहिजादा निज सद्दि, अगुरु सुलतान अकब्बर॥
सकल भाँति सनमानि, कह्यौ तुम करौ कटक्की।
जोर हिदु गिरि जोर, हलकि गहि लेहु हटक्की॥
आवै सु दाइ दल लेहु अति, सैल सकल करिकैं सरद।
करि जोर हिदु दल सौं कलह, मही लेहु बड्डिम मरद॥११२॥

साहि हुकम सु प्रमान, लटकि सीसहिं चढ़ाइ लिय।
सत्थ करी सु सलाम, साहिनंदन अनंत त्रिय॥
अद्ध लाख सजि अस्व, सहस सिधुर मनु सैलह।
कितै खान उमराव, गर्व गाढ़ै लिय गैलह॥

हरवल हुस्सैन नवाब बहु, गोर नारि आराब गुर।
चढ़ि चल्यौ अकब्बर चंड चित, पत्त ततखन उदयपुर ॥११३॥

प्रबल पौरि प्राकार, पिक्खि प्रासाद गृहं गृह।
गोख झरोखा गिरुअ, जरित जारी सु जहाँ तहँ ॥
बहु देवल बाजार, हट्ट भनि केउ हजारह।
सिगी काम सपल्ल, अटा चित्रसारि अपारह ॥
जहँ तहँ सुकुंड बर बापिका, बन उपवन सरवर सलित।
भू नारि सीस जनु भालि यल, नगर उदयपुर चैन नित ॥११४॥

निरखि उदयपुर नैंन, रिपु सुपत्तै अद्भुत रस।
भुल्लि रोस सुधि भुल्लि, देखि कमठान चहौं दिसि ॥
सँमुँह करत सराह, वाह फुनि वाह बदंतह।
राजथान सच्चा सु, राण इतमाम अनंतह ॥
पुर चहुँ ओर सु पराव परि, विषधर ज्यौं चंदन बिटपि।
पतिसाह सु औरंग साहि पहु, थान थान तब थान थपि ॥११५॥

थप्पि थान चित्तौर, थप्पि पुर मडल थानक।
मंडलगढ़ बैराट, भैंसरौड़हिं सु भयानक ॥
दसपुर नीमच दुर्ग्ग, चलहु सतकधह चच्चर।
अरु जीरन उँटाल, कपासनि नगर राजसर ॥
जरि थान उदैपुर भरि यवन, अति अनीति बरती अवनि।
पतिसाहि साहि औरंग कौ, झक न परत छिनि रयनि दिन ॥११६॥

( दोहा )

थान जरै जहँ तहँ सु थिर, अरि औरंग असुरेस।
मेदपाट महि मंडलँ, राण सुनी राजेस ॥११७॥

( कवित्त )

मेदपाटपति महल, भूप भूपह सु भूमि भर।
महाराइ रावर, महिद रावत घन घुंमर ॥
राजा राव रढाल, आदि उमराव अनेकह।
हिंदूपति किय हुकम, सजौ निज सेन सटेकह ॥
भंजौब थान असुरान भर, निज निज धर रक्खौ सुनृप।
अनसक कंक अरि उथ्थपहु, तिल न गिनौ तुरकेस तप ॥११८॥

( दोहा )

हिंदूपति श्रीमुख हुकम, सुवर वीर सुप्रमानि ।
अप्प अप्प रक्खन अवनि, चढ़ै पवग पलानि ॥११९॥

( कवित्त )

गोपिनाह कमधज्ज, चढ़ै बिक्रम चालुक्कह ।
रावत रतन उदंड, चड चौंडाउत रूपह ॥
कहि सगताउत कन्ह, रग रुखमांगद रावत ।
चढ़ै राव चहुवॉन, केसरीसिह सुहावत ॥
सामलहदास कमधज्ज चढ़ि, चढ़ि दयाल मंत्रीस बर ।
केसरीसिह रावत चढ़ै, चौडाउत नृप रज्ज चिर ॥१२०॥

चढ़ै कुँवर बर गंग, केसरीसिह सुनंदन ।
सगताउत कुल सूर, जोर अरि जूह निकंदन ॥
दुर्गदास सोनिग, चढ़ै राठौर सुचडह ।
महुकमसिह मरद्द, चौंडहर अकल अदंडह ॥
काल नरिंद जसवंत चढ़ि, दिल्लीपति दल बल दहन ।
सामत राण राजेस कै, गुरु गुमान गय घड़ गहन ॥१२१॥

( दोहा )

चढ़ि उमराव चतुर्दसह, उद्धासन असुरान ।
सेन सहस दस अस्व सजि, निहसत नद्द निसान ॥१२२॥

———

# ग्यारहवाँ विलास

( दोहा )

सोलंकी विक्रम सुभट, गोपिनाह कमधज्ज ।
रोमी तिन घन रलतलै, साहसवंत स कज्ज ॥ १ ॥

आवत जब जानै असुर, देवसूरि दुर्घट्ट ।
रोमी द्वादस सहस दल, बल आराव बिकट्ट ॥ २ ॥

नारि तहाँ औघट निपट, पंचकोस परजंत ।
अस्व एक पथ अतिक्रमैं, चींटी ज्यौं सु चलंत ॥ ३ ॥

दीनौं आवन दुअन दल, नारि मध्य निरभार ।
रोकै तब दुहुँ राह कैं, पहुनि करन पैसार ॥ ४ ॥

मारि मचाई दुहुँ मरद, विक्रम चालुक बीर ।
गोपिनाह कमधज्ज नैं, मारै बड़ बड़ मीर ॥ ५ ॥

( छंद त्रिभंगी )

विक्रम बलवंता रणरस रत्ता अति हिउ मत्ता सामंता ।
पिसुननि पर पत्ता तेजी तत्ता बसुहव दत्ता दुर्द्धंता ॥
करवाल रु कुंता हत्थ फुरंता वीर बिरत्ता बाधंता ।
प्रजरंत पलित्ता जंगहिं जुत्ता धमचक धुत्ता गुरु गत्ता ॥ ६ ॥

रोमी मुँह रत्ता घेरि सुघत्ता भय भय भित्ता चल चित्ता ।
अल्लह उचरंता असुर उद्धता खब्बड़ खुत्ता मदमत्ता ॥
तक्कैं गिरि गत्ता सरण असत्ता मन सुमिरत्ता तिय पुत्ता ।
बिसरै सुधि बत्ता कै तनु छित्ता तरु तरु लित्ता बिलवंता ॥ ७ ॥

कितनेंक कबिल्ला उररि असिल्ला अक्खि इलल्ला महिमिल्ला ।
काजी बहु मुल्ला बिफुरि बिलुल्ला झर मुह झल्ला सिर खुल्ला ॥
नर निपट नवल्ला रंग रसिल्ला दंदहु झल्ला मनु मल्ला ।
खग तेजरु भल्ला बान बहिल्ला गुरु जग हिल्ला हर हुल्ला ॥ ८ ॥

कत्ती किलकिल्ला सक्ति सलिल्ला तोब त्रिसूल्ला जाजुल्ला ।
दल मचि दहचल्ला लोह उजल्ला नहिँ बिचि पल्ला भर भल्ला ॥
घूमत घायल्ला छक्क छयल्ला तजि गृह तल्ला एकल्ला ।
तुटि तूर तबल्ला ढरि गज ढल्ला कायर डुल्ला अकतुल्ला ॥ ९ ॥

सोलकी सूरा बबकि बिडूरा किय भकभूरा अरि भूरा ।
नाहर ज्यौं तूरा बजि रन तूरा सुर सिंधूरा परि पूरा ॥
पर दल चकचूरा करि बल क्रूरा बरि बर हूरा रिन रूरा ।
अरि विष अंकूरा सकल समूरा ज्यौं जर मूरा उनमूरा ॥१०॥

गोपा कमधज्जा सूर सकज्जा अटल अजेज्जा गुरु लज्जा ।
सिधुर हय सज्जा रूप सु रज्जा धर गिरि धुज्जा खग बज्जा ॥
तीखै तनु तज्जा भूरत भिज्जा गगन सु गज्जा आचिज्जा ।
भय करि रिपु भज्जा सीस सरुज्जा गिद्धिनि खज्जा गहि चुज्जा ॥११॥

दुज्जन दहबट्टा बिमन बिकट्टा खग मग खुट्टा उदभट्टा ।
नर के ज्यौं नट्टा उलट पलट्टा भरत कुलट्टा तंग तुट्टा ॥
जोधा रस जुट्टा घनदल घट्टा दुपट उपट्टा गाहट्टा ।
झुकि झुकि खग झट्टा उझट सझट्टा रिणरस लुट्टा आहुट्टा ॥१२॥

ररबरि घन रुंडा बिचलि बिहंडा महि परि मुंडा खल खडा ।
आसुर सु उदंडा बिलझ बितंडा प्रबल प्रचडा भुजदंडा ॥
कर सर कोदंडा बहु बलबंडा भल किय भंडा खल खंडा ।
करि कट्टि भसुंडा अरिन अखंडा चढ़ि रिण चंडा झरमंडा ॥१३॥

( कवित्त )

मंड्यौ झर मुछ्छाल, काल रोमीन खयं कर ।
सोलंकी नृप सूर, नाम बिक्रम सु बीर नर ॥
साच वाच सा धम्म, गोपि नायक युग कित्तिय ।
देवसूरि दुर्घाट, यवन सेना तिन जित्तिय ॥
लुटि लच्छि खजान अनेक बिधि, राणा राजेसर सुबल ।
जय पत प्रथम इहि जंग जुरि, भल भग्गौ असुराण दल ॥१४॥

———

# बारहवाँ विलास

( दोहा )

उदयभान कूँअर अमर, चाहुवान चतुरंग ।
उदयापुर थानैं उररि, मारै म्लेच्छ मतंग ॥ १ ॥

रुकमागद रावत्त कौ, कूँअर सूर सपष्ष ।
सहस पचीसक असुर पर, नंखी बग्ग समुष्ष ॥ २ ॥

सूरा एकहि सहस सम, सहसहिँ सद्धत एक ।
सहसनि हूँ सद्धै नहीं, सूरा एक अनेक ॥ ३ ॥

धनि आसंगनि धीर धनि, धनि धनि चित्त सुधर्म्म ।
सॉई कज्जैं रचि समर, मारै असुर अधर्म्म ॥ ४ ॥

पचीसौं हि पवंग सों, सहस पचीसनि मध्य ।
असुरायन उद्धस तैं, निकरै सेन सु सद्धि ॥ ५ ॥

( छंद हनुफाल )

तुटैब ज्यौं खहतार, कलि उदयभान कुमार ।
मह यवन सेन सु मध्य, योधार मंडिय युद्ध ॥ ६ ॥

करवाल कुंत रु कत्ति, आदेय देवि उमत्ति ।
रिपु उदरि परिय सु रौरि, दल मचिय दौरा दौरि ॥ ७ ॥

मुख चवत चूक रे चूक, भट बिकट अग्गि भभूक ।
बिफुरै सु हिदू बीर, मारंत बड़ बड़ मीर ॥ ८ ॥

हय हय सु केइ जकंत, के सिलह जीन कुकंत ।
उभकै सु सोवत केक, कहि तेक तेक रे तेक ॥ ९ ॥

भुंजतै कै भयभीत, उठि भगै बारि अपीत ।
सतरंज पासा सारि, झरपै सु खेलहिँ डारि ॥१०॥

कितनैंक करत निमाज, धावंत ध्यानहिँ त्याज ।
हलहलिय दल परिहाक, छबि उतरि उत्सक छाक ॥११॥

धुंधरिय नभ घन धोम, गडडंत गज्जत गोम ।
भरहरिय कायर भग्गि, लकलकिय उर घा लग्गि ॥१२॥

रिपु रुड मुंड रुड़ंत, मुख मार मार बकत ।
उड़ि स्रोन छिछि अपार, बहि चलै रत्त प्रनार ॥१३॥

भलहलत सिलह सभांन, झट उझट बज्जि अमान ॥
किलकार बीर कुकंत, हलकार केक हकंत ॥१४॥

कटि सीस नचत कमध, ज्यौं फिरत नर जाचध ।
कटकंत हड्डु कटक्क, खनकंत खग्गि झटक्क ॥१५॥

भभकंत इम्भ भसुड, बहिरत्त दंड बिहड ।
हय नरनि परि सहार, हरखत हर रचि हार ॥१६॥

गिद्धिनिय अरु गोमाय, पल लेइ केइ पुलाय ।
तुटि टोप तुबक रु त्रान, कोदंड कुत क्रपान ॥१७॥

चौसट्टि पीवत चोल, भरि भरि सु पत्र अलोल ।
बिहसँत बीर बेताल, कलिकाल झाल कराल ॥१८॥

अरि मित्र अप्पन आन, तन परत सुद्धि सयान ।
हहरंत कै मुख हाय, लगि जानि ग्रीषम लाय ॥१९॥

तरफरत कै अवतंग, असि छिन्न भिन्न सु अंग ।
संहरिय आसुर सैंन, जनु परिय सिह सु ऐंन ॥२०॥

अटक्यौ न किहिँ मुख आइ, बर बीर धीर बलाइ ।
चहुँवान रिन चित चड, अति सबल सकज अखंड ॥२१॥

निकरै सु अरिन निहत्ति, अखियात अचल सु किति ।
राणा महा राजेस, सनमान कीन बिसेस ॥२२॥

( कवित्त )

सनमानिय सु बिसेस, दिए बर ग्राम दोय दस ।
सोवन साकति अस्व, सरस सिरपाव जरक्कस ॥

कंक बंक करबाल, कनक नग जरित कटारिय ।
बीरा प्रबर कपूर, बहुत चित हित बिस्तारिय ॥
रिन रुकमांगद रावत कौ, उदयभान अत्थौ कुँवर ।
चहुवान बीर रस चौगुने राण कहत राजेस वर ॥२३॥

# तेरहवाँ विलास

( दोहा )

अंगज साहि औरग कौ, अकबर साहि अमान।
धस्यो पहारनि मध्य धर, रिन जित्तन महारान ॥ १ ॥

बाजी सहस बतीस सौं, नर वै केइ नवाब।
नारिगोर आराब गुर, सजि दल चढ़्यौ सिताब ॥ २ ॥

हरबल अल्लिहुसैन हुव, पक्कौ पंच हजार।
कलह कूर कंकाल कर, रढ़ छंडै नन रारि ॥३ ॥
झंड रुप्पि झारौल थह, द्वादस कोस प्रमान।
नैनवारा गिरिवर प्रगट, सुभट थट्ट महाराण ॥ ४ ॥

निसुनि बत्त हिंदू नृपति, सामंतनि सनमान।
पठये आसुरि सेन पर, जंगहि भीषम जान ॥ ५ ॥

( कवित्त )

तिनहि बेर तुरंत, बीर बिफुरंत खिवंतह।
तरित जानि तटकंत, बिमल कलिकंत बधंतह।
महासिध मुंछाल, राज रक्खन बड़ रावत।
रतनसीह गुरु रोस, चढ़ै रावत चौंडावत ॥
चहुवान राव फुनि सजि चढ़ै, केसरि सिंह सु कक बर।
त्रयवेनि सलित ज्यों सेन तिहुं, उलटि जंग असुरान पर॥६॥

बीर बैर बिडुरिय, भीर उम्भरिय रोस भर।
सिधु राग संभरिय, धोम धुंवरिय व्योम धर ॥
साँइ नाम संभरिय, सद्द सधुरिय सुत्रबक।
धक्क हक्क धमचक्क, उदरि आसुर झक उभझक ॥
सुंडाल काल लंकाल सम, झड झड देवे झपट।
रावत राण राजेस कै, लोह छोह पावक लपट ॥ ७ ॥

दुट्ठ हट्ठ दृढ़ मुट्ठ, भुट्ठ आरूट्ठ जुझारह ।
मंडि मार ढकचार, बज्जि बैरिन सिर सारह ॥
बरसि बान दुरि भान, रेंनु नभ उड्डिय डंबर ।
कल कल मचि मचि कूह, जूह कबिलान उझंझर ॥
तोवा करंत हहरंत हिय, घूक भंति रन बन घुसत ।
रावत्त मत्त महसिघ मुख, सत्रु सेन न धरंत सत ॥ ८ ॥

( छंद गीतामालती )

धसमसिय धर गिर सिहर उद्धसि बीर गुर गस उभ्भरै ।
कलकलिय परि मचि कूह कलकल झलल बिज्जुल उग्घरै ॥
झटझटिय बजि रिन झाक झरझट्ट त्रिघट घन घट तच्छयं ।
महसिघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभच्छयं ॥ ९ ॥

चल प्रचल अरि दल सकल चल दल होत रलतल सामुहैं ।
झलमलत सिलह स टोप झलमल चपल चचल आरुहैं ॥
करबाल रिपु कुल काल कर गहि मरद मारत म्लेछयं ।
महसिघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभच्छयं ॥१०॥

सलसलिय फनधर सधर संकर कंध कच्छप कसमसैं ।
झलझलिय जलनिधि सलिल थल जल अनल विनल सु उद्धसैं ॥
डर बिडर दिसि दिसि बिदिसि डंबर पह उझंखर पिच्छयं ।
महसिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभच्छयं ॥११॥

चढ़ि चाक चहुँ चक उझक हकबक छैल मद छक छुट्टयं ।
किलकत कंत हसंत कलरव जंग जहँ तहँ जुट्टयं ॥
मचि मार मार बकंत मुख मुख कच्छ ज्यौं नट कच्छयं ॥
महसिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभच्छयं ॥१२॥

खनकंत खग्ग उनग्ग खग्गन झनकि जानि कि झल्लरी ।
भनकंत भेरि नफेरि भुंगल तूर त्रबक दुरबरी ॥
गावंत सिंधु राग गोरिय पिसुन पारन पच्छयं ।
महसिघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभच्छयं ॥१३॥

कटि कंध अंध कमंध आसुर बीर नच्चत बावरै ।
झटकंत दिसि दिसि धाइ खग झट उझट सझट उतावरै ॥

सलहंत सूर सनूर साहस मीर मीरन संमिले ।
रघु चौंडहर गुरु रतन रावत रिनहिँ रिपुदल रलतले ॥१४॥

बिंबि खंड बंड बिहड बाहू मिन्छि मत्थय संभिरैं ।
लसि लोह छोह सु रत्त लोयन बीर रस बर बिस्तरैं ॥
घट बिघट घाट त्रिघाट घाइय घुरिय घन घन घंघलै ।
रघु चौंडहर गुरु रतन रावत रिनहिँ रिपुदल रलतलै ॥१५॥

भभकंत इभ्भ भुसुंड तुंडनि प्रचलि स्रोन प्रनालयं ।
ढरि ढाल लाल सु पीत नेजा ढंग मिलि ढकचालयं ॥
घूमंत असि छक बिछक घाइल दुट्टि खप्पर टलटलै ।
रघुचोड़हर गुरु रतन रावत रिनहिँ रिपुदल रलतलै ॥१६॥

लटकत किहिँ सिर पीठि लड़लट तदपि घट घट ना घटैं ।
असि कक बंक उभारि अवर फिरत टट्टर कै फटैं ॥
उड़ि छिछि स्रोन सजोर संमुह चोल चच्चर संचलै ।
रघु चौंडहर गुरु रतन रावत रिनहिँ रिपुदल रलतलै ॥१७॥

पय झरत रोपत कुंत धर पर लरत परत न लरथरैं ।
जनु जनमि धुर इक जघ जनपद सूर सूरन संहरैं ॥
रिण मिलित रोर सु यवन रजबट गलित गज थट गजगलैं ।
रघु चौंडहर गुरु रतन रावत रिनहिँ रिपु दल रलतलैं ॥१८॥

तुटि सिलह टोप सु त्रान तुरकनि तेक तुबक तुरंगमा ।
धज नेज तोरि झंझोरि झडनि झाक बज्जि झमंझमा ॥
गटकंत युग्गिनि रुहिर गट गट दबट दहबट दुज्जनॉ ।
केसरीसिघ सु कंक गहि करि राव भल सज्यौ रिनॉ ॥१९॥

गहगहिय खग गोमाय गिद्धिनि झुंड रुंडनि झरफरैं ।
कुननंत अंत फुरंत फेफर तंग भंग सु तरफरैं ॥
धावंत सून तुरंग सिंधुर तोरि सृंखल बधना ।
केसरीसिंघ सु कंक गहि करि राव भल सज्यौ रिनॉ ॥२०॥

हर अट्टहास प्रहास प्रमुदित कमल गल माला गटै ।
बेताल बपु बिकराल व्यंतर बीर बख बख करि उटै ॥

नच्चंत नारद तान नव नव बीर बरत बरांगना ।
केसरीसिघ सु कंक गहि करि राय भल सज्यौ रिनॉ ॥२१॥

लगि जेट लुत्थि अलुत्थि लुत्थिन आन अप्पन को लखैं ।
परि दति पंति पवंग पाइल धंखि धर धरनी धुख ॥
लुट्टंत हेम सु रूप लुत्थिय करि तुरंगम कूदना ।
केसरीसिघ सु कंक गहि करि राव भल सज्यौ रिनॉ ॥२२॥

दृग देखि हिदू सेन दह दिसि अचल दल कल कंदलै ।
भरहरिय अल्लिहुसैन भग्गिय साहिजादा सं पुलै ॥
जय पत्त जंगहिं राव रावत बोल रक्खै बहुगुनॉ ।
केसरीसिघ सु कंक गहि करि राव भल सज्यौ रिनॉ ॥२३॥

( कवित्त )

को अडुल्ल हरवल्ल, को सु करबल्ल अठिल्लह ।
कि गज ढल्ल मभिल्ल, भूप छावल्ल छयल्लह ॥
दुज्जन कौंन दुहिल्ल, कहा कोतिल्ल रु सिल्लह ।
कि सु किल्ल बनि निल्ल, नेत कि पित्त सुलल्लह ॥
सादुल्ल मल्ल एकल्ल सेह, ए भल्ल जे खल्ल जिन ।
रावत्त मत महसिघ मुख, रहै न को आसुर सु रिन ॥२४॥

रावत चढ़ि रतनेस, असुर दल कट्टि अपारह ।
ररबरि रंक करंक, भूमि बल लिय भर भारह ॥
सार धार झकझार, अंखि पिख्यौ उद्धम अति ।
हरवल अल्लिहुसैंन, भगौ सु नबाबहि रन भति ॥
भय पाइ साहि दल सब भगौ, भगौ साहिजादा डरत ।
पय गिरत परत लरथरत पथ, धावत पल धीर न धरत ॥२५॥

उद्धंसै असुरान खान, सुलतान खुरेसिय ।
मत्थय बिनु किय मुगल, सैद संहरै बिदेसिय ॥
पिट्टै सेस पठान, लोदि बिल्लोचि बिडारै ।
भंजै भंभर भूरि, सकल सरवानि संहारै ॥
हबसी रुहिल्ल उजबक सु हनि, गक्खर भक्खरि परिगहन ।
चहुवान राव केहरि सु चढ़ि, महारंभ किय महमहन ॥२६॥

( दोहा )

तजि पहार भग्गौ तुरक, गिरत परत उरझंत ।
घाट घाट घन घटतु, हिय सु हारि हहरंत ॥२७॥

कहुँ सु नारि हथनारि कहुँ, कहुँ रथ सिलह सभार ।
हय गय भर आसुर नरनि, परि गय मग संहार ॥२८॥

फागुन मास सु फरहरत, तनु थरहरत सु सीत ।
सब निसि कोस पचीस लौं, भग्गौ रिपु भयभीत ॥२९॥

आए साहि हजूर सब, कटै बढ़ै कद्रप ।
कहि उद्दत आलम कबिल, इहँ रहनान अनूप ॥३०॥

जोरावर हिंदू जुरै, झुंड झुंड रहै भूमि ।
बे सु भूमि कै भूमिपति अप्पन सकल अभूमि ॥३१॥

ए पहार पति आदि कै, रहै पहारनि रुक्कि ।
लागत अपनौ इहिँ लगैं, थान थान मग थक्कि ॥३२॥

मारैं पर्वत मध्य ए, फुनि जौ करैं प्रयास ।
गहौ घाइ चितौरगढ़, महा अचल मेवास ॥३३॥

( कवित्त )

साहि सु बचन प्रमानि, सकल दल साज बेग सजि ।
कियौ सु पच्छौ कूँच, तबल टकार तूर बजि ॥
बढ़ि अवाज बसुमती, हलकि ज्यौं जलधि हिलोरह ।
उबट बट्ट गज थट्ट, बंधि कंठल चहुँ ओरह ॥
नर बै नवाब उमराव बहु, पर अप्पन समुझि न परत ।
चित्रकोट जाइ बेगँ चढ़्यौ, अति दिल अंतर औदरत ॥३४॥

( दोहा )

पच्छौ भय धरि दिल्लिपति पुल्यौ कोस पंचास ।
गह्यौ जाइ चितौरगढ़, उपजी जीवन आस ॥३५॥

---

# चौदहवाँ विलास

( दोहा )

सज्यौ सु दुर्ग्ग बिसेस कै, पौरि बुरज प्राकार।
नारिगोर आराब रुपि, अन्न सु संचि अपार॥ १॥
कबिल गल्ह ऐसी करत, महि मेवार बसॉउँ।
रोकि चित्रकोटहिं रहूँ, जाव जीव नन जॉउँ॥ २॥

( कवित्त )

पहिलौने पतिसाह, बरस द्वादस करि बिग्रह।
गढ़ लिन्हैं बिनु गये, गरब गुरु छंडि छंडि गृह॥
हौं अभंग औरंग, साहि गढ़ सु बसु बसॉऊँ।
महि सु लेहुँ मेवार, दाम निज नाम चलाऊँ॥
दिल्ली न जॉउ इहिं दुर्ग्ग ही, जॉ जीऊँ तॉ लग रहौं।
यौं लोक सुनाउन गल्ह गुरु, साहि करत धर संगहौं॥ ३॥

( दोहा )

रह्यौ साहि औरंग रुपि, चित्रकोट गढ़ चंग।
केहरि ज्यौं गिरि कंदरा, रोकि रहै रिन रंग॥ ४॥
बिटिय गढ़ दल बल बिकट, ज्यौं जलनिधि मधि दीप।
ठौर ठौर चौकी ठई, उदभट भट अवनीप॥ ५॥
गंग कुँअर गुन अगरौ, सगताउत सिरमौर।
आप जनाउन आसुरनि, चढ़ि लग्गौ चीतौर॥ ६॥

( कवित्त )

बय किसोर तनु गौर, समर बरजोर सूर तन।
दिल उदार दातार, बधत बड़बार ऊँच मन॥
सब सयान गुरु मान, राज महारान सभा मुख।
भर किँवार मेवार, सुभट सिरदार सदा सुख॥

केसरीसिंह रावत्त कौ, कुँअर गंग बहु सेन बनि।
चढ़ि धायौ गढ़ चीतौर कौं, आप जनाउन आसुरनि ॥ ७॥

सौ कुंजर साहि के, मग्ग बिचि मिलै झरत मद।
अजन गिरि से संग, रंग मचकुद कुसुम रद॥
घम घम घूँघर घमकि, ठनन घटानि ठनंकत।
पीठि झूल पटकूल, पढ़त पीलवान धत्त धत॥
अंकुस प्रहार मानैं न जे, तोरत संकर साख तर।
चर अग्ग पच्छ चरखी चलत, लेत लपेटैं सुंड भर॥ ८॥

सत्रल दरोगा सत्थ, असुर असवार पंच सय।
नेजा बजत निसान, हेख हेखनि हीसतु हय॥
तकि तकि मारत ताक, कठिन कम्मान बान कर।
पाखर जरित पवंग, सार संनाह टोप सिर॥
दो दो कटार कटि तौन दो, दो दो तेग बंधै दुमन।
चौकी सु देत बन चौकसी, गजनि सिखावत सुगति गुन॥ ९॥

सुंडारे साहि के, निरखि बहुरूप निवच्छर।
गरजै कुँवर गंग, फौज असुरनि अड्डौ फिरि॥
फेरौ रे कहि पील, हक्कि पीलवान हँकारे।
सबनि अज्ज सँहरौं, उररि असि बर उभारे॥
महाराण दुहाई कहु सुमुख, हत्थि लै चलौ गैल हम।
नन जान देहुँ कुंजर सु इक, तेक तुबक समरौब तुम॥१०॥

सुनि सु दरोगनि सेन, आइ गय हत्थिन अड्डै।
मार मार मुख बकत, अधिक ढकवार उमंडै॥
असि उभारि ऊघरी, कुअर धायौ जन केहरि।
कविल निकाल कराल, झाक बज्जी सु झाटझरि॥
मारे सु मीर बड़ बड़ मुगल, उछरि उछरि उभरि उररि।
मचि करल कूह करि जूह मधि, गंग जंग मंड्यौ सुपरि॥११॥

( छंद बिज्जुमाला )

गरजि कुँअर गंग, रोके करि जग रंग।
अंबर उभारैं तेग, बाहत पवन बेग॥१२॥

तुट्टैं रिपु तुड मुंड, बारुण करैं बिहंड ।
लरथरैं परैं लुत्थि, अंनो अंन्यं सं आलुत्थि ॥१३॥

आराव छुट्टै अछेह, मानौं गज्जैं भद्दौं मेह ।
धर गिरि धुआँ धार, उठे बीर चहूँ ओर ॥१४॥

किलकि किलकि केक, तुरकनि झारैं तेक ।
लुंबि झुंबि ललकारि, हक्कैं बक्कैं मारि मारि ॥१५॥

उछरैं उतंग स्रोंन, छिछि भिछि धप्पी छोंनि ।
टट्टर बहैं गुरज्ज, प्रथक उड़ैं पुरज्ज ॥१६॥

सट्टैं खुट्टैं तुट्टैं सत्थ, लग्गैं योधा लत्थौबत्थ ।
धाकि लं उठिल्लैं धाइ, किंन्नै छिंन्नै भिंन्नै काइ ॥१७॥

उररि देते उपट्ट, झाक बज्जैं झट्टो झट्ट ।
खुप्परि खनंकै खग्ग, अरि भग्गैं अग्गो अग्ग ॥१८॥

कबिल नचैं कमंध, बिछटैं उछट्टैं बध ।
धाइन छकै घुमंत, जना दंती दुरदंत ॥१९॥

परिग सु दंति पंति, भरनि पहार भंति ।
छायौ गैंन रेनु छाय, हहरैं करैं के हाइ ॥२०॥

कायर भगे कुरंग, समरि सु गेह संग ।
सहैं भिर सूर सूर, त्रबक त्रहक्कैं तूर ॥२१॥

तुट्टैं टोप तेग त्रान, नौरंगे नेजा निसान ।
अस्व डारैं असवार, धावैं लग्गैं खग्गौं धार ॥२२॥

रोरैं जोरैं भारे कुंत, उभारैं बाहैं सुमत ।
निकरैं परैं निनार, दससैं लसैं दुसार ॥२३॥

मही रुरैं रुड मुंड भभकैं करी भसुंड ।
चौसट्ठी पीवैं सु चोल, उछ्रंगैं रंगैं अल्लोल ॥२४॥

रुडमाला गंठ रुद्द, निहस्सैं नारद्द नद्द ।
पलचारी धप्पैं प्रेत, डक्कारैं हक्कारैं दैत ॥२५॥

गिद्धनी झरकैं गैंन, बुट्टैं खुट्टैं मंस चैंन।
भारी यौं मच्यौ भारत्थ, प्रगटे मनौं पारत्थ ॥२६॥

भग्गै ते दरोगे भोर, जैसे प्रात होते चोर।
हाक फुक्की हाहाकार, दिल्लीपति दरबार ॥२७।

धाओ रे धाओ को धीर, माझी जोई बड़े मीर।
दती सौही एक दौर, जाय लिए हिंदू जोर ॥२८॥

( कवित्त )

जीते कुँअर सु जंग, कितक करि जूह भंग करि।
कितक झारि पीलवान, तोरि सकर गय भर हरि ॥
सब में देखि सरूप, हत्थि दस बीस सु हंकै।
कुत अनी चुंकरत, सुभट हुंकरत सुबंकै ॥
निरभय निसंक बहुरे निगम, हत्थिन हल्लत तिन हनत।
केसरीसिंघ रावत्त कौ, गंग न आलम कौं गिनत ॥२९॥

सुनी साहि औरंग, गंग कुँअर लिन्नैं गज।
बदन छाइ बिलखाय सीत माखौ मनु पंकज ॥
उरहिं धसक्कि ससंक्कि, झुझि झलमलिय स्वेद तन।
गय सु सुद्धि बर बुद्धि हुत्थ दलमलत दीन मन ॥
गहु गहु सु जान पावै न गज, गहु सु गंग हम गज गहन।
हँसिहैं जिहाँन हत्थी गयै, इन सु बत्त कछु सोह नन ॥३०॥

धपै धीग पर धीग, खैंग चढ़ि चढ़ि सेंग गहि।
परत नाल परताल, बज्जि खुरताल धुज्जि महि ॥
कवच त्रान पक्खरनि, करी झंकुरिय झमंझम।
तबल तूर टंकुरिय, निगम संकुरिय क्रमंक्रम ॥
कलकलिय सु रव बंबरि बहरि, अरक उंझखरि डरि बिडुरि।
पिक्खै कुआर आवत पिसुन लुंब लुंब जलनिधि लहरि ॥३१॥

करि अग्गै करि जूह, बग्ग थंभै सु बाजि बर।
कलहणि कंठल कोर, मंडि मोरछा सुहर भर ॥
रुक्कि राह खगबाह, करहिं करबाल झबुक्कत।
ज्यौं सलिता जल पूर, आइ अड्डै गिरि रुक्कत ॥

भय सेल भेल भयभीत, मचि, दंग जंग दरबरि दवरि ।
बढ़ि बोह छोह तनु मोह तजि, समर ईस गंगा गवरि ।।३२।।

सार सार संघटे धार संधार संतुट्टत ।
झमकि अग्गि झर जग्गि, लग्गि खग झट खल खुट्टत।।
बज्जि झनंक खनंक, कंक झलमलत सु झॉई ।
घुरिय सुघाट त्रिघाट, सोंह हंकरि निज सॉई ।।
कहि वाह वाह भल भल सु कहि, वीर पचारत विविहि भति ।
रिन रौर घोर रलतल रुहिर, गंग कुँअर झुँझत सुमति ।।३३।।

भट किसोर उड़ि गोर, झटकि गुरु नारि धरं धरि ।
खरहरि सिहरि सु स्वग, धरणि धरहरि परिधुंधरि।।
गज्जि गोम लगि व्योम, बुंद झर बरखत गोरिय ।
अधिक गाज आग्राज, झमकि बिद्युत खग जोरिय।।
बजि डुंझ गुंझ आयुध बिखम, अति झझोरिय तनु सुतरु ।
भारथ उमॅड़ि भद्दव सु भर, कुँअर गंग झुँझत कहर ।।३४।।

रुंड मुंड ररबरत, परत धर पर हय बर खुर ।
तंग भंग तरफरत, ससत• सरफरत चरन कर ।।
सिधुर दरबर सबर करर बज्जत तनु पंजर ।
हरबर खर भर होत, समर सज्जै भर सर भर ।
झरहरत अरिन सिर रुहिर झर, बजि गुरुज्ज गुरु परि बिहर ।
च्वै चलै चेल रंग चोल ज्यौं, चलि प्रवाह चच्चर सुचिर ।।३५।।

भभकि भसुंड बिहंड, झरेय करि सुंड उदंडह ।
उछरत परत उतंग, जानि अजगर अहि जडुह ।।
कटि संनाह पखरनि, कवच कटकंत खग्ग झट ।
तुट्टि सत्थ लगि बत्थ, लुत्थि आलुत्थि लट्टपट ।।
झरफरत गगन थट गिद्धिनिय, चिल्ह चंचु जनु कुंत फर ।
कर चरन रु मत्थय आसुरनि, गहत उड़त अंबर अधर ।।३६।।

परै मुगल सय पंच, पंच सय परै पठानह ।
सेख जादे सत्ता सै, सैद इक सहस प्रमानह ।।
लोदि बलोचि अलेख, परै सत्थर सरवानी ।
गक्खरीन कौ गिनय, भूरि भंभर भर भानिय ।।

रूंमी रुहिल्ल उजबक असुर, परै करंक करंक परि।
फुनि भगी फौज पतिसाह की, गंग जैति कीनी बहुरि ॥३७॥

कहुँक नारि करिनारि, कहुँक करि करभ कहूँ हय।
कहूँ सिलह रथ सुभर, कहुँक खच्चर खजान मय॥
कहुँ नेजा रु निसान, जीन पक्खर तजि भारिय।
नट्ठै आसुर निलज. हीय हहरत अति हारिय॥
सगताउत गंग कुँअर सुहर, दिल्लीपति दल बल सु दलि।
गजराज नवंनव जूह गहि, गृह आए जितेब कलि ॥३८॥

( दाहा )

एकहि बैर औरंग कै, नव गजराज उतंग।
भेट कियै महाराण की, केहरि कूँअर गंग ॥३९॥
हरषै हिदूपति सु हिय, दती देखि दीवान।
सगता गंग कुँआर कौ, कियौ अधिक सनमान ॥४०॥
हेम तोल चचल सु हय, साकति हेम सरूप।
बसुमति ग्राम वढ़ाउ बहु, अरु सिरपाव अनप ॥४१॥

# पंद्रहवाँ विलास

( दोहा )

चकतापति चीतौरगढ़, रोकि रह्यौ हठ पूरि।
कितक बरस छाउन कहत, दिल्ली छंडी दूरि ॥ १ ॥

एह गल्ह असुरेस की, बिथुरी सुनि बिरुदाल।
भीमराण राजेस कौ, कुँअर कोपि कराल ॥ २ ॥

दिल्लीपति कौं देश तैं, कढ़न कियौ सु मंत।
सोरठ अरु गुजरात सब, मारन देस महंत ॥ ३ ॥

बज्जै त्रंबक बज्जनै, बढ़ी सकल भय बात।
भीमसिंह कूँअर चढ़ै, मारन धर गुजरात ॥ ४ ॥

हय गय रथ पायक सजै, सजै सकल उमराव।
तुग तुंग फौजें मिली, ज्यौं सलिता दरियाव ॥ ५ ॥

बोलत बहु बिरुदावली, दुरत चौरं दुहुँ ओर।
चढ़ै बाजि चंचल चतुर, भीम कुँवर दल जोर ॥ ६ ॥

( कवित्त )

भीम कुँवर दल जोर, चढ़ै गुज्जरि धर मारन।
कटक बिकट भट उभट, सुथट गज घट भट चारन ॥
बोलत बहु बिधि बिरुद, मरद भंजन आलम मद।
गुरु पगार मेवार, सूर सु प्रताप ऊँच पद ॥
जयकार जुधार अपार युध, दृढ़ प्रहार करबार कर।
जगजैत राण राजेस के, तौसुँ कौ मंडै समर ॥ ७ ।

अंबर धर आवरिय, रंग भंखरिय रजंबर।
धाराधर धुंधरिय, दुरिय दुति चंड दिवायर ॥
बढ़ी हेष पर हेष, बहरि बंबरि कलरव बहु।
सुनियत सहन स्रवन, जूह हय गय रथ गहमहु ॥

अनुसरत इक्क इक अग्ग मग, उमग मग्ग परि भरि अवनि।
सजि चढ़्यौ सेन गुज्जरि सधर, भीमसेन ज्यौं भीम भनि ॥८॥

भई भूमि भय कंप, प्रचलि पर धर पुर पत्तन।
होत कोट संलोट, गिरत गढ़ दुर्ग गाढ़ घन॥
दिसि दिसि उट्ठि दहक्क, भुक्क भय गुरु भर भक्खर।
सर सलिता द्रह सुक्कि, रुक्कि दर राह धरद्धर॥
थरहरिय थान थानह सु थिर, बिथुरि प्रजा डुल्लत अथिर।
प्रजरत नैर खरहर सु परि, जहँ तहँ मंनिय जोर डर॥९॥

उजरि अहमदाबाद, पीर पट्टन ससंक परि।
खभायत खरहरिय, सूंन सूरति धन संहरि॥
जूनागढ़ जंजरै, कच्छ कलकांल सु मंनि डर।
गौर सिंधु सो वीर, भूमि बहु भई उभंखर॥
मचि हक्क धक्क चहुँ चक्क मधि, आप आप भय बढ़िय उर।
चढ़ि भीम राण राजेस कौ, आयौ कै आयौ कुँवर॥१०॥

सुवच सुभग सुंदरिय, दुरिय गिरि दरिय ससंकिय।
सालंकरिय सुवेस, चित्रनिय चित्र कलंकिय॥
नवयोबन सोबन्न, सुवान मानिनि मृगनैनिय।
रूप रंभ आरंभ, दरस देखैं सुख दैनिय॥
पयतन प्रवाल पल्लव सु पय, सत्थन कौ सत्थी सुबिय।
बहु भीमसेन कूँवर सुभय, डोलत बन घन सत्रु तिय॥११॥

( छद पद्धरी )

सजि भोमसेन सेना बिसेस, दहबट्ट करन गुज्जर सुदेस।
दल बिटि प्रथम ईडर दुरंग, भट बिकट जानि चंदन भुजंग॥१२॥

गढ़ तोरि तोरि गट्टै कपाट, थरहरिय थान असुरान थाट।
नट्ठौ सु सैद हॉसा नवाब, गढ छंडि छंडि किल्ला सिताब॥१३॥

रलतलिय प्रजा बहु परिय रौरि, डर मंनि जात बन गहन दौरि।
बनिता धपंत लहु नंखि बाल, भूषन पतंत खिरि मुत्ति माल॥१४॥

तजि न्हाण बस्त्र इक तनु लपेट, चित चौंकि जात दीनै चपेट ।
व्याकुलिय इक्क अध गुंथि बेनि, भरि फाल जात ज्यौं जात ऐनि ॥१५॥

निय निय सु कज्ज छंडै निनार, चल चलिय खलक भय भीत भार ।
को गहय सार कप्पर किरान, नग हेम रूप बद्दरा निदान ॥१६॥

भूषन जराउ बहु रूव भंति, जहँ तहँ सु गड्डि धन लोक जंति ।
जरकस सज्योति मुखमल अमोल, सिकलात सूप तनुसुख पटोल ।
मृद तूल मसद्दर बिबिध रंग, मिस्रू दुमास चीनी सु चंग ॥१७॥

खीरोदक अतलस सरस ल्हाइ, बुलबुल चसंम मनु सुखद स्याइ ।
पामरी पीत अंबर दुपट्ट, साहिबी पाट अरु हीर पट्ट ॥१८॥

भैरव भरुच्छि मलमल सु धौत, महमूँदि चीर सेला सु पौत ।
सिदली झून सूसी सुफेद, खासा अटान दुकरी सुभेद ॥१९॥

स्री साप सालु इक पट सकोर, चौतार तार तनु पंच तोर ।
बहु बिधि सुबस्त्र छंडै बजाज, भग्गै सभीति हट स्रेणि त्याज ॥२०॥

घृत खंड तेल सक्कर सभार, अति खास अन्न उधरै अँबार ।
मधु रस सुस्वाद मेवा मिठाइ, हरवाइ, गरन सक्कै उठाइ ॥२१॥

मृगमद कपूर केसर लवंग, अहिफेन हीर रेसम सुरंग ।
तज जायपत्रि पत्रज तमाल, रस नारिकेल पुंगी रसाल ॥२२॥

हिगरू अगर चंदन सु ईठ, एलची जाइफल अरु मजीठ ।
इत्याद्यनेक छंडै कुयाण, भग्गै सुगंधि रक्खन सु प्रान ॥२३॥

बिधि बरन च्यारि छत्तीस पौंनि, चौपय प्रत्येक बहु जीव योनि ।
भरहरिय भग्गि भय यत्र कुत्र, परि गय बियोग तिय भ्रात पुत्र ॥२४॥

ढंढौरि हट्ट पट्टन सु ढारि, गृह गृहनि जारि सु प्रजारि पारि ।
सिंघनी सुँघि नर कै सुजान, खनि खोदि क्षोनि कड्ढै खजान ॥२५॥

धरहरत धरनि खरहरत कोट, लगि बेलदार किन्नैं सँलोट ।
आबास ऊँच भयतर अपार, जहँ तहँ सु भूमि परिगय बिहार ॥२६॥

इहि भाँति दुर्ग ईडर उड़ाइ, संठे सुभृत्य अन धन सवाइ ।
भरि कनक रूप धन कोटि भार, हय हत्थि करभ खच्चर अपार ॥२७॥

राजेस राण नंदन सरोस, भल भीमसेन कूँअर भरोस।
कट्टनह दूरि पतिसाह काज, रक्खन सु राह मेवार राज ॥२८॥

( कवित्त )

ईडर दुर्ग्ग उजारि, पारि किन्नौं धर पद्धर।
खंखेरिय खनि खोदि, किए मंदिर तर उप्पर॥
ढंढौरिय हट स्रेणि, कौंन झल्लैं कर कप्पर।
श्रीफर सार किरान, ठेलि अन धन पय ठिप्पर॥
नट्ठौ सु सैद हॉसा निलज, गुरु नवाब छंडेब गढ़।
जय कीन राण राजेस कै, भीमसेन रक्खी सु रढ़ ॥२९॥

( दोहा )

ईडरगढ़ उद्धंसयो, सुनी सकल संसार।
भीमराण राजेस कै, कूँवर कुल सृंगार ॥३०॥

पच्छिम निसि पतिसाह दर, परिय सु करल कराह।
कौन नींद आलम कबिल, सोए तुम पतिसाह ॥३१॥

भीमराण राजेस कौ, कूँवर कोपि कराल।
ईडरगढ़ लीनौं अचल, चढ़ि दल किय ढकचाल ॥३२॥

हंस सैद हहरंत हिय, नट्ठौ अप्प नवाब।
अब सु जात गुजरात धर, करहु इलाज सिताब ॥३३॥

( कवित्त )

सुनि सु कूह सकराल, रेनि पच्छिली स्रवन सजि।
उझकि चौंकि औरंग, उठ्यौ दिल्लीस नींद तजि॥
निकट बुलाइ सु दूत, बहुरि, बुझ्झै दिल्लीबर।
कितक सत्थ सो कुँवर, अक्खि तिन दल अपरंपर॥
ईडर उजारि सु प्रचारि दिय, उजरि देस गुज्जर सुधर।
सोरठ सिधु सोबीर लौं भीमसेन कूँवर सुडर ॥३४॥

( दोहा )

रह्यौ ओटि पय ज्यौं सरिस, म्लेछ ईस गहि मौन।
बोल सुबोलत ना बनैं, सीसक चढ़ि भय सोन ॥३५॥

( कवित्त )

राजसिघ महाराण, प्रजा पीहर प्रजपालक ।
प्रजाछत्र प्रजपोष, प्रजामंडन प्रजधारक ।
बरण च्यारि वर सरण, दीन उद्धरण दया पर ।
दीनबंधु दुखहरण, सकल षटदरस सुहंकर ॥
पीरंत पेखि पर प्रज प्रबल, कुँअर भीम कुप्पिय कहर ।
बड़नगर सुढासा सिद्धपुर, प्रमुख सकल भंजै सहर ॥३६॥

लिखै एह परवान, राज महराण भीम प्रति ।
प्रीति पोष सतोप, सकल सनमान सरस भति ॥
कुलदीपक तुम कुँअर, सबलह मरद धुरंधर ।
तजि बिदेस सुबिसेस, बेगि आवहु निज मंदिर ॥
परवानह करि पर धरह नन, अप्पन श्री इकलिंग बर ।
प्रज पीड़न पिरवी जात इह, अनुकंपा उपजंत उर ॥३७॥

( दोहा )

चरहिँ जाइ दीनौ चपल, कुँवर हत्थ फुरमान ।
कहि मुख बचन प्रसंस करि, बहु बिधि प्रीति बखान ॥३८॥

( कवित्त )

महाराण परवान, सीस सहिवान सुसोभित ।
प्रनमि बंचि बिधि पाइ, झुंझि अनिखाइ झझकि चित ॥
पिता हुकम सु प्रमानि, दंद मुक्कयो निज दारुन ।
बहुरे कुमर सुजान, जानि अंकुस बर बारुन ॥
धन कोरि जोरि ढंढौरि धर, बैर बहोरि अनंत बल ।
निज गेह आइ बिलसंत नित, भीम भोग संजोग भल ॥३९॥

———

# सोलहवाँ विलास

( दोहा )

बंकागढ़ बधनौर पति, सॉवलदास सकाज।
केतुबंध कमधज्ज कुल, मेरतिया महराज ॥ १ ॥

भगति जोर तिनको भई, बंकेस्वरि बरदाइ।
माता त्रिभुवन मंडनी, सांप्रति करन सहाइ ॥ २ ॥

तेग बँधाई देवि तिन, पाती दे करि प्रीति।
जहँ जहँ कीनै जग जिन, तहँ तहँ भई सुजीति ॥ ३ ॥

( कवित्त )

जहँ तहँ कीनी जीति, रीति रक्खी रट्ठौरिय।
महाराण कै काम, दंद रचि दल सजि दौरिय ॥
रुक्की आवति रस्ति, थान भंजै तुरकानी।
पीरौ परि पतिसाह, स्रवन सुनि सुनि सु कहानी ॥
तिन दीन्हौं महि मेवार तजि, गय औरँग अजमेर गढ़।
मेरतिया सॉवलदास सम, देखि न कौ सा धर्म्म दृढ़ ॥ ४ ॥

बिंटि थान बधनौर, परी सेना पतिसाहिय।
धुपटैं धर बर धीग, गहन धन वन गिरि गाहिय ॥
हय मुँह सुप्पर कण, रत्त दृग मुंछ रोम बिनु।
भारखंध भुज सुभर, भार भोजनरु भार तनु ॥
तिन नाम रुहिल्ला नर भखन, तजै न कौ पसु पंखि पल।
जहँ तहँ पराव जल उदधि ज्यौं, उद्धम गति औरंग दल ॥ ५ ॥

( दोहा )

नायक सब रुहिलानि मैं, नाम रुहिलाखॉन।
लंबी तेग लिये रहैं, आसुर जंग अमान ॥ ६ ॥

द्वादस सहस तुरंगदल, नेजा बंध नबाब।
मदिरा मत्त सुरत्त मुँह, जिहिँ तिहिँ देत न ज्वाब ॥ ७ ॥

बिटि रह्यौ दल बल बिकट, बसुमति किय बिपरीति।
पारि प्रसाद प्रजारि गृह, अति ही मंडि अनीति ॥ ८ ॥

( कवित्त )

सुनि इह सॉवलदास, मरद मेरतिया महिपति।
खीजि खलनि खय करन, थान उत्थपन अरिन थिति ॥
सजि सिताब हय गय, दुबाह सन्नाह सपक्खर।
कवच करी झंकुरत, कुंत झलमलत सूर कर ॥
बजि बंब नगारनि घोर बहु, बरन बरन धज नेज बनि।
चढ़ि चलै फौज चहुँ फेर घन, उदधि जानि उलटयौ अवनि ॥ ९ ॥

खिति धरहरि हय खुरनि, चरन गिरि पल्ल चुल्ल भय।
उड़िय रैंन भरि गैंन, भानि झखरिय ताप खय ॥
चारन भट्ट सु चंग, रंग बोलत जस रूपक।
सॉवलदास सनूर क्रूर, कमधज कुलदीपक ॥
जय करहु जंग घन हनि यवन, आलम दल भंजहु अनम।
बैरिन बिनास किज्ज बसति, त्रिपुरा दाहिन हत्थ तुम ॥१०॥

सझ समै लहि संच, प्रबल रतिवाह विचारिय।
खान पान खल दल्ल, विलग्गि दीपक अधिकारिय ॥
तबहिँ तरित ज्यौं त्रटकि, परै पतिसाह सेन पर।
गाहत दाहत हनत, भनत मुख मार मार भर।
रलतलिय रुहिल्लनि परि खरि, दहकि बहकि धकि परि दहल।
तजि खान पान भग्गै तुरक, कलकल कंदल मचि कबिल ॥११॥

( छंद त्रोटक )

हय चंचल सॉवलदास चढ़ै, कर गैंन उभारिय खग्ग कढ़ै।
जुरि जोधनि जोध बजै जरके, कटि टोप कटक्कि करी करके ॥१२॥

खिरि कंकनि कंक सु धार खिरैं, झनकंत कृपान कृसानु झरैं।
मचि कंदल मीर गंभीर कटैं, खननंकति बज्जति खग्ग झटैं ॥१३॥

टुटि सिप्पर खुप्परि लोंनि हटैं, फिर सैद बिकैद ह्वै सीस फटैं।
छिलि लोह पठान सु छाक छकैं, जल आतुर बारिहि बारि बकैं ॥१४॥

दुहुँ ओर दुबाह दुहाइ बदै, अप अप्पन साँइ चहंत उदै।
करि ताक सँभारि सँभारि कहैं, बरसैं घन ज्यौं बहु बान बहैं ॥१५॥

कर कुंत कटारि सकत्ति धरै, फरसी हर हुल्ल गुपत्ति फुरैं।
गज मुग्गर नेज गुरुज्ज बजैं, गगनांगन गोर आराब गजैं ॥१६॥

धर धुंधरि सोर सुरत्ता धखैं, जहँ अप्पन आन न कोइ लखैं।
तजि साहस संकुर साँइ तजै, भय पाय रु कायर जात भजै ॥१७॥

घन घोष त्रंबागल सिधु धुर, सहनाइ सु भेरि गंभीर सुरैं।
कुननंत कितै कलि कूह करैं, रिन जोर रुहिल्लनि रुंड रुरैं ॥१८॥

उतमंग पतंत कितै उचरैं, रसना थकि तौ उर सूल ररैं।
इक अल्लह अल्लह नाउँ अखैं, मिलि नैनरु टोप मिलंत मुखैं ॥१९॥

भय रूकिनि टूक कितैइ रुमी, निकरैं दुहुँ लोइन ग्रीव नमी।
हबसी मिलि आपस मेंइ हनैं, अँधियारि निसा नन सुद्धि गनैं ॥२०॥

नर आसुर केक कमंध नचैं, सिर भूमि अटट्ट हास सचैं।
हय हत्थि बिना असवार फिरैं, घन पक्खर भार सुढार ढरैं ॥२१॥

तरफैं अधतंग तुरक्क तुटैं, चलि चच्चर चोल नदी उपटैं।
भभकैं करि सुंड बिहंड भई, महि कीन जहाँ तहँ रत्त मई ॥२२॥

उड़ि स्रोनित छिछि अयास तटैं, पय कोंकम ज्यौं पिचकारि छुटैं।
गवरीपति अंबुज माल गटैं, सब केक हँकारि बकारि उटैं ॥२३॥

गुरु गिद्धिनि तुंडनि मुंड गहैं, झरफैं गगनांगन झुंड बहैं।
रत लै युगिनी जल ज्यौं अचवैं, चवसट्टि जयं जय सद्द चवैं ॥२४॥

धज नेज झँझोरिय जोरि धनं, ढकचार ढँढोरिय ढान घनं।
कमधज्ज महा बलि जैति बगी, भय मंनि रुहिल्लनि फौज भगी ॥२५॥

तजि थानहिँ तंबु तुषार तई, रथ कंचन बारुन बस्तु नई।
निसि ही निसि भग्गि हैरान भए, गति हीन ह्वै साहि कै पास गए ॥२६॥

( कवित्त )

गए असुर तजि गर्व, हसम हय गय रथ हारिय।
गिरत परत बन गहन, भए भारथ भय भारिय ॥

निसि अधियारी निपट, सुबट थट घट्ट न सुज्झत ।
कानन तरु कंटकनि, अंग अंसुक आलुज्झत ॥
उझकंत परस्पर पिक्खि अग, सब रुहिल्ल सुगहिल्ल हुअ ।
कमधज्ज गहिय करवार कर, जंग रंग मंडयौ सु जय ॥२७॥

( दोहा )

इहिं परि थान उथप्पि कैं, राख्यौ जस रठौर ।
स्वामिधर्म पन संचयौ, सकल सूर सिरमौर ॥२८॥

———

# सत्रहवाँ विलास

( दोहा )

धर पुर धरहरि गिरि ध्रसकि, पयदल मसकि पयाल।
धार नगर मालव सु धर, दौरयौ साह दयाल ॥१॥

राजा उत घन रोस रस, तारक रित ज्यौं तुट्टि।
मालव धर उद्धंसि महि, लच्छि अनंत सु लुट्टि ॥२॥

खाग त्याग दुहुँ भाँति खिति, नितु नितु नाम नवल्ल।
खाग त्याग बिनु क्षत्रिपन, आख्यौ यूँ अकतुल्ल ॥३॥

मँगि हुकम महराण पैं, सुबर सुभट संजोर।
चढ़्यौ लेइ चतुरंग चमु, अवनि कंपि चहुँ ओर ॥४॥

धर गिरि अंबर धुंधरिय, दिसि दिसि उठी दहक्क।
आडंबर रवि आवरिय, चित्त दिगपाल चमक्क ॥५॥

( कवित्त )

प्रचलि चित्त दिगपाल, भूमि तजि भगि आप भय।
उजरि नैर पुर उझकि, बिझुकि गढ़ कोट दुर्ग गय ॥
थक्कि राह थरहरिय, थान थानह असुरायन।
बजि अवाज गुरु गाज, जानि जग्यौ पंचायन ॥
खरहरिय सु प्रज ध्रितिधर खलक, जनु धाराहर धरहरिय।
मालव सुदेस सद्धन सुमहि, सजि सुसाह दल संचरिय ॥६॥

कहुँक दंड किज्जियहि, कहुँक लिज्जयहिँ पेसकस।
थप्पि कहुँक निय थान, रिपुन रुक्कियहिँ रोस रस ॥
कहुँक बंक बैरीन, गहिव घल्लियहिँ जेल गल।
कहुँक लच्छि लुट्टियहिँ, कहुँक मेलियहिँ दुर्ग भल ॥
कहुँ कोट जोट कबिलान कै, उथलि पथलि थल बिथल किय।
पारंत खरि पर धर प्रबल, जानि प्रलय कालह जगिय ॥७॥

म्लेच्छ मुंछ मुंडियहिँ, खंडि महजीदि मँदारनि।
काजी पकरि कुरान, गरहिँ बंधैब गमारनि॥
बोरत बारि अथाग, धाक बज्जी धीगानी।
भेष बदलि रिपु भगत, बदलि बानी तुरकानी॥
धकधूँनि देस मालव सु धर, बारुन ज्यौं चंदन बिटपि।
मुँह मिल्यौ असुर नन मुक्कियहिँ, थिर सु प्रतंज्ञा एह थपि॥८॥

( छंद मोतीदाम )

चढ़्यौ दल सज्जि सु साह दयाल, किधौं कलि कालनि कौ खयकाल।
बहैं बहु मग्ग कटक्क बिकट्ट, जनौं जल अंबुधि गंग उपट्ट ९॥

सुभैं दल अग्गहिँ स्याम सुँडार, चलै जनु अंजन कै यु पहार।
ठनंकति घंट सुग्रीवहिँ ठाइ, घमंकत घुँघरु नेउर पाइ॥१०॥

झर मदवाह कपोलनि झौर, भमैं तिन दान सुबासहि भौंरं।
सुभैं सिर तेल सुरंग सिँदूर, बहैं बिरुदावलि बंक बिरूर॥११॥

मनोहर कुंभहिँ मुत्तिनमाल, मझैं मझ पोइय पाव प्रबाल।
उभै स्रव सीसहिँ चौर सुभंत, सभार सउज्जल दीरघ दंत॥१२॥

झिलंतिय रंग सुरंगिय झूल, जिगंमिय योति जरी पटकूल।
ढलक्कति ढंकिय बास सु ढाल, बने किन पिट्ठहिँ डोल बिसाल॥१३॥

पढ़ैं धत धत्ता मुहैं पिलवान, सचैं कर अंकुस बिद्यु समान।
पताक प्रलंब बनै पचरंग, जरी पटकूल सुचिन्ह सुचंग॥१४॥

जरे पय लोह सुलंगर जोर, किधौं करि स्याम घटा घनघोर।
चरक्खिय अग्ग रु पच्छ चलंत, खरै इतमाम महा मयमंत॥१५॥

ऐराकिय आरबि अस्व उतंग, कछी कसमीर कँबोज कलिंग।
बंगालिय कोंकनि सैंधवि बाज, पयं पथ वायु पथैं पँखराज॥१६॥

मजंनस लाखिय रंग सुबंस, हरी हरड़ै अरु बोर सु हंस।
कितै किरड़ै तनु नील कुमैत, सु सिहलि रोझिय रंग सुभैत॥१७॥

अँबारस भौंरं मसक्कि अपार, तुरंजे ताजि तुरक्क तुषार।
किलकिलै कातिलै केइ किहार, गंगाजल गरुड़ै कै गुलदार॥१८॥

बिराजति साकति स्वर्ण बनाव, जरै नग मुत्तिय हीर जराव।
गुही बर बेनिय स्याम सुकंध, फुंदा गलि रेसम डोरि सुबंध ॥१९॥

ततत्थेइ नच्चत ज्यौं नट तान, पुलंतन पंखिय पुज्जत प्रान।
सचंचल चाल नैं चीकनैं चोख, सपक्खर सज्जर हिस सरोस ॥२०॥

चढ़ै भर केइ महा चित चंड, अरेणिय जानि कि भीम उद्दंड।
बंकै बर बीर सभीर बिरूर, झनंकति खग्ग करैं झकझूर ॥२१॥

भरै रथ सत्थि आराब सभार, कितै धन रूवरू हेम दिनार।
भरै बहु भारहि ऊँट अपार, किती भरि बेसरि भार बिभार ॥२२॥

पयद्दल बद्दल ज्यौं दल पूर, उड़ी रज अंबर ढंकिय सूर।
परैं नन अप्पन आन कि सुद्धि, उपट्टिय जानि कि जोर अंबुद्धि ॥२३॥

सु संकर संकुरि कुंडलि सेस, कटक्किय कच्छप पिट्ठि बिसेस।
भये भयभीत पुलैं दिगपाल, डगंमगि कोट रु दुर्ग दुकाल ॥२४॥

थरत्थरि पत्थर सुत्थिर थान, भगैं पुर पत्तन नैर भयान।
रुकै दर राह सु उट्ठि दहल्ल, सुसै सलिता सर नीर सुहिल्ल ॥२५॥

मच्यौ भय मालव देस मझार, उड़ै प्रज जानि कि टिड्डि अपार।
कहूँ तिय पुत्त कहूँ गय कंत, रड़ैं जननी कहुँ बाल रडंत ॥२६॥

कहूँ पति भृत्य कहूँ परवार, कहूँ धन धान रहै निरधार।
कहूँ भय चोप यहूँ परहत्थ, नसैं नर नारिन वृंद अनत्थ ॥२७॥

लुटैं केउ लुंटक झुंटक लक्ख, परैं बहु कूह कराह प्रतक्ख।
जनौं कलपंतर अंतर जग्गि, लुकि झुकि मानस मानस लग्गि ॥२८॥

कियैं प्रति कूँचनि कूच प्रलंब, लसैं दल बद्दल सावन लुंब।
धसंमसि बिंटिय कोट सु धार, परी पतिसाह सु गेह पुकार ॥२९॥

( कवित्त )

मंडव भय मंनियौ, उजरि प्रज भग्गि उजैनिय।
सारंगपुर भय सून, निकरि नट्ठी मृगनैनिय॥
दहल परिय देवास, धरनि गड्डियहिं हेम धन।
सुनिव ससंकि सिरौंज, चल्लिय चंदेरि चक्रित मन॥

जहँ तहँ अवाज संकै यवन, जंजरि गढ़ करियहिँ यतन ।
आयौ सुसाहि यौं अरिन पुर उक्क अहो निसि मिटिय नन ।।३०।।

अक्खै कै असुरानि, कंत तिल गहर न किज्जैं ।
आवत कटत उदंड, छंडि गृह कै तनु छिज्जैं ।।
कह सोवत सुख सेज, उट्ठि उठि राखि सु आतम ।
मो कहुँ पूरन मास गहु, सुगिरि गुहा क्रमंक्रम ।।
बिलवंत बाल कै बाल तजि, नट्ठि बनं धन गहन नग ।
सकबंध साह दल चढ़त सुनि, बिभजि लोक ज्यौं बन बिहग ।।३१।।

बिटि कोट बर बीर, भंति गो सीस भुयंगम ।
ज्यौं पहार अरु जलधि, प्रबल दल दंति पवंमग ।।
किल्ला तजि तिहिँ काल, पुलै आसुर सु पठानी ।
सेन असुर घन सहस, मुक्कि साहस समुदानी ।।
जगि लुट्टि गृहं गृह जनहिँ जन, कौन गहैं कप्पर सुकर ।

( १७२ )

जहँ तहँ अवाज संकै यवन, जंजरि गढ़ करियहिँ यतन ।
आयौ सुसाहि यौं अरिन पुर उक्क अहो निसि मिटिय नन ।।३०।।

अक्खै कै असुरानि, कंत तिल गहर न किज्जैं ।
आवत कटत उदंड, छंडि गृह कै तनु छिज्जैं ।।
कह सोवत सुख सेज, उट्ठि उठि राखि सु आतम ।
मो कहुँ पूरन मास गहु, सुगिरि गुहा क्रमंक्रम ।।
बिलवंत बाल कै बाल तजि, नट्ठि बनं धन गहन नग ।
सकबंध साह दल चढ़त सुनि, बिभजि लोक ज्यौं बन बिहग ।।३१।।

बिटि कोट बर बीर, भंति गो सीस भुयंगम ।
ज्यौं पहार अरु जलधि, प्रबल दल दंति पवंमग ।।

खासा खास अटान, पंचतोरे सु प्रकारे।
इकतारे स्त्रीसाप, चीर टुकरी चौतारे॥
सु दुमामि दुतारे चौरसे, झीन पोत दुति झलमलत।
बदियैव कितै बहु विधि बसन, पयदल पाइनि दलमलत॥३५।

नालिकेर न्यौजा, विदाम वर दाख चिरौंजिय।
खारिक पिंडखजूरि, भूरि मिस्री मन रंजिय॥
मधुर मधुर मेवा, मिठाइ घृत गुड़ अपरंपर।
सकल अघाइय सेन, हत्थि हय करभ अन्नचर॥
एलची लवंग अहिफेन रस, सुंठि मरिच पीपरि प्रमुखि।
सुक्रयाण सार अंबार सज, धखत झार घन अग्नि मुख॥३६॥

पनहिँ न जिन पय हुती, तिनहिँ गृह भये तुरंगम।
दूत भये दौरतें, मिलै तिन चढ़न मतंगम॥
दारिद जिन देखते, लच्छि लच्छक तिन लीनी।
बासन जिन बपु हुते, तिनहु सुखपाल सप्पनी॥
सपनै न संपिखी सुंदरी, तिन सुदरि युग युग मिलिय।
धसि नगर धार बर संहरत, कनकहिँ खलक निहाल किय॥३७॥

दिन दस करिग मुकाम, खग्ग बल रचि खलखंडह।
नगर धार संहारि, देस मालव करि दंडह॥
नर बहु भए निहाल, लच्छि अपरंपर पाए।
करि सुबोल कंधाल, उमगि उदयापुर आए॥
मंत्रीस सुमति महाराण कै, कलह साहि सरभर करिय।
अवदात यहै नित नित अचल, अचल नाम जग विस्तरिय॥३८॥

इहिँ परि धार उद्धंसि, बत्त बर बिस्व बखानी।
सुनि औरँग सु बिहान, दूत, मुख स्रव दुखदानी॥
उर कलमलि अकुलाय, पर्यौ अंदर पछितावत।
किन्नौ यहै कुमंत, सकल परिजन समझावत॥
आवै न हत्थ बिग्रह सु इह, खुस खजान घन खुट्टए।
अनमी सु राण हैं आदि कै, महि किन जाइ सुमिट्टए॥३९॥

———

# अठारहवाँ विलास

( दोहा )

श्री जयसिह कुँआर कौ, अब अवदात अनूप।
राजसिह महाराण कै, पाट प्रभाकर रूप॥ १॥

सतरा सै सैंतीस कै, बरस असाढ़ बखान।
मारै मीर मतंग महि, थिर चीतौर सुथान॥ २॥

सामंतनि सनमानि कै, किय सुमंत धर काज।
असुर सँहारन ऊँमहै, गिरिधर अंबर गाज॥ ३॥

आगे ज्यौं कूँअरपनै, उदयराण मुँह अग्ग।
कुँअर प्रतापहिँ नामकिय, खंडै घन खल खग्ग॥ ४॥

सो सुमंत सु बिचारि चित, बढ़ै बीर रस बीर।
कंठीरव जनु कोप करि, गज्यौ गिरा गँभीर॥ ५॥

( कवित्त )

चित्रकोट थानहिँ, सुचंड औरंग सुनंदन।
सहिजादा अकब्बर, सुसेन हय गय रथ स्यंदन॥
अद्ध लाख साहन, अनीक सपलान सपरकर।
सहस एक सिंधुर, सरूप जनु सैल पट्टझर॥
पयदल असंख आराब गुरु, नारि गोर जंबूर घन।
रहि राण धरा रिणथंभ रुपि, कोट ओट गढ़ढौ यवन॥ ६॥

दिसि दिसि देत दहल्ल, धरा धुपटंत धान धन।
गाम गाम प्रतिगाहि, ढाहि प्रासाद पुरातन॥
पारि पौरि प्राकार, सुरहि बध करत न संकत।
रहत छक्यौ दिन रैनि, बैर बहु बहत अहंकृत॥
ऐस्वर्य तरुन मद अंध मन, मेष भंति मैं मैं करत।
सुलतान अकब्बर साहि सुत, धरनि न सुद्धै पय धरत॥ ७॥

तखतरवाँ तपनीय, तुंग नग जरित तरनि प्रभ।
तहँ सु बइट्ठौ तपन, तेज असहेज मान इभ॥
उभय पाख चामर, ढरंत इतमाम अनेकह।
छरीदार प्रतिहार, अंगरक्षक सबिबेकह॥
नर वै नवाब बहु पय नवत, सेवत ठढ्ढै सत सहस।
नित राग रंग पातुर नृतति, घुरत निसाननि घन घमस॥८॥

कबहुँ लरारहिं मल्ल, कबहुँ मद मत्तै कुंजर।
पायक कबहुँ प्रचंड, कुत असि नग्न सकति कर॥
कबहुँ सिह करि कलह, कबहुँ ठोरी डंडायुध।
कबहुँ सिंह बन सहल, कबहुँ तिय सत्थ महल मध॥
कबहूँ क बाग बर बाटिका, सलिता सलिल समूह सुख।
क्रीडंत केलि नव नव सुदिन, न लिहैं कत ससि सूर रुख॥९॥

( दोहा )

साहि सुतन कै चरित सुनि, रत्त नैन करि रोस।
श्री जयसिंह कुँआर जब, गह्यौ खग्ग कर कोस॥१०॥

संहरिहौं दिल्लीस सुत, क्यौं रहि इह इन कोट।
असुर कहा हम अग्गए, सकल करं संलोट॥११॥

हमहिं दयौ इकलिंग हर, इह गढ़ आदि अनादि।
ध्रुव सु रज्ज मेवार धर, पाइय भाग प्रसादि॥१२॥

तो'ब कौन बपुरौ तुरक, गढ़ रहि मंडै गेह।
कितकु एह सुख कर. सुंदरि सत्थ सनेह॥१३॥

बीग्री सौं छू छू करै, भग्गौ सोवत भोर।
मध्य निसा नित मंडि कै, जीवित गहौं सजोर॥१४॥

( कवित्त )

अंबर इक आदित्य, इक्क गिरि गुहा सिंह इक।
असि इक इक प्रतिकार, ठौर औरहिं न एह ठिक॥
ए सुथान बहु मान, नहीं असुरान थान इह।
करौं भंजि चकचूर, साहिजादा रु सेन सह॥

हम छतैं कौनैं इहिं रहि सक, आवौ असुर अनेक दल।
जब लौं सु सिह नहिं संवरैं तब लौं, जानि कुरंग बल ॥१५॥

तब लग तम प्रस्तार, नार उडुग्रह तबहीं लग।
तब लग तस्कर जोर, घूक दृग बल तबहीं लग॥
तब लग रजनी रौर, ढोर तब लग गल बंधै।
खह खद्योत उद्योत, चक्क चकई चखु अंधै॥
किन्नौ प्रकास जब सहसकर, तब न कोइ ग्रह तार तम।
कातिक कुँआर बदल कबिल, बाहु बहैं झूठौ बिभ्रम ॥१६॥

करैं दहन कर गहन, अबर अहि मुँह घर घल्लैं।
सिह जगावै सुपत बिखम, बीरनि सँग बुल्लैं॥
उदधि तरन आसँगै, खाइ विष तनु सुख चाहैं।
त्यों ए तुरक अयान, लरन हम सत्थ उमाहैं॥
जिन दहै अद्रि बड़ बड़ अगनि, तिन मुँह अग्र कितेक तरु।
बारुनहिं उड़ावत वायु सौं, तो पूनी कह जोर बर ॥१७॥

बुल्लय तब बर बीर, भूप भगवंत सिह भर।
महाराइ अरिसिह, नंद षटदरस ऊँच कर॥
संग्रामहिं सुसमत्थ, बेद बसुमति प्रति रक्खन।
कबिल करिन केहरी, समान बहु बुद्धि बिचक्खन॥
इतो'ब कोप इन परि कहा, सकल बत्त सुबिसेसियहिं।
संहरौं साहि सेना सकल, तो हम हत्थ सुलेखियहिं ॥१८॥

कितक एह गुरु काम, एह लहु हम तर लायक।
कबल उखारन काज, कहा कुंजर दल नायक॥
कट्टन कॉस कुठार, कहा केहरि कुरंग कजि।
कहा कीटकनि केकि, कहा मंडुकनि नाग सजि॥
कितनैक कबिल ए युद्ध कर, गड्डर ज्यौं सब घेरि घन।
इक्कैक हनौं असि घाउ करि, उथपि थान औरँग सुतन ॥१९॥

अथ चंद्रसेन झाला के बचन

प्रथक ऊख ज्यौं पीलि, दलिग कन ज्यौं घन दुज्जन।
मूरन ज्यौं उनमूरि, दूरि नंखौ दह दिसि तिन॥

करषनि ज्यौं आकरषि, खेत खल तिनु तिनु तत्थिय ।
कुसुम कली ज्यों चूटि, खूंटि डारनि ज्यौं मिच्छिय ॥
घन दाव घाव घन घवलनि, अरि असुरानि उथप्पिहौं ।
कहि चंद्रसेन झाला सु कर, थिर निज थानहिं थप्पिहौं ॥२०॥

अथ चहुवान राव सबलसिंह को बचन

सबलसिंह ज्यौं सिंह, तबहिं गुंज्यौ करि तामस ।
सुनत गैंन प्रति सद्द, बिकट चहुवान बीररस ॥
मारौं मुगल मसंद, दंद दलमलहु साहि दल ।
रिंण हम मुख को रहै, कहा आसुर अनंत बल ॥
भंजौं ब भूरि गिरि बज्र ज्यौं, चून करौं इन चंड चित ।
तो नंदराव बलिभद्र को, अब उभंटि नंखो अहित ॥२१॥

अथ रावत रतनसी चौडाउत के बचन

ज्यौं अंबुधि अँचयौ, अगस्ति ज्यौं तरणि रयनि तम ।
दावा ज्यों बन द्रुम, अनेक दहि दुर्ग असम सम ॥
ज्यौं बद्दल फारंत, वायु त्यों इह असुरायन ।
महन रंभ आरंभ, पारि पिसुननि पारायन ॥
इकलिग ईस जो सीस पर, तो 'ब कहा परवाह इन ।
करि प्रबल कोप रघुनंद कहि, रावत चौडाउत रतन ॥२२॥

तदनु सगताउत कुँअर गगदास के बचन

सगताउत रावत्त, केसरीसिंह सुनंदन ।
गरजै कूँअर गंग, सैन बध असुर निकंदन ॥
कहैं सु भारथ कत्थ, यूथ घन यवन सँहारौं ।
पारथ ज्यौं हौं प्रबल, म्लेच्छ कौरव दल मारौं ॥
मधुसूदन ज्यौं सायर मथिग, हनु ज्यौं सैल समुद्धरौं ।
गहुँ साहि नंद गजगाह बँधि, कहा बत्त बहुतैं करौं ॥२३॥

( दोहा )

पंचौं भट महराण कै, पंचौं भारथ भीम ।
पंचौं मिलि किन्नौ मतौ, पंचौं सुरगिरि सीम ॥२४॥

पंचौं दल सज्जैं प्रबल, पंचौं बिस्व बिख्यात ।
ध्रुव रक्खन मेवार धर, लरन असुर संघात ॥२५॥

मंगि हुकम महराण प, ह्वै ठढ्ढै सिर नाइ ।
तब बीरा रु कपूर बर, सँकर अप्पै साँइ ॥२६॥

सिर चढ़ाइ पुनि नाइ सिर, घुरिय निसाननि घाउ ।
बढ़ि अवाज असुरान पर, चढ़ि जयसीह सु चाउ॥२७॥

( कवित्त )

प्रथम सु होत निसान, चढ़ति बज्जी चावहिसि ।
हय गय पक्खरि भर, सनाह पहिरिय सुबंधि असि॥
दुतिय निसान सुहोत, हसम घमसान घनारँभ ।
मिलै सकल सामंत सूर, ज्यौं समुद सलित अँभ ॥
बाज्यौ सु तृतीय निसान जब, तब जयसिंह चढ़ै सु हय ।
चामर दुरंत उज्जल उभय, आतपत्र नग रूप मय ॥२८॥

चंद्रसेन झाला, नरिंद गजगाह बंध गुरु ।
चढ़ै राव चहुआन, सिंघ ज्यौं सबर सिंघ बरु ॥
बैरी सल्ल पवाँर, राय बीराधिबीर रन ।
सगताउत रावत सु, सज्जि केहरि केहरि गुन ॥
रावत चौंडाउत रतनसी, महुकम रावत बड़ सुमति ।
चहुवान केहरीसी चढ़ै, चपल तुरंगम चंड गति ॥२९॥

महाराय भगवंत, सिंह रुखमांगद रावत ।
खीची राव सु रैंण, खेंग चढ़ि खुरियन खावत ॥
मानसिंह रावत, सुमंत महुकम सिंघ रावत ।
गंगदास कूँअर अभंग केहरि चौंड़ाउत ॥
माधव सु सिंह चौंडा मरद, कन्हा सगताउत सु कर ।
जसवंत जैत झाला प्रमुख, सजै सकल सामंत भर ॥३०॥

( दोहा )

सबल एह सामंत भर, अनि उमराव अपार ।
सेन कुँअर जयसिंह की, करन असुर संहार ॥३१॥

( छंद गीतामालती )

गंग गड़ धौं कि निसान धौं करि भजज भंभा भरहरै।
झननंकि ताल कॅसाल झननन द्रनन दुरबरि डंबरै॥
सहनाइ पूरि सॅपूरि सिंधुअ ठनन तूर ठनंकियं।
ढम ढमकि जंगी ढोल ढम ढम फुनि नफेरि भनंकियं॥३२॥

संचलै दल मुख सबर सिधुर गात अंजन गिरिवरा।
सत्तंग भूमि लगंत सुंदर झरत गिरि ज्यौं मदझरा॥
सिंदूर तेल सुरंग सीसहिं मुत्ति माल मनोहरं।
संदुरत उज्जल चौर सिरि स्रव सिंह सोवन श्रीभरं॥३३॥

मुँह सुंड दंड उद्दंड मंडित तरुन तरु तरु उनमूरतै।
दृढ़ दिग्घ दंत सभार ससि दुति सकल सोभ सॅपूरतै॥
महकंत दॉन कपोल मूलहिं गुंज रव अलिगन भ्रमैं।
ठनकंत घट सुघंट कंठहि चरन घुग्घर घमघमैं॥३४॥

सुसनद्ध बद्ध सनाह संकर तदपि खगगति पगधरै।
गरजंत ज्यौं घन गुहिर जलधर भीम ऋतु भद्दव भरै॥
सु पताक हरित सुरत्त पीतनि चिन्ह हरि रवि चंडियं।
कर कनक अंकुसि धत्त धत्ताह पीलवाननि तंडियं॥३५॥

चर चलत अग्गरु पच्छ चरखी खून तदपि खरै खरै।
बहु बिरद बंकै बंदि बोलैं भूमि तब इक पय भरै॥
करि अग्ग करिनी केक करिबर सुद्ध चित तब संचरैं।
पर दलनि पेलन पील दलपति बिकट कोटनि जे अरैं॥३६॥

ढलकंत ढाल सु बास ढंकित डोल बर किन पर कसैं।
गुरु नारि गोर जंबूर किन पर लोह कोष्टक किन लसैं॥
किन पिट्ठि नद्द निसान नौबत कनक केसु भरभरै।
गजराज गुरु सुरराज के से स्याम घन जनु संचरै॥३७॥

ऐराक आरब देस उतपति कासमीर कलिग के।
कांबोज कोकणि कच्छि कबिले हय उतंग सु अंग के॥
पय पंथ सिंधुअ पवन पथ के तरणि रथ के से तुरी।
बहु बिबिधि रंग सुरग मजनस खैंग वर करते खुरी॥३८॥

हंसिलै हरड़ै हरी किरड़ै रंग लाखिय लीलड़े।
रोझाय सिहलि भेर अंबर स बोर मसकी दृग बड़े॥
संजाब तुरॅजे ताजि तुरकी किलकिले अरु कातिले।
सु कुमैत गंगाजल किहाड़ै गरुड़ गुलरॅग गुण निले॥३६॥

जिगमिगति नग युत स्वर्ण साकति बेनि वर खधै बनी।
सु जवादि मंडि रु पाट पचरॅग गुँथी मधि मौक्तिक मनी॥
फबि बिबिधि फुंदावली रेसम लुंबझुंब बखानियै।
बढ़ि हेख हेख सघ्राण बज्जत जोर सोर सु जानियै॥४०॥

नच्चत घृतततान नट ज्यौं थाल मध्य थनं गनै।
सकुनी न पूजतु मग्ग सगहिँ गिरि उतंगहिं ना गिनै॥
परकरे नख सिख सजर परकर समर योग सराहियै।
मनु मरुत मित्र कि चित्र चित्रित चाल चंचल चाहियै॥४१॥

रग चढ़ै तिन पर राव रावत अन्य गुरु लहु उंभरा।
बर बीर धीर सभीर नृप भर सिलह पूर सडंबरा॥
घन घाघरट थट सुघट अवघट घाट कीजत दल घनैं।
बढ़ि छोह जोह सकोह कदल क्रूर वर देखैं बनैं॥४२॥

रथ भरित कै धन कनक रूवहिँ धुर्य जिन जोए धुरा।
गुरुनारि गंत्रिन सोर गोरिय तीर तरकस तोमरा॥
धनु कवच त्राण कृपाण भगवति कुंत कत्ती किलकिला।
सु सॅवारि सार छत्तीस आयुध करण खल दल कंदला॥४३॥

पयदल प्रचंड उदंड संडति सनधबद्ध समायुधा।
रिस रोस जोस सुरत्त लोयन सद्दबेधी सॅयुधा॥
पतिभक्त पर दल पूर पैरत पाइ नन पच्छैं परैं।
धसमसहिँ धर तिन चरन धमकनि धकनि कोटनि धरहरैं॥४४॥

दल मध्य दिनपति सरिस तनु द्युति कुँअर श्री जयसिह हैं।
आरुहै हंस सुबंस हय वर सकल चक्ख समीह हैं॥
उतमांग चौरँ दुरंत उज्जल आतपत्र जराव को।
कवि ब्रंद छंद बदंत कीरति देवद्रुम सद भाव को॥४५॥

दिसि बिदिसि दल दल ज्यौं जलधि जल अचल चलचल ह्वै चलै।
खल गृहनि खलभल कुंति कल कल सलल सेसति सलसलै॥
कलकलिय कच्छप पिट्ठि कसमस धीग धसमस धावहीं॥
खुरतार तार प्रतार बज्जत जानि बिस्व जगावहीं॥४६॥

सिव संक सकबक इंद अकबक धीर धाता धकपकै।
सुर सकल सटपट चंद चटपक अरुण अटपट हकबकै॥
झलझलिय निधि रवि परिय झंखर पह उझंखर पिक्खए।
सर सलित सलिल समूह सकुरि बर प्रयान बिसिक्खए॥४७॥

( कवित्त )

करिग पयान सु कोप, चमू सज्जीव चतुरंगनि।
अरक बिब आवरिय, रेणु भरि गैंण सोर भनि॥
उलटि जानि जल उदधि, कटक भट बिकट उपट थट।
मुकित मग्ग सर सुकित, चकित चहुँ ओर अटपट॥
उरझत कुरंग बराह बर, हरि धर बन पुर असम सम।
जयसिह कुँआर सकरन जय, चढ़ि दल बहल गम अगम॥४८॥

एक अग्ग अनुसरत, एक धावंत वग्ग तजि।
एक कुदावत तुरग, इक्क रहवाल चाल सजि॥
हयनि हेक नासा, निनाद प्रति साद गैंन गजि।
पर निज सुद्धि न परति, भीति धरि रिपु रिन बन भजि॥
उन्नत पताक पँच रँग प्रवर, तिन उरझत रवि तुरग पय।
तिनतैं श्रवत मुगतानि कन, जानि राज्य श्री स्रवति जय॥४९॥

अडग डगति डगमगति, अद्रि परहरति अष्ट कुल।
चड चक्षु चक चकति, उघरि लय लगति मुद्रित पल॥
अचलंचलति खलभलति, झचकि झलझलति जलधि सर।
अढर ढरति ढरि परति, धरनि धरहरति हयनि खुर॥
अकबकति इंद हकबकति हर, धकपकि धाता धीर नन।
जयसिघ सेन सजि चढ़त जब, तब त्रिभुवन संकत सुमन॥५०॥

( दोहा )

प्रबल पयान दिसान प्रति, नाद पूरि रज पूरि।
बन गिरि तुट्टि संखुट्टि बन, भय पर जनपद भूरि॥५१॥

आलम के दल उप्परहिँ, तत्तो किए तुषार।
आए तबही गढ़ उररि, श्री जयसिघ कुँआर ॥५२॥

दिए मलीदा मैंगलनि, रातब हयनि रसाल।
सलिल प्याइ छंटैव मुँह, बरत्यौ समय बियाल ॥५३॥

बीरा मध्य कपूर बर, लहु एलची लवंग।
नवल जायफल नागरस, रंजै सुभट सुरंग ॥५४॥

सिधू गौरी बजत सुर, सूरनि बढ़त सुछोह।
त्रिन ज्यौं तन धन तिन तजै, मानिनि माया मोह ॥५५॥

पलक जात रजनी परी, बिथुरयौ तम सु बिसाल।
तुरकानी दल पर तुरी, भेलन लगै भुवाल ॥५६॥
तबही बग्ग गहैं तुरित, सकल सूर सामंत।
करैं बीनती कुँवर सौं, सीतल भाष सुमंत ॥५७॥

अथ झाला चंद्रसेनजी की अरदास

प्रभु हम प्राक्रम पेखियहिं, धरहु आप मन धीर।
प्रथम पदाति युधंत जुधि, तदनु सॉइ बर बीर ॥५८॥

चहुवान राव सबलसिंहजी की अरदास

हम समान सेवक सहस, निपजैं बहुरि नवीन।
सॉई सेवक लक्खकनि, पोखन कौं प्रभु कीन ॥५९॥

पँवार राव बैरी सालजी की अरदास

सॉइं इह सेना सकल, हय गय सुभट ससाज।
समर समय ही कौ सजै, कहा और हम काज ॥६०॥

सगताउत रावत केसरीसिंह जी की अरदास

सॉइ काम सेवक मरै, तो तिन स्वर्गहिं ठौर।
सॉई पैखैं संकरैं, तिनहिं नरग नहिं और ॥६१॥

चौंडाउत रावत रतनसिंघ जी की अरदास

सॉई रक्खै सीस पर, सेवक लरैं सुभाइ।
जब सेवक साहस बढ़ैं, तहँ प्रभु करै सहाइ ॥६२॥

सगताउत रावत महुकमसिंघ जी की अरदास

मनिधर ज्यौं थिर थप्पि मनि, आप तास सु प्रकास।
चेजा करत सचेत चित, त्यौं हम लरन उल्हास ॥६३॥

राव केसरीसिंघ जी की अरदास

सॉई सिरजै हुकम कौं, हुकम दिपाउनहार।
हुकमी सॉई कै बहुत, जंगवार जोधार ॥६४॥

तदनतर महाराजा भगवतसिंघजी की अरदास

तोरि पताका तुरक कै, नोबति लेइ निसान।
आवै तौ उमराव तुम्ह, प्रभु हम वचन प्रमान ॥६५॥

तदनु चहुवान रुषमागद रावत की बिनती

सॉइ पचारत सेवकनि हॉ भल बोलि हुस्यार।
तब मन दूनौं बल बढैं, सत्रुनि करत संहार ॥६६॥

तदनु खीची राव रतन का अरदास

इह तन इह मन इह सुधन, इह सुख गेह सयान।
हैं सॉई ही कै सकल, परिकर संयुत प्रान ॥६७॥

अथ रावत मानसिंह जी की अरदास

राखी पीठि मुरारि रिन, पंडव पंच प्रधान।
कौरव दल तिल तिल कियौ, हम मन एह मंडान ॥६८॥

अथ सगताउत रावत महुकमसिघजी की अरदास

सॉइ भरोसो रक्खियै, हम अभंग रन हिदु।
कहर काल करबाल गहि, मारहिं मीर मसंद ॥६९॥

अथ सगताउत गगदास कुँअर की अरदास

बिमल बंस जन के बिदित, मात पिता प्रभु एक।
ते सॉई के कामतैं, टरैं न इह तिन टेक ॥७०॥

अथ चौंडाउत रावत केसरीसिघ की अरज

देखत चंदहि दूरि तैं, चुनत क्रसानु चकोर।
त्यौं सॉई निरखत सुभट, रण सुमचावहिं रोर ॥७१॥

अथ माधोसिंघ चौंडाउत की अरदास

सॉई सुख तैं हम सुखी, सकल सूर सामंत।
ज्यौं तरु सींच्यौ पेड़तैं, पात पात पसरंत ॥७२॥

अथ कन्ह सगताउत की अरदास

सॉई सकल सयान हौ, गुरु बंधै गजगाह।
एक तमासौ अनुग कौ, देखहु दंद दुवाह ॥७३॥

कर युग जोरि सुललित करि, करि निज निज अरदास।
करि प्रसन्न जैसिघ मन, वग्ग थंभि ब रहास ॥७४॥

सहस सुभट हय बर सहस, प्रभु रक्खै निय पास।
समर धसै हय सहस दस, सुभट सहस दस भास ॥७५॥

( कवित्त )

सकल सूर सामंत, अरज बिन्ती सु अद्ध निसि।
बरषागम बद्दल, बियाल दृग चाल बंध दिसि ॥
भेले भय भारथ सु, भीम परिसाहि सेन पर।
त्रटकि जानि घन तरित, भटकि चित चक्रित असुर भर ॥
बे चूक चूक कबिला बकत, जानि किसान लुनत कृषि।
बज्जी सु झाक झर खग्ग झट, संयुग प्रलय समीर भिषि' ७६॥

( छंद मुकुद डामर )

झननंकिय खग्ग सु बज्जि झटाझटि धाइ धसंमस धींग धसैं।
कर कुंत सकंति रुकंति कटारिय लोह झलंमल झॉइ लसैं॥
जुरि जोधनि जोध जनौ जम जोरिय टोप कटक्कि करी करकैं।
झटकंत सनाह कृपान झनंकति हड्डु कटक्कि बज जरकैं॥७७॥

मिलि कंकनि कंक सुधार खिरंतह अग्गि झरंत कि बिज्जु झला।
तिन होत उद्दोत तकै उतमगहिं कोपित सूर अनंत कला॥
मचि कंदल मीर गंभीर कटैं मधि माझिय जेइ मसंद महा।
तनु भार सँभारिय खंध भुजा तिन भार पराक्रम खग्ग बहा॥७८॥

बहि बज्र प्रहार गदा गुरु मुग्गर पक्खर भार सुढार ढरैं।
दुटि टोपनि टूक फटैं फुनि टट्टर सैद बि कैद से सून फिरैं॥
लरि लुब्ध पठान छकै छिलि लोहनि खंड बिहंड बितंड भये।
प्रहनंत न अप्पन आन पिछानत जानि सु ठाण के खम्भ ठये॥७६॥

दुहुँ ओर दु बाह उछाह उमाहिय आपनै ईस की आन बदै।
तजि नेह सुदेह सुगेह सुमानिनि सॉइय काम सुहॉम हृदै॥
करि ताक सँभारि सँभारि सुहक्कत बेधत बान अभंग बली।
तनु त्रान संधान युआन स प्रानहिं बेधत आनहिं होत रली॥८०॥

सर सोक बजत सुढंकिय अब्बर डंबर जानि कि मेघ स्रवैं।
बहि रंग प्रबाह सुराह प्रबालिय चोल रँगै जनु चेल चुवैं॥
फरसी हर हुल्ल गुपत्ति फुरंतह धीरज केइक धीर धरैं।
भननंकिय गोर सु सोर भटक्किय गैंन गजैं गिर सृंग गिरैं॥८१॥

धर पिट्ठि धसक्किक धसक्कि धराधर कायर जानि कुरंग भगैं।
घन घोष सु त्रंबक सिंधु घुरंतह ज्यौं बर बीरनि बीर जगैं॥
कुननंत कितै कबिला कलहगनि रुम्मि रुहिल्ल गोहल्ल रुरैं।
मचि मारहु मार सुमार मुखं मुख भारिय भारत भूप भिरैं॥८२॥

उतमाग पतंत कहैं केइ अल्लह कै रसना तैं रसूल ररैं।
घन घायल घाउ लगैं घट घूमत झूमत ही धर धंखि परैं॥
हबसी उजबक्क बलोचिय भंभर गक्खरि भक्खरि कौंन गिनैं।
परि सत्थर बित्थर बैरि रिनंगन बायक कैसे कहंत बनैं॥८३॥

कटि कंध कमंध सुअंध गहैं असि नच्चत रूप बिरूप लगैं।
उबरत परंत गिरंत कि गिदुक जिदु अटट्टट हास जगैं॥
गज बाजि फिरंत रिनंगन गाहत भंजि करंकनि भूक करैं।
तरफैं अधतग तुटै नर आसुर ज्यौं जलहीन सु मीन रुरैं॥८४॥

कर खग्ग कढ़ैं सिर खंध लटक्कत आन झटक्कत झुंझि भरैं।
मुख मार बकंत हकंत हुस्यारिय झार प्रनार सुरग झरैं॥
नट ज्यौं भटकैं किन बल्ल निपट्ट उलट्ट पलट्ट कुलट्ट नचैं।
अनतुंग अनोकुह अंत अलुज्झत मांस रु स्रोनित पंक मचैं॥८५॥

किन अस्व कटंत धपंत सु पाइन पाइ झरंत सुकुंत बरैं।
रहि ठट्ट सुगट्ट कुधंत इकैं करपार बदंतन क्षौनि परैं॥
बिन हत्थ कितै धपि मारत मुंडहिं ज्यौं वृष मेष महीष भिरैं।
बढ़ि सत्थ लथब्बथ कै हथ बाहु सुमुट्ठिन मुट्ठि ज्यौं मल्ल जुरैं॥८६॥

भभकैं करि सुंड बिहंड भसुंडह चच्चर रत्त प्रवाह चलैं।
उछरैं अनि खंड सुजानि अजगगर जंगल केलि करंत जलैं॥
उड़ि स्रोनित छिंछि उतंग अयासहिं संझ समान सुबॉन बढ़्यौ।
बलि लेन बिताल रु बीर बिनोदिय चौसठि युग्गिनि रंग चढ़्यौ॥८७॥

लगि लुत्थिन लुत्थि उलत्थि पलत्थिय हत्थिन हत्थिय ब्यूह अरैं।
हय सत्थ कितै हय ग्रीवह बस्सिय बाढ़ बिहास्सिय भूमि ढरैं॥
टुटि टोप रु त्रान कृपान सरासन तीर तरक्कस कुंत तुटैं।
बर बैरख बंबरि झंड उझंझरि नेज रु नारि अराब फटैं॥८८॥

बहु रूप बिलास प्रहास समीहित ईसर अंबुज माल गुहैं।
सब केक हकारि बकारि सु उट्ठहिं गिद्धिनि तुडनि मुंड गहैं॥
प्रहनंत दुहूँ पख बीर पचारत बाहि समाहि बदंत बली।
तिन सद्द सुनंत सु नारद तुंबर रक्खस जक्ख सु होत रली॥८९॥

अरि मुंड कितै हय गय पय ठिप्पर चोट चौगान की दोट भए।
रन रंग रलत्ताल रत्त महीतल चक्क चलंचल चंड जुए॥
रस भैरव भूत पिसाच महोरग दैतरु दानव दंद चहैं।
सुर इंद सबै मिलि सूर सराहत हो हिंदुवान की जैति कहैं॥९०॥

रुरि रुंड रु सुंडनि नार मलेछनि सेन सुखंड बिहंड भई।
प्रहरेक प्रमान महा झर मंडिय भारथ उद्धम भाँति ठई॥
बरि हूर सनूर सँपूर सुसूर सनेह गरैं बरमाल ठवैं।
जयकार करंति बधाइ सुमुत्तिन मंगल गाय प्रसून स्रवैं॥९१॥

( कवित्त )

प्रमुदित स्रवति प्रसून, गीत रंभागन गावत।
बरत सु बर बर बीर, बिमल मोतीन बधावत॥

गरहिं घल्लि बरमाल, साखि दे सकल सूर सुर।
पंकजनैनि पढ़त, बखौं मैं प्रगट एह बर॥
बैताल फाल बिकराल बपु, हास अटट हरषत हसत।
असि झरझरंत तुट्टत असुर, धीर बीर रिण धर धसत॥९२॥

असि अपार अकरार, धार रिपु मार धपंतिय।
जंगवार जोधार, भार करतार सुभंतिय॥
झलमलंति झनकंति, खिज्जि खल मत्थ खिपतिय।
सौदामिनि सोदरा समर सन अजय जयंतिय॥
रंगी सुरंग रलतल रुहिर, सकल सत्रु संहारती।
हिंदवान थान रक्खन सुहद, भगवति प्रगटी भारती॥९३॥

बिफुरि हिंदु बर बीर, ढान असुरान ढंढोरत।
हय गय नर संहार, झार घन झंड झकोरत॥
लुट्टत लच्छि अलेख, कूह फुट्टी अकरारिय।
सोवत सुंदरि सत्थ साहिजादा भय भारिय॥
खलभलिय सु खल तिय कुल सकल, अकल विकल हिय हरबरत।
भग्गै सभीति गिरि बन गहन, निसि अँधियारी अरबरत॥९४॥

हिय हहरंति हुरंम, हार तुट्टत मोतिन गन।
परत हीर परवाल, लाल श्रम भाल स्वेदकन॥
निघटि स्वास निस्वास, भरति लोचन मृगलोचनि।
यूथ भ्रष्ट मृग बधू, समान चक्रित रस रोचनि॥
धावंत उनग्गनि मग्ग तजि, एकाकिनि गिरि गृह सजति।
ऐ ऐ प्रताप जयसिंघ तुम अरिन बाम रन बन ब्रजति॥९५॥

लुट्टि खजान अमान, लुट्टि हय गय सु बिहानिय।
साहिगंज ढंढोरि, तोरि तंबू तुरकानिय॥
नौबति लेइ निसान, भार रिपु थान सु भज्यौ।
जानी सकल जिहान, सकल सज्जन मन रंज्यौ॥
बहुरे निसंक जय करि बहुत, मिल्यौ म्लेछ तिन मारयौ
महाराण सुभट सामंत सजि, बहु असुरान बिडारयौ॥९६॥

किन अस्व कटंत धपंत सु पाइन पाइ झरंत सुकुंत बरैं।
रहि ठट्ट सुगट्ट कुधंत इकैं करपार बदंतन क्षौनि परैं॥
बिन हत्थ कितै धपि मारत मुंडहिं ज्यौं वृष मेष महीष भिरैं।
बढ़ि सत्थ लथब्बथ कै हथ बाहु सुमुट्ठिन मुट्ठि ज्यौं मल्ल जुरैं॥८६॥

भभकैं करि सुंड बिहंड भसुंडह चच्चर रत्त प्रवाह चलैं।
उछरैं अनि खंड सुजानि अजग्गर जंगल केलि करंत जलैं॥
उड़ि स्रोनित छिंछि उतंग अयासहिं संझ समान सुबॉन बढ़्यौ।
बलि लेन बिताल रु बीर बिनोदिय चौसठि युग्गिनि रंग चढ़्यौ॥८७॥

लगि लुत्थिन लुत्थि उलत्थि पलत्थिय हत्थिन हत्थिय ब्यूह अरैं।
हय सत्थ कितै हय ग्रीवह बस्सिय बाढ़ बिहास्सिय भूमि ढरैं॥
टुटि टोप रु त्रान कृपान सरासन तीर तरक्कस कुंत तुटैं।
बर बैरख बंबरि झंड उझंझरि नेज रु नारि अराब फटैं॥८८॥

बहु रूप बिलास प्रहास समीहित ईसर अंबुज माल गुहैं।
सब केक हकारि बकारि सु उट्ठहिं गिद्धिनि तुडनि मुंड गहैं॥
प्रहनंत दुहूँ पख बीर पचारत बाहि समाहि बदंत बली।
तिन सद्द सुनंत सु नारद तुंबर रक्खस जक्ख सु होत रली॥८९॥

अरि मुंड कितै हय गय पय ठिप्पर चोट चौगान की दोट भए।
रन रंग रलत्ताल रत्त महीतल चक्क चलंचल चंड जुए॥
रस भैरव भूत पिसाच महोरग दैतरु दानव दंद चहैं।
सुर इंद सबै मिलि सूर सराहत हो हिंदुवान की जैति कहैं॥९०॥

रुरि रुंड रु सुंडनि नार मलेछनि सेन सुखंड बिहंड भई।
प्रहरेक प्रमान महा झर मंडिय भारथ उद्धम भाँति ठई॥
बरि हूर सनूर सँपूर सुसूर सनेह गरैं बरमाल ठवैं।
जयकार करंति बधाइ सुमुत्तिन मंगल गाय प्रसून स्रवैं॥९१॥

( कवित्त )

प्रमुदित स्रवति प्रसून, गीत रंभागन गावत।
बरत सु बर बर बीर, बिमल मोतीन बधावत॥

गरहिं घल्लि बरमाल, साखि दे सकल सूर सुर।
पंकजनैनि पढ़त, बखौं मैं प्रगट एह बर॥
बैताल फाल बिकराल बपु, हास अटट हरषत हसत।
असि झरझरंत तुट्टत असुर, धीर बीर रिण धर धसत॥९२॥

असि अपार अकरार, धार रिपु मार धपंतिय।
जंगवार जोधार, भार करतार सुभंतिय॥
झलमलंति झनकंति, खिज्जि खल मत्थ खिपतिय।
सौदामिनि सोदरा समर सन अजय जयंतिय॥
रंगी सुरंग रलतल रुहिर, सकल सत्रु संहारती।
हिंदवान थान रक्खन सुहद, भगवति प्रगटी भारती॥९३॥

बिफुरि हिंदु बर बीर, ढान असुरान ढंढोरत।
हय गय नर संहार, झार घन झंड झकोरत॥
लुट्टत लच्छि अलेख, कूह फुट्टी अकरारिय।
सोवत सुंदरि सत्थ साहिजादा भय भारिय॥
खलभलिय सु खल तिय कुल सकल, अकल विकल हिय हरबरत।
भग्गै सभीति गिरि बन गहन, निसि अँधियारी अरबरत॥९४॥

हिय हहरंति हुरंम, हार तुट्टत मोतिन गन।
परत हीर परवाल, लाल श्रम भाल स्वेदकन॥
निघटि स्वास निस्वास, भरति लोचन मृगलोचनि।
यूथ भ्रष्ट मृग बधू, समान चक्रित रस रोचनि॥
धावंत उनग्गनि मग्ग तजि, एकाकिनि गिरि गृह सजति।
ऐ ऐ प्रताप जयसिंघ तुम अरिन बाम रन बन ब्रजति॥९५॥

लुट्टि खजान अमान, लुट्टि हय गय सु बिहानिय।
साहिगंज ढंढोरि, तोरि तंबू तुरकानिय॥
नौबति लेइ निसान, भार रिपु थान सु भज्यौ।
जानी सकल जिहान, सकल सज्जन मन रंज्यौ॥
बहुरे निसंक जय करि बहुत, मिल्यौ म्लेछ तिन मारयौ
महाराण सुभट सामंत सजि, बहु असुरान बिडारयौ॥९६॥

( दोहा )

भगौ साहिजादा गयौ, गढ़ अजमेर अनिट्ठ ।
रहै न आसुर और रन, नृप नबाब सब नट्ठ ॥९७॥

करैं सु मुजरौ कुअर सौं, सकल सूर सामंत ।
छबि छिलतै रन छोह लै, बहु सुख पाय अनंत ॥९८॥

लहै सु जिन जिन लुट्टि कै, हय बर हत्थी हेम ।
कुँअर अग्ग तैं भेट करि, पोखिय प्रबर सु प्रेम ॥९९॥

रक्खन जोगे रक्खि कै, सनमानै सब सूर ।
ग्राम ग्राम तिन देइ गुरु, सज सिरपाव सनूर ॥१००॥

आए निज गृह जीति अरि, करि बहु कंदल काम ।
उथपि थान असुरेस को, हृदय सु पूरिय हाम ॥१०१॥

इहि परि रक्खै निज अवनि, राजसिंघ महाराण ।
और हिंदु सेवै असुर, खल खंडन खूँमाण ॥१०२॥

( अथ कलस कवित )

अजमेरह अग्गरौ, धाक दिल्ली धर धुज्जै ।
रिनथंभह रलतलै, लच्छि लाहौर लुटिज्जै ॥
खुरासान खंधार, थटा मुलतान थरक्कैं ।
चंदेरी चल चलय, भीति उज्जैनि भरक्कैं ॥
मंडवह धार धरनी मिलय, डुलय देस गुजरात डर ।
औदकै साहि औरंग अति, राण सबल राजेस वर ॥१०३॥

अचल युद्ध धर अकल, अखल अज्जेज अभंगह ।
अद्भुत अनम अनत, आदि अवनीस सु अंगह ॥
कालंकिन केदार, पापि कज्जैं प्रयाग पहु ।
महि सु गंग मदुवान, बिरुद इहिँ भाँति जास बहु ॥
जगतेस राण सुअ जगत जस, अत्थि देत बिलसंत अति ।
कहि मान राण राजेस यौं क्षत्रीपन रक्खंत खिति ॥१०४॥

सज्जन सौं सनमान, दंड भरि थक्कै दुज्जन ।
जसकारक जाचकनि, देत हय हत्थि दिनं दिन ॥

न्याउ बेद बर नीति, दूध को दूध जलं जल।
अजा सिंघ थल इक्क, सलिल दुक्कत बिन संकल॥
ध्रुव रज्ज जास जौ लौं धरा, प्रकट बिरुद जिन हिंदुपति।
कहि मान राण राजेस यौं, क्षत्रीपन रक्खंत खिति॥१०५॥

इद्र रूप ऐश्वर्य्य, दान जलधर ज्यौं दिज्जै।
राज तेज रवि रूप, क्रोध रिपु काल कहिज्जै॥
लीला ज्यौं लच्छीस, न्याय श्रीराम निरतर।
अर्जुन ज्यौं सर अचल, विक्रमादित्य बचन वर॥
कलियुग कलंक कप्पन बिरुद, मलन असुरपति बिमल मति।
कहि मान राण राजेस यौं क्षत्रीपन रक्खंत खिति॥१०६॥

ऐं उत्तम आचार, निबल आधार सबल नृप।
सुरहि संत जन सरन, जग्य घन दान होम जप॥
बिस्तारन बिधि बेद, ईस प्रासाद उद्धरन।
असुरायन उत्थपन, सु कवि घन बित्त समप्पन॥
दिन दिनहिं सदाब्रत षटदरस, भुजाई यदुनाथ भति।
कहि मान राण राजेस यौं, क्षत्रीपन रक्खंत खिति॥१०७॥

———

# परिशिष्ट

## १—प्रतीकानुक्रम

[ सख्याएँ अध्यायों एवम् छंदों की हैं ]

अकुस सरिस जा—५-६२
अगज साहि औरग—१३-१
अत पतिय पय—१-२२५
अवर इक आदित्य—१८-१५
अवर धर आवरिय—१५-८
अवर बर पत्र—८-१६७
अवर बिलगि अब —४ ५
असुक कि इदु—१-२६
अकस्मात तब सिह—१-१६१
अक्खै तब उमराव—१०-७०
अक्खै कै असुरानि—१७-३१
अखत खग्ग बल—३-४१
अखिय आइ बधाइ—७-४४
अखिय बिप्र असीस—३-५८
अखियात अचल युग—८-१६६
अखै औरगसाहि—६-३६
अगरु तगरु अनाइ—८-४६
अचल युद्ध धर—१८-१०४
अचल रज इकलिग—६-३
अज अजर अमर —१-३१
अजमेरह अग्गरौ—१८-१०३
अजेज गाढ आगरे—५-४३
अज सफल अवतार—८ ६०
अटक्यौ न किहिँ—१२-२१
अट्ठ मासं सुयं—१-१३८
अडग डगति डगमगति—१८-५०
अति इद्रलोक मज्यौ—२-१५३
अति उतग अबर—१-६२
अति दत्त चित्त—१-८६
अति दत्त चित्त —२-५१
अति दलमलियत उरहिँ—३-१०५
अति पावस उल्हरिग—१-३६
अति बढ्ढि अवाज—६-२६
अति मिलिय प्रजा —७-१०५
अति रोसहिँ कीन —६-३६
अतैव अस अक्खियै —५-५७
अदभुत थानिक पिक्खि—८-१०५
अद्ध रयनि तम—६-१००
अनपुठ्ठिराय पुठ्ठिय पलॉन—६-२२
अनमिख नैंन निहार—३ १०६
अनाधार असरन असत —८-१३४
अनुक्रमि वर्ष दुतीय—२-१८६
अनुक्रमि हरि गृह—८-५२
अनुक्रमैं दिवस द्वादसम—२-१७१
अनुग मुक्कि तिन—६-६७
अनुग हत्थ फुरमान—१०-२४
अनूप हेम आसन—५-३
अनेक अभेद अनोप—३-६
अनेक राय जूथ—३-८०
अप्पि बर एम—१-१५७

अब हम गमन—१-१५२
अबल राय आधार - ६-१७४
अबलाकृत अरदास—७-४२
अबारस भौंर मरक्कि—१७-१८
अभग जास सासन—५-२०
अभिनवा बसुमति इद—२-५७
अमर राण अवदात—१०-७७
अमर राण इहिं—८ ११०
अरबिंद पुष्प कि—१-२४
अरबी ऐराक आरब—८-१३
अरसी राख महा—२-३०
अरि को मडय—३ ६७
अरि बाम बाल – ३-४०
अरि भवन लगन—२-१६३
अरि मित्र अप्पन—१२-१६
अरि मुड किते—१८ ६०
अरैं नन-आसुर—६-१५६
अर्चेयषि कर्द्दम सकल—७-६७
अलकृत कुदन अग—२-१७८
अलावदी आलम चढि—२-१६
अलिय टेक मडौ—६-१२५
अल्लह सु देइ—६-१४
अल्लू रावर राजनीति—२-६
अवदात सुजस अपार—२-५८
अवनी सुख धारै—६-४२
अविलव सजि दलबल—८-६
अवलोकि असुर पति—६-५३
अष्टादस सर अभिराम—७ १४
असख यों चमू – ३-७८
असन बसन बसु—२-८६
असपति अहनिसि औझकतु-१०-१०२
असपति परि औरंग—६-६

असि अपार अकरार—१८-६३
असुरायन धरनी अवर—१-६३
अहनिसि लगत असाढ—१०-६६
अहमदाबाद थानह सु—६-४६
अहो जोगिद करि – १-१५४
आँवरी अगच्छि अैंन—४-६
आइ गहैं को—१०-१०
आई निरतर हसित—१-१२
आए चढि अजमेर—६-१२७
आए निज गृह—१८-१०१
आए नृप दुर्ग्गहिं—१-२३२
आए मुरधर इला—६-१६५
आए साहि हजूर—१३-३०
आगे ज्यों कूँअरपनै - १८-४
आगैं हूँ इन—३-२७
आजानबाहु अनमी अभग—३-३२
आडे जे आए—६ १६४
आदि बैर हिदू—६-५
आरति दीप उतारि—८-८५
आराब छुट्टै अछेह—१४-१४
आलम के दल—१८-५२
आवत पेसकस प्रति—८-३२
आवत जब जानै—११-२
आवत जिन अहमेव—१०-१०७
आवत सुनि ओरग—६-१७१
आसाढ मास आयौ—१-४०
आहुट्टराय दल बल—३ ३३
इद्र रूप ऐश्वर्य्य – १८-१०६
इद्रसभा अनुहारि—८-१४७
इद्रसभा की ऊपमा—१ २३६
इक कहि क्षत्री—६-६३
इक कहै पुब्ब—६-५४

इक दह हय - ६-१२८
इक दिन आलम—७-२३
इक भरत दड—६-२७
इण परे सरस—१-५१
इत्यादिक अविलब तै—८-४६
इत्यादि देस अनेक—१-८६
इत्यादिक रावर—२-२१
इन अनिट्ठ औरग—६-१७६
इन चित्रकोट सु—१-११४
इन परि सुनि—१-३४
इन मड आदि—१-११५
इन लुट्यौ अग्गरौ—१०-७
इभ गरुये इगबीस—६-२०२
इल त्यौं हरि—६-८
इल नगर पुर—८-१३२
इला इद तूही—५-२५
इह औसर आयौ—६-६६
इह तन इह—१८-६७
इहिं पर सेव—८-६१
इहिं परि करि—८-६१
इहिं परि घन—८-४०
इहिं परि थान—१६-२८
इहिं परि धार—१७-३६
इहिं बर कै—३-१०८
इहिं बिधि आलम—६-१४८
इहिं बिधि गुरुता—६-१६०
इहि पतिसाहि रीति - ६-७५
इहि परि रक्खै—१८-१०२
इहि भति अलकरि—८-७६
इहि भति लिख्यौ—३-४८
इहि भाँति दुर्ग—१५-२७
इहीं बिधि युग्गिनी—६-१५६
ईडरगढ उद्धसयो—१५-३०
ईडर दुर्ग्ग उजारि—१५-२६
उग्गम दिसि तिन—८-१४४
उच्छरै दामय रूप—७-६४
उच्छारि मुत्ति अखए—५-१६
उछरे उतग खाँन—१४-१६
उजरि अहमदाबाद—१५-१०
उझटिय आसुरि सेन—६-१४५
उठि प्रात तच्छ—१-१०४
उड़ि खोनित छिछि—१६-२३
उडिय रेनु सु—१-२१६
उड़ै रैनु ब्यूहं—१०-४६
उत तै मोरी—१-२०८
उतमग पतत कितै—१६-१६
उतमाग पतत कहँ—१८-८३
उतमाग पूर्ण कुभह—७-१०४
उत्तग गिरि सम—१-६६
उत्त ग चक्र गत्री—८-२१
उत्तमहु तजि आचार—८-१२१
उथप्पै दल बद्दल—३-८
उदयभान कूँअर अमर—१२-१
उदयसिघ राणा अनम—२-३५
उदया राण अभग—१०-७५
उदार चित्त अक्खियै—५ ४४
उदैपुर इद्रलोक अनुहार—२-८७
उद्धसै असुरान खान— १३-२६
उद्यम ग्रथह काज—१-३७
उनमत्त करत अग्गग्—६-६
उनमत्तराय अकुस प्रहार—८-२८
उपन्नौ अचिज्ज—१-१८५
उभय राज बर—३-८५
उभय राज बर—३-८६

उभय लक्ख बर—६-८८
उमग्ग मग्ग सैल—३-८२
उमराव खान इहि—६-२६
उर उरज उभय—७-१५
उरबसी हेम मानिक—८-७६
उररि देते उपट्ट—१४-१८
उलटे बराक अनत—८ १२४
ऊचलि गय अग्गरौ—६-२७
ऊजर करि अग्गरौ—१०-१७
ऊज्जग करि अग्गरौ—६-१६७
ए ए सुबुद्धि—६-५१
ए पहार पति—१३-३२
ए हिदूपति आदि—६-१७३
एक अग्ग अनुसरत—१८-४६
एक दस बरस—१-१४४
एक दिन एक—१-१४५
एकल्ल भयौ पतिसाह—६-१६
एकहि बैर औरग—१४-३६
एह गल्ह असुरेस—१५-२
ऐं उत्तम आचार—१८-१०७
ऐ अवतार रूप—५-६३
ऐ हिंदु कुल—२-४०
औराक अस्व आरब—७-६०
औराक आरब अच्छ—१-७१
ऐराक आरब देस—१८-३८
ऐराक आरबी अस्व—६-८
ऐराकिय आरबि अस्व—१७-१६
औरगसाहि भेज्यौ सु—६-५०
कसहिँ को कर—१७-३३
कच्छ देस निज—१-२०५
कटक्कत हड्ड सुजड्ड—६-१४२
कटल बढल कुद—४-७
कटि कध अध—१३-१४
कटि कध कमध—१८-८४
कटि कसै कटारी—६-१६
कटि सीस नचत—१२-१५
कट्टन दरिद्द दुख—५-६०
कत्ती किलकिल्ला सक्ति—११-६
कथन एह कमधज—३-६०
कथन राण अति—१०-१११
कदली सुखभ अधो—१-१५
कनक कुभ धज—८-४१
कनक तोल ऐराकि—८-१०१
कन्या दो तिन—३-३
कपट सु लखि—६-३७
कब कै तुम—३-६१
कबहुँ लरारहिँ मल्ल—१८-६
कबिल गल्ह ऐसी—१४-२
कबिल नचै कमध—१४-१६
कमनीय काय अ[illegible]—५-६१
कमल नयन कसारि—८-५६
कर गृहैं कृपानय—५-८
करत केलि कोरि—५-४५
करतै पयान उरझै—१०-५०
कर कुत कटारि—१६-१६
कर खग्ग कढै—१८-८५
कर झल्लि वर—२-४७
करण राण चढती—२-३७
करत प्रस्न दिन—६-१६६
करत बिहग केलि—४-१५
करते तौ हम—६-१२१
करते बहु कूच—६-३०
करतै सु स्नान—८-६७

करन दुग्गं सजि—१० ८०
करन पुत्र दुअ—२-२३
करबाल कुंत रु—१२-७
करभसाल उन्नत करभ—२-७७
करमसीह ऊँच कृत—२-११
कर युग जोरि—१८-७४
करसाख कमनिय रूप—१-१६
करि अग्गै महराइ—६-१६३
करि अग्गै करि—१४-३२
करि कर जघा—७-२०
करिकै ब्रज पर—८-५८
करिग पयान सु—१८-४८
करि भीर प्रभू—७ ३६
करिय अहोनिसि कूच—१०-१
करि यौं मानस—१०-६
करि यौं दिल्लियपुर—६-१६१
करि सुजात हरि—८-६७
करी सु करहा—१-१६८
करुना कर तै—७-२६
करै दहन कर—१८-१७
करै सु मुजरौ—१८-६८
करै महाराण सु—२-१८२
करै सोड असपति—६ ३१
कल कनक्क कुभ—५-४
कलकठ सु रसना—७-११
कल कीरथभ सु—१-१०६
कलस रजत के—८-६६
कलह जीति कमधज—६-११८
कलह केलि जहँ—७-८१
कलाधर भूधर श्रीधर—२-६०
कविलानराय कढ्ढन सु—६-२१
कहय रिषि एम—१-१५६
कहिँ परधि द्वादस—१-१००
कहि आलम कमधज—६ १२६
कहि कँगुरा कल्यानियं—१-११२
कहि तब असपति—६-१६७
कहि पयान महारान—८-३८
कहि प्रोहित तब—८-१०६
कहियै निगोदर हार—१-२०
कहियै राजकुँआर—३-२४
कहियै श्री राजकुँआरी—७-६
कहियै सुलगन कुल—२-१६४
कहुँक दड किज्जियहि—१७-७
कहुँक नारि करिनारि—१४-३८
कहुँ लब कुच—१-८३
कहूँ सु नारि—१३-२८
कहूँ कठियार क्रीणत—२-१३६
कहूँ कहुँ हट्ट—२-१०८
कहूँ तिय सोहव—२-१४१
कहूँ नट नच्चत—२-१४०
कहूँ पति भृत्य—१७-२७
कहूँ रघुबीर कहूँक—२-१०४
कहूँ सु जगातिय—२-१३८
कहैं सु मत्री—३-४
कहै तब नाम—२-१७४
काबरि कपोत कोरि—४-१७
कायर भगे कुरग—१४-२१
कालकि जन केदार—२-४१
कालकिराय केदार कत्थ—६-२०
कासी रु दीठ—१-७२
काहू सौं ही—१-१२८
किज्जेब एह हम—३-४६
कितक एह गुरु—१८-१६
कितक दिननि कब्बिलेस—६-१६६

कितनेंक कब्बिल्ला उररि—११-८
कितनेंक करत निमाज—१२-११
कितिक एह कमधज्ज—६-८४
किती तहँ मालनि—२-१२७
किते सब नीक—२-६६
कितेइ उपाश्रय चौकिय २-१०५
कितेइ कठारिय मडि—२-११५
कितेइ कदोह निहट्ट—२-१२१
कितेइ बसत सुनार—२ ६४
कितेइ सरापनि हट्ट—२-१०६
कितेइ सौदागर अस्व—२ १४२
कितेकन हट्टिय हट्ट—२-११६
किते अग्ग करिणी—१०-३२
किते इक मोचिय—२-१३६
किते इत मोरनि—२-१२४
किते उमराव हयग्गय—२-१४३
किते ऋतु ग्रीषम—२-१२६
किते कातरा काय—६-१११
किते काल बित्तै—१-१६१
किते जाति काबोज—१०-३५
किते डूब जमदढ्ढ—६-११२
किते तहँ आवतु—२-१०३
किते तहँ कुदन—२-११०
किते तहँ गध—२-१२५
किते तहँ गुड—२-१२८
किते तहँ जौहरि—२-१०७
किते तहँ देवल—२-१०२
किते तहँ बौहरे—२-१३२
किते परवालिय महिष—२ १४७
किते पटवानि के—२—१३१
किते पब्बंती अस्व—१०-३७
किते पौंन सत्थी—१०-३६
किते बहु मौलिक—२-१११
किते बिन सीस—६-१४४
किते मन हट्टिय—२-१३७
किते षटदर्सन आश्रम—२-१३८
किते सिंघली जगली—१०-३४
किन पिट्ठि सज्जै—१०-२८
किन बधि कट्टार—१० २६
किन अस्व कटत—१८-८६
किनौं चित्रकोटें—१-१८४
किय सेन अग्ग—६-४
कियें प्रति कूँचनि—१७-२६
कीरतिधवल धवल—२-४
किलकि कर कहे—१-२१२
किलकि किलकि केक—१४-१५
किलकिले कातिले हय—८-१६
किलक्कत माइ निहारि—२-१८१
किहि मुक्ताफल माल—६-२०६
किहिं विधि बीत्यौ—६-४
किहि अस्वमुख नर—१-८२
किहि धरा पुरुष—१-८५
कीजत राह मह—८-३१
कीन निवल्लावरी—७-६३
कुदनहिं कुर्ती कीन—२-५४
कुभलमेर अजीतगढ—२-३३
कुअरपनै सु केलि—४-२३
कुषिय राजकुँआर रिन—३-६२
कुरु कासमीर कासी—६-२३
कुसल रहैं निय—१०-७८
कूच कूच बहु—६-६२
कृत धर्म भवन—२-१६५
कृपान पानि दुट्ठ—५-४७
केकी करत गिरवर—१-४२

केतकी रु कन्नार—४-८
केदारराय कट्टन कलक—८-२७
केसरीसिध रावत सु—१०-६०
को अडुल्ल हरवल्ल—१३-२४
कोटि ते भूप—१ १४०
कोटिक धन बिन—८-१६४
कोदड आकृति भृकुटि—१-२६
कोसरु कोठागार पति—२-७१
कोसीस पकति कतए—१-६८
कोसीसावलि सोह कर—२-६३
कौन गिनैं मरु—१-४
कौसलरु रु कोंकण—१-७३
क्रमैं ब्याह किन्नौ—१ १८६
क्रमि क्रमैं पत्त—१-१५०
क्रर जसु कर—५-८७
खनकत खग्ग उनग्ग—१३-१३
खनकंत जसु कर—२-४८
खनत केइ नर—८-१४५
खरच कज सु—६-२०५
खरच सु लेहु—१० ६५
खर-भरि आँसुरखाँन जिहान—६-१४६
खल खडन देव—८-१७०
खल झल्लि कीजत—२-५०
खाग त्याग दुहुँ—१७-३
खिजमति सु दार—७-६३
खिति कहूँ जल—१-८४
खिति धरहरि हय—१६-१०
खिरि ककनि कक—१६-१३
खिलावहिं मुक्कि सु—२ १७६
खीरोदक अतलस सरस—१५-१८
खुरतार मार धरहरिय—८-३०
खुरेसिय खग्ग कियै—६-१४७
खेतल रॉण समाहि—२-३१
खेती हम कुल—६-८०
गंग कुँअर गुन—१४-६
गग गड़ धौं—१८-३२
गधर्व नचत सु—८-१५६
गए अमुर तजि—१६-२७
गए कितहूँ तजि—६-१५८
गजराज तजै खर—७-३२
गज्जतै जल गभीर—८-१५१
गज्जतु घोष गजादि—८-३६
गड्डि झड अजमेर—६-६३
गढ चित्रकोट सु—१-६५
गढ तोरि तोरि—१५ १३
गढपति पँवार दाता—१०-६१
गढवती महेजा अमरसिंह—१०-६७
गढ मध्य बहु—१-१०२
गयौ अनुग अजमेर—१० ११
गरजि कुँअर गग—१४-१२
गरबर बदत पारसि—[illegible]-३०
गरभ बालही पितृ—१-१३२
गरीबदास प्रोहित सु—१०-७१
गरुअ गात गजराज—६-२०३
गल्हार करत गज्जत—६-१७
गहकि आसुर सेन—५-८८
गहगहिय खग गोमाय—१३-२०
गहिल गात गुजरात—८-३७
गहैं कुन कप्पर—६-१५१
गहैं तोब कधै—१०-४३
गाम नगर पुर—१-६६
गावत जसु जस—१-८
गावत बहु गंधर्व—८-६४
गावहु गावहु सुकवि—१-३५

गिद्धनी झरफैं गैंन—१४-२६
गिद्धिनिय अरु गोमाय—१२-१७
गिनती कहा गुलाब—४-६
गिनि मिथुन लगन—२-१६२
गिनियहिँ मेरु गिरिवर—५-६६
गिरि भेदि शृंग—१-५०
गिरि सृग उतगनि—७-२७
गुदराइय लेख कुमारि—७-३६
गुरु गाढदेव गढ—६-१६
गुरु गिद्धिनि तुडनि—१६-२४
गुरु चौरासी गढन—१-६४
गुरुतर कल्लोल मरुत—८-१६२
गुरु पुत्ति अच्छि—३-४५
गुरु बुरज गिरि—१-६६
गृह गृह दपति—२-६६
गृह गृह मगल—२-१००
गृह गृह नित—२-८४
गृह गृह भोग—२-८३
गृह गृह मदिर—२-८२
गृहादित्य नृप गरुअ—१-१३६
गोपा कमधजा सूर—११-११
गोपिनाह कमधज—१०-१२०
गोपी सु नाह—१०-६६
गोरा नारि सु—१-२०१
गोविंद रावर रिनहिँ—२-३
ग्वालेर अलवर गजना—१-१०६
घन घोष त्रंबागल—१६-१८
घन नौबति नद्द—७ ४१
घन भति भति—८-७१
घनै अतरादिक—२-१२६
घनै घृत तैलरु—२-१२०
घुरंती घमस्सैं—१-१७६
घुरि निसानि सु—८-६८
घृत खंड तेल—१५-२१
घेवर मुत्तियचूर—८-६४
घोष नौबति घुर—७-५५
चंचल सु रान—२ ४६
चंचल सुवेग रहबाल—६-११
चद सिय पख—१-१४२
चद्रसेन झाला—१८-२६
चपक गुलाब जूही—८-८१
चपक सहकार सदाफल—८-१६५
चबेलि जूही जाइ—१-३०
चउलख प्रबल मजूर—८-१४२
चकतापति चीतौरगढ—१५-१
चढि उमराव चतुर्द्दसह—१०-१२२
चढि चाक चहुँ—१३-१२
चढै कुँवर बर—१०-१२१
चढै तुरग चचल—३-७६
चढै भर केइ—१७-२१
चढै सेन चतुरग—६-१
चढ्यौ दल सज्जि—१७-६
चढ्यौ सेन सज्जै—१०-२७
चतुरग चग सेना—७ ६६
चतुरंग चमूँ सजि—६-२८
चतुर्थ सु पचम—२-१६०
चरखी अग्गरु चहुँघा—८-१२
चर चलत अग्गरु—१८-३६
चरना रगित बहु—७ १६
चरनालि कटि तट—१-१६
चरहिँ जाइ दीनौ—१५-३८
चलत बेग चचल—३-७३
चल प्रचल अरि—१३-१०
चलै अग्ग पच्छै—१०-३१

चलौ चित्रकोटै—१-१६२
चहबचा पिखै चारु—४-२०
चहुँ ओर जोर—१-४१
चहुँ दिसि बाग—२-६५
चामर ढलत सु—७ ७०
चारु दो चामर—७ ५२
चिंतिय बापा बीर—१-१६६
चित्रगी कच्छहिँ चलिय—१-२००
चित्रगी तब ही—१-१६५
चित्रगी मुक्कि चल्यौ—१-१६६
चित्रकोट आए सुचढि—१-१६४
चित्रकोट गढ चारु—१ १२१
चित्रकोट गहि चित—१-२३०
चित्रकोट चित्रागदे—१-११६
चित्रकोट थानहिँ सुचड—१८ ६
चित्रकोट पति राज—१-७
चित्रागद तें सत्तमें—१-१२३
चिरजीवि प्रताप जसु—५-६३
चौरिय मडिय चित—७-४८
चौघट चक्र चौरथ—८-२०
चौरासि अवल्लिय रूप—६-२८
चौसट्ठि पीवत चोल—१२-१८
छकपकति मिच्छि धारि—५-४६
छजत सीस छत्रय—५-१६
छजै दड सोवर्ण—१०-४७
छत्रपतिराय सिर एक—३-३४
छबि अंजन दृग—७-६
छाजत सीसहिँ छत्र—२-४५
छुट्टि बाननि भौंन—१-२१०
जंग जीतन जोध—५-८०
जंपै ताम सु—६-१७२
जगतसिंघ जोधार—२-३८
जगतेस रान घर—२ १५२
जगमगति निसा खद्योत—१-५४
जगै कमधज्ज महा—६-१३६
जग्गौ बापा बीर—१-२३६
जपियहिँ तुमको जग—१-५
जमाति भूप जुत्तय—५-६
जय जदुपति जगनाथ—८-५३
जय जय कुँअर—५-५६
जय जय जग—१-३२
जयतु यसोमति नद—८-५७
जय पत्त तृतीय—६-१५
जय पत्ते जुरि—१-२३३
जयसीह कुँअर बोले—१०-५५
जय हिदु धनी—६-३७
जरकस के बहु—३-५३
जरबाफ बसन बहु—७-१०१
जरहु थौंन तुम—१०-१६
जरी पाघ जामा—१-१८६
जरीस जोति जामय—५-७
जरी सूप सिकलात—१७-३४
जरे पय लोह—१७-१५
जलखडौ खलि जालियुत—२-८०
जल बहत जोर—१-४३
जल भर्‌यौ अथग—८-१५३
जसं राजस तामस—३-१४
जसपति राजा जीव—६-६४
जसु रूप अधिक—७ २२
जहँ तहँ कीनी—१६-४
जहँ हिदुपति जयवंत—१-६०
जहाँ जाइ तहाँ—१०-४
जहाँ बैर तहाँ—६-६०
जा ऐसी यवनेस—६-८२

जाति गोत बहु—२-८५
जाति जाति निज—१-१६०
जानि महा दुर्भत्त—८-१३५
जानै हिंदू जोरवर—६-१२०
जानौं कबहूँ एह—६-७६
जान्यौं जग प्रभु—६-१७८
जान्यौ नृप जसवत—६-७८
जामा जरीनि कटि—८-७४
जिगमिगति नग युत—१८-४०
जित तित लग्गिय—६-१५५
जिनै बिरुद धारति—५-३१
जिन आनन रूप—७-२८
जिन जीति प्रथम—६-१२
जिन मानधाता जाय—२-५२
जिन साहिजाद पन—६-१८
जिहिं रक्खै जगदीस—१०-२२
जीते कुँअर सु—१४-२६
जीवता जसवतराय—६-६५
जुजई सकल जाति—४-३
जुद्ध जुड़ण रिपु—२-७
जुर्‌यौ जाइ चित्रग—१-२०३
जैवता दपति युगल—३-६२
जोधपुरह तैं यवन—६-६६
जोर भयै महि—६-७
जोरावर हिंदू जुरै—१३-३१
जौ हेमालय गरहु—१०-२३
ज्यौं अबुधि अँचयौ—१८ २२
ज्यौं जातूत नालिकेर—४-१०
झड रुप्पि झारौल—१३ ४
झनकति झझरि नाद—१-१४
झननकिय खग्ग सु—१८-७७
झर मंडि इद—१-५५
झर मदवाह कपोलनि—१७ ११
झरत लोह सु—१-२२४
झरै दान गध—१०-३०
झलकत मज्झ नर—५-६४
झलकि सेन सु—१ २२३
झाट झर मँडि—१-२१३
झिलतिय रग सुरगिय—१७-१३
झिलति रग रग - ३-७०
झिलती जरी झूल —१०-३८
झुकि चिटपि सजल —१-५२
झुझारे करारे अकारे—१०-४१
टपकत बुद तरु —१-५१
टुटि सिंगर खुग्गरि—१६-१४
ठनकि गज घटा—१-२११
ठीक एह ठहराइकै—८-१३८
ठीक मत ठहराइ—६-१७६
डगमगति दुर्ग खरहरति—८-३४
डरत डरत असुरेस —१०-१०४
डहकि मिच्छि जास—५ ५६
डहडहत हरित डबर—१-४६
ढढौरि हट्ट पट्टन—१५-२५
ढमकि जगि ढोलय—५-१०
ढलकत ढाल सु—१८-३७
ढहिय सिंधुर परिय—१-२२१
ढिल्लि नयर करि—६-१६०
ढिल्लीपति अति ढिट्ठ—७ ८२
ढिल्लीपति लखि ढिल्ल—६-१३३
तखतखाँ तपनीय—१८-८
तजरु तार तमाल—४ ११
तजि थानहिं तुब—१६-२६
तजि न्हाण बस्त्र—१५ १५
तजि पहार भग्गौ—१३-२७

ततत्थेइ नच्चत ज्यौं—१७-२०
तनू उतग तत्त—५-४८
तनू सुख पत्त—२-१८७
तनोसुख सूफ पटोर—२-११२
तप्यौ अधिक तुरकेस—१०-२
तब लग तम—१८-१६
तबही बग्ग गहैं—१८-५७
तमोलिय तेलिय बृंद—२ ६५
तरकस युग युग—१०-६१
तरफरत कै अधतग—१२ २०
तरफैं अधतग तुरक्क—१६-२२
तरहटी तीर तरगिनी—१ १०१
तरु दल छेदै—१०-६२
तहाँ श्रीफरु पुगिय—६-३४
तागीरी न तरकि—६ ७४
ता तीरथ भेटन—८-४
ता पाछै कमधज—३-६६
तारागन त्रिकुटाचल—१-११३
तिधार तिक्ख तेग—५-५२
तिन कारन तुम—६-३८
तिन कारन हम—६-१६८
तिन कारन हो—३-६
तिन पाट पुत्र—३-५०
तिन प्रभु सरनहिं—६-१८६
तिनहि वेर तुरत—१३-६
तिमि तुल्ल कुखिस—१-१७
तिय बसुमति भालहिं—२ ६०
तिहि कारन हम—६-१३०
तुग बिसाल त्रिकोट—१-६३
तुटि सिलह टोप—१३-१६
तुट्टै टोप तेग—१४-२२
तुट्टै रिपु तुड—१४-१३
तुटैव ज्यौं खहतार—१२-६
तुम हिदूपति प्रगट—६-१८७
तुही इहकौं वृद—५-३६
तुही चारु मुख—५-२६
तुही जोगमाया महाजग—५-३०
तुही द्वारिकानाथ—५-२६
तुही धर्मराजा धरा—५-३५
तुही राम रूप—५-२३
तुही विश्वनेता तुही—५-३२
तुही सकर एकलिग—५-२४
तूठो क्यौं रिपि—१-११६
ते नृप सुत—६-६७
तेग बँधाई देखि—१६-३
तो ब कौन—१८-१३
तोयधि भुज बल—१०-१४
तोरन तब बदिय—३-६६
तोरन मडप तुंग—१-२३४
तोरि पताका तुरक—१८-६५
तौ लेहिं दिल्ली—६-५८
त्रिहुँलोक धाराधरास—५-३६
थपि मुकाम तिन—८-१०६
थपि थान चित्तौर—१०-११६
थरत्थरि पत्थर सुत्थिर—१७-२५
थरहरि आसुर थान—८-३५
थान जरै जहँ—१०-११७
दपति उभय सबध—७-७४
दधि मधु घृत—८-४५
दयौ अद्ध देसो—१-१८८
दरबार जास घन—६-२५
दरसन षट जहँ—१-६४
दल मध्य दिल्लीसर—१०-४६
दलपति गनपति दडपति—२-७०

दल प्रबल मध्य—८-२५
दलबिंटिय मालपुरा—६-३१
दल मध्य दिनपति—१८-४५
दलिय युद्ध जयचद—२-१३
दसमी रविवार बिचारि—८-१५७
दाइजा एह नृप—७-६६
दाइजा ताम रट्ठौर—७ ८६
दातारराय जलधर सु—८-२६
दासी किन इक—१-१७०
दिए मलीदा मैंगलनि—१८-५३
दिन दिन आवहिँ—२-१८५
दिन दिन बाढत—२-१७६
दिन दस करिग—१७-३८
दिनकर रान दिनेस—२-२६
दिनौ समान बैठक—२-१६०
दियौ सुअन्न दानय—५-१८
दिल्लीपति कौं देश—१५-३
दिल्लीस साहि औरग—६-१०
दिसि दिसि देत—१८-७
दिसि पुब्ब सिद्धि—६-२२
दिसि बिदिसि दल—१८-४६
दीनी बधाई सु—२-१५४
दीनौं आवन दुअन—११-४
दीपति अति दुति—८-६३
दीप धूप फल—८-४८
दुजन दहबट्टा बिमन—११-१२
दुजन भरत हय—५-६६
दुजनौं सिर करत—५-७६
दुट्ठ हट्ठ दृढ—१३-८
दुति बिमल युगल—८-६
दुरमा दुसाला—१-१७२
दुहुँ ओर दु—१८-८०
दुहुँ ओर दुबाह-१६-१५
दृग देखि हिंदू—१३-११
दृग द्रविड़ देस—१-८०
देइ दिलासा दूत—६-१६३
देखत चदहि दूरि—१८-७१
देत दाइजै दॉम—३-१०२
देत निज निज—१-२१८
देव कहा दानव—६-२
देव देवि विमान—१-२२६
देवालय देखत दृग—८-४२
देवासुर मानवरु मुनि—८-२
देवी ज्यौं तुम—१-२
देवी पानिय देव—१०-८७
देवी सु आइ—१-५६
देस देस फिरि—१-६२
देस लियै निज—१-२३१
दैन बधाई सोइ—७-४३
द्वादस सहस तुरगदल—१६-७
धक धूँनिय धाम—६-३३
धज नेज झँझोरिय—१६-२५
धटकै धरा धुधर—६-१०३
धणियॉणी दीजै सु—१-३३
धन खजान नहिँ—६-८१
धनि धनि तुम—८-१५६
धनि आसंगनि धीर—१२-४
धपै धीग धींगं—६-१०४
धपै धींग पर—१४-३१
धर गिरि अबर—१७५
धर धुधरि सोर—१६-१७
धरनि प्रगट मरुधरा—७-५
धर पिट्ठि ध्रसक्कि—१८-८२
धर पुर धरहरि—१७-१

धर पूरिय धोम--६-३५
धर लोक जहँ—१-८८
धरहरत धरनि खरहरत--१५-२६
धरातलि धावत उट्ठि--६-१४०
धरा मध्य तूही—५-२८
धरिय भेट हाड़ा--३-१०३
धसमसत धपत धर—८-२४
धसमसत धरनि गिरिवर—३-३८
धसमसिय धर गिरि--१३-६
धर्म न कौ—१०-१०६
धाओ रे धाओ--१४-२८
धान-मढी लोहन--२-१४४
धुधरिय नभ घन--१२-१२
धुर कत्तिय पचमि—१०-२६
धोवत सिहरि घन--१-४४
ध्रुव जनेउ धारए—५-६
ध्रुव कौं ध्रुव—८-५६
नऊँ निधान लच्छिनाथ--५-५०
नच्चत घृततततान—१८-४१
नग बीचि जहँ—८-१०७
नग लाल स्वर्ण—८-७५
नगर नागद्रहा हूत--१-१५६
नटा बिट मागध—२ ६७
नद नदिय सर--८-१२०
नन छुल्यौ जाइ--६-५६
नर आसुर केक—१६-२१
नरनाथ चिरजी तुम--२-१६७
नरनायक तो सम--७-३४
नरा रत्न श्री--३-१६
नराधि रूप नाहर--५-५१
नव नव नाटिक--२-१६४
नव लख तुरीय--६-१७
नागरिय नारि बहु—७-१०३
नागौरिय नृप कज--६-१८३
नाम बापौ ठय्यौ--१-१४३
नायक सब रुहिलान—१६-६
नारि तहाँ औघट--११-३
नालिकेर आयौ नृपति—३-६१
नालिकेर न्यौजा--१७-३६
नावै ढिग कमधज--६-४०
नाहर ज्यो नाहर—३-८७
निकरै सु अरिन--१२-२२
निज जीति करी--६-३८
निज डेरा आए—८-६२
निज निरखि नागर--१-७७
निटुर ससुर बच--१-२०६
नित सिघ रूप--२-४४
निति निति सुख्ख--७-१०७
निपावत देवालये त--५-३८
निय जैति मन्नी—६-११६
निय पुत्ति पुत्त—१-१८०
निय बस अवतस—३-१८
निय गोत सकल—६-११
निय धर्म धरन—३-४४
निय निय सु—१५-१६
निरखत नीर नीरधि—१-४८
निरखत सरोवर जानि—८-१६०
निरखि उदयपुर नैंन—१०-११५
निरखि सुपन जग्यौ—१-१२७
निरखि वल्हिका नाथ—१-१३०
निर्घोस घुरिय नीसान—६-३
निर्य्यामक बलन न—१-४७
निलवट सनूर रत्तै—६-१४
निसुनि चढत निसान—५-६१

निसुनि बत्त हिंदू – १३-५
निस्चै इह आखैं—३-२६
निहस्सई निसान नाद—५-५३
नूपुर सु पाइ—८-१०
नूर नर नागर—५-८६
नृतत नीर कमध—१-२१५
नृप अरसिंह सुनद—१०-८३
नैननि निरखंत करहिं—८-१६३
पच धाएण सो—१-१४१
पच फौज तिन—१०-६७
पचौं दल सज्जै १८-२५
पचौं भट महाराण—१८-२४
पइयैं वर कविराज—१-३
पखरिय सजर पखर—८-१८
पग पग जल —१-६७
पचीसौंहि पवग—१२-५
पच्छिम दिसा प्रसिद्ध—१-१२४
पच्छिम निसि पतिसाह—१५-३१
पच्छौ भय धरि—१३-३५
पठयौ दूत सु—६-७२
पढ मतह नीम—८-१५०
पढि गौर गगा—१-७५
पढि पानि पथ—७-६१
पढै धत धत्त—१७-१४
पतिसाह जोर किनौ—६-५२
पतिसाहि थभ तुम—६-४४
पत्त नौनबारा सु —१०-९८
पनहिं न जिन – १७-३७
पय झरत रोपत—१३-१८
पय पथ पौन—८-१४
पयदल पयोद दल—८-२३
पयदल प्रचंड उदड—१८-४४
पयतल प्रबाल कि—१-१३
पयद्दल बद्दल ज्यौं—१७-२३
पयदल सुसज्जि पौरष —६-१३
पयदल सेन प्रचड—६-८६
परनि रट्ठवरि प्रिया—७-८४
परि पुकार अजमेर—६-११६
परि पुहवि रक—८-१३०
परिग सु दति—१४-२०
परै जनु पत्थर—६-१४३
परै धाइ अरि—६-१०१
परै मीर सै—६-११७
परै मुगल सय—१४-३७
परयौ जाइ चित्रग –१-२०४
पल पल प्यावत—२-१७७
पल उपचित गच्छ—७-१०
पलक जात रजनी—१८-५६
पल्ल खचित सम—२-६६
पवगा रुह पेखि—३-२०
पश्चिम पवन प्रचड—८-११८
पसु पखि प्रलय— ८-१३१
पसु पखी पाए—८-११७
पहर तीन युग्गिनीपुरहिं—६-१६२
पहिलौने पतिसाहि—१४-३
पहुँच्यौ सु उदयपुर—७-३८
पहुठ्यौ सोइ खावास—६-४८
पाट अचल मेवारपति—१-११८
पातिसाहि दल प्रबल—१०-१०१
पानि ग्रहन कीनौं—१-१६५
पानि ग्रहन चूँदी—३-१
पारावत बहु रग—२-७६
पालिय प्रबर कुँआरपद—५-१
पिल्लहिं पिसुन ईष—५-७२

पील सो तैं—७-५८
पुच्छैं यों महिपाल—३-५६
पुत्री परनित सुनि—१-१६७
पुनि फिरयौ देस—१-७८
पुन्य पाल राना – २-२७
पुप्फ फल करिय—१-१४६
पुर सु प्रवेसं—१-१७८
पूरब गिरि पच्छिम—३-८६
पुरुषोत्तम सु पुरान—८-५५
पुरोहित भट्टरु पाठक—२-८६
पुलै अग्ग पालें—१०-४०
पुष्कर गग प्रयाग—५-२१
पुहवी नन ता—७-३०
पुहवी प्रजा प्रतिपाल—२-४२
पेखिय प्रवर सुप्रेम—३-१०४
प्रऊढ गूढ पद्द—३-७४
प्रगट नाम पायो—१-१८२
प्रगटे जे तित्थ – १-१६१
प्रगटै राण प्रताप—१०-७६
प्रचलत यवनपति जा—३-३५
प्रचलि चित्त दिगपाल – १७-६
प्रजा सकल इहिं—८-१३७
प्रणमेवि सकल महाराण—१०-६८
प्रतपौ राना जगतपति—३-६५
प्रतापसीह रावर—२-२०
प्रथक ऊख ज्यौं - १८-२०
प्रथम मुकामहि हिंदुपति—१०-८६
प्रथम सु होत—१८-२८
प्रधान सु धौंत—२-१६२
प्रधान सु बधहि—२-१६१
प्रनमि हिंदुपति पाइ—१०-६३
प्रबर बिकट पुर—२-६२
प्रबर सुमग्ग धरन—५-७३
प्रबल पयान दिसान—१८-५१
प्रबल पौरि प्राकार—१०-११४
प्रभा कोटि रूप —३-११
प्रभु पद पूजन – ८-४४
प्रभु हम प्राक्रम—१८-५८
प्रभु हम सकल - १०-७२
प्रभू मोहि जो—३-१६
प्रमुदित खवति प्रसून—१८-६२
प्राकार तीन प्रचड—१-६७
प्रात हूवौं पचावै—१-१४६
प्रान पौन प्रेरित ८-१०२
प्रोहित अरु प्रति—८-१०८
प्रोहित ए आसीस—३-६३
प्रोहित भेटे हिंदुपति—३-५६
प्रोहित सत्य प्रसन्न—३-६४
फबतै तल फरास – ४-१२
फल फूल मूल ८-१२८
फागुन मास सु १३-२६
फिरि बसीठ फुरमान—६-१२२
फिरै पील सूनै—६-११४
फुनि रच्यौ एक—६-४१
फुनि लयौ दुर्ग - ६-२०
फुनि हुरम धवलापुरहि—६-३२
बकागढ बधनौर पति—१६-१
बकी सु पाघ—६-१५
बँगले बने बिवेक—४-२१
बगाल जात के - ६-६
बगाल देस कै ३-७२
बचि बंचि दिल्लीस—१०-१२
बचि साहि फुरमान—१०-८
बचि साहि सब—१०-२५

बची सो अरदास—६-१६२
बटिय मोहन भोग—८-८७
बदननि माल घर – २-१५८
बधव बरि आयौ—१-१३३
बधि आनत सित्रु—५-८१
बधि गंठि बहु —२-१४५
बधै तोरन रतनमय—७-४७
बखानिय या बिधि—२-१६३
बग हसनि क्यौं—७-३३
बचनहिँ बचन बिलग्गि—३-६३
बजत सख बीनय—५-११
बज्जन बज्जई—७-६२
बज्जै त्रबक बज्जनै—१५-४
बटबौर सिरीबौर—४-१३
बटेर बाज बखान—४-१८
बढय वैर तै—६-६१
बढी अवाज सु—८-५
बढ्यौ हेख हेखा—१०-३६
बदत बिप्र वेदय—५-१४
बदै चहुँ बेद—२-१०६
बनिता बिचित्र बहु—८-७२
बपु भुवन लगन—२-१६१
बय किसोर तनु—१४-७
बर एह जन्मपत्री—२-१६६
बर कनक थाल – ८-८४
बर कनक बिसवा—२-५६
बर करन कनकमय—७-१६
बरतायै मगल सकल—७-७८
बर तुला अप्प—२ ५३
बर पत्त जाम – २-१६६
बर बामा मिलि—३-१०७
बर बिबिध घोस—२-१५५
बरबीर बलय बेढिम – ८-७७
बर सतोषै षटबरन—३-१०१
बरस सत्त बरसंत—८-१४६
बरसै कचन धार— ३-१००
बरी सर्व्व बाला—१-१७१
बल बँधाइ सु—६-२००
बल बुद्धि बिनय —८-१२२
बस किंनह बीजापुर—६-२१
बसत एक थल – ८-३
बसति जहाँ बहु—२-६४
बसुद्धाधिप वीर आजानबाहू – ३-२
बसुधाधर देखै बिकट—१०-१०५
बसुपाल बेगि जोइसि—२-१५६
बसुमति अन्न बिहीन—८-१३३
बसुमति रक्खन बीर—२-४३
बसुमति हिंदू नृप—६-६
बसुमती देस बिदेस—१-१८१
बसुमती रक्खन बीर—५-७६
बसैं तहँ कायथ—२-६२
बसैं तहँ सेठ—२-६१
बमैं बिरुदाइय भट्टनि—२-६३
बमै गेह जाकै—३-१३
बसै तत्थ बास—१-१८१
बसै तहँ राज—२-८८
बहत ते बिरुद्द—३-७६
बहि बज्र प्रहार—१८-७६
बहु करत क्रोड़—२-१७०
बहु बिधि बचन—६-१३१
बहु भूप थट्ट—६-१८
बहु रूप बिलास—१८-८६
बहु सेना बिचि•—७-६६
बहू बिबेक बुद्धि—५-४२

बाजार चित्र कीनै—७-१०२
बाजि घन घुम्मर—७-५४
बाजीनि चरन खुरतार—६-२३
बाजी सहस बतीस—१३-२
बापा नृप वर—१-२०२
बापा रावर पाट—२-१
बामा सथ बैरिन—५-६८
बाराह इक्क इक—६-५५
बासुदेव बिधु विष्णु—८-५४
बिंटि कोट बर—१७-३२
बिंटि थान बधनौर—१६-५
बिंटिय गढ दल—१४-५
बिंटि रह्यौ दल—१६-८
बिकल भयै नर—८ ११५
बिकसत हरिहर ब्रह्म—२-१५१
बिक्रम बलवता रणरस—११ ६
बिग्रह इह कै—१०-७३
बित्त आयुध होत—१-२१६
बित्त लरत सु—१-२२६
बित्थुरिय सयल ससार—७-८५
बिधि किनहीं जौ—८-१११
बिधि बरन च्यरि—१५-२४
बिधु सकल कल—१-२१
बिन हंक सक—८-२२
बिना सत्थ कतै—६-११०
बिनोदहिं बत्सर एक—२-१८३
बिप्र बेद धुनि—८-६५
बिफुर हिंदु बर—१८-६४
बिफुरयौ सो बहु—१-१६२
बिबि खड बड १३-१५
बिबिध सघन वृक्ष—४-२
बिभव तेज सदैव—५-७८
बिमल बस जन—१८-७०
बियौ नाहिं ऐसौ—३-२२
बिराजति साकति स्वर्ग—१७-१६
बिराजहिं कउ बजार—२-१०१
बिरुदैत बीर आजानबाहु—८-१६
बिस्तारौं बर बेद—६-१६८
बिहडिय खडिय खेणि—६-१५३
बिहँसिय योगिनि वीर—६-१५४
बीणा पुस्तक कर—१-६
बीती सु निसा—२-१५६
बीत्यौ बासर बत्तही—६-६६
बीबी सौं छू—१८-१४
बीर बैर बिडुरिय—१३-७
बीरा मध्य कपूर—१८-५४
बुल्लय तब बर—१८-१८
बुल्लय बचन बसीठ—६-११३
बेगि गयौ दिल्ला—६-८३
बैठे निज निज—२-६६
बैठे निज निज—३-५७
बैठे सायुध सुत—८-६०
बैताल फाल मडै—३-३६
बैरसिंघ रावल अतुली—२-१०
बैरी ए विष—६-८५
बैरी न तजै—६-६८
बैरी स्वान बिडारियै—६-७०
बोलत चलत बदी—६-७
बोलंत झिल्लि इक—१-१५६
बोलत बहु कविवर ८ ५१
बोलत बहु बिरुदावली—१५-६
बोले सु राण—२-१७२
बोलैं नरिंद सुनु—३-४६
ब्याह बेर बपु—७ ६७
भई भूमि भय—१५-६
भगग मोरा सेन—१-२२७

भगति जोर तिनकौ—१६-२
भगवत सिंघ कुँवर—१०-५८
भगिनी तस घर—७-३
भगौ साहिजादा गयौ—१८-६७
भग्गै ते दरोगे—१४-२७
भट किसोर उड़ि—१४-३४
भट्टू रावर जास—२-६
भणै बिरुद भट्टा—१-१७७
भनहिँ ईस सुनि—१-१२६
भनैं विरुद भट्टय—५-१५
भभकत इम्भ भसुड—१२-१६
भभकत इम्भ भुसुड—१३-१६
भभकि भसुड बिहड—१४-३६
भभकैं करि सुड—१८-८७
भभक्कत खौन कटै—६-१०८
भय भन्निय असपति—२-१७
भयभीत परि दुरभत्त—८-११६
भय रूकिनि टूक—१६-२०
भर चौकिय देत—६-३२
भरी खच्चर सहस—१०-४८
भरूच्छिय भैरव—२-११३
भरैं दढ तुम—५-३७
भरै यान जत्री—१०-४५
भरै रथ सत्थि—१७-२२
भरै सु यॉन—३-७७
भल चरन जान—८-८०
भल भल भोजन—८-६३
भलहलत सिलह सभान—१२-४१
भलौ काम भोगी—१-१८३
भिननंत मक्खी भूरि—८-१२७
भीम कुवर दल—१५-७
भीम भय गढ—५-८४
भीमराण राजेस को—१५-३२
भीमसिंह कुँआर मह—५-७७
भीर मत्ती पुर—७५३
भुजतै कै भयभीत—१२-१०
भुजदड लब—१-१८
भुजा प्रलब रूप—३-७५
भुवि दीप सायर—२-५६
भूमि चूँड रावर—२-१८
भूमि भोग पति—२-२८
भूलि न राखहु—६-१२४
भूषन जराउ बहु—१५-१७
भूषन सु हेम—७६४
भैख बर भरु—१७-३५
भैख भरुच्छि मलमल—१५-१६
मगलीक दरबार सुख—२८१
मगि आदेस आया—१-१४८
मँगि हुकम महराण—१७४
मगि हुकम महाराण—१८-२६
मडव भय मनियौ—१७३०
मडियौ मुख तिणै—१-१५५
मडै ऋतु पावस—२-१३०
मडै न औरि—७-८७
मडै भूलि न—१०-१०३
मडोवर मैदानय—१-११०
मड्यौ झर मुछाल—११-१४
मड्यौ मह यज्ञ—८-१५४
मची मार मार—६-१०२
मच्छोदरि तिवलिय मज्झै—७-१८
मच्यौ भय मालव—१७-२६
मच्यौ सेन सोर—१०-५१
मजनस लाखिय रग—१७ १७
मत्त मीर मजेन—५८६
मधु मेघनाद बज्जै—८-६८
मन निठुर करि—८-१२६
मन भग्गौ नन—६-६२
मन सोचति ही—७-२६

मन हरषत सु—३ ५२
मनिधर ज्यौं थिर—१८-६३
मनु कनक सपुट—१-२५
मनु कामलता इह—७-१२
मनु मद पीनौ—१०-११०
मनोहर कुभहिं मुत्तिनमाल—१७-१२
मनौं उदधि सुरसरित १०-८६
मनौं पाथ पाथोधि—६ ११५
मन्नी सब कमधज्ज—६-१२६
मयगल मोतिन की—७ १३
मलमल साहि चौतार—२-११४
महल तहाँ महत—४-१६
महादान अप्पे तुही—५ ३३
महाराण दान जनु—७-६८
महाराण परवान—१५-३६
महाराय भगवत—१८-३०
महाराय मनोहरसिघ—१० ५७
महि चित्रकोट सु—१-१०५
महितल सकल मान—५-८५
महिमॉनिनि जानि दसारु—७-४०
महियल जितै मडान—८-१७२
महियल सुरग उपजै—१-४५
मही तैं जिनै—३-२१
मही रुरै रुड—१४-२४
मान रट्ठौर कै—७-६५
मॉगत कहि मॉ—८-१२५
मात पिता बधुनि—१-१३४
मात पिता बच—१-१३५
मात पिता हूँ—८-११६
मानसिंह नृप सोचि—७-२४
मानि बहादर मत—१०-११२
मारि मचाई दुहूँ—११-५
मारुवारि महिमडले—७-१
मारै पर्वत मध्य—१३-३३
मारै हम बहु—६-१८२
मालउ मरु मेवात—१-७०
मालपुरहिं मार यौं—६-३६
मालपुरहिं मार यौ—६-१७५
मासोत्तम माह रच्यौ—८-१५५
मिडि देस मेवार—१०-१३
मिलि ककनि कक—१८-७८
मिलिय बापा वीर—१-२०६
मिवास थाँन मुक्कि—३-८३
मीर मलिक मस्सद—६—१६६
मुँह मिट्ठौ रुट्ठौ—६-३५
मुँह सुड दड—१८-३४
मुख मुख जक्किय—६—१५२
मुख चवत चूक—१२ ८
मुख बैन और—६-४३
मुख भीमकुड सु—१-१०३
मुद्रिय अँगुरी मन—७-१७
मुरली प्रवाल कर—८-७८
मुरै सार सार—६-१०५
मुलतान खान मरहट्ट—६-२४
मृगमद केसरि और—२-११६
मृगमद कपूर केसर—१५-२२
मृजाद मेर महाराज—५ ५४
मृदु फास कनक—७ ६५
मेदपाट जनपद सु—२-१४८
मेदपाटपति महल—१०-११८
मेदपाट पत्तौ सु—१०-५२
मेदपाट फुनि मुरघरा—८-१
मेदपाट महि मडणह—१-६१
मेदपाट महि मडलॉ—१-१२६
मेदपाट मालवौ—१-२२
मेवा खादिम बहु—३-५४
मेवार घर सम—१-१०७
मोकल राण उदार—२-३२

मौक्तिक स्वस्तिक हरि—८-८६
मौठ मसूर माषा—१-६८
म्लेच्छ मुछ मुडियहिँ—१७-८
यही हिंदुनाथ यही—३-१७
यामिनी तमस अति—१-५३
युग झाला जसवत—१०-८५
युग युग नेह—७-७५
युगल पुत्त जसराज—६-६६
ये सब अद्रि—१०-७४
यौँ कहि सद्दे—३-२६
यौँ हिदुनाह निय—७-१०६
योगिनी सुर जपत—१-२२८
यौँ कहि करि—६-८६
यौँ कहि सब—१०-६६
यौँ तीजो फुरमान—१०-२१
रग चढे तिन—१८-४२
रग बढे सब—६-२०१
रक्खन जोगे रक्खि—१८-१००
रक्खै हम रट्टौर—१०-६
रग मडप बहु—७-७१
रच्यौ बर आसन—२-१८८
रच्यौ राणा साह—४-२२
रजथान सजल जलयान—६ २४
रजवट्ट रूप सबलेस—१०-५६
रजै रूप तूहा—५-२७
रढनिय इहि परि ३—६८
रतन सेन रावर—२-१५
रथ भरित कै—१८-४३
रन अचल सु—१०-६२
रबिबस बिभूषन जय—८-१६८
रमा रूप कै—७-४
रयण कनक अरु—६-१३५
ररबरि घन रुडा—११-१३
ररब्बरि खब्बरि रुम्मिय—६-१४६
रलतलि लोग परी—६-१५०
रलतलिय प्रजा बहु—१५-१४
रवि बसी महाराण—६-१८४
रस कूपिका रसाल—५-२२
रस राजनीति राजेस—१०-५३
रसना रटत महमद—६-२६
रसना सुरगी श्रवति—१-२२
रहय कवन उद्योत—१-१६८
रहि दाँठ हबसी—१ ७४
रह्यौ ओटि पय—१५-३५
रह्यौ साहि औरग—१४-४
राखी पीठि मुरारि—१८-६८
राग रमना रस—७-५७
राजथान महारान कौ—२ ६१
राजथान निय रचौँ—१० २०
राजमहल सपत्त रसु—१-२३५
राज रॉण जगतेस—७-८३
राज राज सुभ—२-१७३
राज राण मति—६-१६४
राज राण सु—५-६२
राजलोक सुरलोक सम—२-६७
राजसभा सिहासनहिँ—२-६८
राजसिंघ महाराण—१५-३६
राजसिंह महारॉण—४-१
राजसिह महाराण—५-४०
राजसिंह महाराण—५-५८
राजसिह महाराण—७-६८
राजसिंह महारान—७-७६
राजसिह महारान प्रिया—७-८०
राजसी रान जू—७ ६६
राजा उत घन—१७-२
राजा बिन को—६-७१
राजेस राण नदन—१५-२८
राण चढ़े राजेस—१०-८१

राण राजेसरं बीर—७-४६
राण हमीर सुरीति—६-१८५
राणा जाच्या रायमल—२-३४
राति बोली हुई—१-१५३
रान अजयसी वीर—२-२६
राना राहप रग—२-२४
रानि जनादे रूप—२-१४६
रामचद राजेद बधु—६-१८६
रावत चढि रतनसेन—१३-२५
रावर गात्र गिरुआ—२ ८
रावर चौड हिंदु—२-१४
रावर पद गहि—१-२४०
रावर पुजा रिण—२ १६
रावत रढाल रिन—१०-६३
रावर श्री कुबेर—२-२
रावर श्रा नर—२ ५
रावर सु बोलि—१०-५६
राहप रान अजेय—२-२५
रिनथभ मंडव रेवत—१-१०८
रिपु जन कैं—६-१३७
रिपु जन मन—६-१३६
रिपु रुड मुड—१२-१३
रीझत देत रीझ—५-७०
रीझी देत रसाल—१ १०
रुडमाला गठ रुद्—१४-२५
रुड मुड ररबरत—१४-३५
रुड मुंड रुडत—१-२२२
रुकमागद रावत्त कौ—१२-२
रुचि सहज पाइ—७-२१
रुपि जन्म गेह—२ १५७
रुरि रुड रु—१८ ६१
रूपनगर महाराण की—७-४६
रूपनैर रली—७-६१
रूपवती दुति जानि—३-२८
रोमी मुँह रत्ता—११-७
रोरैं जोरैं भारे—१४-२३
रोस राण परवान—१०-१८
लखि सीस फूल—७-८
लगि जेट लुत्थि—१३-२२
लगि लुत्थिन लुत्थि—१८-८८
लटकत किहिं सिर—१३-१७
लरैं द्रोन के—६-१०६
लरौ तौ आवहु—१०-१०८
लसैं काटवालि सु—२-१३३
लसैं मनु लोह—६-१४१
लहलहत मरुत युत—८-११
लहि औसरि सुदरि—७-३१
लहियै जु नाम—१-६१
लहै सु निज—१८-६६
लिखि लेख समै—७-३७
लिखित सु बुदिगढ—३-४२
लिखै एह पखान—१५-३७
लिल्हरित पट लटकत—८-१२६
लीयें सु चौंडहर—१०-६४
लुटैं केउ लुंटक—१७-२८
लुट्टि खजान अमान—१८-८६
लेइ सु महुरत—८-१३६
लेख सु तबही - ३-३०
लेहु निमिष विश्राम—६-६८
लोबान अगर चदन—८-८३
लोयन करिय सु—३-८८
ल्यावहु सु वेगि—३-५१
वादित्रिक मौष्टिक विविध—२-७४
विचरति झालावारि—१-७६
श्री उदयपुर सुगार—२-५५
श्रीजगतसिंह सुरान—२-३६
श्री जयसिह कुँअर—१८-१
श्रीराजसिंघ रान—५-२

श्री राजसिंह रान—५ ४१
श्री राजेसर राण—६-१
श्रीराम जोग—३-४७
श्री साप सालु—१५-२०
श्रीपति गृह सिगार—८-४७
श्रीपति सेठ सुसार्थपति—२-७३
श्रीपुर तुम संदस्यौ—१०-१६
सकै चित्त सुलतान—६ ५६
संख्या को कहैं—८-१५२
संगर सरस दल—४-१४
सगहि लिय सीसौदियै—१-११७
संग्राम धौलपुर फुनि—६-१३
संग्रामहि असमत्थ—६-१८१
संचलै दल मुख—१८-३३
संजनित चित्र सुरराय—३-३६
संझ समै लहि—१६-११
संतोसे नेगी सकल ७-७६
सदेसा यौं स्रवन—१०-१०६
सपत्तै सजि सेन—३-८४
सबत प्रसिद्ध दह—६-२
सबत सतरासै सु—८-११३
सबत सु सत्त—१-५८
सबत सोरह सरस—२-१५०
सबत्सर छत्तीस—६-१७०
सबत्सर दह मत्त—८-१४०
समुह दल जैसिघ—१०-१००
सहरिहौं दिल्लीस सुत—१८-११
सकल जहाँ पूजै—१-६५
सकल देव सेवत—१-१२५
सकल रज धुरा—५ ८५
सकल रट्ठवर सत्थ—६-७३
सकल सखी समुदाय—७-७२
सकल सबर कमठान—२-७५
सकल सूर सामत—८-८६
सकल सूर सामत—१८-७६
सकल सेन सामत—८-५०
सग सिधु सरस—२-४६
सगपन कीनौं सबर—३-५
सगताउत रावत्त—१८-२३
सगति जे कीजियै—१-१३६
सगपन सयान सु—८-१२३
सची सी सहेलां—१-१७४
सजि पुलिद सब—१० ६०
सजि भीमसेन सेना—१५-१२
सजि सेन सु—७ ३५
सजै टोप सनाह—१०-४४
सजै सकल सामत—८-६६
सजन आइ मिलै—७ ७७
सजन सौं सनमान—१८ १०५
सज्यौ सु दुर्ग—१४-१
सट्टैं खुट्टैं तुट्टैं—१४-१७
सतपत्र दमन मुग्गर—८-८२
सतरा सै सैंतीस—१८-२
सत्तग चग धर ८८
सत्त अहोनिसि एक—८-६६
सत्त दिन बोलियौं—१-१५८
सत्त बरस सबध—८-१४६
सत्तम दिन निसि—१-२३७
सत्तरि खॉन सुसत्थ—६-६१
सत्थ चढै अरि—१०-८२
सत्थ सेन चतुरग—३-६६
सत्य बचन अवनीस—३-२५
सथ तुरग सत्तरि—६-६४
सदा त रिधू—५-३४
सदा सात कौभ—३-१५
सनमानिय सु बिसेस—१२ २३
सब एक होइ—६-५७
सब देस मैं—१-८७

सब हलकि चली—१-४६
सब हिंदवाँन कुल—१-६०
सब ही सनमाने – ६-२०४
सबल एह सामंत—१८-३१
सबल दरोगा सत्थ—१४-६
सबलसिंह ज्यौं सिंह—१८ २१
सबै ँ लीन सथ्थै ँ—१-१७५
समप्पित सुगामयं—५-१७
समरसिंह रावर जस—२-१२
समर हय गय—१-२२०
समुख सजिय सूर—१-२१७
सर सद्दबेधी बर—३-१०
सर सोक बजत—१८-८१
सरल सद्दनाइय गायन—७-५६
सरस सुर सगीत – ५-८२
सराहैं रु बाहैं—६-११३
ससलक्कि सेस सेन—३-८१
सलसलत सेस कलमलत—३-३७
सलसलिय फनवर सधर—१३-११
सलित पाट सुबिलास—८-१४३
सविता ज्यौं समी—८-१६६
ससकि सेस कुरमि—८-१०३
ससक्कहिं थक्कहि औरगसाहि—६-१६७
ससि रवि सुर—५-७५
सस्त्र छतीस धार—५-७१
सस्त्र-यान भरि—१-२०७
सहज सिंगारत सुदरी – १-१६६
सहनाइय सुहावई ँ—५-१२
सहस एक गजधर—८-१४१
सहस तीन सुडाल—६-८७
सहस बहुत्तरि दल—२-३६
सहस सुभट हय—१८-७५
सहाय साधु स्याम—५-४६
सॉइ काम सेवक—१८-६१
सॉइ पचारत सेवकनि—१८-६६
सॉइ भरोसो रक्खियै—१८-६६
सॉई ँ इह सेना—१८-६०
सॉई रक्खै सीस—१८-६२
सॉई सकल सयान—१८-७३
सॉई सिरजै हुकम—१८ ६४
सॉई मुख तै ँ—१८-७२
सांप्रत देहु सरस्वती—१-६
सॉवल दास सकाज—१०-८४
साकति सुबर्ण साजे—६-१२
साकति सुवर्ण वर—७ ६२
साबूनिय रेवरि माठिय—२-१२३
सामतनि सनमानि कै—१८-३
सारग करत गायन—१-५७
सारगि पुगी सुनियै—८-७०
सार सार सघटे—१४-३३
सार्ग्नी बहत सार—४ ४
साहि सुतन कै—१८-१०
साहि सु वचन—१३-३४
साहि हुकम सु—१०-११३
सिगार सार साकति—८-१७
सिंगारि नगर किन्नौं—७ १००
सिंगारिय सिधुर अस्व—२-१७५
सिंगारे सुंडाला—१-१७३
सिधुर अस्व सिगारि—८-३६
सिधुर कपोल पट—८-७
सिंधुर तुरग श्रीं—५-६७
सिंधू गौरी बजत—१८-५५
सिहासन हरि सनमुखहिं—८-६२
सिखरी बिन्नि गोमति ८-१३६
सिद्धि अप्पि रावर—१-२३८
सिर चढाइ पुनि—१८-२७
सिरपाव मुत्ति माला—६-४६
सिरपाव साहि पठ्यौ—६-४७

सिर भाल सधि—१-२८
सिरि छत्र सहस—८-२६
सिव सक सकधक—१८ ४७
सिवे ँ सग है—६-१०६
सीस बर सेहरं—७-५१
सीसै ँ सुछत्र छाजत—६-१६
सीसोदा चहूँआन—६-१८८
सीह क्रौड़ चित्रक—२-७८
सुदर तिय केउ—२-१४६
सु अमृति मोदक—२ १२२
सुकराय चचु कि—१-२३
सुकुमार सुरभित तुसित—८-७३
सु केलि चढै ँ—२-१८४
सुकोमल सुरगय—५-५
सुख सकल अत्र—३-४३
सुखही सुख सौं—८-१०४
सुखारिक दाख—२-११७
सुगायन पराय त्रियानि—२ ६८
सुचि सुरभि सकोमल—७-७
सु जलेबी हेसमी—८-६५
सुजी भरभूँजे कँसार—२-१३५
सुडारे साहि के—१४-१०
सुथाने ँ सपत्तै—१-१६०
सुनत राज बिप्र—३ ६७
सुनत एह सारी—६-१७७
सु नफेरि सख—८-६६
सुनहु सकल सामत—१०-६६
सुनि इह श्री—६-१६५
सुनि इह सँवलदास—१६-६
सुनि ऐसी मह—८ ११२
सुनि ऐसी राठौर—६-१३८
सुनि बच्च सु—७-२५
सुनि बापा नृप—१-१६४
सुनि बिप्र बचन—२-१६८
सुनि समझ्यौ कमधज—३-६४
सुनि सु कूह—१५-३५
सुनि सु दरोगनि—१४-११
सुनि सु बधाई—७ ४५
सुनि सुबोल सुलतान—६-१३४
सुनि हरखै जगपति—३-६०
सुनिय बच्च सग्राम—१-१३७
सुनियेा कमधजह सकल—६-७६
सुनिये सबद सारु—४-१६
सुनी साहि औरग—१४ ३०
सुने दूत सद्—१-१६३
सुनो सॉइ मत्री—३ ७
सुप्रसन्न सरसुति मात—१-११
सुप्रसस इता अनुगहि—६-४५
सुबच्च सुभग सुदरिय—१५-११
सु बचन प्राहित—१०-७६
सु बधाए बृजराज—८-४३
सुबास दान गच्छु—३-६६
सुभ दरस जास—७-८८
सुभ सवत दस—१-३८
सुभर रत्थ बहु—६ ६०
सुभाउत तीउन भूर—२-१८६
सुभै ँ दल अग्गहि—१७-१०
सुमति राव छत्रसाल—३-५५
सुमस्तकि लीलि मजीठ—२-११८
सु मुक्तिमाल बिंटि—३-६८
सु रच्यौ राजसमुद्—८-१७१
सुरहि सजन जन—५-८३
सुरेद चद सूर—५ ५५
सुलतान मान मन्नी—६-२६
सु वर दयौ—१-३६
सु विसाल भाल—१-२७
सुश्रुषिक पार्श्वग—२-७२
सु सकर सकुरि—१७-२४

सु सग्राम सीह—१-१७६
सुसनद्ध बद्ध सनाह—१८-३५
सूर चद सुर—७-७३
सूर झूझत सार—१-२१४
सूर वीर दातार—२-२२
सूरवीर देखै—१-१६३
सूरा एकहि सहस—१२-३
सृखला लोह लगर—७-८६
सॅमुख न मिलै—६-३३
सॅमुख न मिलौं—६-३६
सेख सकल सहरौं—६-१६६
सेभवाल सुखपाल रथ—८-१००
सेढी बुरज सवार—८-१४८
सेव करत नृप—६-१३२
सेव दो जॉम—१-१४७
सेवत सुर नर—१-१
सो नृप औरगसाहि—७ २
सो दुख सल्लै—६-३४
सो प्रबध रचियै—१-१२०
सा सिताव आवत—६-६५
सा सुमत सु—१८-५
सोखि सलिता सर—७-५६
सोनिग देव सामत—१०-६५
सोभत चौंर सिंदुर—६-५
सार भटक अरु —१० ८८
सोर सग गट्टय—७-६०
सोरट्ठ सिंघल साज—१-७६
सोलकी विक्रम सुभट—११-१
सोलकी सूरा बबकि—११-१०
सोलखिनी सुलच्छिनी—१-१३१
सोवन सरिस कति—५-७४
सौ कुजर साहि—१४-८
स्रावन किंपिन हूँ—८-११४
स्वर्गहिं सेढिय जाल—१०-५
स्वर्ण कुभ भरि—८-८८
स्वर्ण रगं सरीर—५-६०
स्वस्ति श्री सुभ—६-१८०
स्वस्ती श्रीउदयापुर—३-३१
हस सैद हहरंत—१५-३३
हस हय सुदर—७-५०
हसिलै हरड़ै हरी—१८-३६
हद्द न्याय हिंदवॉन—१-६६
हम जोधपुरा हिंदु—६-७७
हम समान सेवक—१८-५६
हम सौं लरि—१०-३
हमहिं दयौ इकलिंग—१८-१२
हम हूँ नृप—१-१६७
हय दो हजार—१-१८७
हय सुबस जाति—३-७१
हय हस बसा—१०-३३
हय गय रथ—१५-५
हय चचल सॉवलदास—१६-१२
हय दस किन—१-१६६
हय दीनै दत्त—८-१५८
हय हत्थि पयद्दल—१०-५४
हय हय सु- १२ ६
हय हींस करत—६-१०
हय हेख हेख—८-३३
हयसाला बहु बरन—२-७६
हर अट्टहास प्रहास—१३-२१
हरबल अल्लिहुसैन—१३-३
हरषे हिंदूपति सु—१४-४०
हरियाल हरित हीर—८-१५
हलकैं सु हेरैं—३-१२
हलहलिय असुर धर—६-२५
हसते लसते धसते—१०-४२
हहक्क तहक्क कितै—६-१०७
हाड़ा नृप अति—३-२

हिंगरू अगर चंदन—१५-२३
हिंदूपति फुरमान यौं—१०-१५
हिंदूपति भेटे हरखि—६-१६१
हिंदूपति श्रीमुख हुकम—१०-११६
हिंढोलत माह सुवर्ण—२-१८०
हिंसारगढ हरणौरय—१-१११
हिय हरति हुरम—१८-६५
हुकम दयौ तिन—१०-६४
हुड़क्कि जत्र हृदयं—५-१३
हेम तोल चचल—१४-४१
हो कमधज कुँआर—३-६४

———

## २—अभिधान

[ संख्याएँ अध्यायों एवम् छंदों की हैं ]

अखतै=कहने से, गान करने से, अवलोकन से। १-१२०
अखि = देखकर। १-२३७
अगज = बेटा। ६-६८
अबरै=वस्त्र से। १-१४६
अकतूल्ला=बेअदाज, अपरिमित। ११-६
अखए=अक्षत। ५-१६
अखए = कहता है। ५-१६
अखियात=ख्याति। २-३२, ८-१६६
अग्गरौ=आगरा नामक शहर। ६-२७
अग्गरौ=आगर। १४-६
अग्गला = कपाट को बाहर से बंद करने का डडा। १-६४
अचिजं = आश्चर्य। १-१८५
अच्छरी = अप्सरा। ७-६
अजुवालिय=उज्ज्वल किया। १-१३६
अजेज = (अजेय) जिसे कोई जीत न सके। ३-८
अट्टार (अट्टाल)=बुर्ज। १-४३
अड्डौ=विरुद्ध, उल्टा। ६-६८
अतिक्रम्यौ=चला गया। १-१५७
अथ्थै=अर्थ, धन। १-१७५
अदिट्ठ=अदृश्य। १-१६४
अधिकार = प्रकरण। ३-१
अधिकार=बढकर। ३-१०८
अनग्गल = अथाह, अपरिमित। ८-१५८
अनड़=जोरावर। १-२०६
अनड़=पहाड़। २-३०
अबीह = निर्भय। १-१७६
अभग—अडिग, निर्भय। ५-७६
अमान=अतुल, असीम। १२-१४
अरस्सि=अरिसिंह। ५-५६
अवगाढ=मजबूत। ६-२८
असपति = बादशाह। ६-२
असहेज=असह्य। १०-१०२
असुर=मुसलमान। १८-३
आग्राज=गर्जना। १४-३४
आघाट=अहाड़ा (मेवाड़ के राजाओं की पदवी)। २-६
आल=घेरा। ३-६६
आवरिग=घिर गई, छिप गई। १-३६
आसगनि=सामर्थ्य, शक्ति। १-१०१
आसुर=मुसलमान। २-१३२
आहनिय=हराकर, मारकर, जीतकर। २-३६
आहनौं = जीतूँ, मारूँ। १०-१७
आहुटै=लड़े, भिड़ गए। ६-१२१
आहुट्ट=अहाड़ा (मेवाड़ के राजाओं की उपाधि)। ३-२७
आहूत = आहुति। ८-४६
इकमिक्कि=समिलित, आपस में मिल जाना। ३-८६
इट्ठ = इष्ट। ६-१२३
ईहक=कवि, चारण। १-१४३

उग्गरै=उबरता है, निस्तार पाता है। ५-४०

उझखर=ऊजाड़, वीरान। १३-११

उझट=झझोड़ता है, गिरा देता है। ८-६

उतन = ( वतन ) देश। ६-१८३

उतमाग=मस्तक। ७-१०४

उद्गल=खलबली। ८-३७

उदंत=वृत्तांत, बात। ३-४६

उन्नग = नगी। १३-१३

उपन्नौ = उत्पन्न हुआ। १-१८५

उपाड़ = उखाड़नेवाला। ६-२१

उररि = क्रोध करके, जोश से। ११-८

उल्हरिग=उमड़ आया। १-३६

उसासय = उच्छ्वास। १-२२

ऊँडह = गहरा। ८-१५०

ऊगम=उदय होने पर। ७-१०७

ऊभौ = खड़ा रहा। १-१५४

एम=यों, इस तरह। १ १३६

औदकै=चौंक पड़ता है। १८-१०३

कक=युद्ध। ५-७१

ककह = युद्ध। ५-८७

ककालि=योद्धा। ६-१०१

कठल = वर्तुलाकार घटा अथवा घेरा। १-३६

[illegible] कधोंवाला, वीर। ५-५८

कड्ढौं = निकालूँ। ६-८५

कण = नाज का दाना। १-८५

कत्ति = कटार। १०-४४

कर्तन = काटनेवाली। १-३२

कप्पर = कपड़ा। ६-१५१

कप्पर = खोपड़ी। १५-१६

कबिले=मुसलमान। ६-१०[illegible]

कमठान = निर्माणकार्य, तामीर। २-६४

कमधज = राठौड़। ३-८५

करनारि = वाद्यविशेष। १४-३८

करमेत=उत्कृष्ट कर्म करनेवाला, भाग्यवान। ३-१०६

करल = कराल, भयकर। १५-३१

करसणि=कृषक, किसान। १-३६

करहा=ऊँट। १-१६८

कल=कला। १-२१

कलाप (स० कल्प) = उपाय, युक्ति। ६-६२

कहर = बहुत। १-२२३

कहर = विघ्न, आपत्ति। १८-६६

काबरि=स्त्रीविशेष। ४-१७

कार = मर्यादा। ४ ८

किगार=आवाज, कलरव, कूक। १-४२

किद्ध=किया। १-७३

किरनाल = सूर्य। ७-१०१

किरान = किराना। १५-१६

कुखिस=( कुक्षि ) पेट। १-१७

कुननति = बिलखती हुई। ७-२७

कुलवट = कुल की मर्यादा। २-६

कुलोद्धार = कुल का उद्धारक, वशज। ५-५८

केक=कई। १-१६२

केवि = शत्रु। ३ १०

केवि=कई। ३-७१

कैलपुरा=मेवाड़ के राजाओं की उपाधि। ३-८५

कोड़ = प्रसन्नता, चाव, उमग। २-१८२

कोसीसावलि=कँगूरों की पक्ति। १-६३

क्रमि = क्रम-क्रम से, धीरे-धीरे । १-१५०

क्रमैं = चलकर । १-१५०

खगिय=काटकर । २ १६

खड=खाँड़ । ८ ४५

खती=इच्छा, हर्ष, उमग । १-१८७

खटदर्शन=षट्वर्ण ( ब्राह्मण, यति, योगी, सन्यासी, जगम और चारण ) । १-२५

खलखच = सकोच, हिचकिचाहट । २-१३३, ६-३७

खलहलत=खलखल शब्द करते हैं । १-४३

खवराइये=खिलाऊँ । १ १४८

खह=आकाश । १०-४३

खाल = नाला, छोटी नदी । १ ४३

खिति=(क्षिति) पृथ्वी । ६-२६

खिवै=चमकती है । ३-८१

खेतल = क्षेत्रसिंह । २-३१

खेम=क्षेम, कुशल । ६-११७

खोग = घोड़ा । ५-४८

खैरारह = खेराड़ प्रदेश । १-१२१

खोर=खपरैल ईंट आदि के टुकड़ों की गिट्टी । ८-१४८

गजधर=मिस्त्री । ८-१४१

गट्ट=मजबूत, भारी । २-३

गरथल = गलस्तन, निरर्थक वस्तु । १-८६

गल्ह=कहानी, अफवाह । १४-३

गल्हार=हाँक, हुँकार । ६-१७

गस=कपट । ५-८०

गस = गुस्सा । १३-६

गिरुआ = भारी । १०-७६

गुडगरीनि=गन्ने की एक किस्म विशेष । २-१२८

गुरु = भारी । १८-३७

गुहिर=गभीर । १-४१

गूडर=खेमा, डेरा । ७-४८

गैंन=आकाश । ६-१७

गैलह = मार्ग । १०-११३

गोंण=( गोणी ) बोरा । १-८५

गोम=आकाश । १२-१२

गोमाय=शृगाल । ६-१११

गोयर = ( स० गोपुर ) द्वार । ७ ५७

गोरिय=गोली । १३-१३

गोरी=गोला । १०-४३

ग्रथ=द्रव्य । ७-६१

घघल = युद्ध, बखेड़ा । ६-१८

घड=सेना । १० १२१

घण=बादल । १-३६

घण=घना, बहुत । १-३६

घणु=बहुत । १-१४०

घमस=नाद, आवाज । ७-४२

घमसाण=गहरा, भीषण, घना । १-३६

घल्लन=(घाव) करनेवाला । ५-७७

घल्लि=डालकर, पहनाकर । १-१६४

घुमर=गर्व, गर्वीला । ७-५४

घु मर=चक्कर । १०-११८

घुरत = बजते हैं । ३-७८

घुराया=बजाया, फैलाया । २-३६

चचल=घाड़ा । ३-७३

चऊँ = कहता हूँ । १-३३

चचर = मस्तक । १०-११६

चरखा=हाथी को वश में रखने का एक शस्त्र । ६-४

चवत = कहता है । १२ ८

चहबचा=फौवारा, हौज । ४-२०
चुग=चुगा, दाना । ८-१३१
चुरस=आनद, उमग । ७-४८
चूप=आनद, उल्लास । १-२२६
चेजा=हमला । १८-६३
चेजागर=चुनाई करनेवाला मजदूर । ८-१४४
चैल = वस्त्र । ६-११३
चोजा = आनद, उत्सुकता । ६-१०६
चोल=लाल रग का । ७ १६
चौंडहर=चूडावत,चूडा का वशज । १०-६४
चौरस = बराबर, समतल, हमवार । ८-१४१
चौसट्ठि = चौसठ योगिनियाँ । ३-३६
छप्पन = मेवाड़ का छप्पन नामक प्रदेश । ६-६२
छिछि=फुहार, धारा । १६-२३
छौल=लहर, धारा, फुहार । १-४६
जगाति=चुगी । २-१३४
जगातिय=चुगी लेनेवाले । २-१३४
जड्डौ=बड़ा, मोटा, मजबूत । ६-६८
जसोभ्रम=यशप्रतिष्ठा । २-७
जाइ=( स० जाति ) चमेली । १-३०
जाड़ा=जड़ । ६-२१
जिट्ठ = ज्येष्ठ का महीना । ६-२
जिट्ठ=जेठा । २-५३
जीपत=जीतते हैं । १-१२४
जुजुई=जुदा जुदा । ४-३
जेट=ढेर । ६-१५५
जेण=जिसने । १-१३६
जोरिय=जोर से । १४-३४
झख=व्याकुल, म्लान । ३-३३
झखरिय=धूमिल । १६-१०
झल=ज्वाला । ६-८६
झल्लरी=झालर,वाद्य विशेष । ५-१२
झल्लि = धारणकर, पकड़कर । ५-५१
झाक=शस्त्राघात । १-२१७
झाक झमाल=चटकीली, गहरी गुँथी हुई, खूब जड़ी हुई । २-१२७
झाट=शस्त्र-प्रहार । १-२१३
झाल=ज्वाला । १२-१८
झिलती=झलमलाती है, चमकती है । ७ ६२
झिलि=सुशोभित । ६-८७
झूरह = चूरा । १-२१७
झूरि ( रा० झूड़ ) तलवार, लाठी आदि से मारना या पीटना । ५-७७
टोडर = पाँव में पहिनने का कड़ा या लगर । १-२४०
ठव्यौ=रखा । १-१४३
ठाँण = (स्थान) हाथी, घोड़ा आदि पशुओं को बाँधने की जगह । १-७०
ठिप्पर=ठोकर । ६-१५१
डग=दोहनी । १०-७८
डबर=आडबर । १-४६
डहक्क = अतिशय । १-४६
डिंभ=लड़ाई । ५-५६
डिंभ = छोटा बच्चा । ५-५६
डुझ=आँधी । १४-३४
ढकचाल=युद्ध, उपद्रव । ६-१५१
ढुक्कि=पहुँचकर । १-५५
तडै = गर्जना करता है । ६-११४
तणै = के । १-१४३
तत्थ = उस । १-१८१
तप्प=ताप । ७-२४

तर=( स० तरु ) वृक्ष । ५-८६
तवत = कहते हैं, स्मरण करते हैं, ज्ञान करते हैं । ८ २
तसु=उसका । १-६१
तहति=तथेति, ठीक है ऐसा । १-१५२
ताम=उसका । २-१५१
तायो=तपाया हुआ । २-३१
तास=उसके, उसको, उसका । १-३२
तिके=वे, उनको । १-१३६
तिण=उसने । १-१४७
तुग = ऊँचा । १-६३
तुबर=देवताओं के गायक विशेष । २-२६
तेक=तलवार । १२-६
ताँन ( स० तूण ) तरकस । १-२०६
त्रभागल=नगाड़ा । १६-१८
थई=हुई, होकर । १-१५४
थट्ट=समूह । २-१०१
थह=स्थान । १०-१०५
थाटह=समूह । १ ६४
थाट=ठाट, आडम्बर । ५-२
थानक=थाना, स्थान । १०-११६
थापणो = प्रतिष्ठित करना, स्थापित करना, देना । १-१५४
थी=से । १-१५६
दडकि = फटकर, कटकर । १-२२४
दड़बड़=दौड़ । १-२२२
दत्त=दान । २-३१
दमामह=नगारा । ६-१५६
दरस षट्=षट्दर्शन ( ब्राह्मण, यति, योगी, सन्यासी, जगम और चारण ) । १-१२५
दहक्कि=भयभीत । ५-८
दाय=पसंद १-७२
दाइजा=दहेज में । ७ ८६
दाबटै=दबाता है, दमन करता है । ३-८०
दित=देते थे । १-१४१
दीठ=( दृष्टि ) देखा । १ ७१
दाढाल = डाढ़ॉवाला महावीर । १-११६
दुधारिय=कटारी । १-२१२
दुबाह=वीर । १०-२७
दुरब्बरी=वाद्य विशेष । ५-१२
दुरमा=रंगीन, सुदर । ५-३३
दोट=गैंद । १८-६०
दोहग=दुर्भाग्य । ५-२१
धकै=आगे, मुँह के सामने । ३-१०
धकंत=जलता है ।
धणियॉणी=स्वामिनी । १-३३
धाराल=तलवार । ५-५५
धवराविये=स्तन पान कराने के लिए । १-१४०
धाएण = दाइयों द्वारा । १-१४१
धींग=जोरावर । ३-१०
धींविट्ठ = दुर्द्धर्ष, भारी । ६-१६
धुअ=अटल । ३ ७
धुव = आदिकाल से । ३-२३
धूपटै = छीनते हैं, धर दबाते हैं । ५-८१
धुर=ध्रुव, अटल । २-२१
धुरकाली = उत्तर दिशा की काली घटा । १-३६
नखि=डालकर, छोड़कर । १-१३८
नट्ठो=भाग गया । २-१६८
नन=नहीं । १-५४
नरवर = नरश्रेष्ठ । १-१००

चहबचा=फौवारा, हौज । ४-२०
चुग=चुगा, दाना । ८-१३१
चुरस=आनद, उमग । ७-४८
चूप=आनद, उल्लास । १-२२६
चेजा=हमला । १८-६३
चेजागर=चुनाई करनेवाला मजदूर । ८-१४४
चैल = वस्त्र । ६-११३
चोजा = आनद, उत्सुकता । ६-१०६
चोल=लाल रग का । ७ १६
चौंडहर=चूडावत,चूडा का वशज । १०-६४
चौरस = बराबर, समतल, हमवार । ८-१४१
चौसट्ठि = चौसठ योगिनियाँ । ३-३६
छप्पन = मेवाड़ का छप्पन नामक प्रदेश । ६-६२
छिछि=फुहार, धारा । १६-२३
छौल=लहर, धारा, फुहार । १-४६
जगाति=चुगी । २-१३४
जगातिय=चुगी लेनेवाले । २-१३४
जड्डौ=बड़ा, मोटा, मजबूत । ६-६८
जसोभ्रम=यशप्रतिष्ठा । २-७
जाइ=( स० जाति ) चमेली । १-३०
जाड़ा=जड़ । ६-२१
जिट्ठ = ज्येष्ठ का महीना । ६-२
जिट्ठ=जेठा । २-५३
जीपत=जीतते हैं । १-१२४
जुजुई=जुदा जुदा । ४-३
जेट=ढेर । ६-१५५
जेण=जिसने । १-१३६
जोरिय=जोर से । १४-३४
झख=व्याकुल, म्लान । ३-३३
झखरिय=धूमिल । १६-१०
झल=ज्वाला । ६-८६
झल्लरी=झालर,वाद्य विशेष । ५-१२
झल्लि = धारणकर, पकड़कर । ५-५१
झाक=शस्त्राघात । १-२१७
झाक झमाल=चटकीली, गहरी गुँथी हुई, खूब जड़ी हुई । २-१२७
झाट=शस्त्र-प्रहार । १-२१३
झाल=ज्वाला । १२-१८
झिलती=झलमलाती है, चमकती है । ७ ६२
झिलि=सुशोभित । ६-८७
झूरह = चूरा । १-२१७
झूरि ( रा० झूड़ ) तलवार, लाठी आदि से मारना या पीटना । ५-७७
टोडर = पाँव में पहिनने का कड़ा या लगर । १-२४०
ठव्यौ=रखा । १-१४३
ठाँण = (स्थान) हाथी, घोड़ा आदि पशुओं को बाँधने की जगह । १-७०
ठिप्पर=ठोकर । ६-१५१
डग=दोहनी । १०-७८
डबर=आडबर । १-४६
डहक्क = अतिशय । १-४६
डिंभ=लड़ाई । ५-५६
डिभ = छोटा बच्चा । ५-५६
डुझ=आँधी । १४-३४
ढकचाल=युद्ध, उपद्रव । ६-१५१
ढुक्कि=पहुँचकर । १-५५
तडै = गर्जना करता है । ६-११४
तणै = के । १-१४३
तत्थ = उस । १-१८१
तप्प=ताप । ७-२४

तर=( स० तरु ) वृक्ष । ५-८६
तवत = कहते हैं, स्मरण करते हैं, ज्ञान करते हैं । ८ २
तसु=उसका । १-६१
तहति=तथेति, ठीक है ऐसा । १-१५२
ताम=उसकी । २-१५१
तायो=तपाया हुआ । २-३१
तास=उसके, उसको, उसका । १-३२
तिके=वे, उनको । १-१३६
तिण=उसने । १-१४७
तुग = ऊँचा । १-६३
तुबर=देवताओं के गायक विशेष । २-२६
तेक=तलवार । १२-६
तोंन ( स० तूण ) तरकस । १-२०६
त्रंबागल=नगाड़ा । १६-१८
थई=हुई, होकर । १-१५४
थट्ट=समूह । २-१०१
थह=स्थान । १०-१०५
थाटह=समूह । १ ६४
थाट=ठाट, आडंबर । ५-२
थानक=थाना, स्थान । १०-११६
थापणो = प्रतिष्ठित करना, स्थापित करना, देना । १-१५४
थी=से । १-१५६
दडकि = फटकर, कटकर । १-२२४
दड़बड़=दौड़ । १-२२२
दत्त=दान । २-३१
दमामह=नगारा । ६-१५६
दरस षट्=षट्दर्शन ( ब्राह्मण, यति, योगी, सन्यासी, जगम और चारण ) । १-१२५
दहक्कि=भयभीत । ५-८
दाय=पसंद १-७२
दाइजा=दहेज में । ७ ८६
दाबटै=दबाता है, दमन करता है । ३-८०
दित=देते थे । १-१४१
दीठ=( दृष्टि ) देखा । १ ७१
दाढाल = डाढ़ॉवाला महावीर । १-११६
दुधारिय=कटारी । १-२१२
दुबाह=वीर । १०-२७
दुरब्बरी=वाद्य विशेष । ५-१२
दुरमा=रंगीन, सुंदर । ५-३३
दोट=गैंद । १८-६०
दोहग=दुर्भाग्य । ५-२१
धकै=आगे, मुँह के सामने । ३-१०
धकत=जलता है ।
धणियॉणी=स्वामिनी । १-३३
धाराल=तलवार । ५-५५
धवराविये=स्तन पान कराने के लिए । १-१४०
धाएण = दाइयों द्वारा । १-१४१
धींग=जोरावर । ३-१०
धींधिट्ठ = दुर्द्धर्ष, भारी । ६-१६
धुअ=अटल । ३ ७
धुव = आदिकाल से । ३-२३
धूपटै = छीनते हैं, घर दबाते हैं । ५-८१
धुर=ध्रुव, अटल । २-२१
धुरकाली = उत्तर दिशा की काली घटा । १-३६
नखि=डालकर, छोड़कर । १-१३८
नट्ठो=भाग गया । २-१६८
नन=नहीं । १-५४
नरवर = नरश्रेष्ठ । १-१२२

नॉवहि=नहीं आता है । १-७२
नारि=( रा० नाळ ) पर्वत श्रेणी में होकर निकलनेवाला तग रास्ता । ११-४
नारि=( रा० नाळी ) तोप । १-६८
नाहर=सिंह । ३-८६
निपाइय=बसाया । २-१
निप्पनिय=उत्पन्न हुआ । २-१५०
निबौरी = गले का आभूषण विशेष । ७-१२
निराट = बिल्कुल । ६-५६
निवान = (निपान) जलाशय । १-६७
निहसत=बजते हैं । १०-१२२
नीम = नींव । ८-१३६
नीलाणी = हरित हुई । १-४४
नीसरी=निकली । १ १५६
नेट = नहीं । १-१५६
नैर=नगर । ६-३०
नैसाल=न्यायालय । २-१०६
नौ = का । १-१४५
पखाला=पखधारी, पक्षी । १-१७२
पखरै = पाखर सहित । १०-३६
पचावै=पकाकर । १-१४६
पटह=दुदुभी, नगाड़ा । १-६५
पट्टझर = पतझड़ । १८-६
पट्टा=कतार । १-१७७
पत्त ( स० प्राप्त )=प्राप्त हुआ, पहुँचा, देखा । १-१२५
पत्र=पात्र । ८-२४
पथ्थे=मार्ग में । १७-१६
पद्धर=चौरस, अनुकूल । ८-१४२
पभनत=कहते हुए । २-५८
परकर, = कमरबंध । १८-४१
परज ( स० प्रजा )=आश्रित जन । ३-६८
परट्ठयौ = भेजा, छोड़ा, रखा । १-१३७
परि = परंतु । ६-१३२
परि = जैसे, तरह, भाँति, ज्यों, मानों । १-१३७
परि=ऊपर । ८-६१
परिकर = परिवार, अनुचर वर्ग । ६-२७
पल=चार कर्ष की एक तौल । ७-२८
पल्ल=उपल । २-६६
पल्लिपति = भीलों की बस्तियों के मुखिया । १०-६०
पवगा=घोड़ा । ३-२०
पह=पथ । १३-११
पही=पथिक । ७-३८
पाज=सेतु, पाल । ५-४२
पाट=चौड़ाई । ८-१४३
पाती=नीम के वे पत्ते जो भैरव, देवी आदि के पुजारी अपने भक्तों को आशिका के तौर पर देते हैं । १६-३
पिंड=शरीर । १-१३७
पिसुन=शत्रु, दुष्ट । ६-१८०
पीथल=पृथ्वीसिंह । ६-१८४
पीहर=पीड़ा को हरनेवाला । १५-३६
पुभिका=रुई अथवा कपड़े का छोटा टुकड़ा । ३-१२
पुट्ठि=पीठ, पीछे । ६-६
पुलै=भागता है, दौड़ता है । २-१०४
पेसकस=जुरमाना, करद । ८ ३२
पोंचीय=पहुँची, कलई का आभूषण विशेष । १-१८
पोति=पवित्री, गले में पहिनने का

काला डोरा अथवा गुरिया। १-२०

पोसिज्जए = पोषित। १-१४१

पौसाल ( सं० उपशाला ) ओसारा, बरामदा। २-१०६

प्रतपौ = तपो, राज करो। ३-६५

फोक=फोकट। ६-७८

बंभ = ब्रह्मा। २-१५

बखत=समय। १-२३३

बग्ग = बजे। ६-२३

बट्टड़ी=मार्ग। १-१५३

बड़वार=बड़ा। १-२३०

बढ्ढौं=काटूँ। ६-८५

बबकार=ललकार। ३-६०

बब्बर=बर्बरी देश। १-७२

बरतायै=पूरे किए। ७-७८

बराक=निर्धन, बेचारा। ८-१२४

बहय=चलता है। १-१६८

बहिरखा=बाहु का एक गहना विशेष। १-१८

बा३=आँधी। १-१६२

बागर = बागड़ प्रदेश। ६-६२

बारदि (रा० बाळद) टॉड़ा। २-१४५

बावि=बापिका। ३-२

बिंटियो=घिरा हुआ। ३-१०८

बिटुलिय=घेरकर। १०-१

बिंद=दुलहा। ३-८३

बिढ=लड़ाई। ३-८८

बिढिग=लड़कर। ६-८५

बियारनी=फैलानेवाली। १-१६

बिरुदाल=विरुदधारी। १५-२

बिरुदैत=यशस्वी, विरुदधारी। ८-१६

बिलूरैं=चिल्लाती हैं, प्रलाप करती हैं। १-१६२

बिसन = व्यसन। १-१४४

बिहस्सि = जोश में आकर, उत्साह से भरकर। १-४३

बुट्ट = बरसा। २-५३

बेढिम=बहुमूल्य, बढिया। ८-७७

बैठक=राजसभा में बैठने की आज्ञा और इज्जत। १०-६८

बोलियाँ=व्यतीत होने पर। १-१५१

बोली=व्यतीत हुई। १-१५३

भकभूरा = भीड, समुदाय। ११-१०

भख = भोजन। ६-१६६

भग्गला=किवाड़ को भीतर से बद करने का डडा। १-६६

भति = भाँति, प्रकार। ६-१८४

भलाइय = सौंपकर। १-२०२

भार = भारी, विशाल। १-४३

भारथ=युद्ध। १-१३६

भिलवारि = भीलप्रदेश। १-७४

भीच=बहादुर। १-२१६

भुगल=वाद्य विशेष। १३-१३

भुजाल=बलिष्ठ भुजाओं वाला। २-४२

भेलिन=नष्ट करने ( लगे ) कुचलने ( लगे )। १८-५६

भौंचपा=गुब्बारा, आतिशबाजी। ७-६०

मझए=में। १-१५७

मड=मदिर। १-२०८

मडाण=अस्तित्व। १ ७०

मडान=श्रीगणेश। १-३८

मडान = विचार। १८-६८

मडियौ = खोला। १-१५५

मंत=मत्रणा । ३-२५
मक्कड़=बदर । १०-११०
मठ ( स० मष्ठ ) निस्तेज, चुप । ३-२
मदझर=हाथी । १-१२१
ममोल=बीरबहूटी । १-४५
महियल=पृथ्वी । ८-१७२
महुर = अशरफी । ७-१०७
माझी=जोरावर । १४-२८
मात=हार । ३-६७
मालहतौ=झूमता हुआ । १-१५७
मिखी=श्याही । ८-१६७
मीढ=समता, बराबरी । ८-१७०
मुँछालह = मूँछधारी । ३-१००
मुक्कि=भेजकर । ६-६७
मूझत=मूच्छित । १-२२५
मेवास = किला । ३-३२
मोजरि = जूते । ५-७
मोरछा = मोरचा । १४-३२
मोरी = मौर्यवंशी । १-११६
मोज=हनाम । ७-१०७
यल=( स० इला ) पृथ्वी । १०-११४
युग्गिनिपुरु= दिल्ली । ६-१६२
रगरली = आनदोल्लास । ७-४०
रखत=सुरक्षित । ६-३६
रजवट = रजपूती, क्षात्र धर्म । १०-५६
रड़त=रोते-चिल्लाते हुए । ६-१५०
रड़बड़=इधर-उधर, अस्तव्यस्त । १-२२२
रढ = टेक, हठ । ३-१००
रढाल=हठी वीर । २-४२
रतनाली = रत्नावली । ७-१३
रती = शोभा । ७-३०
रत्तड़ी=लालिमा । १-१५३
रवरि = रोर, हल्ला । १६-११
रस्ति=रसद । १६-४
रहबाल=धीमी चालवाला घोड़ा । ६-११
राइन=खिरनी । २-१२६
राषरी=( रा० रखड़ा ) शिर का आभूषण विशेष । ७ ७
रिधू=अचल, रिद्धिवान् । १-१२१
रुड़त=लुढकते हैं, भटकते हैं । १-२२२
रूकिनि = तलवारें । १६-२०
रूव=( रा० रूपा ) चाँदी । ६-१५०
रेहा ( स० रेखा ) लकीर । ६-६२
रैबारिय=ऊँट चरानेवाली एक जाति विशेष । २ ६७
लकालि=सिंह । ६-१०१
लखपसाव=एक लाख का दान । ५-६७
लथब्बथ=गुत्थगुत्था । १८-८६
लहु=लघु । ६-६६
लिल्हरित=फटा हुआ । ८-१२६
लीलि=लीला । १-६१
लीलह=लीला । २-२२
लुबझुंब=फल, फूल आदि से सघन । २-१५७
लुत्थि = लोथ । ६-१२
लुलि=झुककर । २-४८
लूँण=( लवण ) नमक । १-८५
वदी=कही । १-१६१
वर प्रापति=विवाह-योग्य । ३-४
वल्लिहका=वल्लभीपुर । १-१२४
वारुण = हाथी । ८ ५४
वित्त=व्यतीत होने पर, समाप्त होने पर । २-१७०

वित्त=धन । २-१७०
विभाड़=भयभीत करनेवाला । ६-२१
विविहि=विविध । १ १३७
सज=सामान । २-१२८
सठिय=सस्थित, बैठा हुआ । १-२६
सड=साँड, बैल । ६-१००
सपजै=प्राप्त होता है । १-६१
उपत्तौ=पहुँचा, मिला । ३-८४
सपरवरू=श्रेष्ठ, मुख्य । १-१४४
संलोट=व्यस्त, घराशायी । १५-२६
सकति = बरछी । १-२०६
सगताउत=शक्तावत, शक्तिसिंह के वशज । १०-१२०
सग्गपन=सबध, सगाई । ३-४
सजड़=तलवार । ६-८८
सट्टे=बदले में । ६-७६
सत=सतीत्व । २-१४६
सत्थ=साथ, समाज । १-१४४
सद्दै=बुलाकर । ३-४८
सबर=बलवान । १-१८२
समान=संमान, आदर । २-१६०
समाहि=पकड़कर, थामकर । १८-८६
सयल=( सं० शैल ) पर्वत । १-४२
सरूव=स्वरूपवान, सुदर । १-१७२
सरोस=रसीली, सरस । ४-१३
सलिता=सरिता, नदी । १-४६
सहल=सैर । ८-१०४
साकति=जीन, साज । ३-५२
साख=शाखा, गोत्र । २ २१
साचवी = सँभाली, की । १-१४७
सार=तलवार । २-१२
सार=साल, शल्य । ४-४
सारनि=नहर । २-६५
सारह = लोहा । २-१२
सारु = अच्छा । ४-१६
साल=सार, तत्त्व, फल । ८-२१
सालि=चावल । १-६७
सिंदूरी=गवारपाठे का फूल । ४-१३
सिधु = वीर रस का राग विशेष । १-२१५
सिघाला=श्रेष्ठ । १-१७२
सिप्पर=ढाल । ८-२३
सिय=सित, श्वेत । १-१४२
सिरि=श्री, शोभा । १-१३६
सिरि=पर, सिर पर, चोटी पर । १ ४२
सिसौदा=सीसोदा नामक गाँव । ५ ७६
सिहर = शिरोमणि, सर्वोपरि । ३ २४
सिहरि = शिखर पर । १-४४
सीर = हिस्सा । १-१६८
सुडार = हाथी । १०-२६
सुकमाल = सुकुमार, कोमल । ३-३
सुनवि ( स० स्तव ) स्मरण करके । १-३८
सुपखाँ=स्वपक्षी, मित्र । ३-२३
सूहव=सधवा स्त्री । १-१५८
सेंकर=अपने हाथ से । ६-२०६
सेंग=साँग । १४-३१
सेंमुह=अपने मुँह से । १०-११५
सेंमुख= स्वयम् । ६-३३
सेढी=सीढी । ८-१४८
सेलड़ी = गन्ना । १-६७
सेलरी = गन्ना । ८-१४६
सोंडाल=हाथी । ६-५
सोक=समूह, बौछार । १८-८१
सोर = बारूद । ६ ८६
सोरिय=बारूद १-२०६

सोहग = शुभ, सौभाग्य । ८-१४०
हस ( रा० हिंसालो ) हँसता हुआ । ७-६८
हस=घोड़ा । ७-६६
हंस=हँसली । ७-१२
हजूरि=वशवर्ती, सेवक, दासी । १-६१
हठाला = हठी वीर । १-१७३
हथलेव=पाणिग्रहण । ३-१०२
हलक्क=हडकप, हल्ला । ६-२५
हलाया=हिलाने से । २-३०
हल्लियौ=चला । १-१५३
हसम=सेना । १-१२४
हाँम = इच्छा, उमग । ३-१०१
हाली ( हालिक ) हलवाहा । १-३६
हिडै=चलते हैं, भागते हैं । ६-११४
हियाल = दिलेर । ३-११
हींसवाला=हिनहिनाते हुए । १-१७२
हुड़क्कि=छोटा ढोल । ५-१३
हूत=से । १-१५६
हूतौ=से । १-१५६
हेज = घोड़ा । ३ ८
हेट=( रा० हेड़ ) घोड़ों का झुड । ६-८६
हेष=एक । १५-८

[ संकेत—रा०=राजस्थानी, स०=सस्कृत । ]

———

# ३—छंद-विमर्श

**दोहा—( १।१ )**

दो पंक्तियों में लिखा जानेवाला चार चरण का अर्धसम छंद, जिसमें ४८ मात्राएँ होती हैं। विषम चरणों में १३-१३ और सम चरणों में ११-११ मात्राएँ रहती हैं। दूसरे और चौथे चरण का तुकांत मिलना चाहिए।

**कवित्त ( छप्पय )—( १।१० )**

छह पंक्तियों में लिखा जानेवाला मात्रिक छंद, जिसमें १४८ या १५२ मात्राएँ होती हैं। इसके आदि में रोला के चार पद २४-२४ मात्राओं के तथा उनके बाद उल्लाला के दो पंक्तियों में लिखित चार पद होते हैं, जिनमें प्रत्येक पंक्ति में कहीं १३ + १३ के दो पदों की २६ और कहीं १५ + १३ के दो पदों की २८ मात्राएँ होती हैं।

**गीतामालती—( १।११ )***

प्रत्येक चरण में सोलह और बारह के विराम से २८ मात्राओं का छंद, जिसकी ५वीं, १२वीं, १९वीं तथा २६वीं मात्रा लघु होनी चाहिए। अंत में लघु-गुरु ( ।ऽ ) होते हैं।

**पद्धरी ( पद्धटिका )—( १।४० )**

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं और अंत में जगण होता ( ।ऽ। ) है।

**हनूफाल—( १।७० )**

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १२ मात्राएँ और अंत में गुरु-लघु ( ऽ। ) होते हैं।

---

* 'पृथ्वीराजरासो' ( काशी नागरीप्रचारिणी सभा का संस्करण ) में 'गीतामालची' है। पृष्ठ १५८० की टिप्पणी में लिखा है—'आधुनिक हिंदी पिंगलों में इस छंद को प्रायः हरिगीतिका करके लिखा है'।

**दंडमाली ( हाकली )—( १।१५ )***

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ होती हैं और अंत में लघु-गुरु ( ।ऽ ) होते हैं।

**कामुकी बांताणं ( स्रग्विणी )—( १।१३८ )***

एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में चार रगण ( ऽ।ऽ ) होते हैं।

**विराज ( भुजंगप्रयात )—( १।१७१ )***

वर्णिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में बारह वर्ण होते हैं, जिनमें पहला, चौथा, सातवाँ और दसवाँ वर्ण लघु तथा शेष गुरु होते हैं। अर्थात् प्रत्येक चरण में चार यगण ( ।ऽऽ ) रहते हैं।

**दंडका ( १।२०६ )***

प्रत्येक चरण में सात-सात के विराम से १४ मात्राओं का छंद, जिसके अंत में दो लघु ( ।। ) होते हैं।

**विश्वक्षरी—( २।१ )***

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं और अंत में प्रायः भगण ( ऽ।। ) होता है।

**नीसानी—( २।२५ )†**

प्रत्येक चरण में तेरह और दस के विराम से २३ मात्राओं का छंद, जिसके अंत में दो गुरु ( ऽऽ ) होते हैं।

**मोतीदाम—( २।८७ )**

एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में चार जगण ( ।ऽ। ) होते हैं।

**भुजंगी ( भुजंगप्रयात )—( ३।७ )‡**

वर्णिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में चार यगण ( ।ऽऽ ) अर्थात् बारह वर्ण होते हैं। ( वस्तुतः भुजंगी छंद भुजंगप्रयात से भिन्न होता है। भुजंग-

---

* इन छंदों का लक्षण 'राजविलास' में प्रयुक्त स्वरूप के आधार पर दिया जा रहा है, हिंदी के प्राचीन पिंगल-ग्रंथों से मिलान भी किया गया है। कोष्ठक में दिए नाम पिंगल-ग्रंथों के हैं।

† हिंदी-शब्दसागर।

‡ हिंदी-शब्दसागर, पृष्ठ २५७६।

प्रयात का अंतिम वर्ण हटा देने से वह बनता है। इसलिए उसमें तीन यगण और लघु-गुरु ( ग्यारह वर्ण ) होते हैं )।

**वृद्ध नाराच ( पंचचामर )—( ३।६७ )**

वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में ६-७ के विराम से १६ वर्ण होते हैं। इसमें क्रमशः आठ लघु-गुरु या जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और अंत मे गुरु होते हैं ( ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ ) ।

**विद्युन्माला—( ४।२ )***

वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में ८ वर्ण होते हैं। अंत में गुरु-लघु ( ऽ। ) रहते हैं।

**लघु नाराच—( ५।२ )**

प्रत्येक चरण में ८-८ के विराम से १६ वर्ण का छंद है। इसके प्रत्येक चरण में आठ लघु-गुरु या जगण, रगण, जगण, रगण, जगण तथा गुरु रहते हैं। ( वृद्ध नाराच से इसमें केवल विराम का अंतर होता है, वहा ६-७ पर विराम होता है यहाँ ८-८ पर )।

**उद्धोर ( वज्जल )—( ५।५६ )**

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ होती हैं। अंत में गुरु लघु ( ऽ। ) होते हैं।

**दंडक—( ५।७७ )**

देखिए ऊपर 'दडका'

**मुकुंद डामर ( दुर्मिल )—( ६।२८ )**

वर्णवृत्त सवैया, जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण ( ।।ऽ ) होते हैं।

**गुणावेलि –( ७।६ )**

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ होती हैं और अंत मे दो गुरु ( ऽऽ ) या सगण ( ।।ऽ ) होता है।

**त्रोटक—( ७।२४ )**

वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में चार सगण ( ।।ऽ ) रहते हैं।

---

* राजविलास में प्रयुक्त रूप के आधार पर।

**रसावल—( ७।४६ )**

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १० मात्राएँ होती हैं। अंत में लघु-गुरु ( ।ऽ ) होते हैं।

**चंद्रायन ( चांद्रायण )—( ७।७२ )**

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ११ और १० के विराम से २१ मात्राएँ होती हैं। पहले विराम पर जगण ( ।ऽ। ) तथा दूसरे पर रगण ( ऽ।ऽ ) होता है।

**हंसचार ( दंडकला )—( ८।१५० )**

यह दंडक मात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं अंत में सगण ( ॥ऽ ) रखते हैं। दंडकला में १०, ८, १४ पर विश्राम होता है। इसमें विश्राम नियत नहीं होता।

**त्रिभंगी—( ११।६ )**

मात्रिक दंडक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं और १०, ८, ८, ६ मात्राओं पर विश्राम होता है।

**विज्जुमाला—( १४।१२ )**

देखिए ऊपर 'विद्युन्माला'

**कलस कवित्त ( छप्पय )—( १८।१०३ )**

देखिए ऊपर 'कवित्त'

———

## ४—पाठांतर-संकलन

*संकेत*

उदय — उदयपुर (राजस्थान) के सरस्वतीभंडार में सुरक्षित [ संवत् १७४६ के हस्तलेख की प्रतिलिपि। हस्तलेख का आकार लगभग १०″ × ६″। पत्रसंख्या १६८। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २४-२५ अक्षर हैं। अक्षर बड़े बड़े लगभग आध इंच आकार के सुंदर रूप में हैं। संपूर्ण एवम् सुलिखित। ]

सभा — काशी नागरीप्रचारिणी सभा में सुरक्षित हस्तलेख। [ पुस्तकाकार। संपूर्ण एवम् सुलिखित। कागज—देशी बाँस का। पृष्ठसंख्या—६१। नाप पत्रे की—१०″ × ८″। नाप लेख्य अंश की—१०।″ × ५॥″। पंक्ति प्रतिपृष्ठ २५। अक्षर प्रतिपंक्ति २६। लिपिकाल—अज्ञात। ]

दीन — लाला भगवानदीन जी 'दीन' द्वारा संपादित तथा काशी नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा सन् १६१२ में प्रकाशित मुद्रित प्रति।

\+ — प्रति में संशोधित पाठ।

\+ \+ — प्रति में दुबारा संशोधित पाठ।

\- — प्रति में संशोधन के पूर्व का मूल पाठ।

० — प्रति में छूटा पाठ।

? — प्रति का संदेहास्पद पाठ।

## १

**सिरनामा**—॥६०॥ [ मांगलिक चिह्न कदाचित् शंखचक्र ] श्री ऋषभदेव जी सत्यमेव ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ ( उदय ) ; ॥ श्रीगणेशाय नम ॥ श्रीऋषभदेव जी सत्यमेव श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ ( सभा )।

[३] लच्छी, लछी ( सभा )। [५] करन, करत ( सभा, दीन )। [६] पोषनि, पोषन ( सभा )। इच्छित, इछित ( सभा )। [६] रीझी; राजो ( सभा )। [१०] सुररानी, सुरगनी ( सभा )। संवरत ; सरवत ( सभा )। [११] सरसुति, सुरसति ( सभा )। [१३] उज्जल, उजुल ( सभा )। [१४] मल , मन ( दीन )। [१५] जुग, जग ( सभा )। [१६] तिमिर, तिमर ( सभा, दीन )। [१६] अरुन नखर, अन नषर ( सभा — ), अरुनै नषर ( सभा++)। [२०] मुचि ; मुच ( सभा— )। तिलरी, तिलरीय ( सभा )। सुख , मुख ( सभा )। [२१] वर्णो ; वर्णे ( सभा ) सुपक्क; सुपक्क ( दीन ) [ सभा के हस्तलेख में 'क्क' के दो रूप मिलते हैं। एक में 'क' की केवल घुडी है दुपट्टा नहीं जो 'क्क' पढा जाता है। ऐसा कई स्थलों पर है ]। मनहारनी, मनुहारनी ( सभा )। [२२] सुरगी, सुरती ( सभा ?, दीन )। पुष्प , पुष्फ ( सभा )।* [२६] कुटिलिति, कुटिलति ( सभा )। भमहि, ? ( उदय ), भमुह ( सभा )। स्वैर; स्त्रैर ( उदय, सभा, दीन )। [२८] मडित, मजित ( सभा )। झलझल, झलमल ( सभा, दीन )। सुरभित , सुरनित ( सभा—, दीन )। [३२] गावत , गावत (सभा, दीन )। [३३] रचि रचि, रचिर ( सभा )। [३४] सनमुक्ख, सनमुष ( सभा )। समर्पन सुक्ख, समर्प्पन सुख ( सभा )। [३६] प्रनमि, प्रत मि ( सभा, दीन )। [३७] आलसि, आलस ( सभा )। [३८] पाख, पख ( सभा )। जौं, जा (सभा)। [३६] उल्हरिग; उल्हरिय ( दीन )। करिग, करिय ( दीन )। बित्थुरिग, बित्थुरिय (दीन)। आवरिग, आवरिय (दीन)।

---

* 'उदय', 'सभा' और 'दीन' में 'पुष्प' शब्द का रूप 'पुप्फ' तथा 'पुष्फ' अन्यत्र भी मिलता है।

बल्लभ, वलभ ( सभा )। [४५] मेघ; मध्य ( दीन )। [४६] विधूर ; विद्धूर ( सभा )। उज्जल ; उद्यल ( दीन )। [४७] नित्यामक, नित्यमिक ( उदय, सभा –, दीन )। लगत; लगत ( सभा )। [४९] डहडहत, डहरत ( सभा )। [५०] निरझरण ; निज्झरण ( उदय, सभा ), निष्झरण ( दीन )।

[५१] पत्र, पञ्च ( सभा, दीन )। [५२] घन; रघन ( सभा )। [५४] जगमगति, जिगमिगति ( सभा )। हत्थे सुहत्थ, हच्छे सुहच्छ ( उदय, सभा, दीन )। [५६] मज्झ, मष्त ( दीन )। [५७] यटत, घटत ( दीन )। [६५] सुरभि, मुरति (सभा) ; मुरित ( दीन )। [६६] बहुत, बहु (सभा)। [६८] जुवार, रुह्वारि ( सभा ), रुहार ( दीन )। [७१] कच्छ ; जच्छ ( दीन )। [७६] कट्ठी, काठी ( सभा, दीन )। [७८] फिरग,ø ( सभा – )। [७९] त्रिय, तिय ( दीन )। भासन; भूसन ( दीन )। [८०] गक्खर, ? ( उदय ); गखर ( सभा ), गरवर ( दीन )। [८१] भरि, तरि ( सभा, दीन )। मेस, तेश ( सभा, दीन )। [९४] बारि; बावि ( सभा )। [९५] को इन, कोइ ने ( दीन )। [९८] मोरचा, मोरछा ( सभा, दीन )। जबूरय, गबूरय ( दीन )।

[१०१] किहिं; कहि ( दीन ) [१०२] बापि ; बावि ( सभा ) [अन्यत्र भी यह वर्तनी है]। [११२] टिल्ला, ठिल्ला (दीन)। [११४] भृत्य, नृत्य (सभा, दीन ), ? ( उदय )। [११६] भोरी, भारी ( दीन )। [११९] तूठौ ; ऊढौ (दीन), ऊठौ ( सभा ? )। [१२०] किंत्ति, किनि ( दीन )। [१२१] रिधू, रधू ( सभा ), रघू ( दीन )। लक्ख; लरक्क ( सभा ) ; लष्य ( दीन )। सहस सुरथ ; सहसु रत्थ ( दीन )। गिण ; रण ( दीन )। जुग्गवै, जग्गवै ( सभा ), जगवै ( दीन )। [१२२] खेरारह, वैरागह ( दीन )। दाखिए देखिए ( दीन )। दल, दल दल ( सभा )। [१२४] वल्हिका, बल्लिका ( सभा, दीन )। उर, डर ( दीन )। [१२५] सेवत, देवंत ( सभा+, दीन ), क्षितिज, क्षितिय ( दीन )। हत्थि ; हच्छि ( सभा, दीन )। भेषज, ते षज ( सभा, दीन )। अगज कजह; अग जकद्रह ( दीन )। सुरजह, सुरद्रह ( दीन )। उज्जल; उद्यल ( दीन )। [१२६] निज कृतब सत्थ, निज कृत बसत्थ ( दीन )। [१२८] दिद्दियै, दिज्जिये (सभा), दिद्दिये (दीन)। [१३०] बरि आये, बरि ये ( सभा – )। [१३१] घरयौ, ख्यौ ( दीन )। [१३६] भीम; भौम ( दीन )। रज, रद्र ( दीन )। अत्थि, अच्छि ( उदय,

सभा, दीन)। [१३७] सत्त संग्रह्यौ, सत्त सगह्यो (सभा), सग संगह्यौ (दीन)। फारि काढ्यौ गरभ, फारिग कढ्यौ गरत (सभा), फारि काढ्यौ गरत (दीन)। घनि; घन (सभा, दीन)। [१३८] सत्थँ, सच्छँ (उदय, सभा, दीन)। आवासय, आयासय (उदय, सभा)। बरसावय, बरवासय (सभा, दीन)। [१३९] जे; जो (दीन)। अजुवालिय, अज्जुवालिय (सभा), अजुवालयं (दीन)। परम···पालय, ० (दीन)। तिम; तिण (सभा)। [१४०] कोटि ते···कारावियै; ० (दीन)। नायन्न, नायन्त (सभा)। धवरावियै, धवरावियं (दीन)। इत्थ, इच्छ (उदय, सभा, दीन)। [१४१] पोसिज्जए, पोसिय्यए (दीन)। चिज्जए, चिय्यए (दीन)। मज्जण; मय्यण (दीन)। सालकिय; सोलकिय (दीन)। [१४३] दिद्धए, दिज्जए (सभा); दिय्यए (दीन)। [१४४] साहस; साहसै (दीन)। सत्थ, सच्छ (उदय, सभा, दीन)। [१४६] अद्य, अज्ज (सभा); अघ (दीन)। [१५०] तत्थ, तच्छ (उदय, सभा, दान)। तिहाँ, तहाँ (सभा, दीन)।

[१५२] रज; रद्य (दीन)। उत्सक पणैं, उक्तक पणै (सभा—), उक्तक पणो (दीन)। आपणैं, आपणाँ (दीन)। [१५३] बट्टड़ी; बट्टडी (दान)। [१५४] रज्ज, रद्य (दीन)। मुनि; ० (उदय, सभा)। [१५६] एम, राम (दीन)। [१५७] तित्थ, तिच्छ (उदय, सभा, दीन)। [१५८] भणी, तणी (सभा, दीन)। [१५९] रिज्झए; रिय्झए (दीन)। [१६१] उतरि सिहरि; उतरिसु हरि (दान)। [१६४] नेहा; नेह (सभा)। मन, मनु (उदय?, दीन)। अठ, अत (दीन)। [१६५] अट्ठ; अठ (सभा), अच्च (दीन)। मिट्ठ; मिठ (सभा); मित्त (दीन)। [१६६] बादित्त, चित्त; बादित्र, चित्र (सभा); बादित्त, चित्र (दीन)। [१६७] सुन, मुनि (सभा)। तत्थ, तच्छ (उदय, सभा, दीन)। सपत्त; सपत्ति (दीन)। [१६९] पलान, पालन (दीन)। [१७३] हलते हठाला; हलतेह ठाला (दीन)। [१८०] पुत्तं, पुत्रं (सभा, दीन)। [१८१] तत्थ; तच्छ (उदय, सभा, दीन)। [१८२] देत्रि भाषा, देव भाषा (दीन)। [१८५] पुत्ति, पुत्रि (उदय, सभा, दीन)। [१८६] पुत्ति; पुत्रि (सभा, दीन)। [१८९] पाघ; पाद्य (दीन)। [१९४] सुचढि; चुढि (उदय)। [१९९] जुझार, जुघार (सभा)।

[२०२] भौंन, तोंन (सभा, दीन)। भग्ग; भग्गग (सभा) गद्यत, गजत (सभा)। [२०५] सुकजह, सुकद्यह (दीन)। कह्यौ, कद्यो (सभा)।

कोप, कैरप ( सभा ), कैख्व ( दीन ) । सजह ; सय्यह ( दीन ) । तय्यौ; तय्यौ ( दीन ) । [२०६] बच सुनत ; वचनि सुनि ( सभा ) । सथ पखर, पखर ( उदय, सभा ), परवर ( दीन ) । चळ्यौ, चय्यो ( सभा ) । [२०७] सूर नरन, सूरन रन ( दीन ) । [२०८] रिन ; रन ( दीन ) । [२०९] खुरै, कुरे (सभा, दीन) । जोरिय , झोरिय ( उदय, सभा, दीन ) । [२१०] पलाइय, पुलाइय ( सभा ) । [२११] खननन, वननन ( दीन ) । [२१२] सुपिसुन , सुपिन ( सभा ) , सुपन्न ( दीन ) । [२१३] घुमत , घमतु ( सभा, दीन) । घण , घणण ( सभा ) । गटगट , घट घट ( सभा, दीन ) । [२१५] नृतन , नृत्त (दीन) । सिंधु , सिंध (सभा, दीन) । रुहिर , रुधिर (दीन) । [२१६] सुरीय , सुरिय (सभा) , सुरन ( दीन ) । [२२५] अलुझत, अलुझत ( सभा, दीन ) । [२२७] मोरी , मोरिय ( उदय, सभा, दीन ) । [२२६] हुँत , हुत ( सभा, दीन ) । [२३३] रज , रय्य ( दीन ) । [२३४] मडप ; मडिय ( सभा ) । [२३५] जय तिकौ; जयति को ( दीन ) । [२३६] भारे , भोर ( दीन ) । [२३७] रज , रय्य (दीन) । तुम्ह , तुम्ह ( सभा? ) । [२४०] सिंधुर , सिंवर ( सभा, दीन ) । पायक्क सत्त , पायक सुसत्त ( उदय, सभा, दीन ) । भप्प , भक्त ( उदय, सभा, दीन ) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविविरचिते राजविलासशास्त्रे राउल श्री बापाराजोकस्योत्पतिः रावलपदस्थापना चित्रकोट राजस्थानकरण नाम प्रथम विलास सपूर्णम् ॥ ( सभा, दीन ) ।

## २

**सिरनामा**—अथ श्री बापा राउल तो पट्टावली लिख्यते ( सभा, दीन ) । [१] खमणौर निपाइय ; षमणोरनि पाइय ( दीन ) । [ ५ ] लील रढालह , लीलर ढालह (दीन) । [ ७ ] धारन , धारम ( दीन ) । [ ८ ] गिरुआ जस; गिरु आजस ( दीन ) । [१४] घण , षण ( सभा, दीन ) । [१८] सारी , सारीय ( सभा ) । डुल्लय , दुल्लय ( सभा, दीन ) । [१९] रिण, रण ( दीन ) । सेननि खगिय; सेन निषगिय ( दीन ) । [२१] सुरज्जय ; सुरय्यह ( दीन ) । [२२] सुसीलह, सुसीलप ( दीन ) । [२३] जुगति,

ज्जगति ( सभा ) ; जगति ( दीन ) । दुहुँ बेर···पूजै नृपति; ⊖ ( सभा — ) । [२५] रिन ; रन ( दीन ) । [२७] पीथल, पीथड ( सभा, दीन ) । [२६] जुत ; जत ( सभा, दीन ) । [३०] अनड़; अनम ( दीन ) । रिधू ; रघु ( सभा, दीन ) । [३१] कटक , कट (सभा) , कट्ट ( दीन ) । लछि, लच्छि ( उदय, सभा, दीन ) । [३३] महन, महत ( दीन ) । [३७] मनते, तन ते ( सभा, दीन ) । [३८] रक्खन, रखन ( सभा ), राखन ( दीन ) । [४०] अनमह, रन मह ( दीन ) । [४१] जन, जिन ( दीन ) । [४२] रिण , रिख ( सभा, दीन ) । भीम, भीत ( दीन ) । [४५] भल, तल ( सभा, दीन ) । [४६] रुडत; रुरत ( उदय, सभा, दीन ) । [४८] लुलि, तुलि ( सभा, दीन ) । भुवि, चुवि ( सभा, दीन ) । [४६] लाख, लख ( सभा, दीन ) ।

[५६] बर, पर ( दीन ) । [५८] जस , ⊖ ( सभा — ) । [६८] सुरेस, सुमेर ( सभा, दीन ) [७३] सेठ, सव ( दान ) । [७४] नर, रन (सभा — ) । राजसभा वर्णनम्, इति राजसभा वर्णनम् ( सभा, दीन ) । [७८] सीह क्रोड़, इसी क्रौड ( दान ) । [७६] पारावत, पारापत ( सभा ) । [८१] सुख, मुख ( सभा ) । [६३] लाख, लख ( सभा, दीन ) । [१०२] योति, योठि ( सभा ) । [१०४] कहूँक महेस, कहूँ करमेश ( उदय, सभा, दीन ) । पेखत, पिखत ( उदय, सभा, दीन ) । [१०७] लालक पच्च , नीलक पाच ( सभा ) , नीलक पच्च ( दीन ) । [१०८] रूप , रूठ ( सभा, दीन ) । [१११] मसज्जर, मसद्यर , ( दीन ) । सुभे सिकलात दुमास, सुभेसी कला तदु मास ( दीन ) । [११२] पाट, पाठ ( दीन ) । [११३] श्री साप , श्री साय ( दीन ) । [११४] चौरस, चौरिसे ( उदय, सभा, दीन ) आध , आद्य ( दीन ) । [११६] गधक स, गध कस ( दीन ) । [११८] सुगठित, सुगठिन ( उदय, सभा, दीन ) । [१२३] कढाह, कटाह ( उदय, सभा, दान ) । [१२५] चपेल, पचेल ( सभा, दान ) । कुदरू जाइ , कुदरि जाइ ( उदय, सभा, दीन ) । [१२६] जनादि , जनादि ( दीन ) । [१२६] सहतूतरु , सहनूतरु ( सभा ) । [१३३] कोतवाल, कोटवाल ( सभा, दीन) । [१३४] महारान, महारानु (दीन) । [१३५] चग, रग ( सभा — , दान ) । [१३८] साला जल बाग, सा लाजल वेग ( दीन ) । [१४२] लोहन, लोनह ( सभा, दीन ) । सुभ , सु ( सभा ) ।

[१५०] ससि, असि ( सभा, दीन ) । [१५१] अरछरि, अछरि ( सभा ) । [१५४] बधाई सुदासि, सुबधाई दासि ( उदय, सभा, दीन ) ।

[१५६] रज , रय ( दीन ) । [१६०] चित्तकारक , चित्तकारक (सभा दीन)। [१६२] चित्तकार, चित्तकार ( सभा, दीन ) । [१६७] तुम, उम ( सभा, दीन ) । [१७२] पढम , पटम ( सभा, दीन ) । सु तुमहिँ , सुनु महि ( सभा, दीन ) । [१७३] सुभ , ० ( उदय, सभा, दीन ) । राज, सुराज ( उदय, सभा, दीन ) । रिधू, रधू ( सभा ), रघू ( दीन ) । [१७६] बाढत, बाधत ( सभा ) । मज्झ, मझ ( दीन ) । [१७८] राखत , रखत ( उदय, सभा, दीन ) । [१८२] नरिदहिँ हेाड, नरिंद हिंडाड ( उदय ?, दीन ) । [१८४] रिधू, रधू ( सभा, दान ) । [१८६] बुले , बाले ( उदय, सभा, दीन ) । [१८६] सधान, सचान ( सभा, दीन ) । [१६०] राजकुमार, राजकुआर ( सभा ) । [१६१] जारकर , अरकस ( दीन ) ।

**पुष्पिका**—इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे द्वितीयो विलास ॥ २ ॥ ( सभा, दीन ) ।

## ३

[ ६ ] मिल्ल, मिल्ल (सभा?) । [१०] केवि काल , के विकाल (दीन) । [१५] सान , सान ( दीन ) । दत्त , दात्त ( दान ) । मज्झ , मन्न (दीन) । [१६] नहीँ , चही ( दीन ) । [२०] पवगा रुह , एव गारुह ( सभा, दान ) । [२१] मध्य , मज्ज ( सभा ) । सारग , सारगि ( सभा ) । [२२] कज , कय ( दीन ) । [२४] सिहर , सिरह ( उदय, सभा, दीन ) । किजैब यहै , किजै बय है ( दीन ) । आखैं , अखै ( उदय, सभा, दीन ) । [३५] जा पयान , जाप यान ( दीन ) । [३७] रलहलत , रलतलत ( सभा ) , रलरलत (दीन) । चक्र, चक्क (सभा) । मार, नीर (दान) । [३८] धसक्कि , व्रसक्कि ( सभा ) । सरित , सलित ( सभा ) । सोर जोर, जोर सोर (दीन) । [३६] सजनित , सजनिज ( सभा, दीन ) । परिजन तजन , परि जनत जन ( दीन ) । [४१] अखत , आषत ( दीन ) । [४३] देह , रेह ( सभा ) । [४८] हत्थ, हच्छ ( उदय, सभा, दीन ) । समत्थ, समच्छ ( उदय, सभा, दीन ) । [५०] बरन , ० ( सभा— ) । अनत , अतत ( दान ) ।

[५५] पत्तौ, पत्ता (उदय, सभा, दीन) । [५६] रिधू, रघू (सभा, दीन) । [५८] जयतु राण , जयनु रॉण ( सभा, दीन ) । [६१] सत्थ , सच्छ (उदय, सभा, दीन) । हत्थ , हच्छ (उदय, सभा, दीन) । [६४] सत्थ, सच्छ ( उदय,

सभा, दीन )। बित्तह , बित्रह ( सभा, दीन )। पवित्तह , पवित्रह ( सभा, दीन )। प्रतपै राना, प्रत पौराना ( सभा, दीन )। [६५] प्रतपौ राना , प्रत पौराना ( सभा, दीन )। [६६] सत्थ, सच्छ ( उदय, सभा, दीन )। [६६] सुच्छ , सूच्छ ( उदय, सभा, दीन )। केवि काल, के बिकाल ( दीन )। [७०] सु दढ्ढ, सु दट्ट ( उदय, सभा, दीन )। [७१] कबिल्ल•••सुलच्छि कै, ⊖ ( सभा— )। [७२] नृतत्त, नृतत्व ( दीन )। [७३] घुरी , पुरी ( सभा, दीन )। सैल, षेल ( सभा +, दीन )। [७५] मुछ , पुछ ( सभा, दीन )। मसद , समद ( सभा, दीन )। [७६] हत्थ, हच्छ ( उदय, सभा, दीन )। पामरी; यामरी ( दीन )। [७८] घोष , ⊖ ( सभा— )। [८०] अख्खनै, अखनै (उदय, सभा) , आखनै ( दीन )। [८३] बुज्झिये, बुझीये (दीन)। [८४] बर सनमुख , बरसन सुख ( सभा, दीन )। रट्ठवर , रठवर ( सभा ), राठवर ( दीन )। कज्जै , कद्ये ( दीन )। [८६] अप्प , अप्य ( दीन )। [६३] कढि , कट्टि ( सभा, दीन )। [६४] ए क्रूर, गाठूर ( दीन )। यही, कही ( दीन )। [६७] जिन केहरि, जिनके हरि ( दीन )। [१००] रिधू, रधू ( सभा, दीन )। अप्प, अप्य ( दीन )। रढ, रट ( सभा, दीन )। मज्झ , मष्भ ( दीन )। राजेस रढालह, राजेसर ढालह ( दीन )।

[१०२] सेज , सेझ ( सभा, दीन )। सुलक्खन , सुखन ( सभा )। [१०३] सुप्रेम, सुपेम ( सभा )। [१०६] अनमिख नैंन निहारि, ⊖ (सभा)। एसु , रासु ( दीन )। [१०८] सुर, सुय ( सभा )।

पुष्पिका—इति श्रीराजविलासशास्त्रे श्रीराजकुआरजीकस्य श्रीबुदी-दुर्गो प्रथम पाणिग्रहणावसरे कमधजेन शाक जय प्राप्ति नाम तृतियो विलास सपूर्णम् ॥३॥ ( सभा, दीन )।

## ४

[५] अजान , अज्ञान ( दीन )। [६] ऑवरी , आबिली ( दीन )। [८] अगर , अँगूर ( दीन )। [११] यु एक , युराक ( दीन )। [१६] मइक्क, नइक्क ( दीन )। [१८] सगग , सगग् उडे ( सभा ) , सग गरुडे ( दीन )। अखतैं , अस्व तें ( सभा, दीन )। [२२] अबीह , अभीह ( सभा, दीन )।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे सर्व्व ऋतुविलासबाग वर्णन चतुर्थ विलासः संपूर्णः ॥४॥ ( सभा, दीन )।

## ५

[३] सुचिट्ठि , सचिट्ठि ( सभा, दीन )। सुमज्जहु , सुमज्जए ( सभा, दीन )। [५] सुकोमल , सकोमल ( सभा, दीन )। [१६] रिधू , रधू ( सभा, दीन )। [२१] तित्थ , तिच्छ ( सभा, दीन )। अवलाकियत , अवलोकिया ( सभा, दीन )। दोहग दूरहिं , दोह गरुरहि ( दीन )। [२३] सु, सुयस ( उदय, सभा, दीन )। [२६] नत्थै , नच्छे ( सभा, दीन )। [२७] तित्थ , तिच्छ ( सभा, दीन )। [२८] कहियै , कहहिये ( दीन )। [३२] खल खड , त सु पल षड ( उदय, सभा, दीन )। रिन रग , रनरङ्ग (दीन)। [३३] हत्थि, हच्छि (सभा, दीन)। रत्त, रत्त (सभा, दीन)। [३४] रिधू , रधू (सभा, दीन)। [३६] अप्पई, अक्खई (दीन)। [३७] बिसाला, रसाला (सभा)। [४०] नर, दर ( दीन )। [४१] रज्जए, रय्यए ( दीन )। लजए, लय्यए ( दीन )। तजए, तय्यए, (दीन)। [४४] मुजान सर्व , मुजा सर्व्व ( सभा ) , सु जास सर्व (दीन)। सिरखवै सहासक , सिरव वैस हासक ( दीन )। [४५] बिटियौ , बिटयो ( उदय, सभा, दीन )। ईस , ईसु (सभा)। [४७] साहसीक सवर, साहसी कसबर (दीन)। [४८] खेंग सकरैं , षेगस करैं ( दीन )। [४६] छकपकति , धपक्क कति ( दीन ) , धपककति (सभा)। जास , जाल (दीन)। [५०] दिनेद , दिनिद ( दीन )।

[५१] झल्लि , झुल्लि ( दीन )। [५२] तिग्म , तिग्ग ( दीन )। [५४] मडन , मडल ( दीन )। [५६] सरूप , रूप ( उदय, सभा, दीन )। [६२] दूभ , इभ ( उदय, सभा, दीन )। गब्भ , गर्भ (उदय, सभा, दीन)। हक्क तव , हक्कत ( सभा, दीन )। [६४] मज्झ , मष्भ ( दीन )। [६५] सरिस , सरस ( दीन )। [७७] खग , बग ( दीन )। [७८] कढ्ढइँ, चढ्ढइँ ; कट्टइ, चट्टइ ( सभा, दीन )। [७६] अत्थि , अछि ( सभा, दीन )। [८४] भज्जइँ , तज्जइ ( दीन )। तेह , नेह ( सभा, दीन )। [८५] रज्ज , रय्य ( दीन )। पत्थह , पछ्छह ( सभा, दीन )। [८६] गन ; गत ( सभा, दीन )। [८६] सुदरि , सुदर ( दीन )।

**पुष्पिका**—इति श्रीमन्मानकविविरचिते राजविलासशास्त्रे राणा श्रीराजसिहजीकस्य पट्टाभिषेकविरुदावलीप्रभृतिवर्णन नाम पचमो विलास ॥५॥ ( सभा, दीन )।

## ६

[२] सेन , सेक ( दीन )। सद्धन , सज्जन ( दीन )। [३] बढ्ढी ,

बट्टी ( सभा, दीन )। [५] सौंडाल , सो झाल ( दीन )। [८] सुनैंन , सनैंन ( सभा )। [१०] केक लीले पवित्त , केकली लेप वित्त ( दीन )। [१६] छाजत सारु , बाजत सार ( सभा, दीन )। सुचारु , सचारु ( सभा, दीन )। [२०] समत्थ , समच्छ ( सभा, दीन )। [२३] कट्ठिढ , कट्टि ( सभा, दीन )। [२४] चटिग गेनु , चढि गगेनु ( दीन )। [२७] डुल्लिय , दुल्लिय ( सभा )। [२८] सु , स ( सभा )। [३०] नागर , नाग ( सभा )। नैर सहू , नैरस हू ( दीन )। सुवट्ठिढउ दगल , सुवट्टि उदगल ( उदय, सभा, दीन )। मन्नि , सुन्नि ( दीन )। [३१] मोरस , मारस ( दीन )। [३५] बिंब तिहो , बिम्बति हो ( दीन )। [३६] इभ्भ खजान , इभ पजान ( उदय, सभा ) , ईपभ जान ( दीन )। [३७] ते कर , तो कर ( सभा, दीन )। [३६] गट्ठ , गट्ट ( सभा, दीन ।

**पुष्पिका** इति [illegible] श्रीराजविलासशास्त्रे राणा श्रीराज सिंहजाकन्य दिग्जयवर्णन नाम षष्ठम विलासः सपूर्ण. ॥६॥ ( सभा, दीन )।

## ७

[५] सरूप , स गात ( दीन )। [६] श्री राजकुँआरी , सु राजकुआरि ( सभा ) , सुभ राजकुआरी ( दीन )। [७] सुचि , सचि ( सभा, दीन )। [६] तपनिय , पतनीय ( सभा ) , पतनिय ( दीन )। [१२] पोति निबोरी , पोतिन बोरी ( उदय, दीन )। सु चहियें , सुनि चहियें (उदय) , सुभ चहियै ( दीन )। [१८] मज्झै , मध्भे ( दीन )। बुज्झै , बुध्भ ( दीन )। [२८] हौं नव , होन न (दीन)। [३१] सुदरि, सुदर (दीन)। अबरूँ यु , अबनूय (सभा) , अबरूय (दीन)। राखहु , रखहु (उदय, सभा, दीन)। [३४] तूँज सही , तू जसही (दीन)। [३५] हठकारक रावन , हठकार करावन (दीन)। [३७] धरी , घरी (दीन)। [४२] व सुनिरु , च सुनिरु (सभा) , वसु निरु ( दोन )। गजत , गजन ( सभा, दीन )। बजत , बजन ( सभा, दीन )।

[५१] कटि , करि ( दीन )। [५२] रात , एत ( दीन )। [५५] दिनयर , दिनकर ( दीन )। [५८] हवर, गैवर , हेवर, गैंवर ( सभा, दीन )। [६८] गृहन , ग्रहन ( उदय, सभा, दीन )। जोति हलाल , जोतिह लाल ( दीन )। [७२] आइ , आइय ( उदय, सभा दीन )। साखि , साखिय ( उदय, सभा, दीन )। [७४] गृहन , ग्रहन ( दीन )। दुहुँ , हुन ( सभा, दीन )। [७६] चौरी , चोकी ( सभा, दीन )। [८१] ढिट्ठ , दिठ ( उदय, सभा ) , दिट्ठ ( दीन )। [८६] ताम , साम ( सभा ) , सास ( दीन )। [८८] घमक्क ; घनक ( सभा, दीन )। [६३] खिजमति ;

खजमति ( उदय, सभा, दीन )। [६५] वारैं, चारे ( सभा, दीन )। [६६] पहिराय, महिराय ( सभा, दीन )। [६७] रक, रग ( सभा ); रङ्क ( दीन )। [१००] कनि मवि, कन्तिमणि ( दीन )। [१०२] उमग; उतग ( सभा, दीन )।

**पुष्पिका**—इति श्रीमन्मॉनकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे महारॉणा श्रीराजसिंहजीकस्य रूपनगरेपाणिग्रहणवर्णन नाम सप्तम विलासः ॥७॥ ( सभा, दीन )।

## ८

[५] नृपु, नृप ( सभा )। [६] ऐराक, अैराक ( सभा ), एराक ( दीन )। [८] धर, घर ( दीन )। [१०] घुँघरू निनाद; घुँघरूनि नाद ( दीन )। [१२] चरखी अग्गर, चरपीरु अगर ( उदय, सभा, दीन )। पय भरत इक्क, पय इक्क भरत ( सभा, दीन )। [१३] अरबी, अर्व्वा ( उदय, सभा, दीन )। [१५] हीर हरि, हरि हीर ( सभा, दीन )। [१८] पख्खरिय, पख्खर, पखरिय, पखर (उदय, सभा), परवरिय, परवर (दीन)। [१६] कवच्च, कपच्च ( सभा )। [२१] घुघरनि, घुघरिन ( दीन )। [२२] पध, वन्ध ( दीन )। [३०] जग्गीय, जगि ( सभा )। [३५] भू मियानि, भू प्रियानि ( सभा, दीन )। सुह मेल, सु हमेल ( दीन )। तक्कति, नक्कति ( सभा, दीन )। निसुनि, निसनि ( सभा, दीन )। [३६] कठीरव जग्गत, कठीर बज्ज गत ( उदय, सभा, दीन )। चोंर, चोर ( सभा, दीन )। [४१] खभ, षत ( सभा, दीन )। [४४] कस्तूरी रू, कस्तूरी ( उदय, सभा, दीन )। भरि; भृत ( सभा, दीन )। [४७] गृह, ग्रह ( सभा, दीन )। ब चद्रोपक, चद्रोपक ( उदय, सभा ), चन्द्रोपम ( दीन )।

[५६] नत्थन, नळुन ( सभा )। [५७] ग्रहन, गृहन ( सभा, दीन )। [५६] रुखमनि रामा, रुप मनिरामा ( दीन )। [६०] फरी, परी (दीन)। मह, मन ( दीन )। [६१] प्रनुमि, प्रनमि ( सभा )। अर्चत, अर्चन ( सभा, दीन )। [७१] बुद्धि रहे, सुद्धि रहे ( सभा ), सुद्धि रेह (दीन)। [७३] सुरभित तुसित, सुरभि तनु शित ( उदय, सभा, दीन )। [७६] रूव, परू ( दीन )। [८४] थाल, नाल ( सभा, दीन )। [८५] हत्थ, हच्छ ( सभा, दीन )। [६५] सँमेली, संमेली ( दीन )। [१०४] पिक्खत, पिरकत ( सभा, दीन )। [१११] किनहीं, किनहि ( सभा ); कित्तहि ( दीन )। [१२६] लिल्हरित, हिल्हरित ( सभा, दीन )। [१२६] केई सु, केईस ( सभा, दीन )। [१३१] करत, प्रजत ( सभा, दीन )। [१३२]

उद्वंस , उडंस ( सभा ) , उज्झंस ( दीन ) । [१३७] इहिँ , उहि ( दीन) । [१४०] अष्टमी , अष्टमिय ( दीन ) । [१४१] रूप , रूव ( सभा, दीन ) । उंडति , उंझति ( दीन ) । [१४३] चरस , बरस ( दीन ) । [१४४] ग्रावा, ग्रापा ( दीन ) । मडि , मझि ( दीन ) । [१४५] भारनि , भारति ( सभा, दीन ) । सु नीयै , नीये ( उदय, सभा, दीन ) । [१४६] मजूर तिय , मजर निय ( सभा ) । [१४८] गाहत कै , गाहत के ( सभा ) , गाहत केइ ( दीन ) । [१४९] सलित , सलिल ( सभा ) ।

[१५१] वृद्धि पालि , वृद्धि पाल ( उदय, सभा, दीन ) । बलवती दुर्ग रूप , बलवति दुर्गा रूप ( सभा, दीन ) । [१५२] जानिकि सिखरी , जानि कशी परी ( उदय, सभा, दीन ) । कोरन निकरी , कोर निकरी ( उदय ) , कोर नीकरी ( सभा ) , कोल नीकरी ( दीन ) । तिहुँ नव चौकिय , तिहुन बचो किय ( दीन ) । [१५४] दल , जल ( सभा ) । [१५७] सर , सुर ( सभा, दीन ) । [१५८] हजारह करी , हजार करि ( उदय, सभा, दीन ) । लौं , याँ ( दीन ) । [१५९] जननी , जनी ( सभा ) । [१६०] सारंग , सारस ( दीन ) । [१६१] व अर्बुद , अर्बुद ( उदय, सभा, दीन ) । [१६२] जन , जम ( सभा ) [१६३] नैननि , नैन ( उदय, सभा, दीन ) । [१६५] मौलसिरी , बोलसिरी ( सभा, दीन ) । [१६९] बासर , वास ( सभा ) । कहि , ⊖ (उदय, सभा, दीन ) । [१७०] समरागन , समरगन ( उदय, सभा, दीन ) । तुव , तुम ( सभा ) । [१७१] दिवायर , बायर ( सभा, दीन ) । [१७२] देपिय , देपि ( सभा ) ।

**पुष्पिका** – इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे श्रीराजसमुद्र-वर्णन नाम अष्टम विलास : ॥८॥ ( सभा, दीन ) ।

## ९

[४] ए कलह , एक लह ( दीन ) । [९] बधव , बधन ( दीन ) । [१०] रज्जहिँ , रय्यहि ( दीन ) । रज्ज , रय्य ( दीन ) । [१२] लुत्थि पर लुत्थि , बुथि पर बुत्थि ( सभा ) , बुत्थि पर बुत्थि ( दीन ) । [१५] सहोदर , महोदर ( सभा ) । [१६] सुहाइ , मुहाइ ( सभा, दीन ) । [१७] पख्खर , पखर ( सभा ) , परवर ( दीन ) । [१९] जसु , जमु ( सभा, दीन ) । मख्ख , भख ( सभा ) , भरव ( दीन ) । [२२] मज्झ, झुज्झ , मष्प, झुष्भ ( दीन ) । [२४] बित्थर , विव्वर ( सभा, दीन ) । [२५] सेवत , सेव ( सभा ) । [२६] पूत , पत ( सभा ) । [२७] उधत्त ; उद्धत ( सभा ) , उधुत्त ( दीन ) । [२८] पीर , पीरि ( दीन ) । [३६]

अखै , अखे ( सभा ) , अरवे (दीन) । रज्ज , रय (दीन) । हम तौ, हम मो ( दीन ) । विचि , विधि ( सभा, दीन ) । [३६] चढि तीर न , चढती रन ( दीन ) । [४१] बिनान , बिनाम ( सभा, दीन ) । [४२] तुरगम , तुरग मा ( सभा ) । [४४] मन्नि , मति ( सभा, दीन ) । [४५] पहुँतौ , पतो ( सभा ) , पहुँचो ( दीन ) । वृहास , नृहास ( सभा, दीन ) । [४७] कज्ज , कय ( दीन ) । [४८] पहुच्यौ , पहुचयो ( दीन ) । यु साहि, साहि ( उदय, सभा, दीन ) । [५०] सिरपाव , सरपाव ( उदय, सभा, दीन ) ।

[५१] सादूल , सातूल ( सभा, दीन ) । [५३] बाढ्यौ, बढयो (सभा) । राखै, रखे (सभा) । [५८] जुरि , जरि (सभा) । [६१] बित्त बित्त , चित्त बित्त (सभा, दीन) । बढय अधिक , अधिक बढे (सभा) लोभ लोभ तें बढय , लोभ बढैं लोभ ते ( सभा ) । [६२] पल्ल रेहा सु , पल्लरै हासु ( उदय, सभा, दीन ) । पुनि, मनि, पुन, मन ( उदय, सभा, दीन ) । कुतबाहिक रक्खहिं , कुत वाहि करक्खहि ( दीन ) । दुट्ठ , दुठ ( सभा ) , हुट्ठ ( दीन ) । [६४] ससकन , ससपति ( सभा— ) , ससकत ( सभा+, दीन ) । [६५] मिट्यौ , मिट्यो ( सभा ) , मिलो ( दीन ) । [६६] किरनह समान , किरन हस मान ( दीन ) । [६७] लग्ग , लगा ( दीन ) । [६८] अड्डौ , अज्झौ ( दीन ) । जड्डौ , जज्झौ ( दीन ) । [७०] स्वान , स्नान ( सभा ) , थान ( दीन ) । [७३] जाय , जायन ( सभा ) । [७४] सु अत , यु अत ( सभा, दीन ) । [७५] जल, इल ( सभा ) । [७७] इती , इनी ( सभा, दीन ) । [८०] रक्खन , रक्षन ( उदय, सभा, दीन ) । [८१] ए , एह ( सभा ) । [८५] बिढिग , बिदिग ( दीन ) बढ्ढौ , बड्ढा ( सभा, दीन ) । कढ्ढौ , कड्ढो ( सभा, दीन ) । सु खजाना , सुख जन ( दीन ) । [८६] बित्थुरिय , बिछुरिय ( सभा ) , उच्छुरिय ( दीन ) । [८७] घनु , धनु ( सभा, दीन ) । सुज्झिय , सुज्झियर ( सभा, दीन ) । [८८] पख्खर , पुरवर ( दीन ) । कच्छि , कत्थि ( सभा, दीन ) । [८६] कुत , कत ( सभा ) । [६१] पहु , यहु ( दीन ) । [६२] बहु करिग खरिग , करिग षरिग ( सभा ) , करि षरिग ( उदय, दीन ) । यह , इह ( सभा ) । [६३] घन , धन ( सभा ) । [६५] घन हसम , घनह सम ( दीन ) । [६७] समूर , सूर ( दीन ) । [६८] कमधज्ज , कवज्ज ( सभा ) । [१००] सड , सढ ( उदय, सभा, दीन ) । पिखिय , पेखिय ( दीन ) ।

[१०१] सेन , सेन पर ( सभा ) , सेन परि ( उदय, दीन ) । खग्गें , षगौ ( दीन ) । [१०२] भिलै जानि गो मडल सीह भूखे , ⊖ ( सभा÷ ) ।

[१०३] बीरा रसं लग्गि , बीरार संलग्गि ( दीन )। [१०५] धरैं परे ( सभा )। [१०६] जाडै , जुडे ( उदय, दीन ) , जड्डे ( सभा )। [११२] झुझए , झुझरा ( दीन )। [११३] मन्नि भीतं , सन्निभीत ( सभा, दीन )। बडी , बढी ( सभा, दीन )। [११७] सै अट्ठ , से अठ ( सभा ) , सैयद् (दीन)। [१२०] तजें न , न तजें ( उदय, सभा, दीन )। [१२३] ए क्रूर , रसा सग (दीन)। रन , रिन (सभा)। [१२६] सवान , सव्वान ( सभा ) , सवान ( दीन )। [१२८] गरुव , गरु गरु ( दीन )। [१३३] कज्जु किन , कद ( दीन )। [१३४] रस , रह ( दीन )। कौन , क्यो न ( दीन )। [१३५] सब्ब , सच्च ( उदय, सभा, दीन )। [१३६] गहत , महत ( सभा+, दीन )। [१३७] कौ इकलासह , कोइ कलासह ( दीन )। [१४२] कटक्कत , कक्त ( सभा ) , खडक्कत , ( दीन )। [१४५] गक्खर । गखर ( सभा ) , गरबर ( दीन )। [१४६] भम्भर , तत्तर ( सभा, दीन ) , [१४८] जग , झग ( दीन )। [१४६] गढ्ढ , दग ( सभा ) ; दुर्ग ( दीन )।

[१५१] धरप्पर , घरप्पर ( सभा, दीन )। ढिग , दिग ( दीन )। [१५३] सुहट्ट , मुहट्ट ( सभा, दीन )। नवन , नच्चन ( सभा, दीन )। [१५५] लुत्थित , लुछित ( सभा ) , लुच्छित ( दीन )। बिमच्छ , विभत्स ( सभा, दीन )। [१५६] सून , मून ( सभा, दीन )। [१५७] ससक्कहि , मसक्कहि ( सभा, दीन )। [१६२] पारि ढारि , पारीधारि ( दीन )। परजारि , प्रजारि ( सभा, दीन )। [१६५] सुथान , सथान ( सभा, दीन )। [१६७] कुलक्खन , मुलक्खन ( दीन )। [१७१] दुर्गादास सोनिद , दुर्गादास सोनिग देव ( उदय, सभा ) , दुर्गदास निंगदेव ( दीन )। [१७३] कालकिन, कालकित ( सभा, दीन )। वदत , वहत ( सभा )। [१७४] अचल , अबल ( सभा, दीन )। [१८०] परथो , फिरथो ( सभा, दीन )। आवहिं , आव ( सभा— )। हम अब , अब हम ( सभा— )। सभा की प्रति में १८१ छद के अतिम अश 'आलम तौ बस आनियहिं' से १८२ छद के 'राजेस राण जगतेस सुअ' तक का पाठ मूल में छूटा है। अन्य लेखनी से पार्श्व पर अकित है। [१८२] परजारि , प्रजारि ( सभा )। चूकचूरिय , चकन्नरिय ( सभा )। खून , पूत ( सभा, दीन )। पहु पसाय , पहुप साय ( दीन )। [१८५] रायमल , परय मल ( दीन )। [१६५] सुलाखन , सु लषन ( सभा )। सग हौ , सहरो ( दीन )। [१६६] सत्थर , सथर ( सभा ) , सप्यर ( दीन )। [१६७] हों , ० ( सभा )। [१६८] सत्थ

कतेब , सत्थक ते ब ( दीन )। छार , ठार ( सभा, दीन )। [२०५] कज्ज , कय्य ( दीन )। [२०६] कज्ज , कय्य ( दीन )।

**पुष्पिका**—इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे महाराणा श्रीराजसिंहजी का शरणागतविजयपजरविरुदवर्णन नाम अनेक सुमति प्रकाशः नवमो विलासः ॥९॥ ( सभा, दीन )।

## १०

[१] बिटुलिय , विठुलिय ( सभा, दीन )। राजि , राज ( उदय, सभा, दीन )। [२] मींडि , मिंझि ( दीन )। [६] कज , कय्य ( दीन )। आयौ , आपो ( दीन )। [९] कहा , कह ( दीन ) अज , अय्य ( दीन )। [१०] सय्यन , सज्जन ( सभा )। [११] कर फुरमान , करहु रमान ( दीन )। [१४] कय्यहिं, सय्यहिं, कज्जहि, सज्जहिं ( सभा )। देय , देइ ( सभा )। [१५] किम , कि ( सभा ) , किन ( दीन )। [१६] कढ्ढि बक , कट्टि बध ( सभा ) , कट्टि बधि ( दीन )। [१८] आयौ , आपौ ( दीन )। इह , बहु ( सभा, दीन )। [२०] यहाँ , इहा ( सभा ) सेन घन , सेन धन ( दीन )। तिहुँ तिहुँ , तिहु तिबेर ( उदय, सभा ) , तिहुँ तिबेर ( दीन )। कढ्ढौ , कट्टौ ( सभा, दीन )। [२५] बिपल , वपल ( सभा )। [२६] सेनु , सेन ( सभा, दीन )। [३०] अगगग्ग , अग गग्ग ( दीन )। [३१] जानि , जोति ( सभा, दीन )। [३२] उखिल्लें , उपल्ले ( दीन )। [३३] ऐराक , ऐक ( दीन )। केक निल्ला , के कनिल्ला ( दीन )। [३४] जा सिंघाला , औ सिंघाला ( दीन )। [३८] केस बाल , केश वा ( सभा ) , केशवार ( उदय, दीन )। [४०] मताले , मदाले ( उदय, सभा, दीन )। [४१] गुजतें गैन गज्जें , गुज तेगें गरज्जे ( दीन )। [४२] करतें , रतें ( सभा ) , रत्ते ( दीन )। कृपानहु दो , कृपान दुदो ( उदय, सभा, दीन )। बधें , बधें ( दीन )। [४५] जोए , जोरा ( दीन )। [४६] आरोह ऐराक , आरोहए एक (दीन)। [४९] कढ्ढें , कट्टे ( उदय, सभा, दीन )। [५०] द्रह , इह ( सभा, दीन )।

[५१] मज्झ , मझ ( सभा )। [५३] उज्जज , उय्यल ( दीन )। [५४] होत , होइ ( उदय, सभा, दीन )। सिंह , मीह ( सभा, दीन )। [६४] लज्ज , लय्य ( दीन )। सकज्ज , सकय्य ( दीन )। [७०] पच्छौए , पत्थोए ( उदय, सभा, दीन )। तुरग , चतुरंग ( उदय, सभा, दीन )। [७२] बहोरि , बहोर ( उदय, सभा, दीन )। [७५] अकतूल , अकनूल

( सभा, दीन )। [७६] घत्तै , षत्ते ( सभा, दीन )। गिरुअ , गिरिय ( उदय )। [७७] अमर , अकर ( उदय, दीन )। हळ्यो , बळ्यो ( सभा, दीन )। धरए , धारण ( दीन )। [७८] रसत , रत्न ( सभा ) , रतन ( उदय, दीन )। मरि ह्वै , मरिहे ( सभा, दीन )। इत्थ , हत्थ ( उदय, दीन )। सज्यन , सज्जन ( सभा ) खलक यों , खल क्यों ( दीन )। [७९] कज्ज , कय्य ( दीन )। [८२] बधु महाराय , बधु के महा ( उदय ) , बक महाय ( सभा ) , बक ये महा ( दीन )। नर , बर ( उदय, सभा, दीन )। [८३] झाला रु , झाला सु ( सभा, दीन )। कर , बर ( सभा, दीन )। [८४] चौडाउत , चौडावत ( उदय, सभा, दीन )। चौंडाउत उच्चरि , चोंडाउत चच्चरि ( सभा )। चौडावत उच्चरि ( उदय, दीन )। [९२] दुज्जनहिं , दुय्यनहि ( दीन )। बेधत , बेधन ( उदय, सभा, दीन )। [९५] पद , ७ ( सभा )। [९६] ग्राम , ग्रास ( उदय, सभा, दीन )। [९८] पत्त नैंनवारा , पत्तनेन बारा (दीन)। [१००] दक्खनहिं , दखन सु ( सभा— ), दखन री ( सभा+ ) , दखनहि ( सभा++ )।म हाराय बंधू , महशय बधू ( दीन )। पीठि महाराय , पीठि महराय ( दीन ) दिगपाल , दिग्वाल ( दीन )।

[१०१] सी बान , सीवान ( दीन )। ह्वं , के ( दीन ) औझकत , ओझत ( सभा ) , ओझेत ( दीन )। [१०२] असहेज , अहहेज ( दीन )। सु अब , सुभव ( दीन )। [१०४] मुकाम , सुकास ( दीन )। [१०५] बिकट , निकट ( दीन )। [१०७] आवत जिन , अब्ब तज्जि न ( दीन )। पिखिब , पिखिन ( दीन ) पक्खरहु , परखरहु ( दीन )। [११०] पीनौ , पीवो (दीन)। लगि , लसि (दीन)। [१११] अग्गॅ , अग्गे ( सभा— ) , अयो ( सभा+ ) , आयो ( दीन )। रुहत्थी , सहथी ( दीन )। पट्ठवहु , पाठवहु ( दीन )। [११२] डर , उर ( दीन )। करौ , करहु ( सभा )। हरवल•••गुर , हरवल हुसेन अगोर नारि आराब गुर ( उदय, सभा, दीन ) पत्त ततखन , पत्तन तक्खन ( दीन )। [११४] गिरुअ जरित जारी , गेरि अजरि तजरी ( दीन )। हट्ट , हद्द ( दीन )। सिगी , संगी ( सभा, दीन )। यल , पल ( दीन )। [११५] सु पराव , पराव ( दीन )। [११६] सतकधह चच्चर , सनकध हचाचर ( दीन ) , सकधह चचर ( सभा— )। उॅटाल , अंटाल ( दीन )। झक न परत छिनि , जक न ( जनक— ) परत छिन ( सभा ) , जवन परत छिति ( दीन )। [११८] राव रढाल , रावर ढाल

( दीन )। [११६] पवग , तुरग ( दीन )। [१२०] मागद , मागच्च ( दीन )। रज्ज , राघ ( दीन )। [१२१] काल , झाला ( सभा )।

**पुष्पिका**—इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे महाराणा श्रीराजसिंहजी पातिसाह औरंगसाहि समरसवादवर्णन नाम दशमो विलासः ॥१०॥ [ समर , सम ( सभा )] ( सभा, दीन )।

## ११

[१] घन रलतलै , घनरल तले ( दीन )। [२] दुर्घट्ट , पुरघट्ट ( दीन )। [४] आवन दुअन , आवनहु अन ( उदय ?, दीन )। तब दुहुँ राह कैं , तबहु हुहाट के ( दीन )। [५] दुहुँ , हहु ( दीन )। [६] हिउ , हित ( दीन )। पिसुननि , पेशुननि ( सभा ) , जे सुननि ( दीन )। पर पत्ता , परत्ता ( दीन )। बसुहव दत्ता , बसुह दित्ता ( सभा ) , वसुह वदत्ता ( दीन )। करबाल रु , करबालऽरु ( दीन )। गत्ता , मत्ता ( दीन )। [७] उद्धता , उधंता ( उदय, दीन ) , उधता ( सभा )। खुत्ता , खता ( दीन )। बिलवता , विलपत्ता ( दीन )। [८] काजी , बाजी ( सभा )। ददहु , दडहु ( दीन )। [६] तोब त्रिसूल्ला , ताब त्रिमूल्ला ( सभा ) ; तोप त्रिमुल्ला ( दीन )। जाजुल्ला , जाजल्ला ( दीन )। छक्क , छक्क ( सभा, दीन )। [१०] हूरा , डूरा ( दीन )। [११] अजेज्जा , अजज्जा ( दीन )। रूप , रूव (सभा)। आचिज्जा , आबिद्या ( दीन )। सरुज्जा ; ससज्जा ( दीन )। गिद्धिनि खज्जा , गिद्धि निपज्जा ( दीन )। चुज्जा , बुद्या ( उदय, सभा, दीन )। [१२] मग , भॅग ( दीन )। खुट्टा , सुट्टा ( दीन )। उदभट्टा , उभट्टा ( सभा—, उरभट्टा ( सभा+ )। दुपट उपट्टा , डपट दपट्टा ( दीन ) , दुपट दपट्टा ( उदय ? )। झट्टा , कट्टा ( उदय, दीन )। उझट , जझट ( उदय, दीन )। रिण , रण ( दीन )। [१३] खल खडा , घग घडा ( सभा )। रिण , रण ( दीन )। [१४] सोलंकी , सोलषी ( सभा )। जुरि , जुटि ( दीन )।

**पुष्पिका**—इति श्रीमन्मानकविविरचिते राजविलासशास्त्रे देवसूरी दुर्घाटे रोमीसार्द्ध प्रथम युद्धवर्णन नामैकादशमो विलासः ॥११॥ [देवसूरी , देवसूरि ( दीन )। वर्णन , वर्णन ( दीन ) । नामैकादशमो , नाम एकादशो ( दीन ) ] ( सभा, दीन )।

## १२

[२] रावत्त , रावार ( दीन )। सपष्ष , सपख ( सभा ) , सपच्छ ( उदय, दीन )। समुष्ष , समच्छ ( उदय, दीन )। [७] कुत , कत

( सभा ) । आदेय , आदेया ( सभा, दीन ) । [८] चवत , वचन ( सभा, दीन ) । [१०] डारि , झारि ( दीन ) । [१२] धुधरिय , सुदरिय ( सभा, दीन ) । उर घा , ? ( उदय ) , उर ( सभा ) , उर उर ( दीन ) । [१३] रत्त , रन्न ( सभा— ) । [२३] रुकमागत , रुषमागत ( सभा, दीन ) ।

**पुष्पिका**—इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे उदयपुर स्थान के कुवर उदयभानकृत द्वितीय युद्धवर्णन नाम द्वादशम विलासः ॥१२॥ [वर्णन नाम द्वादशम , वर्णन नाम द्वादशो ( दीन ) ] , ( सभा, दीन ) ।

## १३

[५] निसुनि बत्त , निसु निबत्त ( दीन ) । [६] बेर , बर ( सभा, दीन ) । [७] सघुरिय , सघरिय ( सभा, दीन ) । [८] दुट्ठ हट्ठ दढ , दुठ हट दढ ( सभा ) , दुट्ठह ठट्ठ ढमुट्ठ ( दीन ) । उड्डिय , उडि डर ( सभा ) , उभिझर ( उदय ? ) , उज्झिय ( दीन ) । जूह , जह ( सभा ) , जहा ( उदय ?, दीन ) । [९] बिमच्छय , बिमत्थय ( सभा, दीन ) । [१०] बिमच्छय , बिमत्सय ( सभा ) , बिमत्थय ( दीन ) । [११] यह उभरवर , यहउ झपर ( दीन ) । पिच्छय , पित्थह ( सभा, दीन ) । बिमच्छय , विमत्सय ( सभा ) , विमत्थय ( दीन ) । [१२] कच्छ ज्यों नट , छज्यों नट ( सभा ) , छज्यो नट इव ( उदय ?, दीन ) । कच्छय , कत्थय ( सभा, दीन ) । बिमच्छय , विमत्सय ( सभा ) , बिमत्थय ( दीन ) । [१३] भुगल , चुगल ( सभा, दीन ) । पारन पच्छय , पारिन पत्थय (सभा, दीन ) । बिमच्छय , विमत्सय ( सभा ) , बिमत्थय ( दीन ) । [१५] मिच्छि , मित्थि ( सभा, दीन ) । छोह , छोर ( सभा, दीन ) । बिघट , चिघट ( सभा ) , त्रिघट ( दीन ) । [१८] धुर , धर ( उदय, सभा, दीन ) । [२२] जेट , जेठ ( सभा, दीन ) । धखि , धष ( सभा, दीन ) । [२३] देखि हिदू सेन दह दिसि , सेन दह दिशि ( सभा ) , सेन दह दिशि भर अचल सो ( दीन ) । भग्गिय , तग्गिय ( सभा, दीन ) । [२४] अठिल्लह , अठित्तह ( सभा, दीन ) । छाठल्ल , छातल्ल ( उदय, सभा, दीन ) । किल्ल , किन्न ( उदय, सभा, दीन ) । सेह ए , से हए ( दीन ) । सुरिन , मुरित ( उदय, सभा, दीन ) । [२६] सुहनि , सुअनि ( सभा, दीन ) । महारभ , महारान ( सभा, दीन ) । [२८] आसुर नरनि , आसुर नरनि , आसुरन रनि ( दीन ) । [३१] बेसु , बेस ( सभा, दीन ) । [३४] औदरत , आदरत ( सभा, दीन ) ।

**पुष्पिका**—इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे सुलतानमुख-

भंजन गोरीदलगजनवर्णन नामः त्रयोदशम विलासः ॥१३॥ [ नामः , नाम ( दीन ) । दशम , दशमो ( दीन ) ] , ( सभा दीन ) ।

## १४

[३] गढ , गट ( दीन ) । गये , गह्ये ( सभा, दीन ) । सुबसु , सुबस ( सभा, दीन ) । जीऊँ , जाऊं ( सभा, दीन ) । [७] धायो , धाए ( उदय, सभा, दीन ) । [८] अजन , अजस ( दीन ) । सग , अंग ( सभा ) । चर अग्ग पच्छ , बर अगापच्छ ( दीन ) । [९] तौंन , तोत ( सभा, दीन ) । [१०] निचच्छुर , निठवर ( सभा ) , निट्ठवर ( दीन ) । अज्ज , अव ( सभा ) , अग्व ( दीन ) । [१७] धाकि लैं , धा किल्ले ( दीन ) । [१८] उररि , उरर ( उदय, सभा, दीन ) । भग्गैं , भगो ( सभा ) , भग्गे ( दीन ) । [१९] बिछ्टैं , छिछ्टे ( सभा, दीन ) । [२२] डारैं , डारे ( सभा ) , झारे ( दीन ) । [२३] दुसार , दुमार ( सभा, दीन ) । [२४] चौसट्ठी , चोसठि ( उदय, सभा, दीन ) । [२५] धप्पैं , घप्पे ( सभा, दीन ) । [२६] झरफे , झरपे ( सभा ) , झरव्वे ( दीन ) । [२७] भग्गै , नग्गे ( सभा, दीन ) । [२८] सोही , सोई ( सभा, दीन ) । [३१] अरक उझखरि , अरकउ झपरि ( दीन ) । [३२] मडि , मझि ( दीन ) । सुहर , मुहर ( उदय, सभा, दीन ) । झबुक्कत , झवक्कत ( दीन ) । [३३] घोर , धोर ( सभा, दीन ) । [३४] उड़ि , उझि ( दीन ) । गुरु नारि , गरु भारि ( सभा, दीन ) । स्रग , शृग ( सभा, दीन ) । परिधुधरि , परिकधरि ( सभा, दीन ) । [३५] सिधुर , सिधुर ( सभा ) । [३६] सुड , सड ( उदय, सभा, दीन ) ।जट्टह , जझर ( सभा, दीन ) । पखरनि , परवरनि ( दीन ) । [३८] नेजा , नेज ( उदय, सभा, दीन ) । जित्तेव कलि , जित्ते बकलि ( दीन ) ।

**पुष्पिका**—इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे श्री सगताउत गग कुअरजी केन पातिसाहकस्य हस्तीयूथग्रहणवर्णन नाम चतुर्दशमोविलासः ॥१४॥ ( सभा, दीन ) ।

## १५

[२] सुनि , सन ( सभा, दीन ) । [३] कढ्ढन , कट्टन ( उदय, सभा, दीन ) । [४] भय , मय ( सभा, दीन ) । [७] गुरु , गुर ( दीन ) । [८] मग , पग ( दीन ) । भरि , भारि ( सभा ) । [९] द्रह , इह ( सभा, दीन ) । [१०] सून सूरति , मून मूरति ( सभा, दीन ) , सून मूरति ( उदय ) । [१६] खलक , छलक ( सभा, दीन ) । [१७] बिबिध , बिधि

( सभा ), बिबिधि ( दीन )। [१६] भरुच्छि, भरुत्थि ( उदय, सभा, दीन )। चीर, वीर ( उदय, सभा, दीन )। [२०] श्री साप, श्री साष ( उदय, सभा, दीन )। तार, भार ( उदय, सभा, दीन )। [२१] उधरै, उघरे ( सभा, दीन )। सुस्वाद, सस्वाद ( सभा, दीन )। गरन, गरज ( उदय, सभा, दीन )। [२४] पौंनि, पोनि ( सभा ), योनि ( दीन )। [२५] कट्ठै, कट्टे ( सभा, दीन )। [२७] सवाइ, सचाइ ( दीन )। रूप, रूव ( सभा, दीन )। [२८] कट्ठनह, कट्टनह ( सभा, दीन )। [३४] सुप्रचारि, सुप्रजारि ( सभा )। [३७] मरद्द, मरद्य ( सभा )। नन, तन ( सभा, दीन )। पीड़न, पीड़त ( सभा, दीन )। [३६] निज गेह, गेह ( उदय )।

**पुष्पिका**—इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे श्रीभीमसेन-कुमारेण गुर्जरदेशेद्वद्वकरण नाम पचदशमो विलासः ॥१५॥ ( सभा, दीन )।

## १६

[४] दीन्हौं, दिद्धो ( सभा ), दिन्हो ( दीन )। [५] धन वन, गज तन ( सभा, दीन )। [६] घोर, घोष ( सभा, दीन )। [१०] उडिय, उझिय ( दीन )। [१२] बिचारिय, बिहारिय ( सभा, दीन )। [१२] जोधनि जोध, जोधविजोध ( सभा ), जोध विजोध ( दीन )। [१४] टुटि, तुटि ( उदय, सभा, दीन )। फिर, फिरे ( सभा, दीन )। [ ५] ओर, उर ( सभा )। [१७] कायरु, कायर ( दीन )। [१६] नैन रु, नैन ( उदय ), नेनन ( सभा, दीन )। [२०] टूक कितैइ, टूकनि तेइ ( उदय, सभा, दीन )। [२२] चच्चर चोल, वचर बोल ( सभा, दीन )।

**पुष्पिका**—इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे सावलदास कमधज्जकृत द्वद्ववर्णन नाम षोडशमो विलासः ॥१६॥ ( सभा, दीन )।

## १७

[२] उत घन, उतपन ( सभा, दीन )। तारक रित, तारन रित ( उदय, सभा, दीन )। [५] उठी दहक्क, उठि दहरिक्क ( सभा, दीन )। [६] जग्यौ, जग पो ( सभा, दीन )। [८] धीगानी, धागानी ( उदय, सभा, दीन )। [१२] पाव, पाच ( सभा, दीन )। [१३] जिगमिय, जिगमिग ( सभा, दीन )। [२१] बिरूर, बिडूर ( उदय, सभा, दीन )। [२५] नैर भयान, नैरभ यान ( दीन )। [२६] झुकि, झुकि ( सभा ), द्धुकि ( दीन )। [३१] बिलवत, बिलपत ( दीन )। [३३] पाव, पाच

( उदय, सभा, दीन )। [३७] वासन , वामन ( उदय, सभा, दीन )। सहरत , सहरन ( उदय )। [३६] बखानी , बचानी ( सभा )। अकुलाय , अकलाय ( सभा, दीन )।

**पुष्पिका**—इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे साह दयाल मालपददेशेद्वद्वकृत तद्वर्णननाम सप्तदशमो विलासः ॥१७॥ ( सभा, दीन )।

## १८

[५] गज्यौं , गज्यो ( उदय, सभा )। [६] लाख , लख ( सभा )। [८] इभ , इत ( सभा, दीन )। [१२] सुरज्ज , सुरय ( दीन )। प्रसादि , प्रसाद ( सभा, दीन )। [१६] तम , तुम ( सभा, दीन )। [१७] जगावै , जगाव ( सभा )। कह , कहा ( सभा )। [१६] लायक , हम लायक ( सभा )। [२०] मूरन , मूरत ( सभा, दीन )। डारनि , डरिनि ( उदय ) , डिरनि ( सभा, दीन )। [२३] सैन बध , नेज बध ( सभा )। गहुँ , गहि ( उदय, सभा, दीन )। [२८] सकल , सबल ( दीन )। बाज्यो , बज्यो ( सभा )। रूप मय , रूव मय ( सभा )। [२६] केहरी सी , केहरी ( सभा )। [३२] गग गड धोंकि निसान धौ करि भजज , गग्ड धोंकि धोंकि निसान धोंकरि भ ( सभा ) , गगगड धोकि निसान धो करि भद्र ( दीन )। जगी ढोल , ढोल ( सभा, दीन )। फुनि , फुनि फुनि ( सभा, दीन )। [३३] उज्जल , उज्वल ( दीन )। सोवन , सो वन ( सभा ) , सो बन ( दीन )। [३४] सुड , सड ( सभा, दीन )। दान , दात ( सभा ) , दात ( दीन )। [३७] सुबास , सबास ( सभा, दीन )। केसु भरभरै , केसु भरतरे ( सभा ) , के सुम्भर तरे ( दीन )। [३८] मजनस खेंग , मजनस सु पेग ( सभा, दीन )। [३६] भेर अबर स , भेर अब रस ( सभा, दीन )। [४१] मध्यथन , मध्यथल ( सभा, दीन )। मनु , मन ( सभा )। [४२] बढि , बड़ि ( सभा, दीन )। क्रूर , क्रर ( दीन )। [४३] धन , घन ( सभा, दीन ) । रूवहिँ , रूब ( दीन ) धुर्य , अधुर्य ( सभा, दीन )। जोए , जोरा ( दीन )। कुत , कत ( सभा )। [४४] धर तिन , धरनि न ( उदय, सभा, दीन )। कोटनि , कोटति ( उदय, सभा, दीन )। [४५] उज्जल , उज्वल ( दीन )। [४६] खल , पग ( सभा )। बज्जत , बज्वत ( दीन )। [४७] चटपक् , चटपट ( उदय, दीन )। [४८] मुकति , मकति ( दीन )। सुकित , मुकित ( उदय, सभा, दीन ) ओर अटपट , ऊर उटपट ( सभा ) , ओर ऊटपट ( दीन )। उरझत , उरजत ( सभा, दीन )।

बराह बर , बराह ( सभा ) बन पुर , पुर ( दीन ) । [४६] हेक , हेष ( सभा, दीन ) । रिपु रिन , रिपु न ( सभा ) , रिप्पुन ( दीन ) । लय लगति , लय गति ( उदय ) , यल गति ( सभा, दीन ) ।

[५३] परी , परि ( उदय, सभा, दीन ) । भेलन , तेल न ( सभा, दीन ) । [६१] तिन , तित ( सभा, दीन ) । [६८] राखी , रखी ( सभा ) । [७४] ब रहास , बरहास ( दीन ) । [७७] जुरि , ज्जरि ( सभा ) , जरि ( दीन ) । [७६] बि कैद , बिकैद ( दीन ) । टये , गये ( दीन ) । [८०] ओर , उर ( सभा ) । हृदै , रुदै ( दीन ) । युआन , सुआन ( सभा, दीन ) । [८२] भारत , भारथ ( सभा ) । [८३] गक्खरि भक्खरि , गरकरि भरवरि (सभा) बैरि , चेरि ( सभा, दीन ) । [८६] कटत धपत , कटव धपत ( सभा ) , कटब धयत (दीन) , ? ( उदय ) । [८७] अनि , अरि ( सभा, दीन ) । [८८] लुत्थि उलत्थि पलत्थिय , लछि उलछि पलछिय ( सभा ) , लच्छि उलच्छि पलच्छिय ( दीन ) । टुटि टोप···तुटै , ० ( सभा— ) । [६१] बरि , बरै ( उदय, सभा, दीन ) । [६२] प्रमुदित , प्रभुदित ( दीन ) । अटट , अट्ट ( दीन ) । [६३] खिपतिय , पिवतिय ( सभा ) , बिपतिय ( दीन ) । समर , समल ( उदय, दीन ) । [६४] भग्गै , भग्गो ( सभा, दोन ) । [६७] रन , रत ( सभा ) । नृप नवाब , नृपत बाब ( सभा, दीन ) । [६८] बहु , पहु ( सभा ) । [६६] हत्थी , हच्छी ( सभा, दीन ) । [१००] ग्राम ग्राम , ग्राम ग्रास ( सभा ) । [१०३] धाक , काध ( दीन ) । [१०४] मदुवान , मदवान ( दीन ) । अत्थि , अच्छि ( सभा, दीन ) । [१०५] हत्थि , हच्छि ( सभा, दीन ) । ध्रुव रज्जत जास , ध्रुवर अजास ( सभा, दीन ) । कहिमान···रक्खत खिति , ० ( सभा, दीन ) ।

**पुष्पिका**—इति श्रीमन्मानकविविरचित श्रीराजविलासशास्त्रे महाराणा श्रीजयसिंघजी कुँआरपदे श्रीचित्रकूटमहादुर्गे पातिसाह औरगसाहिकस्य साहिजादा अकब्बर तदुपरि रतिवाहवर्णन नाम अष्टादसमोविलासः ॥१८॥ इति श्रीराजविलासग्रंथ सपूर्णः श्रीरस्तु ॥ [ औरगसाहिकस्य , औरगसाहिकथ ( दीन ) । वर्णन , वर्णच ( दीन ) । ] ( सभा, दीन ) ।

# शुद्धिपत्र

[ वि = विलास । छ = छंद । प = पंक्ति । ]

| वि । छं । पं | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|
| १।१६।३ | अथ | अघ |
| १।२६।२ | स्चैर | स्वैर |
| १।३२।६ | स धुनि | सु धुनि |
| १।३५।१ | ठाँऊँ | ठाँउँ |
| १।३५।२ | हाँऊँ | हाँउँ |
| १।३८।५ | सतवि | सुतवि |
| १।३८।५ | कीना | कीनौं |
| १।५१।२ | ठग | टग |
| १।५६।२ | मग्न | मग्ग |
| १।६५।२ | ह | नह |
| १।८५।१ | किहि | किहिं |
| १।१२३ | कबित्त | दोहा |
| १।१२३।२ | रिधू | रिधु |
| १।१२८।२ | धन धन | धन घन |
| १।१६९।२ | मान | गान |
| १।२००।१ | पिट्ठिय | पिट्ठि |
| १।२०१।२ | पायकह सम | पायक हसम |
| १।२०२।३ | चढयौ | चढ्यो |
| १।२०२।५ | दिसिवि दिस | दिसि विदिस |
| १।२०६।२ | परवर | पखर |
| १।२१२।१ | कहै | कहूँ |
| १।२३१।१ | मोरौ | मोरी |
| १।२३३।४ | हशम | हसम |
| १।२३६।२ | बुल्लाय | बुल्लय |
| २।१।२ | थमणौ | खमणौर |
| २।२।२ | त्रिपुरसही | त्रिपुरसौह |
| २।३०।१ | राख | राण |
| २।११३।१ | मारू | सारु |
| २।१५३।२ | कहत | कहत |
| २।१५७।२ | लबभुव | लुंबभुव |
| ३।२।१ | जितन | जित्तन |
| ३।३।२ | मत्र | मत्रि |
| ३।१६।१ | जो | जौ |

| वि । छ । पं | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|
| ३।२२।१ | सुदरग सरुव | सुदर गसरु |
| | सकज्ज | वस कज्ज |
| ३।३०।२ | प्रति | प्रीति |
| ३।५७।२ | पिखत | पिखर |
| ३।६५।१ | एहौ सुन | एह सुनौ |
| ३।८८।३ | प | पैं |
| ५।४९।१ | छकपकति | छकपकति |
| ५।८७।१ | क्रर | क्रूर |
| ७।६२।१ | गन | गैं न |
| ७।६३।२ | स्वण | स्वर्ण |
| ७।९१।२ | खग | खैं ग |
| ७।९५।१ | सोलह | तोलह |
| ८।३३।२ | कलख | कलरव |
| ८।९५।४ | मरकी | मुरकी |
| ८।१४३।३ | वहुत | बहतु |
| ८।१५१।२ | कोर न | कोरन |
| ८।१६९।४ | राजससुद्द | राजसमुद्द |
| ९।४५।२ | सु बधार | सुव धार |
| ९।८५।४ | कड्ढौं | कढ्ढौं |
| ९।९१।२ | धन | घन |
| ९।९७।२ | सपूर | समूर |
| ९।११०।१ | बत्थ | बत्थैं |
| ९।१५६।२ | सिधुर | सिंधुर |
| ९।१८८।४ | बग्घेला | बग्घेला |
| १० ।१।१ | सरल | सरन |
| १०।२।१ | तप्पौ | तप्यौ |
| १०।२।२ | मीड | मीं डि |
| १०।६।५ | अप्पौ | अप्यौ |
| १०।३२।२ | गुमतै | घुमते |
| १०।३४।४ | लतगा | उतगा |
| १०।४२।३ | सधै | सधैं |
| १०।७३।२ | प | पै |
| १०।१०४।१ | सु कोस | स कोस |

| वि। छं। पं | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|
| ११।११।१ | गोपा | गोपी |
| १३।६।५ | कक | कक |
| १३।१७।१ | घट | थट |
| १३।२२।२ | धुव | धुवै ँ |
| १३।२४ २ | छावल्ल | छाठल्ल |
| १३।३०।२ | रहनान | रहना न |
| १३।३३।२ | घाइ | धाइ |
| १३।३४।६ | अतर | अदर |
| १४।१०।१ | निवच्छर | निचच्छर |
| १४ २१।२ | भिर | भिरे ँ |
| १४।२५।१ | गठ | गठै ँ |
| १४।३०।४ | हुत्थ | हत्थ |
| १४।४१।२ | अनप | अनूप |
| १५।२०।१ | स्त्री | श्री |
| १५।३७।६ | पिरवी | पिखी |
| १६।१०।२ | भानि | भानु |
| १६।१०।४ | क्रर | क्रूर |
| १६।१०।६ | किज्ज | किज्जै ँ |
| १६।१८।१ | धुर | धुरै ँ |

| वि। छं। पं | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|
| १७।११।१ | झर | झरे ँ |
| १७ १८।२ | गरुडै | गारुडै |
| १७ ३२ ४ | धन | घन |
| १७ ३४ ६ | परकूल | पटकूल |
| १७ ३६।४ | अन्नचर | अन्नुचर |
| १८।६ ३ | ठोरी | डोरी |
| १८।१३।२ | कर | करै ँ |
| १८।१४।२ | नित | रिन |
| १८।१५।५ | सक | सकै ँ |
| १८।२६।१ | प | पै |
| १८।४२।१ | उभरा | उमरा |
| १८ ४८।१ | सु कोप | स कोप |
| १८।४८।६ | सकरन | सुकरन |
| १८ ५०।३ | झचकि | झलकि |
| १८।६१।२ | पेखै ँ | पेखै ँ |
| १८।७७।४ | बज | बजै ँ |
| १८।८८।२ | बिहासिय | बिहस्सिय |
| १८।६८।१ | कुअर | कुँअर |